सचित्र

नेपोलियन बोनापार्ट

प्रथम भाग

अनुवादक

बाबू हरिकृष्ण जौहर

साहित्यालङ्कार

भूतपूर्व्व प्रधान सम्पादक

"हिन्दी बङ्गवासी"

कलकत्ता

२०१, हरिसन रोडके "नरसिंह प्रेस" में

बाबू रामप्रताप भार्गव द्वारा

मुद्रित ।

मार्च सन् १९२० ई०

प्रथम आवृत्ति १०००

मूल्य २॥)

ग्रन्थकारकी भूमिका।

नेपोलियनका इतिहास उनके शत्रुओंने बारंबार लिखा है। यह विवरण एक ऐसे मनुष्यकी लेखनीसे लिखा गया है, जो इस सम्राट्का प्रेमी और भक्त है। नेपोलियनके प्रति इस ग्रन्थके लेखकका अत्यानुराग होनेके बहुतेरे कारण हैं। नेपोलियन युद्धसे घृणा और इस दारुण विपद्से बचनेका यथासाध्य प्रयत्न किया करते थे। उन्होंने उस राजत्वपद पानेकी योग्यता प्राप्त की थी, जिसपर उन्हें एक कृतज्ञ जातिके दुःख-भोगने चढ़ा दिया। किसी विरल ही नश्वर मनुष्यको प्राप्त होनेवाली अपनी अतीव असाधारण शक्तिको उन्होंने अपने देशकी समृद्धि-वृद्धिमें उत्सर्ग किया था। वह विलासको खातिरमें न लाते और मनुष्य-जातिके दलोंको उन्नत और सुखी बनानेके लिये सभी श्रम और कठिनाइयोंको सहर्ष सहन किया करते थे। उनमें महत्त्वका अत्युच्च ज्ञान था; धर्म्ममें उनकी भक्ति थी; विवेकके स्वत्वोंकी वह प्रतिष्ठा करते थे और उन्होंने बड़ी ही उदारताके साथ मनुष्यकी अनन्य साधारण क्षमताकी समानता और सर्व्वजनीन भ्रातृत्वका पक्ष समर्थन किया था। नेपोलियन बोनापार्टका ऐसा ही सच्चा चरित्र था। इस ग्रन्थमें जो बातें लिखी गई हैं; वह इस निश्चित उक्तिकी सत्यताके प्रमाण-

सचमुच ही शत्रु थे। अङ्गरेजोंकी दलविशेषकी सरकारने नेपोलियनके कुचल डालनेका दृढ़ सङ्कल्प कर लिया था। इस उद्देश्यकी सिद्धिके लिये कोई चौथाई शताब्दीतक यूरोपको रक्त और व्यथासे प्लावित करनेके उपरान्त जगत्‌के सम्मुख, विशेषत: इस युद्धजनित टेक्सोंके भारसे डगमगाती बृटिश प्रजाके सम्मुख यह बात प्रमाणित करनेकी बड़ी आवश्यकता बोध की गई, कि नेपोलियन अत्याचारी थे; जगत्‌की स्वाधीनता नष्ट करनेपर उद्यत थे और वह कुचले जानेकेही उपयुक्त पात्र थे।

इस असत् धर्म्मयुद्धमें सम्मिलित हो सहापराधिनी बननेवाली सभी शक्तियाँ अपने आखटेका नाम जगत्‌का अभिशाप पानेके लिये उसके सम्मुख उपस्थित करनेमें समानभावसे स्वार्थचिन्तायुक्त थीं। और तो क्या;—उस समय फ्रान्सने भी नेपोलियनको दोषी बताया। नेपोलियनके बाद बोरबंस राजपरिवारके जो पुरुष मित्रोंकी सङ्गीनोंके साहाय्यसे फ्रान्स-सिंहासनपर एकबार फिर प्रतिष्ठित हुए; वह पुरुष प्रजाके प्यारे सम्राट् नेपोलियनके पक्षमें प्रकट होनेवाली बातोंको दबाते और उनके नामपर घृणाकी वर्षा करनेवालोंको अपनी प्रसन्नता, धन-सम्पत्ति और प्रतिष्ठा द्वारा पुरस्कृत करते थे। इसतरह एक असाधारण दृश्यकी सृष्टि हुई। यूरोपकी घोर स्वार्थ संयुक्त सभी शक्तियाँ एक उस पुरुषकी निन्दा करती दिखाई दीं, जिस पुरुषको उत्तर देनेकी क्षमता उससे पहले ही छीन ली गई थी। इस ग्रन्थके लेखकको इस बातका विश्वास है, कि वह सम्राट् नेपोलियनके सम्बन्धमें ऐसी बातें लिखनेके लिये अतीव तीव्र आक्रमणोंसे रक्षित रह न सकेगा। किन्तु जब वह अपने विचारोंके स्वच्छन्दतापूर्व्वक प्रकट करनेका अधिकार चाहता है; तब वह दूसरेके अधिकारोंको आनन्दपूर्व्वक स्वीकार क्यों न करेगा? सच बात तो यह है, कि जिस मनुष्यपर अन्यायपूर्व्वक इतना आक्रमण किया गया है, उस मनुष्यके धिक्कारोंमें भाग लेनेमें भी बड़ा सुख है।

इसमें सन्देह नहीं, कि यह ग्रन्थ यदि शान्तिके पक्षसमर्थनका एक शक्तिशाली वकील प्रमाणित न हुआ, तो इसके लेखकको तीव्र हृदय-भग्नता होगी। फ्रान्सकी स्वाधीनताके विरुद्ध मित्रशक्तियाँ जिन भीषण लड़ाइयोंमें प्रवृत्त हुई थीं ; उन भीषण लड़ाइयोंके अपराधों और यन्त्रणाओंके सविस्तार वर्णनसे अधिक प्रभावशालिनी और कोई युक्ति युद्धकी मूर्खताके विरुद्ध संगठित करना कठिन है। इस युद्धमें सम्मिलित होनेवाले सभी पक्ष समानभावसे क्षतिग्रस्त हुए। दलके दल असंख्य मनुष्य सभी प्रकारके अङ्गच्छेद और यन्त्रणासे रणस्थलमें नष्ट हुए। इसके फलसे कोटि-कोटि घरोंकी विधवाओं और अनाथोंकी छातियोंसे मानसिक यन्त्रणाका क्रन्दननिनाद खींच निकाला गया, जिसने मारेङ्गो या वाटरलू रणक्षेत्रकी गड़गड़ाहटको भी अपने नीचे दबा दिया। इन लड़ाइयोंके कारण सारा यूरोप दरिद्र हो गया। ध्वंसके दैत्योंजैसी निर्दय फौजें रणक्षेत्रों और पर्व्वतपार्श्वों के ऊपर प्रधावित हुईं। कृषकोंकी कृषि पैरोंतले रौंद दी गई ; ग्रामके ग्राम भस्म होकर श्मशानमें परिणत हुए। बड़े-बड़े नगरोंपर गोले बरसे। जनाकीर्ण बाजार, शिल्पजात वस्तुओंसे सुसज्जित शालायें और त्रासकी यन्त्रणासे सिमटकर बैठी हुई माताओं, कुमारियों तथा बच्चोंसे परिपूर्ण धात्री-प्रकोष्ठ गर्ज्जन करते हुए गोलोंके निशाने बने।

युद्ध ध्वंसका विधान है। कोटि-कोटि मनुष्य सर्व्वथा कङ्गाल हो गये। प्रत्येक जाति बारी-बारीसे अवनत और निर्ब्बल की गई। इन टक्करोंकी आत्मा और इन लड़ाइयोंके क्षमाहीन उत्तेजक इङ्गलेण्डने अपनी नौ-सैन्य तथा अपनी सागरवेष्टित स्थितिसे रक्षित रह, बड़ी-बड़ी रिशवतोंकी साहाय्यसे अन्यान्य जातियोंको फ्रान्सके पश्चाद्भागपर आक्रमण करनेके लिये उभार, सम्राट् नेपोलियनकी फौजोंको विलायतके किनारेसे लौटा देनेमें सफलता प्राप्त की। इसतरह इङ्गलेण्डके दण्डका समय स्थगित हो गया ; किन्तु प्रतिशोधका समय सन्निकट है। इस समय इङ्गलेण्ड कोई बारह अरब रुपयेके

ऋण-भारसे आक्रान्त हो कराह रहा है। इङ्गलैण्ड-सन्तानके लिये यह भार एक कुचलनेवाला दबाव है, जो दिन-दिन अधिक असह्य होता जाता है।

इस ग्रन्थकी कल्पना अतीव साधारण है। अपने आचरणोंकी की हुई नेपोलियनकी अपनी विशेष व्याख्याके साथ उनकी कार्य्यावलीको और उनके चरित्रको उद्भासित करनेवाली उनके जीवनके सम्बन्धकी अतीव प्रामाणिक घटनाओं तथा विख्यात कहावतोंकी यह एक सुस्पष्ट आख्यायिका है। इस ग्रन्थके लेखकको इस बातका विश्वास है, कि इस ग्रन्थमें लिपिबद्ध होजानेवाली प्रत्येक घटना और नेपोलियनके सम्बन्ध-का प्रत्येक मन्तव्य अतीव प्रामाणिक है। इस ग्रन्थके लेखकने ऐसी कोई सुप्रतिष्ठित घटना या मन्तव्यका जान-बूझकर वर्ज्जन नहीं किया है, जिसके प्रकट होनेसे नेपोलियनके चरित्रपर किसी तरहकी विपरीत प्रतिच्छाया उत्पन्न हो सके। ऐतिहासिकोंपर साहित्यिक चोरीका अपराध सहज ही आरोपित किया जा सकता है। इतिहास-लेखक सिर्फ उन्हीं बातोंको लिपिबद्ध और उन्हीं दृश्योंका वर्णन कर सकता है, जिन्हें वह प्रकाश्य दलीलों तथा अन्यान्य लेखकोंके वर्णनसे संग्रह करता है। ऐसी दशामें यह असम्भव है, कि सुयोग्य लेखकों द्वारा पहलेसे लिखी घटनाओंका वर्णन किया जाये और उन लेखकोंके भावप्रकाश तथा अपने भावप्रकाशके बीच किसी तरहका भी साम्य होने न दिया जाये।

यह ग्रन्थ लिखते समय इसके लेखकने इस बातका यत्न किया है, कि उसकी लेखनीसे ऐसी एक पंक्ति भी न निकले, जिसे वह अपनी मृत्युके समय मिटा देनेकी इच्छा करे। उस पवित्र घड़ीमें उसे यह विचार प्रबोध देगा, कि नामोंमें एक श्रेष्ठतम और महत्तम नामको अयथा कुत्सासे बचानेके लिये उससे जो कुछ हो सकता था; उसे उसने सम्पन्न किया।

जान एस० सी० एबट।

डिउक आफ एब्राण्टेस।

जूनट।

[पृष्ठ ८२

चित्र-सूची।

पृष्ठ

नेपोलियन बोनापार्ट

पहला परिच्छेद ।

बाल्य और यौवन ।

कोरसिका—चार्ल्स बोनापार्ट—परिवार-गृह—नेपोलियनका जन्म—उनके पिताकी मृत्यु—नेपलियनके मनमें मातृप्रभावकी प्रतिष्ठा—ग्राम्य गृह—नेपोलिनकी गुफा—उनका स्वभाव—उनकी माताकी श्रेष्ठता—उनके जीवनकी एक घटना—काउण्ट मारबिउफ—जिआकोमिनेट्टा—नेपोलियनका ब्रिएन्नीके स्कूलमें प्रवेश करना—साधारणतन्त्री मूलसूत्रोंका आरम्भिक विकास—कठोर विद्याभ्यासका प्रेम—उपन्यास-पाठसे घृणा—धार्म्मिक शिक्षा—बरफकी गढबन्दी—अबाध्य सेनापति—पावली और नेपोलियनके बीच मैत्री—लिपि-शिक्षक—एकान्त प्रेम—सैन्यमें नियोग—बीबी कोलोम्बियर—जिनोआवासिनी एक स्त्रीकी दया और उसका प्रतिदान—प्रजातन्त्री मतकी प्रकाश्य उक्ति—उनके जीवनकी और एक घटना—विषम अर्थाभाव—नेकार साहबके घर दावत—अतनके बिशपको नेपोलियनका प्रत्युत्तर—इसका फल—कोरसिका जाना—जलयात्रा ।

वन्य सङ्कीर्ण पार्व्वत्य पथों तथा असम पर्व्वतोंसे विभूषित अतीव सुशोभन कोरसिका द्वीप, फ्रान्सतटसे कोई पचास कोस दूर, भूमध्यसागर-की छातीसे निकला हुआ है। पूर्व्वकालमें यह द्वीप इटलीका एक प्रदेश था। इसकी भाषा सहानुभूति और परिच्छद इटालियन था। सन् १७६७ ई० में इसपर एक फ्रान्सीसी सैन्यकी चढ़ाई हुई। कितनी ही अतीव रक्तपूर्ण लड़ाइयोंके उपरान्त इस द्वीपके अधिवासी श्रेष्ठतर शक्तिके सम्मुख अवनत होनेपर बाध्य हुए। इसतरह कोर-सिका द्वीप फ्रान्सके बोरबंस राजकुलके साम्राज्यमें सम्मिलित किया गया।

जिस समय यह चढ़ाई हुई; उस समय इस द्वीपमें एक युवक वकीलका निवास था। वह इटालियन वंशसम्भूत थे और उनका नाम चार्ल्स बोनापार्ट था। उनकी देह कर्त्तृत्वसूचक सौन्दर्य्यसे अलङ्कृत थी, उनके मनमें बड़ा बल था और उनका प्राचीन वंश प्रतिष्ठाकी दृष्टिसे देखा जाता था। उनमें कसर थी, तो इस बातकी, कि लक्ष्मी उनके प्रतिष्ठित घरानेसे विदा हो चुकी थीं। जिस वंशका सूत्र अन्धकारपूर्ण युगके धुँदलकेसे भी चिह्नित किया जा सकता था, उस वंशके वह पुरुष अपने सौभाग्यक्रमसे अपनी जीविका उपार्ज्जन करनेके लिये अपने बुद्धिबलके आश्रित थे। उन्होंने कोरसिकाकी एक अतीव रूपवती और गुण-सम्पन्ना युवती भद्र महिला लेटिशिया रमोलिनीके साथ अपना विवाह किया था। इस दम्पतीसे तेरह सन्तान उत्पन्न हुए; जिनमें आठ बचे और पूर्ण वयसको प्राप्त हुए। कृत-कार्य्य वकील होनेके कारण इस बड़े परिवारके पिता इस परिवारके लोगोंके लिये प्रचुर आवश्यक धन सग्रह कर लिया करते थे। अपने प्रसिद्ध कुलके कारण उन्होंने समाजमें एक ऊँचा स्थान पाया था और अपनी बुद्धिकी प्रखरता और सतत कर्म्मपटुताके फलसे वह शक्तिशाली प्रभाव प्राप्त करनेमें समर्थ हुए थे।

इस द्वीपके प्रधान नगर अजाकियोका पाषाण-निर्म्मित एक

विशाल भवन इस परिवारका नगर-निवास था। इस भवनसे कुछ कोस दूर सागर-तटपर बने अतीव आनन्दपूर्ण एक ग्राम्य निकेतनका भी सुख यह परिवार उपभोग किया करता था। ग्रीष्मके उत्तापमें यह ग्राम्यगृह इस परिवारके बालकोंको बड़ा ही सुखद प्रतीत होता था। जिस समय फ्रान्सीसियोंने कोरसिकापर चढ़ाई की थी, उस समय चार्ल्स बोनापार्ट पूर्ण युवक थे, उन्हें अपना विवाह किये कुछ ही वर्ष बीते थे। फ्रान्सीसियोंकी चढ़ाई होते ही वह अपने आक्रमणकारियोंसे युद्ध करनेके लिये वकालतका शान्तिपूर्ण व्यवसाय छोड़, अपनी तलवार हाथमें ले सेनापति पावलीके झण्डेके नीचे एकत्र हो अपने देशवासियोंके साथ सम्मिलित हुए थे। उस समय उनकी स्त्रीके आगे एक ही सन्तान जोजेफ था। दूसरा सन्तान उनके गर्भमें था, जिसे वह शीघ्र ही प्रसव करनेवाली थीं। अभ्यन्तरीण युद्ध इस क्षुद्र द्वीपका ध्वंस साधन कर रहा था। पावली और उनका स्वदेशभक्तोंका दल बार-बार पराजित हो, अपने विजेता शत्रुओंके सम्मुखसे अपने पार्व्वत्य दुर्गोंकी ओर पीछे हट रहा था। लेटिशिया अपने पतिके साथ रह उनके अदृष्टमें भाग ले रही थीं और अपनी दुरवस्थाकी कोई परवा न कर घोड़ेकी सवारीसे इन विपदपूर्ण और क्लान्तकर सैन्य-यात्राओंमें उनका साथ दे रही थीं। कुशल हुई, कि यह युद्ध अधिक समयतक न चला। कोरसिका फ्रान्सका एक प्रदेश बन गया और इस द्वीपमें रहनेवाले इटालियन बोरबन-सिंहासनकी अनिच्छुक प्रजा बन गये। सन् १७६९ ई० में सूतिकागार-सेवनका पूर्व्वानुभवकर लेटिशियाने अजाक्सियोके अपने नगर-निवासका आश्रय ग्रहण किया। इस दिन प्रातःकाल वह गिरजे गईं; किन्तु अभी वहाँकी प्रार्थना समाप्त होने न पाई थी, ऐसे समय एकाएक गिरजा छोड़ अपने मकान लौटनेपर बाध्य हुईं। अपने मकान पहुँच वह एक कोचपर पतित हुईं और उन्होंने अपनी देह एक पुराने बूटेदार पर्देके एक टुकड़ेसे ढँक ली। इस पर्देपर इलियडके

वीरों और लड़ाइयोंके चित्र कढ़े हुए थे। इसी अवस्थामें रह उन्होंने अपने द्वितीय पुत्र नेपोलियन बोनापार्टको प्रसव किया। यदि नेपोलियन दो मास पहले उत्पन्न हुए होते, तो अपने जन्मसे फ्रान्सीसी न होकर इटालियन होते ; क्योंकि इस द्वीपको फ्रान्स-साम्राज्यमें सम्मिलित हुए कुल आठ ही सप्ताह हुए थे।

जिन पुत्रकी बादकी ख्याति भूमण्डलव्यापिनी हुई ; उन पुत्रके जन्मके कुछ ही वर्ष बाद उनके पिताका देहान्त हुआ। कहते हैं, कि वह नेपोलियनके बाल्य हीमें उनकी अलौकिक शक्तियोंका यथार्थ गुणानुभव करनेमें समर्थ हुए थे और अपनी मृत्युसे कुछ पहलेकी अपनी सान्निपातिकावस्थामें नेपोलियनको अपने साहाय्यके लिये पुकारा करते थे। अपने पतिकी मृत्युसे नेपोलियनकी माता अनाथा हो गईं। उस समय उनके आगे आठ सन्तान थे,—जोजेफ, नेपोलियन, लुसिएन, लुई, जेरोम, एलिजा, पालिन और केरोलाइन। उनकी आय परिमित थी ; किन्तु उनकी मानसिक वृत्ति उनपर आ गिरनेवाले गुरुभार-दायित्वके अनुरूप थी। उनके चारित्रिक उत्कर्षका यथार्थ गुणानुभव उनके पुत्र-पुत्रियाँ कर सकी थीं और उन सबने उनकी सम्पूर्ण और निर्विवाद वश्यता मान, अपनेको उनकी प्रभुताके हाथों सौंप दिया था।

नेपोलियन अपनी माताको विशेषरूपसे सदा अतीव प्रणय श्रद्धा और भक्तिके साथ देखा करते थे। उन्होंने वारंवार यह बात कही थी, कि शक्तिके जिस उच्च शिखरपर मेरा परिवार आरूढ़ हुआ है, उस शिखरपर चढ़नेकी शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक शिक्षाकी तय्यारीके लिये वह और किसीका नहीं ; अपनी माता हीका ऋणी है। उनके मनपर अपनी माताके इन उपकारोंका प्रभाव ऐसा अङ्कित हुआ था, कि वह प्रायः ही कहा करते थे,—“मेरा विचार यह है, कि किसी बालकका भावी सुचरित्र या कुचरित्र सर्व्वथा उसकी मातापर निर्भर करता है।” शक्ति प्राप्त करते

ही उन्होंने जो पहला कार्य्य किया, वह यह था, कि धन द्वारा प्राप्त होनेवाले सुखके यावत् उपादानोंसे अपनी माताको परिवेष्टित कर दिया। इसके उपरान्त वह जैसे ही फ्रान्स-सरकारके प्रधान पुरुष हुए; वैसे ही उन्होंने उत्साह-पूर्व्वक स्त्री-शिक्षाके स्कूल प्रतिष्ठित किये और यह कहा, कि फ्रान्सको अपना नव-जीवन उन्नत करनेके लिये और किसी बातकी उतनी आवश्यकता नहीं; जितनी आवश्यकता अच्छी माताओंकी है।

नेपोलियनकी माता अपने पतिकी मृत्युके उपरान्त अपने बाल-बच्चोंके साथ अपने ग्राम्य गृहमें रहने लगीं। यह गृह एक एकान्त स्थानमें बना था। पुष्पित गुल्मादिकी झाड़ियोंके किनारोंसे सुस-ज्जित और विशाल वृक्षोंकी छततारी शाखाओं द्वारा ऊपरसे ढँका एक उद्यानपथ इस गृहके द्वारतक बना था। इस गृहके सम्मुख एक विस्तृत समतल तथा प्रकाशमय तृणक्षेत्र अपने लिये निर्द्दिष्ट सौभाग्यसे अनभिज्ञ इन बालकोंको इनकी बाल्यकालीन क्रीड़ाओंके लिये अपनी ओर आकृष्ट किया करता था। यह सब तितलियोंका पीछा किया करते थे; जल-परिपूर्ण नन्हे-नन्हे डबरोंमें नङ्गे पैर खेला करते थे और अपनी बाल्यसुलभ उछल-कूद करते हुए अपने विश्वासी कुत्तेकी पीठपर बैठ इसतरह प्रसन्न होते थे; मानो उनके मस्तक राजमुकुटके भारसे आक्रान्त हो कभी व्यथित होनेहीको न थे। दुर्ब्बोध लीलामयकी क्या ही विचित्र लीला है! वह जिस समय कोरसिका द्वीपमें भूमध्य-सागरके उज्ज्वल आकाशकी प्रतिच्छायातले नेपोलियन-का परिवर्द्धन कर रहे थे, उसी समय दूर—अति दूरके वेष्ट इण्डीज या अमेरिकामें कर्कट क्रान्तिके ज्वलन्त सूर्य्यके नीचे नारियलके वृक्ष-कुञ्जों और नारङ्गीके वृक्षोंकी प्रतिच्छायामें नेपोलियनकी भावी पत्नी सुन्दरी और प्रेममयी जोजेफाइनकी देहका गठन और उनकी मनो-वृत्तिको मर्य्यादान्वित कर रहे थे। जिस कर्त्तृत्वकी इन दोनोंने आकांक्षा की न थी, वही कर्त्तृत्व इन दोनोंको इनके अतीव

विच्छिन्न और साधारण घरोंसे निकाल फ्रान्स-राजधानी पेरिस ले गया। वहाँ इन दोनोंने एकान्तकी गवेषणा और सुगभीर चिन्ता द्वारा पली हुई अपनी सम्मिलित शक्तिसे अपने लिये ऐसा उच्चतम राजसिंहासन अर्जन किया; जैसा राजसिंहासन जगत्‌में कभी प्रकट हुआ न था। इस राजसिंहासनसे ऐसी शक्ति और ज्योति प्रकट हुई, जिसने कथाओंमें वर्णित रोमन या ईरानी या मिस्री ऐश्वर्य्यको भी नीचा दिखा दिया।

कोरसिकाके जिस गृहमें नैपोलियनने अपना बाल्य बिताया था, वह गृह अपनी जीर्ण अवस्थामें आज भी अवस्थित है। जिस समय कोई चिन्ताशील पर्यटक उन बालकोंके क्रीड़ास्थल उस तृणक्षेत्रपर विचरण करता है; उस समय विमर्ष कल्पना-तरङ्गमें पतित हो अपनेको भूल जाता है। वह जब इस गृहके पीछेकी वाटिकामें जाता है, तब इस वाटिकासे प्रलुब्ध हो इसमें आ अपनी नन्ही-नन्ही कुदालों और फावड़ोंसे श्रम करनेवाले उन बालकोंका ध्यान करता है। फिर; वह जब उन जनशून्य उजड़ी हुई झाड़ियोंके बीचसे होकर कठिनता-पूर्व्वक आगे बढ़ता है, तब उनके मध्यसे उत्थित होनेवाली किसी समयकी उन बालक राजा-रानियोंकी किलकारि-योंकी कल्पना करता है। आज उनकी कण्ठध्वनि नहीं; उसे मृत्यु सदाके लिये निस्तब्ध कर चुकी है। फिर भी; उन सबने अपने जन्मसे लेकर अपनी मृत्युतक जो घटनापूर्ण अभिनय किया है; उससे अधिक घटनापूर्ण अभिनय जगत्‌के इतिहासोंमें एक भी दिखाई नहीं देता है।

इस भूमिके एक एकान्त और अद्भुत स्थानमें काले पत्थरकी एक अकेली चट्टान है। इसकी बनावट भद्दी और असम है। यह चट्टान फटी हुई है और उस फटनके भीतर गुफासे मिलता-जुलता एक स्थान बन गया है। यह स्थान आज भी 'नैपोलियनकी गुफा' कहलाता है। म्लान और चिन्ताशील बालक नैपोलियनने चैतन्य लाभके

आरम्भ होसे इस एकान्तकी चट्टानको अपने बड़े आदरका अड्डा बनाया था। जिस समय उनके भाई और बहनें उस वाटिका या उस तृणक्षेत्रमें अपने साथियोंके साथ अतीव आनन्द अनुभव करते रहते थे; उस समय नेपोलियन उनकी दृष्टि बचा अकेले अपने इस प्यारे एकान्त स्थानमें जा पहुँचते थे। वहाँ वह सुदीर्घ सुखद अपराह्णोंमें हाथमें एक पुस्तक ले अलस अवस्थामें लगकर बैठे रहते और घण्टों अपने सम्मुख फैले हुए उस प्रशस्त तथा विस्तृत भूमध्यसागर-को तथा अपने ऊपर छाये उस सुनील आकाशको निहारा करते थे। कौन विचार सकता है, कि उस समय उस अद्भुत आत्माकी बढ़ती हुई शक्तियोंके सम्मुख कैसी-कैसी कल्पनायें उत्पन्न होती होंगी?

नेपोलियन मधुर प्रकृतिके बालक कहे जा न सकते थे। वह अपनी प्रकृतिसे निस्तब्ध और एकान्तप्रेमी थे; अपने स्वभावसे विषण्ण और क्रोधशील थे और किसी तरहकी भी बाधा अपने सम्मुख पा अधीर हो जाते थे। किसीका साथ या खेल उन्हें पसन्द न था। उनकी आत्मामें स्वाभाविक आनन्द या प्रफुल्लता न थी; उनके स्वभाव-में सरलता न थी। उनकी बहनें और भाई उनकी श्रेष्ठता स्वीकार करके भी उनको प्यार न करते। उस समय उनके एक चाचाने कहा था,—"इन भाई-बहनोंमें जोजेफ ज्येष्ठ; किन्तु नेपोलियन सर्व्वश्रेष्ठ है।" उनके प्रचण्ड उत्साह और उनके चरित्रकी निष्पत्ति-का यह हाल था, कि शान्त, मृदुस्वभाव और निरहङ्कार बालक जोजेफ उनकी इच्छाके सम्पूर्ण वश हो गये थे। यह देखा गया था, कि उनकी अभिमानी आत्मा दण्डकी किसी भी कठोरताके सम्मु-ख अवनत होना जानती न थी। वैराग्यकी दृढताके साथ और बिना एक भी बिन्दु अश्रुजल गिराये वह हर तरहकी शास्ति सह लिया करते थे। एक समय किसी दूसरेके किये दोषके लिये वह व्यर्थ ही दोषी ठहराये गये। इसपर उन्होंने निस्तब्धतापूर्वक दण्ड सह

तथा अपमान स्वीकार कर लिया और क्रमागत तीन दिनतक कदर्य्य भोजन ग्रहण करते रहे ; किन्तु अपने उस दोषी साथीको पकड़वा न दिया। यह सब कार्य्य उन्होंने इसलिये किया न था, कि उस दोषी मनुष्यसे उनकी विशेष मैत्री थी ; अपने स्वाभाविक अभिमान और आत्माकी दृढ़ताके कारण ही उनकी ओरसे इतना कष्टस्वीकार प्रकाश किया गया था। आकस्मिक मनोवेगसे प्रणोदित हो जाना उनके लिये स्वभावकी बात थी। उनका क्रोध जिस आसानी और प्रचण्डतासे उत्पन्न होता ; उसी शीघ्रतासे दूर भी हो जाता था। उनके स्वभावमें अत्याचारकी प्रवृत्ति न थी और कोई क्रूर मनोवेग अधिक समयतक उन्हें अपने वशमें रख न सकता था।

कोई पन्द्रह सेर वजनकी पीतलकी छोटीसी एक तोप है, जो आज भी कोरसिका-द्वीपमें एक मनोहर स्मारकके रूपमें रक्षित रखी हुई है। यह नेपोलियनकी आरम्भिक और बड़े आदरकी खेलकी सामग्री थी। इसकी उच्चध्वनि उनके बाल्यस्वभावसुलभ कानोंको सङ्गीतध्वनि जैसी प्रतीत होती थी। वह अपनी काल्पनिक लड़ाइयों-में अपनी इस भीषण तोपके वारंवार चलनेसे समूचे रिसालेके कट जानेका सुख-स्वप्न देखा करते थे। नेपोलियन अपने पिताके प्यारे पुत्र थे और वह प्रायः ही उनके घुटनेपर बैठ धड़कते हुए हृदय, फूलती हुई छाती और अश्रुपूर्ण लोचनसे उन खूनी लड़ाइयोंके वर्णनकी आवृत्ति सुना करते थे, जिनमें कोरसिकाके स्वदेशभक्त विज-यिनी फ्रान्सीसी सैन्यके सम्मुख अवनत होनेपर बाध्य हुए थे। इन लड़ाइयोंका हाल सुन नेपोलियन फ्रान्सीसियोंसे घृणा करने लगे थे। वह अपनी कल्पनामें यह लड़ाइयाँ फिरसे लड़ते थे। वह अपने विचार द्वारा युद्धके लिये सुसज्जित शत्रु-दलका फटकर टुकड़े-टुकड़े होनेवाले ग्रेप-शाट गोलोंकी चोटोंसे ध्वंस होना, छत्रभङ्ग होनेवाले शत्रु-दलका भागना और शत्रुके मरते हुए या मृत योद्धाओंसे युद्ध-स्थलका परिपूर्ण होना देख बड़ा ही आनन्द प्राप्त किया करते थे।

वह अपना गेंद और बल्ला तथा पतङ्ग और झिलकारियाँ औरोंके लिये छोड़ ऐसे वीरोचित खेलों होसे आनन्दवर्द्धक आमोद उपभोग किया करते थे।

यह अपनी माताके मुखसे उनके उस समयके कष्टों और यन्त्रणाओंकी बातोंको सुनना बहुत पसन्द करते थे, जिस समय वह अपने पति तथा छत्रभङ्ग कोरसिकनोंके साथ विजयिनी शत्रु-सैन्यके सम्मुखसे एक ग्रामसे दूसरे ग्राम और एक दुर्गसे दूसरे दुर्गकी ओर भागती फिरती थीं। उनकी माता अपनी उच्च मानसिक वृत्तिके प्रमादसे अपने उन निस्तब्ध, चिन्ताशील और विमर्ष श्रोता पुत्रकी असाधारण शक्तियोंसे अनभिज्ञ न रहनेपर भी यह बात कदाचित् ही जान सकी होंगी, कि वह उन कहानियोंको सुना अपने उन पुत्रके हृदयके वीरोचित् भावोंका प्रतिपालन कर रही थीं। नेपोलियनके चरित्रमें आनन्दोल्लासकी प्रबलता न थी। वह अपने बाल्यमें हो या यौवन तथा पूर्ण वयसमें, कभी तुच्छ आमोद-प्रमोद या प्रचलित प्रथानुसार कामासक्ति या दारासक्ति आदिके वश न हुए। नेपोलियनने सेण्ट हेलिनामें कहा था,—"मेरी माता मुझे प्यार करती हैं; मेरे लिये वह अपनी प्रत्येक वस्तु; यहाँतक, कि अपने पहननेका अन्तिम वस्त्रतक बेच सकती हैं।" अपने पुत्र नेपोलियनके सेण्ट हेलिनामें देहत्याग करनेके एक वर्ष बाद सन् १८२२ ई० में फ्रान्सके मारसेलेस स्थानमें इन प्रसिद्ध महिलाका देहान्त हुआ। इनकी मृत्युके समय इनकी सात पुत्र-कन्यायें जीवित थीं। इन सातोंको इन्होंने कोई साठ-साठ लाख रुपये नक़द प्रदान किया था। फिर; अपने भाई कारडिनल फ़िसके लिये वह यूरोपकी अत्युत्कृष्ट सजावटों—गृहाभरण, चित्रों और मूर्त्तियोंसे सुसज्जित अपना सुविशाल प्रासाद छोड़ गई थीं। इन मर्य्यादान्विता भद्र महिलाके उच्च चरित्रका मर्म्म निम्नलिखित एक घटनासे अच्छी तरह व्यक्त होता है।

नेपोलियनके राजसिंहासन प्राप्त करनेके उपरान्त ही एक दिन सेण्ट क्लाउड बागमें उनकी मातासे उनकी भेंट हो गई। उस समय यह सम्राट् अपने सभासदोंसे घिरे हुए थे। अपनी माताको अपने सम्मुख देख उन्होंने कुछ क्रीड़ासक्तिसे यूरोपीय राजप्रथानुसार अपना हाथ अपनी माताके चुम्बन करनेके लिये उनकी ओर बढ़ाया। इसपर उनकी माताने अपना हाथ उनकी ओर बढ़ाकर अतीव गम्भीरतापूर्वक कहा,—"नहीं, वत्स! नहीं। ऐसा होना उचित नहीं। यह मेरा नहीं; तुम्हारा कर्त्तव्य है, कि तुम उसका हाथ चूमो, जिसने तुम्हें जीवन प्रदान किया है।"

नेपोलियनने कहा है,—"पथप्रदर्शक और अभिभावकसे रहित हो मेरी माता सारे कार्य्यका तत्त्वावधानभार अपने ऊपर धारण करने पर बाध्य हुईं, किन्तु यह श्रम उनकी शक्तिसे बाहरका न था। वह ऐसी बुद्धिमत्तासे प्रत्येक बातका प्रबन्ध करती और प्रत्येक वस्तु का संग्रह करती थीं; जैसी बुद्धिमत्ता न तो उनके वयस न उनकी जाति हीसे प्रतीक्षित हो सकती थी। मेरी माता स्त्री नहीं, स्त्री-रत्न हैं; उनके जोड़की स्त्री हमें कहीं दिखाई नहीं देती। वह अप्रतिम उद्वेगपूर्वक हमारा निरीक्षण किया करती थीं। हमारे मनमें उत्पन्न होनेवाले प्रत्येक छोटे विचारों और स्वार्थपर वृत्तिको वह निवृत्त और स्थानच्युत किया करती थीं। वह महत् तथा उन्नत बनानेवाली बातोंको ही हमारी बालस्वभावसुलभ बुद्धिमें जड़ जमाने देती थीं। वह मिथ्यासे अतीव घृणा करती थीं और अवज्ञासूचक छोटेसे भी छोटे कार्य्यको सहन न करती थीं। हमारे किसी भी दोषसे उपेक्षा की न जाती थी। उनपर क्षति, अभाव या क्लान्तिका कोई प्रभाव होता न था। वह सभी सहन करती थीं; सभीके सम्मुखीन होती थीं। उनमें पुरुषजैसी मानसिक शक्ति थी, जिसमें स्त्री-जातिका माधुर्य्यपूर्ण कोमलता मिली हुई थी।"

यह परिवार जिस ग्राम्य गृहमें रहता था, वह गृह इस परि-

वारके एक अविवाहित चाचाका था। वह अतीव धनी थे; साथ-साथ अतीव कृपण भी थे। नेपोलियन और उनके भाई-बहन यद्यपि जीवनोपयोगी सभी वस्तुओंका प्रचुर सुख भोगा करते थे; तथापि बहुत थोड़ा धन पानेके कारण वह सब उन छोटे-छोटे सुखों और आमोदकी उन असंख्य सामग्रियोंको खरीद न सकते थे, जिनके खरीदनेकी लालसा प्रत्येक बालक किया करता है। जब-जब वह उनसे साहसपूर्वक पैसे माँगा करते थे; तब-तब वह समान-रूपसे अपनी दरिद्रताकी आपत्ति उपस्थित किया करते और उन्हें इस बातका विश्वास दिलाया करते, कि उनके पास अङ्गूरके कुञ्जों, बकरियों तथा गृहपालित कुक्कुटादिका अभाव न रहनेपर भी; धन नहीं। अन्तमें एक दिन एक अलमारीपर गुप्तभावसे रखा हुआ अशरफियोंका एक तोड़ा इन बालकोंने देख पाया। इसे देख इन सबने एक कुचक्र रचा। पालिन इस कुचक्रमें मिलाई गई, जो अपनी अल्पवयस्कताके कारण अपने द्वारा होनेवाले कुकार्य्यका मर्म्म समझ न सकी। इसके उपरान्त पैसे माँगे गये और जिस समय इन बच्चोंके चाचा इनके सम्मुख अपनी निर्धनताकी आपत्ति उपस्थित करने लगे; उस समय पालिनने उचककर अशरफियोंकी वह थैली उस अलमारीसे खींच ली। चमकीले स्वर्ण मुद्रा फर्शपर बिखर गये। यह देखकर वह बच्चे खिलखिलाकर हँस उठे; उधर उन वयोवृद्ध भद्र पुरुषका मारे क्रोधके बुरा हाल हुआ। ठीक इसी समय इन बच्चोंकी माताने इस कोठरीमें प्रवेश किया। उन्हें देखते ही इन बच्चोंका सारा आनन्द भाग गया। उन्होंने अपने बच्चोंको उनके अनुचित व्यवहारके लिये खूब डाँट बताई और उन्हें उन बिखरी हुई अशरफियोंके चुननेका आदेश किया।

जब कोरसिका द्वीपने फ्रान्सीसियोंके हाथ आत्मसमर्पण किया था; तब फ्रान्स-सरकारकी ओरसे काउण्ट मारबिउफ इस द्वीपके गवरनर नियुक्त किये गये थे। नेपोलियनकी माताके सौ-

न्दर्य्य और उनकी प्रचुर मानसिक शक्तिने उनकी ओर इन गवर-नरका ध्यान आकृष्ट किया और तभीसे वह प्रायः ही इस द्वीपके क्षुद्र अथच कुलीन सम्प्रदायकी मण्डलीमें मिला-जुला करते थे। अन्तमें वह इस परिवारके परम मित्र बन गये और नन्हे नेपोलियनकी भलाईके विषयमें बड़ा अनुराग प्रकाशित करने लगे। बालक नेपोलियनके गाम्भीर्य्यने, उनकी चिन्ताशील विमर्ष आकृतिने और उनके उस बाल्य ही में प्रकट होनेवाली मन्तव्यकी प्रामाणिक प्रणालीने इन गवरनरका ध्यान सविशेष रूपसे अपनी ओर आकृष्ट किया और उन्होंने उसी समय यह भविष्यवाणी की, कि नेपोलियन अपने जीवनमें अपने लिये असाधारण प्रभाविशिष्ट पथ उन्मुक्त करनेमें समर्थ होंगे।

जिस समय नेपोलियन केवल पाँच या छः वर्षके थे; उस समय कितने ही अन्यान्य बालकोंके साथ वह एक स्कूलमें पढ़ने बैठाये गये। वहाँ एक सुकेशी नन्हीसी लाडिलीने उनके नन्हेसे हृदयको हर लिया। यह नेपोलियनका प्रथम अनुराग था। उनका उग्र-स्वभाव सर्वतोभावसे इस नये प्रेममें निविष्ट हुआ और उन्होंने अपनी प्रियतमाके हृदयमें वैसा ही प्रबल अनुराग उत्पन्न कर दिया, जैसा अनुराग उनकी प्रियतमाने उनके हृदयमें उद्दीप्त किया था। वह अपनी प्रियतमा जिआकोमिनिट्टाका हाथ पकड़कर स्कूलसे आया और वहाँ जाया करते थे। अपनी प्रियतमाके साथ वार्त्तालाप और सोच-विचार करनेके लिये उन्होंने अन्यान्य बालकोंका सब तरह-का संसर्ग और खेल परित्याग कर दिया था। इस प्रणयपूर्ण दम्पतीके बीचका प्रेमभाव-विकास देखकर, अधिक वयसके बालक और बालि-कायें खूब हँसा करती थीं। किन्तु इनकी हँसीके प्रभावसे नेपोलियन तनिक भी लज्जित होते न थे। इसके बदले उनका अपमानसूचक विद्रूप देखकर नेपोलियनको प्रायः ही क्रोध आता और वह अपने प्रति-द्वन्द्वियोंकी संख्या या वयसका कोई विचार न कर डण्डा, पत्थर

या अपने सम्मुख आनेवाली किसी भी वस्तुको ले अपने शत्रुओंके बीच घुस जाते और परिणामकी चिन्ता छोड़ इस औद्वत्यसे आक्रमण करते, कि उनके शत्रुओंको प्रायः भागते ही बन आता था। इसके उपरान्त वह एक विजयीके दर्पके साथ अपनी नन्हीसी प्रियतमाके पास लौटते और उसका हाथ अपने हाथमें ले लेते थे। अपने जीवनके उस भागमें नेपोलियन अपने परिच्छदकी ओरसे बहुत बेपरवा रहते और वह प्रायः नित्य ही ऐसे मोजे पहनते, जो खिसककर उनकी एड़ीतक पहुँच जाते थे। यह देखकर कुछ रसिक बालकोंने दोपद गढ़ लिये थे, जो उस स्कूलकी क्रीड़ा-भूमिमें चीखे जाते और जिन्हें सुन इन बालक प्रेमीको कम मनोव्यथा न होती थी।

उलटे मोजे मनमें यार।
नेपोलियनका देखो प्यार॥

जब नेपोलियन दश वर्षके हुए; तब उनके लिये काउण्ट मारबिउफने फ्रान्स-राजधानी पेरिसके समीपस्थ ब्रिएन्नीके सैनिक स्कूलका प्रवेशाधिकार प्राप्त किया। इस घटनाके कोई चालीस वर्ष बाद नेपोलियनने कहा था, कि उस समय अपनी मातासे विदा ग्रहण करते समय जो यन्त्रणा मैंने अनुभव की थी, वह आजन्म मुझे याद रहेगी। नेपोलियन सभी बातोंमें औदासीन्य प्रकट किया करते थे; किन्तु उस समय उनकी उदासीनता उनसे दूर हो गई थी और वह अपनी मातासे बिछुड़ते समय साधारण बालकोंकी तरह रो उठे थे। वह इटली प्रवेशकर फ्रान्स पार करते हुए पेरिस पहुँचे। जिस समय इन नवयुवक कोरसिकावासीने अपने भय-स्तम्भित नेत्रोंसे उस राजधानीका ऐश्वर्य्य निरीक्षण किया; उस समय वह यह बात सोच न सके थे, कि एक दिन ऐसा भी आनेवाला था, जिस दिन इस राजधानीके जनाकीर्ण बाजार उनकी जयध्वनिसे मुखरित होनेको थे और उन दीप्तिमान् प्रासादोंमें यूरोपके अतीव अभिमानी राजे

तथा रानियाँ उनका आनुगत्य प्रकाशित करती हुई उनको अप्रथित शक्तिके सम्मुख अवनत होनेकी थीं।

यह उत्साहपूर्ण और पाठाभ्यस्त बालक इस स्कूलमें शीघ्र ही सुप्रतिष्ठित हो गये। उनके लिये फ्रान्सीसी भाषा एक अपरिचित भाषा थी और उनकी भाषा इटालियन होनेके कारण उन्हें उनके साथी एक वैदेशिक मनुष्यजैसा समझते थे। उन्हें दिखाई दिया, कि उनके अधिकांश सहपाठी फ्रान्सके धनी-मानी कुलीन पुरुषोंके पुत्र थे। उनकी जेबें धनसे परिपूर्ण होती थीं और वह अतीव निरर्थक व्ययको प्रश्रय दिया करते थे। फ्रान्सके दाम्भिक अथच भ्रष्ट और निस्तेज रईसोंके इन अयोग्य पुत्रोंने उस समय उन अकेले और मित्रविहीन बालकके प्रति जिस अहङ्कारसे देखनेका बहाना किया था; नेपोलियनके मनपर उसका बड़ा प्रभाव हुआ था और वह उनके मनसे कभी दूर न हुआ। उस राष्ट्रविप्लवीय महाद्वंद्वों; उस ध्वंस तथा प्रचण्ड आँधियोंसे परिपूर्ण सुदीर्घ तथा घोर दिनने उस समय अस्पष्ट रूपसे प्रकट होना आरम्भ कर दिया था। आग्नेय गिरिके जिस उत्थानने शीघ्र ही उपस्थित हो, प्रार्थना-मन्दिरोंकी वेदियों और सिंहासन दोनोंको उड़ा दिया; जिसने फ्रान्सके समस्त पवित्रसे भी पवित्र संस्थापनोंको गिरा विशृङ्खलित ध्वंसमें परिणत कर दिया; सन्निकट होते हुए आग्नेयगिरिके उसी उत्थानकी अशुभ गड़गड़ाहट देशके कानोंको मन्द-मन्द सुनाई देने लगी थी।

उन अभिजातवर्गीय प्रभुताके दिनों कुलीनवर्ग उन लोगोंको सर्वथा घृणाकी दृष्टिसे देखा करता था, जो लोग अपने भरणपोषणके लिये अपने किसी तरहके भी उद्यमपर निर्भर किया करते थे। इसी-लिये ब्रिएन्नीके कुलीन नवयुवक नेपोलियनको एक कोरसिकावासी वकीलका पुत्र बता ताने दिया करते थे। इन अपमानोंसे नेपोलि-यनकी अभिमानी आत्माके मर्म्मस्थानको वेदना हुई। जो घृणा

सहन करनेके लिये वह बाध्य हुए थे और जिससे रक्षा पानेका उनके पास कोई उपाय न था ; उस घृणाने उनका स्वभाव उत्तेजित कर दिया। उसी समय उनके मनमें यह धारणा उत्पन्न हो आजन्म उनके साथ रही, कि उच्चपद आकस्मिक कुलीनताके विचारसे नहीं ; योग्यता होके विचारसे मिलना चाहिये। इसतरह उन्होंने उसी समय इस साधारणतन्त्रो मूल सूत्रको स्वीकारकर अपनी अतीव व्यथाको एक घड़ीमें कहा था,—"इन फ्रान्सीसियोंसे मैं घृणा करता हूँ और यथासाध्य मैं इनका अनिष्ट साधन करूँगा।"

इस घटनाके कोई तीस वर्ष बाद नेपोलियनने कहा था,—"साधारण लोगोंके आज्ञानुसार मैं राजसिंहासनपर पहुँचा; मेरा अपना सदाका यह मत है, कि कुलीनताका पार्थक्य छोड़कर स्वाभाविक क्षमताके ही लिये सांसारिक जीवनका पथ उन्मुक्त होना चाहिये।"

अपने मनको ऐसी अवस्थाके कारण नेपोलियन अपने सहपाठियोंका साथ प्राय: सम्पूर्ण रूपसे छोड़कर एकान्तवासी हुए और अपना समय मानचित्रोंके अवलोकन तथा पुस्तकोंके अध्ययनमें अतिवाहित करने लगे। एक ओर उनके सहपाठी अपना समय कुकर्म्म तथा तुच्छ आमोद-प्रमोदमें नष्ट करते थे, दूसरी ओर नेपोलियन अपने दिन और रातोंको अविश्रान्तरूपसे प्रगाढ़ मनोनिवेशपूर्वक विद्याध्ययन करनेमें व्यय करते थे। उन्होंने बहुत ही शीघ्र अपनेको अपने सहपाठियोंसे ऊँचा बना लिया और वह उनकी प्रतिष्ठा अर्जन करनेमें समर्थ हुए। कुछ ही समयके उपरान्त नेपोलियन इस स्कूलके उज्ज्वलतर रत्न समझे जाने लगे और उन्हें अपनी यह विदित शक्ति और अपना निर्विकार उच्च पद देख परमोल्लास प्राप्त हुआ। गणित-सम्बन्धीय हर तरहके अभ्यासमें वह अतीव प्रख्यात हुए। इतिहास, राज्य-शासन और कार्य्योपयोगी सभी विज्ञानोंकी पुस्तकें उन्होंने अतीव आकांक्षापूर्वक अध्ययन कीं। होमर और ओसियनके काव्य-ग्रन्थ वह अतीव अनुरागपूर्वक वारंवार अध्ययन किया करते थे।

उनकी बुद्धिने काव्य तथा कार्य्योपयोगको बड़ी ही समानतासे मिला दिया था। उस समय अपनी माताको एक पत्र लिखकर उसमें उन्होंने कहा था,—"अपनी तलवार अपनी बगलमें और होमर अपनी जेबमें रखकर मैं जगत्में अपना पथ प्रस्तुत कर लेनेकी प्रस्तावना करता हूँ।" उनके बहुतेरे साथी उन्हें विमर्ष और चिड़चिड़ा समझते थे और उनकी प्रतिष्ठा करनेपर भी उनके एकान्तसेवनके आचरण और अपने आमोद-प्रमोदमें भाग न लेनेको पसन्द न करते थे। वह इस स्कूलकी क्रीडा-भूमिमें बहुत कम दिखाई देते थे; इसके बदले अपना अवकाशका समय पुस्तकालयमें बैठ ग्रन्थावलोकनमें ही अति-वाहित किया करते थे। 'प्लूटार्चकी कहानियां' उन्होंने ऐसी सम्पूर्णता और ऐसे प्रबल अनुरागसे अध्ययन की थीं, कि उनकी सारी आत्मा इन प्रसिद्ध पुरुषोंके भावोंसे रञ्जित हो गई थी। यूनानी तथा रोमन कहानियों, साम्राज्योंके उत्थान-पतन तथा वीरत्वपूर्ण साहसके कार्य्योंके लोमहर्षण दृश्योंने उनके मनोभावोंको अपनेमें अभिनि-निविष्ट कर लिया था। उनमें ज्ञान-वृद्धिका ऐसा प्रगाढ़ अनुराग था, कि वह जिस दिन इस विषयमें प्रत्यक्ष उन्नति प्राप्त न करते; उस दिनको अपने जीवनका एक निरर्थक दिन समझते थे। अपने ऐसे ही कठोर मानसिक शासनके प्रसादसे उन्होंने उस एकाग्र-चित्तताकी विचित्र शक्ति प्राप्त की थी, जिसके साहाय्यसे वह सदा ही कठिनसे भी कठिन और जटिलसे भी जटिल समस्याओंका समा-धान कर लिया करते थे।

उन्होंने अपने साथी सहपाठियोंकी शुभेच्छाकी पुनःप्राप्तिका कोई भी यत्न न किया और वह अपने चरित्रके इतने कठोर तथा अपनी पद्धतिके ऐसे अशिष्ट थे, कि अपने साथियोंमें सुपरिचितरूपसे 'स्पार-टन' या कष्ट-सहिष्णुके नामसे पुकारे जाते थे। इस समय वह अपने इटालियन वर्ण, हृदयहारिणी तीक्ष्ण दृष्टि और अपने वार्त्ता-लापके प्रदर्शनकी उस शक्तिके लिये प्रसिद्ध थे, जिस शक्तिने आजन्म

बाधा देकर उन्होंने कहा,—"मैं इटलीके किसी क्षुद्र अत्याचारी पुरुषका सन्तान कहलानेकी अपेक्षा एक धार्म्मिक पुरुषका पुत्र होना अच्छा समझता हूँ। मैं चाहता हूँ, कि मेरी कुलीनता मुझीसे आरम्भ हो और मुझे यदि उपाधियां मिलें, तो फ्रान्सके साधारण लोगों होसे मिलें। अपने कुलमें मैं हाप्सबर्गका रोडोल्फ† हूँ। मेरे कुलकी प्रामाणिकता मानटोनोटोके युद्धके दिनसे आरम्भ होती है।"

पूर्व्वकालमें बोनापार्ट नामका एक दरिद्र पादरी था, जो मरकर कई शताब्दीसे अपनी समाधिमें शान्तिपूर्व्वक विश्राम कर रहा था। इस विवाहके उपलक्ष्यमें नेपोलियनकी वंशावलीको और भी प्रसिद्ध बनानेके लिये खृष्टानोंके जगद्गुरु रोमके पोपने इस मृत पादरीको खृष्टान सिद्ध पुरुषकी उपाधिसे अलङ्कृत करनेका प्रस्ताव किया। प्रत्युत्तरमें नेपोलियनने कहा,—"धर्म्मपितः! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, कि आप मुझे इस कार्य्यसे उत्पन्न होनेवाले विद्रूपसे बचायें। आप मेरे वश हैं। ऐसी दशामें सारा जगत् यही कहेगा, कि आपको मैंने अपने परिवारके एक मृत पुरुषको सिद्ध या महात्मा बनानेपर बाध्य किया।" इस विवाहके विरुद्ध कितने ही प्रतिवाद होनेपर प्रत्युत्तरमें नेपोलियनने बड़ी ही शान्तिसे कहा था,—"मुझे यदि इस बातकी सूचना न होती, कि अष्ट्रिया-सम्राट्की कन्या मेरिया लुइसाकी कुलीनता और मेरी कुलीनतामें कोई समानता नहीं, तो मैं यह वैवाहिक सम्बन्ध करनेपर कभी प्रस्तुत न होता।"

फिर भी; उत्तम कुलका जो रहस्यपूर्ण प्रभाव मानव-बुद्धिपर समान भावसे उत्पन्न हुआ करता है; नेपोलियन उससे किसी तरह भी अनभिज्ञ न थे। उनके समस्त जीवनमें उनको इस विप-

† हाप्सबर्गके रोडोल्फ एक भद्र पुरुष थे, जिन्होंने अपने बुद्धि-बल द्वारा अपनेको उन्नतकर जर्म्मनीके राजसिंहासनपर प्रतिष्ठित किया और हाप्सबर्ग राजवंशकी सृष्टि की थी। अष्ट्रियाके नरेशगण अपने इन पूर्वपुरुषका बड़ा ही अभिमान किया करते थे।

रीत भावोद्दीपित चिन्ताके द्वन्द्वके चिह्न परिलक्षित होते हैं। फ्रान्सके जिन सर्वप्रधान सेनानायकों और सुप्रसिद्ध सेनापतियोंसे फ्रान्सका राजसिंहासन परिवृत रहता था ; वह सब एकमात्र अपनी योग्यताके कारण सैन्यके साधारण पदसे उन्नत किये जाकर उन श्रेष्ठ पदोंपर प्रतिष्ठित किये गये थे ; फिर भी ; एक उत्तम कुलसे अपना सम्बन्ध स्थापितकर जगत्के इस सर्वव्यापी और स्वाभाविक कुसंस्कारसे लाभान्वित होनेके लिये ही नेपोलियनने अपनी अनुरक्ता जोजेफाइनका परित्यागकर सीजरकुल-सम्भूता एक कन्याका पाणिग्रहण किया था। जगत्की कोई भी तर्क-शक्ति मनुष्यको इस बातके लिये प्रवर्त्तित कर नहीं सकती, कि वह किसी भिखारीके पुत्र और सीजरके बालकको समान अनुरागसे देखे।

जिस समय नेपोलियनका कर्म्ममय जीवन समाप्तिके समीप पहुँच रहा था ; जिस समय सारा युरोप अस्त्र शस्त्र ग्रहणकर नेपोलियनपर चढ़ गया था ; उस समय इन सम्राट्ने ब्रिएन्नीके उसी मैदानमें अपनेको इस नैराश्यपूर्ण और अनुद्धरणीय युद्धमें प्रवृत्त पाया ; जिस मैदानमें उन्होंने अपने बाल्यमें उस बरफके दुर्गकी रचना की थी। अपने बाल्यमें जिस वृद्ध स्त्रीको वह एकबार रङ्गालयके द्वारसे निकाल चुके थे ; अपने छात्र-जीवनमें जिस वृद्ध स्त्रीसे वह प्रायः ही दुग्ध तथा फल क्रय किया करते थे ; अपने इस घोर दुर्दिनमें उस वृद्ध स्त्रीसे उन्होंने एकबार फिर भेंट की।

उसे अपने सम्मुख पाकर उससे नेपोलियनने पूछा,—"क्या तुम्हें नेपोलियन नामक वह बालक याद है, जो पूर्वकालमें स्थानीय स्कूलमें पढ़ा करता था ?"

वृद्धा। बहुत अच्छी तरह याद है।

नेपोलियन। उस समय उसने तुमसे जो चीजें खरीदी थीं ; क्या उनका मूल्य उसने तुमको चुका दिया था ?

वृद्धा। चुका दिया था। बल्कि जो बालक मुझे प्रवञ्चितकर

मेरी चीजोंका मूल्य मुझे दिया न चाहते थे, उन्हें भी दबाकर उनसे मेरी चीजोंका मूल्य मुझे वह दिला दिया करता था।

नेपोलियन। फिर भी ; सम्भव है, कि नेपोलियन तुम्हें तुम्हारे हिसाबके कुछ पैसे चुका न सका हो। ऐसी दशामें तुम्हें यह अशरफियोंकी थैली दी जाती है। इसे लेकर तुम नेपोलियनके सम्बन्धका अपना पिछला सब हिसाब चुका लो।

इसी समय नेपोलियनने अपने साथियोंको एक वृक्ष दिखाकर कहा था, कि अपने बाल्यमें मैं इसी वृक्षके नीचे बैठ असीम आनन्द-पूर्वक 'जेरेसलमका उद्धार' पढ़ा करता था और इसी जगह उष्ण ग्रीष्मकालकी सन्ध्याको बैठ मैं अकथनीय आनन्दप्रद मनोनिवेशपूर्वक सुदूरके ग्राम्य गिरजेकी चोटीपर बजते घण्टेकी ध्वनि श्रवण किया करता था। ऐसी बातें नेपोलियनको बहुत याद रहती थीं। इसके उपरान्त यह सम्राट् तोपोंके धुएँ और ध्वंसमें मृत्युकी आकांक्षा करते हुए अपने अन्तिम और नैराश्यपूर्ण युद्धमें प्रवृत्त होनेके अभिप्रायसे अपनी इस बाल्य-लीलाकी स्मृतिभूमिसे अतीव दुःखपूर्व्वक विदा हुए।

नेपोलियनके चरित्रका यह एक विशेष गुण था, कि वह अपनी प्रभुताके समय अपने आरम्भिक जीवनके आकस्मिक परिचित जनोंका भी उदारतापूर्वक स्मरण किया करते थे। अपने स्वभावकी उग्रता तथा अस्थिरताके कारण उनकी लेखनी कागजपर अपेक्षाकृत क्षिप्र गतिसे चलती थी और इसके फलसे उनकी लिखावट अतीव दुष्पाठ्य हुआ करती थी। यह देखकर ब्रिएन्नी स्कूलके नेपोलियनके लिपि-शिक्षक अतीव निराश होते और वह बेचारे अपने इन छात्रको लिपि सुधारनेके सम्बन्धमें कुछ भी कर न सकते थे। इस घटनाके कई वर्ष बाद एक दिन सम्राट् नेपोलियन सम्राज्ञी जोजिफाइनके साथ सेण्ट क्लाउड राजप्रासादके एक गृहमें बैठे थे ; ऐसे समय जीर्ण परिच्छदधारी एक दरिद्र पुरुष उनके सम्मुख उपस्थित किया गया। अपने पूर्व-

कालीन छात्रको देख कम्पितकलेवर हो इस दरिद्र मनुष्यने कहा, कि ब्रिएन्नीमें मैं आपका लिपि-शिक्षक था और अब मेरे लिये आपकी ओरसे पेनशनकी व्यवस्था होना चाहिये। इसपर नेपोलियनने क्रोधका बहानाकर कहा,—"ठीक है! आप ही मेरे लिपि-शिक्षक थे और आपने मुझे खासा लिपि-विद्या-विशारद बनाया है। जोजेफाइन होसे पूछ देखिये, कि मेरी लिपिके सम्बन्धमें उनका क्या विचार है।"

इसपर इन सम्राज्ञीने अपनी उस सद्विवेचना द्वारा, जिसने उन्हें अतीव मनोहारिणी रमणी बना रखा था, मुस्कुराते हुए कहा,—"मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ, शिक्षक महाशय! हमारे इन सम्राट्की हस्तलिपि मेरे लिये अतीव आनन्दप्रद होती है।" यह सुअवसरकी प्रशंसा सुनकर यह सम्राट् आन्तरिकतासे हँसे और उन्होंने ऐसी व्यवस्था की, जिससे उस वृद्ध मनुष्यके शेष दिन सुखपूर्वक बीते।

अपने समृद्धिकालमें साम्राज्यकी समस्त चिन्ताओंसे परिवृत रहकर भी नेपोलियन कोरसिकाकी उस दरिद्र स्त्रीको भूले न थे, जिसने उनके शैशवमें उन्हें दूध पिलाया और पाला था। सम्राट्-पद प्राप्त करते ही उन्होंने उसके लिये वार्षिक कोई छः सौ रुपये पेनशन स्थिर कर दी थी। अतीव वयोवृद्ध होनेपर भी वह भली स्त्री अपने पाले उन नन्हेसे शिशुको देखनेपर उद्यत हुई, जिनकी वृद्धिके आनन्दमें उसका भी हृदय बड़ा भाग लिया करता था। इस अभिप्रायसे उसने कोरसिका परित्यागपूर्वक पेरिसकी यात्रा की। वहाँ उस स्त्रीसे इन सम्राट्ने बड़ी ही दयालुतासे भेंट की और उस सुखी स्त्रीको उसके घर वापस भेज उसकी पेनशन दूनी कर दी।

ब्रिएन्नीके स्कूलमें नेपोलियनने प्रबन्ध-रचनाका अभ्यास करते समय अपने एक प्रबन्धमें अपने प्रजातन्त्री विचारोंको बड़ी ही स्वतन्त्रतासे लिखा था और फ्रान्सके राजपरिवारके चरित्रकी बड़ी निन्दा की थी। इसपर इन तरुणवयस्क प्रजातन्त्रीको इस स्कूलके इनस्पेक्टर-

शास्त्रके शिक्षकने इस आपत्तिजनक लेखांशके लिये बड़ी भर्त्सना की थी और इस भर्त्सनाको और भी कठोर बनानेके लिये नेपोलियनको अपना वह प्रबन्ध अग्निमें निक्षेप करनेपर बाध्य किया था। इस घटनाके दीर्घकालोपरान्त सम्राट् नेपोलियनने प्रथम कन्सलका लेवी दरबार किया और उसमें अपने छोटे भाई जेरोमको इन शिक्षकके हाथ सौंपनेके लिये इन्हें आमन्त्रित किया। इन शिक्षकसे नेपोलियनने अतीव सौजन्यपूर्वक भेंट की और जब उपस्थित कार्य्य समाप्त हो गया; तब उन्होंने अतीव प्रफुल्ल चित्तसे इन शिक्षकसे कहा, कि उस कागज जलानेवाली घटनाके बादसे समयमें बड़ा परिवर्त्तन हो गया है।

नेपोलियनने जैसे ही अपने पन्द्रहवें वर्षमें पदार्पण किया; वैसे ही उनकी पदोन्नति हुई और वह ब्रिएन्नोके स्कूलसे फ्रान्स-राजधानी पेरिसके फौजी स्कूलमें पहुँचाये गये। फ्रान्समें बारह प्रादेशिक फौजी स्कूल थे और प्रत्येक वर्ष इन बारहो प्रादेशिक स्कूलोंसे तीन-तीन छात्र उन्नत किये जाकर पेरिसके फौजी स्कूलमें पहुँचाये जाते थे। पन्द्रह वर्षसे कम उम्रका कोई भी छात्र पेरिसके फौजी स्कूलमें पहुँचाया जा न सकता था और नेपोलियनका ठीक अपने पन्द्रहवें वर्षमें ही इस स्कूलमें प्रवेश करनेका अधिकार पाना इस बातका प्रमाण है, कि छात्रोंमें उनका आसन बहुत ऊँचा था। उस समयके फ्रान्सके समर-सचिवके खातेमें नेपोलियनके इस स्कूलमें प्रवेश करनेके सम्बन्धमें निम्नलिखित उपयोगी बातें लिखी हैं:—

"राजसेवामें संलग्न होने या पेरिसके फौजी स्कूलमें प्रवेश करने योग्य राजकीय छात्रकी दशा इसतरह है:—श्रीयुत नेपोलियन बोनापार्ट सन् १७६९ ई० की १५ वीं अगस्तको उत्पन्न हुए। इनकी लम्बाई पाँच फीट छः इञ्च है। यह नीचेके स्कूलमें चार वर्ष-की शिक्षा सम्पादन कर चुके हैं। इनके शरीरका गठन अच्छा; स्वास्थ्य उत्कृष्ट; स्वभाव नम्र, सरल तथा कृतज्ञतापूर्ण और चरित्र अनु-

करणीय है। गणितशास्त्रका अतीव मनोयोगके साथ अध्ययनकर इन्होंने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। यह इतिहास और भूगोल साधारणतः उत्तमताके जानते हैं। केवल अलङ्कारकी गवेषणा और लेटिनमें इन्होंने वैसी व्युत्पत्ति नहीं पाई है। लेटिनमें केवल चतुर्थ पाठ्य पुस्तक समाप्त की है। यह एक उत्तम जहाजी हो सकते हैं। यह पेरिसके फौजी स्कूलमें प्रवेशाधिकार प्राप्त करनेके उपयुक्त पात्र हैं।"

पेरिसके जिस फौजी स्कूलमें नेपोलियनने अब प्रवेश किया; वह अभिजातवर्गीय भोग-विलासके यावत् उपादानोंसे सुसज्जित था। यह स्कूल कुलीनोंके वंशधरगणके लिये प्रतिष्ठित किया गया था, जो हर तरहके कार्य्यकी अनुमति पानेके अभ्यस्त थे। इस स्कूलमें कोई तीन सौ छात्र थे और इनमें प्रत्येक छात्रकी सेवाके लिये एक सेवक नियुक्त था। यह सेवक अपने स्वामीका घोड़ा मलता था; उनके अस्त्र-शस्त्रपर पालिश करता था; उनके जूतोंपर रोग़नाई करता था और भृत्योंके और जो आवश्यक कार्य्य होते हैं; उन्हें सम्पन्न करता था। यह सैनिक छात्र-दल सुखद शय्यापर विश्राम करता और उत्कृष्ट खाद्य द्वारा अपनी क्षुधा-निवृत्ति करता था। पन्द्रह वर्षकी अवस्थाके ऐसे बालक बहुत कम होंगे, जो इस स्कूलकी जीवन-परिपाटीका गौरव, सुख और स्वाधीनता देख आनन्दित होते न होंगे।

किन्तु नेपोलियनने इस स्कूलमें पदार्पण करते ही देखा, कि युद्धकी कठोरता और श्रम-स्वीकार करनेके लिये सैनिक अफसरोंको जैसी शिक्षा मिलनेकी आवश्यकता होती है; वैसी शिक्षा इस स्कूलमें मिल न रही थी। उन्होंने इस स्कूलके गवरनरकी सेवामें एक प्रभावपूर्ण प्रार्थना-पत्र भेज उनसे यह अनुरोध किया, कि आप का-पुरुषता तथा विलासिताको इस सैनिक स्कूलसे दूर कीजिये। उन्होंने अपने इस पत्रमें तर्क द्वारा यह कहा था, कि इस स्कूलके छात्रोंको

अपने घोड़ोंके मलने, अपने अस्त्र-शस्त्र परिष्कार करने और उन सब कार्यों तथा कष्टोंका अभ्यास आप करना चाहिये, जिनका अभ्यास उन्हें यथार्थ कार्य्यकी कठोरता और अभिभवशीलताके लिये प्रस्तुत करेगा।

नेपोलियनके बाल्य या जीवनकी ऐसी कोई घटना नहीं, जिसने उनके कार्य्यक्षम, आत्मनिर्भर और कर्तृत्वसूचक चरित्रको ऐसे निश्चित रूपसे प्रकट किया हो। इस घटनाके सम्बन्धमें नेपोलियनने जो बुद्धि, साहस और दूरदर्शिता प्रकट की थी, वह केवल परिपक्व बुद्धिके मनुष्य होकी नहीं; अतीव बुद्धिबल-सम्पन्न परिपक्व बुद्धिके मनुष्यकी थी। इसके उपरान्त उन्होंने फाण्टेनब्लो स्थानमें जो सैनिक स्कूल स्थापित किया था और जिस स्कूलकी ख्याति समग्र जगत्में फैली थी; वह स्कूल इसी तरुणावस्थाके उस प्रार्थनापत्रके आदर्शपर प्रतिष्ठित किया गया था। अपने भावी जीवनमें नेपोलियनने जो असाधारण प्रसिद्धि प्राप्त की थी, उसका सुस्पष्ट कारण इस मूलतत्त्वपर निर्भर करता था, कि उन्होंने अपने जीवनभर किसी भी मनुष्यको उस कठिनता या कष्टसहनके सम्मुखीन न किया; जिसे वह स्वयं सहन करनेके लिये सर्व्वथा प्रस्तुत न रहे हों।

पेरिसमें उनके चरित्रकी उच्चता; उनके अविराम कर्त्तव्यप्रेम; उनकी अद्भुत भाषणशक्ति और उनके प्राप्त किये असीम ज्ञानने उनकी ओर लोगोंका ध्यान अधिकतासे आकृष्ट किया। उनके एकान्त और निर्ज्जन वासके अभ्यासने और उनके साथियोंकी अकर्मण्यता और तुच्छ आमोद-प्रमोदके प्रतिकी उनकी सम्पूर्ण उदासीनताने उन्हें लोकसमारोहमें उतना प्रसिद्ध होने न दिया। फिर भी; उनकी बड़ी श्रेष्ठता सार्वत्रिकरूपसे स्वीकार की जाती थी। वह शीघ्र-शीघ्र विद्या-प्राप्तिका कार्य्य ऐसे अध्यवसायसे सम्पन्न कर रहे थे; मानो उनके भावी असाधारण जीवनकी सूचना उन्हें पहले होसे मिल गई हो और मानो उन्हें यह बात पहले होसे विदित हो

गई हो, कि ज्ञानके उस भाण्डारके भरनेके लिये अब कुछ ही मार्ग अवशेष रहे हैं, जिस भाण्डारके बलसे वह यूरोपीय संस्थाओंको नये साँचेमें ढालने और जगत्का रूप प्रायः परिवर्त्तित कर देनेको थे।

इन्हीं दिनों एक दिन वह साधारण-सम्बन्धीय किसी उत्सवके उपलक्ष्यमें मारसेलिस नगर गये। वहाँ बहुतेरे नवयुक भद्र पुरुष और बहुतेरी नवयुवती भद्र महिलायें नृत्य सम्पादनपूर्वक आनन्द उपभोग कर रही थीं। इस उत्सवकी सान्ध्य आमोदमें सम्मिलित होना नेपोलियनने अस्वीकार किया। इसपर उनमें शौर्य्यका अभाव बता उनका परिहास किया गया। प्रत्युत्तरमें नेपोलियनने कहा,— "क्रीड़ा तथा नृत्यसे मनुष्य संगठित हुआ नहीं करता।" सच तो यह है, कि अपने बाल्यसे अपनी मृत्युतक कभी उन्होंने पान-भोज-नासक्तिसे किसी प्रकारका भी आनन्द प्राप्त न किया। साधारणतः स्त्रियों और पुरुषोंके सम्बन्धमें उनका विचार बहुत ऊँचा न था। अपने दरबारमें इधर-उधर घूमनेवाले स्त्री और पुरुष चापलूसोंको धारणाशक्तिके उपयोगी आमोद-प्रमोद प्रस्तुत कर देनेके लिये वह सम्पूर्ण रूपसे इच्छुक रहते थे; किन्तु उनका अपना उन्नत मन उपयोगिता और प्रसिद्धिके महत विचारोंमें ऐसा निमग्न रहता था, कि वह ताश और यूरोपीय क्रीड़ा बिलियर्डस खेलनेको एक क्षणका भी अवकाश न पाते थे और इस तरह वह भद्र महिलाओंके प्रियपात्र होनेमें भी समर्थ हो न सके थे।

एकबार गणित-सम्बन्धीय एक अतीव जटिल प्रश्न नेपोलियनके स्कूलके दर्जेमें उपस्थित किया गया। यह जटिल प्रश्न समाधान करनेके लिये नेपोलियन बहत्तर घण्टेतक अपनी कोठरीमें बन्द रहे और अन्तमें उन्होंने उस प्रश्नका उत्तर निकाल लिया। शरीर और मनकी उनकी यह प्रचुर और अविराम श्रमकी असाधारण शक्ति उनके समग्र जीवनकी प्रत्यक्ष स्वभावसिद्धि बन गई थी। नेपोलि-यनने दैवात् या भ्रमवश प्रसिद्धि प्राप्त नहीं की थी। उनकी कार्य्य

सिद्धियाँ दैवी घटनायें न थीं, उनकी बड़ी-बड़ी कल्पनायें किसी असावधान तथा अचिन्त्यपूर्व बुद्धिमें आनेवाली उज्ज्वल क्षणिक प्रभा न थीं। अपनी श्रेष्ठताका पथ प्रस्तुत करनेके लिये यावत् उपयोगी ज्ञान प्राप्त करने और मानसिक शासन-विषयक यथासम्भव उच्चतर पद प्राप्त करनेमें नेपोलियनने जैसी अक्लान्त ऐकान्तिकता प्रकट की थी; वैसी अक्लान्त ऐकान्तिकता कभी कोई भी मनुष्य प्रकट कर न सका था। यह सत्य है, कि नेपोलियनमें अद्भुत तेजकी स्वाभाविक मानसिक शक्ति थी; किन्तु उस शक्तिको उन्होंने अपने अतिशय कठिन विद्याभ्यास द्वारा बढ़ाया और शक्तिसम्पन्न किया था। उनकी सुदृढ़ बुद्धिने उन्हें अपनी प्रत्येक प्रकारकी कामनाको उत्सर्ग करने और निद्राहीन श्रममें प्रवृत्त होनेके लिये अग्रसर कर दिया था।

नेपोलियनका मानसिक बल जिसतरह उनकी बातोंसे; उसीतरह उनकी प्रबन्ध-रचनासे भी प्रकट होता था। उनके प्रबन्ध-रचनाके शिक्षकने कहा था, कि नेपोलियनका लेख-विस्तार मुझे सदा,—"आग्नेय गिरिसे उत्थित ज्वलन्त पदार्थ" का स्मरण कराया करता है। जिस समय नेपोलियन पेरिसके सैनिक स्कूलमें थे; उस समय उनकी कौतूहलप्रद मानसिक सम्पत्तिका और उनकी धारणा-शक्तिका प्रसार देखकर धर्मयाजक रेनाल ऐसे प्रबलरूपसे प्रभावान्वित हुए, कि वह नेपोलियनके षोड़शवर्षीय बालक होनेपर भी उन्हें प्रात:कालीन भोजनके लिये अन्यान्य सुप्रसिद्ध पुरुषोंके साथ अपने घर आमन्त्रित किया करते थे। उस समय उनका मन उस न्यायशास्त्रानुमोदित सम्पूर्णतामें निर्दिष्ट हो चुका था, जिसमें पुरुषोचित विचार की अतीव उज्ज्वल शक्तियाँ मिली हुई थीं। उनकी संक्षिप्त, सुवर्णित और अर्थबोधक बातें सभीका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करती थीं। यदि जीवनके फेरने उनका अदृष्ट कुछ और तरहसे रच दिया होता, तो वह जिसतरह युद्धस्थल या मन्त्रिमण्डल-

में प्रसिद्ध हुए थे; उसीतरह साहित्यक्षेत्र या विज्ञान-मन्दिरोंमें भी प्रसिद्धि प्राप्त करते। सभी स्वीकार करेंगे, कि वह अतीव चिन्ताशील पुरुष थे और उनकी प्ररोचक घोषणायें यूरोपको प्रतिध्वनित किया करती थीं; फौजोंको जगा उन्हें उन्मादजैसे उत्साहसे परिपूर्ण किया करतीं और राजों तथा कृषकों सभोंको समानभावसे तड़ित्-विशिष्ट बना दिया करती थीं। नेपोलियन जिस नियत कार्य्यानुष्ठानमें अपने बुद्धि-बलका प्रयोग करते, उनकी वह पूर्ण बुद्धि उसी कार्य्यमें अपना सर्वश्रेष्ठत्व प्रकट किया करती थी। उनकी सैनिक विजय श्रेष्ठ होनेपर भी; उनकी सिद्धियाँ श्रेष्ठतर थीं।

सन् १७८५ ई० के सितम्बर मासमें जब नेपोलियन केवल सोलह वर्षके थे; तब उन्हें एक सैनिक पद देनेके लिये उनकी परीक्षा ली गई। पेरिसके प्रसिद्ध ला प्लेस स्थानमें गणित-शास्त्रीय शाखाकी परीक्षा हुआ करती थी। नेपोलियन इस अति कठिन परीक्षामें ऋयोल्लासपूर्वक उत्तीर्ण हुए। इतिहासमें उन्होंने अतीव विस्तृत व्युत्पत्ति प्राप्त की थी। उनकी घोषणायें; उनकी प्रकाश्य वक्तृतायें, अपनी मन्त्रिसभामें अपने मन्त्रियोंसे होनेवाले उनके तर्क-वितर्क; इन सभोंसे उनकी वह दार्शनिक सूक्ष्मदर्शिता प्रतिपादित होती है; जिससे उन्होंने अतीतकी लिखित बातों और साम्राज्योंके उत्थान और पतनके कारणोंका अनुशीलन किया था। जिस समय उनकी इतिहासकी परीक्षा समाप्त हुई थी, उस समय उनके हस्ताक्षरके सम्मुख उनके इतिहासके शिक्षक श्रीयुत केरुग्लियनने लिख दिया था,—"अपने जन्म और चरित्रसे कोरसिकावासी हैं। यदि अदृष्टकी कृपा हुई, तो यह नवयुवक मनुष्य इस जगत्में अपने लिये प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।" यह शिक्षक अपने इन तेजस्वी छात्रके प्रति अतीव अनुरक्त थे। उन्हें वह प्रायः ही भोजनार्थ आमन्त्रित करते और उनकी आस्था संग्रह करनेका प्रयास किया करते थे। इन शिक्षककी इस कृपाको नेपोलियन अपने भावी जीवनमें भूल न गये।

इन शिक्षककी मृत्युके बहुत समयके उपरान्त इनकी स्त्रीके लिये उन्होंने प्रचुर धनकी पेनशन निर्दिष्ट कर दी थी। अपने परीक्षा-फलके अनुसार नेपोलियन तोपखानेकी एक सैन्यमें द्वितीय लेफटिनेण्ट बनाये गये। अपने जीवनकालके आरम्भमें इसतरह सैनिक अफ-सरी पाकर नेपोलियन अतीव प्रमुदित हुए। एक षोड़शवर्षीय बालककी यह सफलता मानवीय ऐश्वर्य्यका अत्युच्च पद प्रतीत हुई होगी।

इसी दिन सन्ध्याको अपनी नई वर्दीसे सुसज्जित हो, उस समय-की फ्रान्सीसी गोलन्दाजोंकी पद्धतिके अनुसार दोनो कन्धोंपर बड़े-बड़े झब्बे लगा और अपने पैरोंमें बड़े-बड़े बूट चढ़ा, अतिशय प्रफुल्लतासे चमकते-दमकते वह अपनी एक स्त्री मित्र श्रीमती बीबी परमनके मकान पहुँचे। काल पाकर यही एब्राण्टेसकी डचेज हुईं और यह नेपोलियनके दरबारमें परम रूपवती रमणी समझी जाती थीं। जिस समय नेपोलियन इन बीबीके मकान पहुँचे; उस समय इनकी एक छोटी बहन वहाँ उपस्थित थीं; वह एक स्कूलका छात्रीवास परित्यागपूर्वक उसी समय वहाँ पहुँची थीं। नेपोलियनका स्त्रीवत् अनुपात उनके सैनिक वेशके उतना अनुकूल न था और उस समयका उनका वह हास्यजनक रूप उन नवयुवतीको इतना खटका, कि वह मारे हँसीके लोट-पोट हो गईं और उन्होंने कहा, कि इस समय नेपोलियनका रूप 'बूटमें बिल्ली' से मिल गया है। यह विद्रूप ऐसा ठीक था, कि इसका अनुभव न करना असम्भव था। नेपोलियन इस हँसीसे उत्पन्न होनेवाली आत्म-ग्लानि दबाकर शीघ्रही अपनी अभ्यस्त प्रशान्तचित्तता प्राप्त करनेमें समर्थ हुए। इस घटनाके कुछ दिन बाद उस दिनकी हँसीसे अपने बुरा न माननेका प्रमाण देनेके लिये नेपोलियनने इस आनन्दमयी कुमारीको सुचारुरूपसे वेष्टित 'बूटमें बिल्ली' नाम्नी पुस्तककी एक प्रति भेंटमें दी।

यह नया पद प्राप्त करनेके उल्लाससे उल्लसित नेपोलियन अपनी सैन्यमें सम्मिलित होनेके लिये शीघ्र ही पेरिससे वेलेन्स पहुँचे। उनके अतीव विद्याभ्यसनने उनकी अङ्ग-प्रत्यङ्गकी समुचित उन्नतिमें बाधा उपस्थित की थी। उनकी देह अतीव दुर्बल और भङ्गुर होनेपर भी उनके आकारसे बालिकाओंजैसी धज और माधुरी प्रकट होती थी और उनका उन्नत ललाट तथा तीक्ष्ण दृष्टि अपनी ओर लोगोंका ध्यान आकृष्ट करती और प्रतिष्ठा सञ्चित करनेमें समर्थ होती थी। उस स्थानकी एक अतीव प्रसिद्ध महिला बीबी कोलोम्बियरका ध्यान उन नवयुवक लेफटिनेण्टकी ओर विशेष रूपसे आकृष्ट हुआ। नेपोलियनको वह बीबी अपने घर प्रायः ही निमन्त्रित किया करती थीं। वहाँ उन्हें अतीव सभ्य और बुद्धिसम्पन्न समाजमें सम्मिलित होनेका अवसर प्राप्त हुआ। अपने भावी जीवनमें वह इस विशुद्ध तथा परिमार्जित समाजकी आरम्भिक परिचय-प्राप्तिको प्रायः ही कृतज्ञता-पूर्वक स्मरण किया करते थे। बीबी कोलोम्बियरके एक कन्या थीं, जो नेपोलियन होके वयसकी नवयुवती और विविध गुणसम्पन्ना थीं। उनसे नेपोलियनने बड़ी घनिष्ठता कर ली। यह दोनो प्रायः ही प्रातःकाल तथा सन्ध्याको वेलेन्स नगरके पार्श्वकी सुखद राहोंमें घूमा करते थे।

कुछ समय बीतनेपर नेपोलियनने अपनी तरुणाईकी इस घनिष्ठताके सम्बन्धमें कहा था,—"कल्पना द्वारा जैसे निर्दोष जीवोंकी सृष्टि की जा सकती है; हम दोनो वैसे ही निर्दोष जीव थे। हम दोनो अल्प समयकी भेंट उद्भावित कर लिया करते थे। इनमें एक भेंट मुझे अच्छी तरह याद है। वह एक मध्य ग्रीष्मकालके सवेरे उस समय हुई थी; जिस समय दिनका प्रकाश प्रकट हो रहा था। यह बात कठिनतासे मानी जायेगी, कि इस भेंटका हमारा सारा सुख यह था, कि हम दोनोने एक साथ शेरी फलका आहार किया था।" घटनाक्रमसे यह दोनो नवयुवक मिल एक दूसरेसे शीघ्र ही जुदा हो

गये । इसके उपरान्त कोई दश वर्षतक इन दोनोंकी पारस्परिक भेंट न हुई । इस अवसरमें नेपोलियन फ्रान्स-सम्राट् हो गये । एक दिन वह अपनी भड़कीली सवारीके साथ लायन्स नगरके बीचसे निकल रहे थे ; ऐसे समय उन्हें उन युवतीने देखा । उस समय वह विवाहिता स्त्री थीं और भाँति-भाँतिके दुःखभोग चुकी थीं । नेपोलियनकी राजकीय शिष्टाचारसे परिवृत रहनेपर वह युवती रमणी उनके पास कुछ कठिनतासे पहुँच सकीं । नेपोलियन उसी समय अपनी उन पुरानी सखीको पहचान गये और उनसे उन्होंने उनके दुःख और सुखका विवरण विस्तारपूर्वक पूछा । उन्होंने उसी समय उन युवतीके पतिको अतीव योग्यताका एक पद प्रदान किया और उन युवतीको अपनी एक बहनकी मेड आव् आनर या सहेली बनाया ।

लायन्स नगरमें कुछ अशान्ति उपस्थित होनेके फलसे नेपोलियन अपनी सैन्यके साथ वेलेन्ससे लायन्स गये । वह लेफ्टिनेण्टके रूपमें जो वेतन पाते थे, वह बहुत थोडा था और उससे वह एक भले आदमीकी तरह रह न सकते थे । उस समय नेपोलियन केवल सत्रह वर्षके थे और उनसे छोटे छः बच्चोंका भरण-पोषण करनेके कारण नेपोलियनकी बेवा माँ उनको कुछ भी धन-साहाय्य दे न सकती थीं । इस आर्थिक कष्टके कारण इन उग्रस्वभाव नवयुवक अफसरको तीक्ष्ण आत्मग्लानिके सम्मुखीन होना पडा । फिर भी ; इससे उनके उत्साहमें कुछ भी कमी न हुई और उनके मनमें बाल्य से पलनेवाले उनकी विचित्र विवेकबुद्धिके इस विश्वासमें तनिक भी न्यूनता न हुई कि उन्हें असाधारण शक्ति प्रदान की गई थी और वह सौभाग्यका ऊँचा पद प्राप्त करनेके लिये उत्पन्न किये गये थे । वह अपने साथी अफसरों तथा आमोद-प्रमोद और पान-भोजनासक्तिके स्थानोंको छोड एकान्तमें बैठ अपनी विद्याशिक्षामें प्रवृत्त हुए । अक्लान्त उत्साहपूर्वक वह एकबार फिर ज्ञान-सञ्चयमें

प्रवृत्त हुए और इसतरह वह अपने ज्ञानका वह अटूट भाण्डार भरने और मानसिक शासनका वह गुण प्राप्त करने लगे, जो उनके भावी ऐश्वर्यमय जीवनमें अचिन्त्य उपकारका कारण हुआ।

लायन्समें मित्रविहीन और दरिद्र नेपोलियन पीड़ित हुए। इस नगरके एक होटलकी सबसे ऊपरकी एक छोटी कोठरी नेपोलियनने ले रखी थी और वह इसी कोठरीमें अपनी पीड़ाकी अवसन्नता तथा कष्टके क्लान्तिजनक समयमें पड़े रहते थे। उन दिनों जिनेवाकी एक भद्र महिला अपने किसी मित्रसे भेंट करनेके लिये लायन्स आई थीं। उन्होंने दैवात् यह सुना, कि एक नवयुवक सैनिक अफसर अमुक होटलमें पीडाक्रान्त हो पड़े हैं। नेपोलियनके सम्बन्धमें उन्हें केवल इतना ही विदित हुआ था, कि वह अतीव नवयुवक है, उनका नाम नेपोलियन है और उनके पास उतना धन नहीं। यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि उस समय नेपोलियनका नाम प्रसिद्ध न था। इन भद्र महिलाकी परोपकारिणी बुद्धिने उन्हें नेपोलियनकी शय्याके समीप पहुँचाया। नेपोलियन अपने जिस माधुर्यसे अपने पास आनेवाले सभी मनुष्योंको मुग्ध करते थे; उन्होंने अपने उसी माधुर्यसे उन भद्र महिलाको भी तुरन्त ही मुग्ध किया। अविच्छिन्न दयापूर्वक उनकी उस भद्र महिलाने शुश्रूषा की और अन्तमें नेपोलियनके स्वास्थ्य लाभकर अपनी सैन्यमें सम्मिलित होने योग्य हो जानेसे उन्हें बड़ा सन्तोष हुआ। इस दयाके लिये अतीव कृतज्ञता प्रकाशित करते हुए इन दयामयी महिलासे नेपोलियनने विदा ग्रहण की।

कई वर्षके उपरान्त जब नेपोलियन मुकुटधारी सम्राट् हुए, तब उन्होंने उस महिलाका एक पत्र पाया। उन्होंने अपने इस पत्रमें नेपोलियनको यह उच्च पद प्राप्त करनेपर बधाई दी थी और यह सूचना दी थी, कि विपदने उन्हें दुर्दशामें पतित किया है। नेपोलियनने उसी समय कोई छः सहस्र रुपयेके साथ इस पत्रका प्रत्युत्तर भेजा। उसमें उन्होंने लिखा, कि भविष्यत्में पत्र लिखकर वह जिस बातकी

आकांक्षा प्रकट करेंगी; उनकी वह आकांक्षा उसी समय पूरी की जायगी।

लायन्सकी विद्वज्जन-सभाने 'वह कौनसी सभायें है, जिनके द्वारा मानवीय सुख सम्पादित होनेकी अधिक सम्भावना की जा सकती है?' विषयपर सबसे अच्छा प्रबन्ध लिखनेवालेको एक पुरस्कार देनेका प्रस्ताव किया। इस विषयपर नेपोलियनने एक प्रबन्ध लिखा और यद्यपि इस विषयपर कितने ही प्रतिद्वन्द्वियोंने प्रबन्ध लिखे थे; तथापि वह पुरस्कार नेपोलियन होको प्राप्त हुआ। इस घटनाके कई वर्ष बाद जब नेपोलियन राज-सिंहासनपर आसीन थे, तब उनके मन्त्री टेलीरेण्डने एक दूत लायन्स भेजकर वहांसे यह प्रबन्ध मँगाया। इस प्रबन्धको देख नेपोलियनके आनन्दित होनेका अनुमानकर एक दिन एकान्तमें यह प्रबन्ध उन्होंने नेपोलियनके सम्मुख रखा और उनसे यह पूछा, कि क्या आप इसके लेखकको जानते हैं? नेपोलियनने उसी समय अपनी हस्तलिपि पहचान उस प्रबन्धको अग्निमें छोड़ दिया और कहा, कि काल्पनिक और दुष्कर कल्पनाओंसे परिपूर्ण मेरे बाल्यका लिखा यह लेख था। अपने उस अविराम विद्याभ्यासके समय उन्होंने कोरसिकाका एक इतिहास लिखा था। उसे वह छपानेका आयोजन कर रहे थे, ऐसे समय कालके उठते हुए तूफानोंने उनसे लेखनी छुड़ाकर उनके हाथ खड्ग ग्रहण कराया।

इन दिनों सारे फ्रान्समें राजतन्त्री और प्रजातन्त्री यह दो दल बन गये थे और यह दोनो प्रभुता प्राप्त करनेके लिये पारस्परिक विरोधमें प्रवृत्त थे। नेपोलियनने प्रजातन्त्री पक्ष ग्रहण किया था। सैन्यके अधिकांश अफसर प्राचीन अभिजातवंशीय पुरुषोंके पुत्र होनेके कारण राजतन्त्री थे, ऐसी दशामें वह सब नेपोलियनकी बड़ी अप्रतिष्ठा करते थे। फिर भी; वह बड़ी ही दृढ़ता और निर्भीकतासे अपने मनोभाव व्यक्त करते और बड़ी ही उत्कण्ठासे उन घटनाओं-

को उन्नतिके प्रति लक्ष्य रखते; जिन घटनाओं द्वारा वह अपनी प्रसिद्धि तथा सौभाग्यका पथ उन्मुक्त होनेको प्रत्याशा करते थे। इस समय भी वह अतीव मनोयोगपूर्वक अपने विद्याभ्यासमें व्यस्त थे। अपने जीवनके इस भागमें वह अहङ्कारी, उद्धत और क्रोधी समझे जाते थे; फिर भी, जिन गिनतीके मनुष्योंको उन्होंने अपनी मैत्रीके लिये चुना था, वह मनुष्य बड़े उत्साहके साथ उनके प्रति अपना प्रेम प्रकट किया करते थे। उनकी बुद्धिकी अपूर्व न्यायशास्त्रानुमोदित प्रभावशून्यता; उनके स्वच्छ सजीव भाषण; उनके ऐतिहासिक समस्त विषयोंके प्रचुर ज्ञान, व्यावहारिक प्रयोजनीयताके सभी विषयोंकी उनकी व्युत्पत्ति, उनकी सुविस्तृत वैज्ञानिक सफलता और उनकी सैनिक अफसरोंको सर्वाङ्गसम्पन्न योग्यताने उनके प्रति साधारण लोगोंका ध्यान आकृष्ट करा दिया और उनके असम्भावी आचरणके कारण उन्हें पसन्द न करनेवाले अकर्म्मण्य मनुष्योंके भी हृदयमें उनकी प्रतिष्ठाका सिक्का बैठा दिया था।

ऐसे समय अकसोन नगरके साधारण लोगोंमें कुछ अशान्ति उत्पन्न हुई, जिससे ससैन्य नेपोलियन इस नगरकी ओर भेजे गये। वहाँ पहुँच वह अपने कुछ अधीनस्थ अफसरोंके साथ एक हज्जामके घर ठहरे। नेपोलियन यथानियम जैसे ही अपने कर्त्तव्य कार्य्यसे अवसर पाते; वैसे ही इस मकानकी अपनी कोठरीमें आवद्ध होकर अपनी आईनकी पुस्तकें, अपने वैज्ञानिक प्रवन्धों और अपनी गणित-विद्याके अनुशीलनमें प्रवृत्त होते थे। उधर उनके साथी अफसर अन्यमनस्कतासे इधर-उधर भटकते फिरते; उस हज्जामकी रूपवती स्त्रीका प्रणयछल देखते; उस हज्जामकी दुकानमें बैठ चुरुट पीते और उस स्थानमें होनेवाली सड़ी-सड़ीसी असार बातें सुना करते थे। उन सुन्दर, प्रसिद्ध, अथच अरसिक युवक लेफ-टिनेण्टका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट न कर सकनेके कारण उनसे उस हज्जामकी स्त्री बहुत दुःखी हुई। इसतरह उनसे वह अतीव

घृणा करने लगी। इस घटनाके कुछ वर्ष बाद जब नेपोलियन इट-लीपर चढ़ाई करनेवाली सैन्यके प्रधान सेनापति होकर फ्रान्ससे मारे-ङ्गोंकी ओर चले; तब वह अकसोन नगरसे होकर निकले। उन्हों-ने इस नगरके उस हज्जामके मकानके द्वारपर ठहर अपनी उस पूर्वपरिचिता गृहस्वामिनीसे पूछा, कि क्या तुम्हें वह युवक अफसर याद है, जो किसी समय तुम्हारे इस मकानमें रहता था। इसपर उस स्त्रीने भुंजलाकर कहा,—"अच्छी तरह याद है। वह इस मकानमें रहता था सही; किन्तु मुझे फूटी आँखों भी भाता न था। वह या तो अपनी कोठरीमें बन्द रहता या बाहर निकलता, तो मारे अभिमानके किसीकी ओर आँखें उठाकर न देखता।" इसपर नेपोलियनने प्रत्युत्तरमें कहा,—"शुभे! उस समय मैं यदि तुम्हारे इच्छानुसार अपना समय अतिवाहित करता, तो आज इटलीपर चढ़ाई करनेवाली इस सैन्यका प्रधान सेनापति बन न सकता।"

फ्रान्सके उच्चश्रेणीके अमीर तथा सैन्यके अफसर राजतन्त्रके पक्ष-पाती थे। सैन्यके साधारण सिपाही तथा अधिकांश प्रजा प्रजातन्त्रकी पक्षसमर्थनकारिणी थी। प्रत्येक स्थितिमें राजतन्त्रका विरोध और प्रजाकी स्वाधीनताका निर्भीक भावसे पक्ष समर्थन करना उनके लिये प्रायः ही घोर कष्टका कारण हो जाता था। उन्होंने स्वयं ही अकसोनके एक प्रतिष्ठित परिवारमें होनेवाली एक घटनाका विवरण ज्वलन्त भाषामें प्रकाशित किया था। इस परिवारमें वह कितने ही रईसोंसे भेंट करनेके लिये आमन्त्रित किये गये थे। उस समय राष्ट्रविप्लव अपनी समस्त विभीषिकाओंके साथ प्रकट हो रहा था और समूचे फ्रान्समें बड़ी उत्तेजना फैली हुई थी। बातों-बातों नेपोलियनने अपने विचारोंको खोलकर प्रकट कर दिया। इसका फल यह हुआ, कि उस स्थानमें एक भद्र पुरुष तथा कई भद्र स्त्रियाँ सभी मिलजुलकर उनपर उसी समय टूट पड़े। नेपोलियन हटनेवाले मनुष्य न थे। उनके जिन विरोधियोंने उन्हें घेर रक्खा था, उनपर

उनके सबल वाक्य उत्तप्त गोलोंकी तरह गिरने लगे । युद्ध क्रमशः बढ़ता ही गया । वहाँ ऐसा एक भी मनुष्य न था, जो नेपोलियनके पक्षमें एक भी शब्द कहता । बीस वर्षकी अवस्थाके युवक नेपोलियन योद्धा सेनापतियों और सुप्रसिद्ध अमीरोंमें घिर गये थे । वाटरलू रणभूमिमें अवस्थित वेलिङ्गटनकी तरह वह 'ब्लूचर या रात्रि' के आगमनकी आकांक्षा कर रहे थे । ऐसे समय इस स्थानका द्वार खुला और इस नगरके प्रधान मजिष्टरके आगमनकी सूचना दी गई । उन्हें अपना रक्षक समझ नेपोलियन अपने मनको धैर्य देने लगे । इतनेमें उन बाह्य-सुन्दर श्रेष्ठताके स्वर्णाकार बड़े आदमी नेपोलियनके आक्रमणकारियोंमें मिल गये और कोनेसे पीठ लगाये नेपोलियनपर उन्होंने अधिक निर्दयतापूर्वक विलक्षण प्रहार किया । अन्तमें उस गृहकी मालिकाको अपने अरक्षित अतिथिपर दया आ गई और इस असमान युद्धमें उनपर होती हुई चोटोंसे उनको उन्होंने बचा लिया ।

सन् १७९० ई० की एक सन्ध्याको पेरिसके सुप्रसिद्ध खजाञ्ची नेकार साहबके बैठनेके कमरेमें बड़ी ही शानदार एक दावत हुई । इस घटनासे कुछ ही समय पहले राजतन्त्रियोंपर प्रजातन्त्रियोंका प्राधान्य हो जानेके कारण पेरिसका प्रसिद्ध कारागार दुर्ग बेष्टिल नष्ट किया जा चुका था । उस समय साधारण लोग अपनी नवप्रतिष्ठित प्रभुतापर आनन्दित होते हुए और दीर्घकालसे छिने हुए स्वत्वोंके भेदाभेदका विचार अस्पष्टरूपसे करते हुए मतामतका विचार छोड़ भली-बुरी उन सब व्यवस्थाओंको अपने पैरोंतले रौंद रहे थे ; जिनको युगोंने भी सजीव बना रक्खा था । जैसा तूफान भूमण्डलने कभी देखा न था ; वैसे ही तूफानका अशुभ समीपागमन होनेपर भी पेरिसके कौतूहलप्रिय और चञ्चल अधिवासी उपस्थित परिवर्त्तनसे सन्तुष्ट थे और निर्बोध उत्सुकतापूर्वक अपनी चारो ओर प्रकट होनेवाले भीषण अद्भुत दृश्योंके फलकी प्रतीक्षा कर रहे

थे। दिन-दिन अधिक दुर्दमनीय और विस्तृत होते हुए अत्याचारोंसे भीत होकर फ्रान्सके बहुतेरे उच्चश्रेणीके रईसोंने आत्मरक्षार्थ देश परित्याग कर दिया था। फिर भी, बुद्धिबल तथा साधारणकी सेवाके लिये प्रख्यात और सुप्रसिद्ध कुलीन पुरुषोंके सभी बड़े-बड़े दलों को प्रचुर मिलावट हो जानेसे फ्रान्स-राजधानीका सामाजिक स्तर प्रत्यक्ष भावसे उन्नत हो गया था।

नेकार साहबने जो दावत दी थी, वह बहुत ही भड़कीली थी और उसमें उस राजधानीके सभी प्रसिद्ध पुरुष तथा रमणियाँ सम्मिलित थीं। नेकार साहबकी प्रसिद्ध कन्या श्रीमती ष्टाईल (२) मानो प्रधान उद्भाविनी शक्तिका रूप धारणकर अपनी उपस्थितिसे इस दावतको अलङ्कृत कर रही थीं। जिस समयका विवरण लिपिबद्ध किया जा रहा है; उस समय नेकार साहबका विशाल प्रधान कमरा उन मनुष्योंसे परिपूर्ण था, जो साहित्य या विज्ञानके सर्वोच्च आसनपर आसीन थे या जो उस दुर्दिनमें उस साम्राज्यके प्रभाव तथा प्रतिष्ठाके पदोंपर चढ़ गये थे। वहाँ उन्नतललाट और गगनभेदी स्वरके अधि-

---

२ सेण्ट हेलेनामें नेपोलियनने श्रीमती ष्टाईलके चरित्रका निम्नलिखित अतीव सुस्पष्ट और सुवर्णित विवरण प्रदान किया था :—"वह अतीव बुद्धिमती और बड़ी ही उच्चाभिलाषिणी स्त्री थी। फिर, उनमें षड्यन्त्रकी बुद्धि और चाञ्चल्य भी बहुत अधिक था। लोगोंके दिखानेके लिये वह अपने मित्रको इसलिये सागर-जलमें फेंक सकती थी, कि जब वह डूबने लगे, तब उन्हें उसके बचानेका दृश्य दिखानेका सुअवसर मिले। इटली-विजयसे लौटनेके अल्प समयके उपरान्त मेरे एकान्तसेवी होनेपर भी एक दिन दैवात् बहुतेरे लोगोंके सम्मुख श्रीमती ष्टाईल मुझसे मिलीं। वह हर जगह मेरे पीछे-पीछे जाती और मुझसे ऐसी चिपटी, कि उन्हें मैं बलपूर्व्वक हटा न सका। अन्तमें उन्होंने मुझसे पूछा,—'जगत्‌में सर्व्वश्रेष्ठ स्त्री कौन है?' मेरी प्रशंसा करने और प्रत्यर्पणमें अपनी प्रशंसा करानेके अभिप्रायसे ही उन्होंने मुझसे यह प्रश्न किया था। उनका यह प्रश्न सुन उनकी ओर देख मैंने प्रत्युत्तरमें कहा,—'वही स्त्री श्रीमति! जिसने बहुसंख्यक सन्तान प्रसव किये हों।' मेरे इस उत्तरने उन्हें बहुत ही अप्रतिभ किया। उस घड़ीसे वह नेपोलियनकी निर्म्मम शत्रु बन गई थी।

कारी मिराबिउ (३) थे, जो अपनी कुरूपतापर अभिमान किया करते थे। अपनी विशाल देह और दरबारी हावभावसे सुप्रकाशित-टेले-रेण्ड (४) बड़ी शानके साथ उस कमरेमें चल-फिर रहे थे। जार्ज वाशिङ्गटन और उनके युद्धके साथियोंकी मैत्रीके कारण महिमा-न्वित लाफियेट्टोने अपने ही तुल्य मनुष्योंको अपनी चारों ओर एकत्र कर लिया था। एक खिड़कीके बीच श्रीमती ष्टाईल विराजती थीं। अपने वार्त्तालापकी शक्तिकी द्युतिसे उन्होंने अपनी चारों ओर बहुतेरे प्रसिद्ध पुरुषोंका संग्रह कर लिया था। उन प्रसिद्ध पुरुषोंमें सेण्ट जष्ट थे, जिन्होंने बादको बड़ा ही रक्तपूर्ण दुर्नाम पाया था; राजतन्त्रके प्ररोचक और अति साहसी समर्थनकारी मालसहरबेस थे; पूज्य ज्योतिषी लालेण्डो थे; प्रसिद्ध गणित-शास्त्र-वेत्ता मारमोण्टेल तथा लेगरेञ्ज थे और वह अन्यान्य सभी पुरुष थे, जिनकी ख्याति सारे यूरोपमें विस्तृत थी।

---

३ मिराबिउने एकबार कहा था,—"बहुत कम लोग मेरी कुरूपताकी शक्तिको समझ सकते हैं।" उन्होंने एकबार एक उस स्त्रीको लिखा था, जिसने उनका रूप कभी देखा न था,—"यदि तुम मेरी मुखाकृतिका अनुमान किया चाहती हो, तो किसी शेरकी मुखाकृतिका अनुमान करो, जो चेचकसे आक्रान्त हो चुका हो।" सिडनी स्मिथने लिखा है,—"मिराबिउकी जीवनी सारी बुद्धिमानियों और सारी बुराइयों, प्रत्येक गुण और प्रत्येक दोष, प्रत्येक ऐश्वर्य और प्रत्येक अपमानसे समन्वित होगी। वह छात्र, कर्मी, योद्धा, कैदी, ग्रन्थकार, राजनीति-कौशलज्ञ, निर्वासित, कङ्गाल, दरबारी, प्रजातन्त्री, वक्ता, राजनीतिज्ञ और विश्वास-घाती थे। उन्होंने अपनी उमरमें और किसी उमरके मनुष्यकी अपेक्षा बहुत देखा था, बहुत सहन किया था; बहुत ज्ञानार्जन किया था, बहुत अनुभव प्राप्त किया था और बहुत कार्य्य किया था।"

४ टेलेरेण्ड अतीव प्रसिद्ध राजनीतिविद्याविशारद थे। बादको उन्हें नेपोलियनने अपने साम्राज्यका प्रधान मन्त्री बनाया था। वह अपनी रसिकताके लिये बहुत प्रसिद्ध थे। एक दिन मिराबिउ उन गुणोंको गिनाने लगे, जिनका उस कठिन समयके मन्त्रियोंमें होना आवश्यक था। वह इसतरह गुण गिनाते हुए प्रत्यक्षमें अपने ही गुणोंका वर्णन कर रहे थे, ऐसे समय उनकी बात काटकर चतुर टेलेरेण्डने पूछा,—"और उन मन्त्रीको चेचक रोगसे आक्रान्त होना चाहिये, क्यों दुरुस्त है न?" इस प्रश्नपर उपस्थित मनुष्य खिलखिलाकर हँसने लगे।

प्रिन्स टैलेरेण्ड।

[पृष्ठ ७४

उस कमरेके एक कोनेमें प्रसिद्ध अलफीरी खड़े थे। रमणियोंके एक-झुण्डको वह अपनी बनाई कविता प्रायः पागलोंजैसे हावभावके साथ सुना रहे थे। गम्भीर और ज्ञानी लोगोंके एक दूसरे झुण्डके केन्द्र बने हुए थे। इस झुण्डमें चिन्ताग्रस्त राजनीतिज्ञगण थे, जो समयज वृद्धिशील विपदोंपर विचार कर रहे थे। पेरिस अपने कुल, बुद्धि या पदमें दीप्तिशाली जिन मनुष्योंके संग्रह करनेमें समर्थ था; उन सभी मनुष्योंका यह समूह था। सन्ध्याके मध्यभागमें विउहारनेस साहबकी स्त्री सुन्दर अथच उपेक्षित जोजेफाइन अपने नन्हें से पुत्र यूजेनीको साथ ले इस दावतमें आईं। उनके आगमनके उपरान्त ही फ्रान्सराजके भाईके साथ अपनी मानसिक श्रेष्ठतासे अवसन्न श्रीमती जेनलिस आईं। वह वहाँके उज्ज्वलताके सागरमें इधर-उधर घूमने लगीं और उनके वस्त्रमें लगा प्रचुर सुगन्धित द्रव्य लोगोंका उनके समीप पहुँचनेसे पहले उनके समीप पहुँचनेकी सूचना देने लगा। फ्रान्सकी रानी मेरी एण्टायनेटकी सहेली तथा सखी श्रीमती केम्पेन आईं; राजदरबारके और भी कितने ही भद्रपुरुष तथा भद्र महिलायें आईं और अब इस दावतमें प्रसिद्ध पुरुषों और महिलाओंका सच्चा असामान्य समावेश हो गया। ऐसा विदित होता था; मानो पेरिसके आनन्दोल्लासने सामयिक विपदोंको लोगोंके मनसे निकाल दिया था और वह समय अबाध उल्लासको समर्पित कर दिया गया था। पृथ्वीके सभी भागोंसे संग्रह किये गये सुस्वादु द्रव्य द्वारा संगठित खाद्यसम्भार ग्रहण किये नौकर उस भीड़में धीरप्रवाहसे आ-जा रहे थे।

जब अर्द्धनिशा समीप पहुँची; तब वार्त्तालापका कल-कल रव शान्त हुआ और अभ्यागत जन निस्तब्ध दलोंमें एकत्र हो वाद्यका आनन्द प्राप्त करनेपर उद्यत हुए। श्रीमती ष्टाईल पियानो बजाने बैठीं और वीणा द्वारा उनकी सङ्गत करनेके लिये जोजेफाइन प्रस्तुत हुईं। यह दोनो ही अपनी वाद्य-विद्यामें अतीव प्रवीणा थीं। उपस्थित जन निस्तब्ध हो उनके वाद्यकी प्रतीक्षा करने लगे। इन

दोनोंने अपने यन्त्रोंके सम्मिलित मनोहर वाद्य द्वारा अभी आरम्भिक स्वर छेड़े थे ; ऐसे समय द्वार खुला और दो नये अतिथियोंने-उस कमरेमें प्रवेश किया। उनमें एक अतीव साधारण परिच्छदधारी पूज्य आकृतिके वयोवृद्ध पुरुष थे। दूसरे खर्वाकार, पीले और दुर्बल एक युवक पुरुष थे। उन वयोवृद्ध भद्र पुरुषको सबने तुरन्त पह-चान लिया। वह फ्रान्सके अतीव प्रसिद्ध अन्यतम ज्ञानी पुरुष पादरी रेनाल थे। किन्तु उनके साथी उन पीले, दुबले और निर्बल युवक-को कोई भी पहचान न सका। वाद्यमें बाधा पहुँचनेकी आशङ्का-से वह दोनों निस्तब्धरूपसे उस कमरेके द्वारके समीप बैठ गये। जैसे ही वाद्यामोद समाप्त हो गया और बाजे बजानेवाली दोनों रमणियाँ लोगोंकी कुशलता और रुचिके अनुसार प्रशंसावाद प्राप्त कर चुकीं, वैसे ही वह पादरी अपने उन युवक साथीके साथ श्रीमती ष्टाईलके समीप पहुँचे और उनके सम्मुख उन्होंने अपने उन साथी-को उपस्थितकर कहा,—श्रीयुक्त नेपोलियन बोनापार्ट। बोनापार्ट! कौन बोनापार्ट? काल पाकर जो नाम सारे जगत्‌में प्रसिद्ध हुआ, उस समय वह नाम साधारण और अप्रसिद्ध था और जिस समय यह प्रकाशित किया गया, उस समय इसे सुन इस जनताके बहुतेरे दाम्भिक अमीर मुँह बना घृणापूर्वक वहाँसे दूर हट अपनी बातों तथा अपने आमोद-प्रमोदमें प्रवृत्त हुए।

श्रीमती ष्टाईलमें धीशक्तिकी उपस्थितिकी प्रायः स्वाभाविक उप-लब्धि थी। उन्हें नेपोलियनने अपनी जिन कई बातोंसे सम्बोधित किया; उनसे उनकी ओर श्रीमतीका ध्यान तुरन्त आकृष्ट हुआ। यह दोनों शीघ्र ही बहुत घुल-घुलकर बातें करने लगे। जोजेफाइन तथा और कितनी ही महिलायें उनमें जा मिलीं। फिर तो ; उस बढ़ते हुए व्यूहमें जैसे-जैसे भद्र पुरुषगण सम्मिलित होते गये ; वैसे-वैसे वह झुण्ड बढ़ता गया।

यह देख अभिमानी अलक्षीरीने पादरी रेनालसे यह पूछनेकी

छापा दिखाई,—"वह युवक कौन है, जिसने अपने गिर्द एकाएक इतने मनुष्योंका संग्रह कर लिया है?"

प्रत्युत्तरमें पादरी रेनालने कहा,—"वह मेरे शिष्य और असाधारण प्रतिभाके एक युवा पुरुष हैं। वह अतीव परिश्रमी हैं अच्छे विद्वान् हैं और इतिहास, गणित तथा समस्त रणविद्यामें उन्होंने उच्चकोटिकी पारदर्शिता प्राप्त की है।"

इस अवसरमें मिराबिउ इस साधारण आकर्षणका कारण जाननेकी उत्कण्ठासे प्रलुब्ध हो दबे पैर वह कमरा पारकर नेपोलियनके समीप आये।

उन्हें देख श्रीमती ष्टाईलने मुस्कुराकर मृदु स्वरमें कहा,—"आइये—आइये! यहाँ आइये। हमने छोटेसे एक महज्जनको प्राप्त किया है। आइये आपसे मैं इनका परिचय करा दूँ; कारण, मैं जानती हूँ; कि धीसम्पन्न मनुष्य आपको अतीव प्रिय हैं।"

नेपोलियनसे मिराबिउने अतीव अनुग्रहपूर्वक हाथ मिलाया और बिना श्रेष्ठताका दर्प किये उन उपाधिहीन युवक पुरुषसे वह वार्त्तालाप करने लगे। उनकी चारो ओर प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पुरुषोंकी भीड़ हो गई और वार्त्तालापके स्रोतने बहुत कुछ साधारण भाव धारण कर लिया। अटनके प्रधान धर्म्मयाजक बिशपने फाक्स तथा शेरिडनकी यह बात विश्वासपूर्वक कहनेके लिये प्रशंसा की, कि फ्रान्सीसी सैन्यने अपने अफसरोंकी साधारण लोगोंपर गोली चलानेकी आज्ञासे अवज्ञाकर सारे यूरोपकी फौजोंके लिये एक ज्वलन्त उदाहरण उपस्थित किया है; क्योंकि उन सबने अपने इस कार्य्य द्वारा यह प्रमाणित किया है, कि सिपाही होनेके कारण वह नागरिक होनेसे वञ्चित नहीं हुए हैं।

इसपर नेपोलियन उपस्थित लोगोंका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करनेवाले गाम्भीर्य्यसे बोले,—"आप अपनी बातमें बाधा उपस्थित करनेके लिये मुझे क्षमा करेंगे, माई लार्ड! अपने सैनिक अफसर

होनेके कारण अपने विचारोंके प्रकट करनेका मुझे हक है। यह सत्य है, कि मैं नवयुवक हूँ और मेरा इतने प्रसिद्ध पुरुषोंको सम्बोधन करना एक दुस्साहसिक कार्य्य समझा जा सकता है; किन्तु गत तीन वर्षसे मैं अपनी राजनीतिक विपदोंको अत्यन्त ध्यानपूर्व्वक देख रहा हूँ। अपने देशकी दशा देख मुझे अतीव दुःख हुआ है और मैं उस रीतिको बिना देखे आगे बढ़ जानेकी अपेक्षा निन्दक होनेका दोष स्वीकार करूँगा, जो केवल दोषयुक्त ही नहीं; वरं समस्त सरकारकी उच्छेदकारिणी है। अन्यान्य लोगोंकी तरह मैं भी यही देखना चाहता हूँ, कि समस्त अपव्यवहार, अप्रचलित अनन्य साधारण अधिकार और स्वत्वोंका बलपूर्व्वक अपहरण रद किया जाये। इतना ही नहीं,—मैंने अपनी जीवन-यात्रा अभी आरम्भ की है; इसलिये साधारण लोगोंके संस्थापनोंको साहाय्य देना तथा उन्नत करना और साधारण-सम्बन्धीय शासनकी प्रत्येक शाखाके संस्कारको उन्नत करना मेरी प्रधान नीति और मेरा प्रधान कर्त्तव्य होगा। किन्तु गत एक वर्षसे मैं साधारण-सम्बन्धीय भीषण दङ्गे देख रहा हूँ और यह देख रहा हूँ, कि हमारे उत्तमोत्तम पुरुष विभिन्न परस्परविरोधी दलोंमें विभक्त हो गये हैं और यह दल अपने अतोषणीय होनेकी धमकी दे रहे हैं; इसलिये मैं विशुद्ध मनसे विश्वास करता हूँ, कि हमारी नियमतन्त्री सरकारकी रक्षा तथा सुशृङ्खलाके स्थिर रखनेके लिये सैन्यके सुदृढ़ शासनका जैसा सम्पूर्ण प्रयोजन इस समय है; वैसा प्रयोजन अबसे पहले और कभी हुआ न था। इतना ही नहीं; यदि हमारी फौजें कार्य्य-कर्त्ताओंकी आज्ञा निःशङ्क भावसे स्वीकार करनेपर बाध्य की न जायेंगी, तो हमें साधारण लोगोंके मनोवेगके विवेकरहित क्रोधके सम्मुखीन होना होगा, जिसके फलसे फ्रान्स देश जगत्‌के समस्त देशोंमें अधिक पतित देश हो जायेगा। मन्त्रिमण्डलको इस बातका विश्वास करना चाहिये, कि यदि पेरिसके साधारण लोगोंका अन-

धिकार बलप्रकाश वज्रमुष्टिसे दबाया न जायेगा और सामाजिक शृङ्खला कठोरतापूर्व्वक प्रतिष्ठित रखी न जायेगी, तो हमें केवल यह पेरिस नगर ही नहीं ; फ्रान्सके सभी नगरोंमें वर्णनातीत अराजकता दिखाई देगी। इसका फल यह होगा, कि स्वाधीनताके जो सच्चे भक्त और देशके जो सुयोग्य हितैषी अपने देशके उत्तम हितके लिये कार्य्य कर रहे हैं, वह साधारण लोगोंके एक दलके नीचे दब जायेंगे और नेतागण मुखसे स्वाधीनताका चीत्कार करके भी बर्ब्बरोंके ऐसे दल हो जायेंगे; जैसे दल प्राचीनकालके नीरोओंके भी न थे।"

युवक नेपोलियनकी अपनी स्वाभाविक प्रामाणिकतासे कही हुई इन बातोंने बड़ा प्रभाव उत्पन्न किया। क्षणभरके लिये उस दलमें पूरा सन्नाटा छाया रहा और उस दलके प्रत्येक मनुष्यकी दृष्टि नेपोलियनके पीले और मरमरजैसे गालोंपर गड़ी रही। इन निर्भीक और गुरु विचारोंको लेकर और लाफेट्टीने प्रत्यक्ष विकलतापूर्व्वक सुना ; मानो वह उन विपदोंसे अभिज्ञ थे, जिन्हें नेपोलियनके शब्दोंने बलपूर्व्वक अङ्कित किया था। मिराबिउने एक या दो बार टेलेरेण्डकी ओर साभिप्राय शिर झुकाया ; मानो उन्होंने यह कहा,—"यह यथार्थ सत्य है।" फिर ; कितने ही मनुष्य राजतन्त्रियोंकी उन्नतिके प्रति प्रभुताकी यह निर्भीक स्वीकारोक्ति सुन क्रुद्ध हो वहाँसे खिसक गये। फ्रान्सके अन्यतम अति दर्पी रईस अलफीरी बड़ी कठिनतासे अपना आनन्द रोक अति साहसी नेपोलियनका मुँह आश्चर्यपूर्व्वक देखने लगे।

एक प्रत्यक्षदर्शीका कहना है,—"जिस समय पीले, दुर्बल और युवक नेपोलियन यह बातें कह रहे थे, उस समय उनकी प्रत्येक बातपर कण्डोरसेट इस वेगसे मेरी भुजा दबाते थे, कि मैं कठिनतासे अपनी चीख रोक सकता था।"

जैसे ही नेपोलियनका यह भाषण समाप्त हुआ, वैसे ही श्रीमती ष्टाईलने पादरी रेनालकी ओर मुड़ उनसे कहा, कि जो सज्जन वर्त्त-

मान आवश्यकताओंके सम्बन्धमें इतने प्रचुर तथा आवश्यक राज-नीतिक विचारोंके घोषणाकर्त्ता हैं; उन सज्जनसे मुझे मिला आपने मेरा बड़ा उपकार किया है और इसके लिये आप मेरा आन्तरिक धन्यवाद स्वीकार करें। इसके उपरान्त उन्होंने अपने पिता तथा साथियोंकी ओर मुड़ अपनी अभ्यस्त श्रेष्ठता तथा प्रामाणिकताके भावसे कहा,—"सज्जनगण! जो प्रयोजनीय सत्य अभी व्यक्त किया गया है; मुझे आशा है, कि आप उसकी ओर ध्यान देंगे।" इस तरह नेपोलियन उस समय इक्कीस वर्षके युवक होनेपर भी उस समूची जनतामें सर्व्वापेक्षा श्रेष्ठ पुरुष बन गये। वह जिस ओर जाते, उस ओर बहुतेरी आँखें उनके पीछे जाती थीं। उनमें प्रचलित आचारके मनुष्योंजैसा दम्भ न था। वह अपना शौर्य्य दिखानेका कोई यत्न करते न थे। जिस समय वह उस भड़कीली भीड़से होकर निकले, उस समय उन्हें उसकी भड़कसे तनिक भी चकाचौंध न लगी। उस समय उनकी आकृतिसे शान्तिपूर्ण विपदकी प्रतिच्छाया प्रकट होती थी। उदाराशय वयोवृद्ध पादरी रेनाल अपने शिष्यकी यह विजय देख अतीव आह्लादित हुए। इस घटनाके कुछ ही दिन बाद सन् १७९१ ई०के सितम्बर मासमें नेपोलियनने छुट्टी ले अपनी जन्मभूमिकी ओर प्रत्यावर्त्तन किया। उस समय उनकी अवस्था बाईस वर्षकी थी। इससे कुछ समय पहले वह प्रथम लेफ्टिनेण्टके पदपर उन्नत किये गये थे। कुछ मासके लिये ग्राम्य शान्तिका सुख उपभोग करनेके लिये अपने बाल्यके आवास-स्थानमें लौटनेपर सबसे पहले उन्हें ऐसा एक पाठागार बनानेकी चिन्ता हुई, जिसमें वह बिना विघ्न-बाधाके एकान्तमें बैठ सकते। अपने मकानके सबसे ऊपरकी मञ्जिलकी एक कोठरी उन्होंने अपने इस कार्य्यके लिये चुनी। वहाँ वह अपने परिवारकी हलचलसे रक्षित रह सकते थे। उस कोठरीमें अपनी पुस्तकें अपने सम्मुख रख वह अहर्निश मानसिक श्रम करने लगे। उन्होंने विश्रामकी ओर ध्यान न दिया;

बाहर निकलना प्रायः बन्द कर दिया; लोगोंसे मिलना-जुलना प्राय: रोक दिया। उनके किसी रक्षक देवताने उनसे यदि यह कह दिया होता, कि भविष्यत्‌में तुम्हारी मस्तिष्क शक्तिका राशि-राशि अंश लिया जानेको है, तो वह उस आवश्यक घटनाके लिये इससे अधिक निद्राशून्य महोद्यमपूर्व्वक अपनेको विशुद्ध बना प्रस्तुत हो न सकते। नेपोलियनकी जीवनी निम्नलिखित विचारकी सत्यताका अतीव हृदयग्राही उदाहरण उपस्थित करती है—

महापुरुष जो प्रथित उच्चता राखें पावत।
वह सहसा फलांगते उनके हाथ न आवत॥
रात समय जब बन्धु-बान्धव सुखसे सोवें।
तब वह अति श्रमका सहाय ले आगे होवें॥

एक निर्म्मेघ प्रात:कालमें सूर्य्योदयके उपरान्त ही नेपोलियन सागर-किनारे एकान्तमें चिन्ता करते भटक रहे थे; ऐसे समय दैवात् उनके एक साथी फौजी अफसरसे उनकी भेंट हो गई। नेपोलियनको देखते ही उनके एकान्तवासके अभ्यासकी उन अफसरने निन्दा की और उनसे अनुरोधपूर्व्वक यह कहा, कि तुम्हें अन्तत: एकबार कोई आनन्दजनक सैर करना चाहिये। नेपोलियन कुछ समयसे अपने नगरके सम्मुखकी खाड़ीकी चौड़ाई नापने और इस खाड़ीके दूसरे पार्श्वकी उच्चभूमिकी परीक्षा करनेकी इच्छा कर रहे थे। उनके विचारसे वह उच्च भूमि अजाकियो नगरका आधिपत्य करती थी। अपनी इस इच्छाको कार्य्यमें परिणत करनेके अभिप्रायसे वह इस शर्तपर सैर करनेको उद्यत हुए, कि वह अफसर इस जल-विहारमें उनका साथ दें। उस सागर-तटसे कुछ दूर एक नाव अपने लङ्गरसे बँधी अवस्थान करती थी। उन दोनोंने उस नावके मल्लाहोंको सङ्केतसे बुलाया। वह नाव उन दोनो सैनिक अफसरोंको ले द्रुत गतिसे चली। नेपोलियन उस नावके पिछले अंशमें

बैठे और जब नाव छूटने लगी, तब उन्होंने अपनी जेबसे धागेका एक गोला निकाला और उसका छोर उस किनारेसे बाँध दिया। इसतरह वह उस खाड़ीको यथार्थ चौड़ाई नापने लगे। उनके साथीको नाप-जोखसे किसी प्रकारका भी अनुराग न था और वह उस समय केवल यत्नहीन आनन्द उपभोग किया चाहते थे। ऐसी दशामें अपने आनन्दको उस ज्ञानप्राप्तिमें परिणत होते देख, जिसको वह तनिक भी पसन्द करते न थे; उन्हें बड़ा कष्ट हुआ। जब वह दोनो उस खाड़ीके दूसरे किनारे पहुँचे, तब नेपोलियनने वहाँकी उच्च भूमिपर चढ़नेको हठ की। उनके साथीने भाँति-भाँतिके प्रतिवाद किये। उन्होंने अपनी क्षुधाकी शिकायत की, यह भी कहा, कि गर्म जलपान ऐसी अनुपस्थितिसे ठण्डा हो रहा होगा, किन्तु नेपोलियन उनकी किसी बाधाकी परवा न कर उस भूमिके अन्वेषणमें प्रवृत्त हुए।

नेपोलियनने यह दृश्य वर्णन करते हुए कहा है,—"यह अनुसन्धान मेरे साथीको तनिक भी प्रिय न था। इसे त्याग करनेके लिये उन्होंने मुझसे प्रार्थना की। मैंने उनका ध्यान बाँटने और अपना कार्य्य सम्पन्न करनेके लिये समय प्राप्त करनेका यत्न किया; किन्तु क्षुधाने उन्हें बहरा बना रखा था। मैं उनसे यदि उस खाड़ीकी चौड़ाईकी बात करता, तो वह प्रत्युत्तरमें मुझसे यह कहते, कि उन्हें बड़ी क्षुधा जान पड़ती है और उनका भोजन ठण्डा हो रहा होगा। यदि उनको मैं किसी गिरजेकी चोटी या मकान दिखा यह कहता, कि बमके गोले साथ ले मैं उसपर चढ़ सकता हूँ, तो प्रत्युत्तरमें कहते,—'ठीक है; किन्तु मैंने अभीतक भोजन नहीं किया है।' अन्तमें कुछ दिन चढ़ आनेपर हम इस सैरसे लौटे। किन्तु इस अवसरमें मेरे साथी अपने जिन मित्रोंके साथ भोजन किया चाहते थे, वह प्रतीक्षासे उकता अपना भोजन समाप्त कर चुके थे; ऐसी दशामें मेरे उन साथीको इस सैरसे लौटने पर न तो भोजन

ही मिला न मित्र ही। यह देख उन्होंने प्रतिज्ञा की, कि भविष्यत्में सैरका साथी चुनने तथा सैरके लिये निकलनेका समय निर्व्वाचित करनेमें मैं और अधिक सावधान रहा करूँगा।"

काल पाकर अङ्गरेज एक बाहरी दुर्गका साहाय्य ले इसी उच्च भूमिपर चढ़ गये। उस समय नेपोलियनको अपनी इस सैरमें प्राप्त किये हुए ज्ञानसे अतीव योग्यतापूर्व्वक लाभान्वित होनेका सुअवसर प्राप्त हुआ।

दूसरा परिच्छेद।

आदि ऐश्वर्य्य ।

सेलीकेट्टी—महत्त्वपूर्ण प्रतिशोध—टूइलेरिसपर आक्रमण—नेपोलियन-चरित्रकी कुञ्जी—अमेरिकन प्रजातन्त्र की भित्ति—आख्यायिकायें—पावली और नेपोलियनके बीच भेंट—नेपोलियनका कैद होना—पावली और श्रीमती लेटिशिया—बोनापार्ट-परिवारका पोतारोहण—अँगरेजों की कोरसिका-विजय—अपने द्वीप-गृहके प्रति नेपोलियनका प्रेम—अँगरेजोंको टूलोनका अर्पण—उसे बल-पूर्व्वक ग्रहण करनेकी नेपोलियनकी कल्पना—उनका अजेय उत्साह—अपने प्रति उनकी उदासीनता—स्वेच्छासेवक—जूनट—छोटे जिबरा-ल्टरपर चढ़ाई और अधिकार—टूलोनका परित्याग—सिपाहियोंकी अराजकता—अमानुषिक हत्या—आख्यायिकायें ।

जिस समय नेपोलियन कोरसिकामें अवस्थानकर अपनी छुट्टीके कुछ मास अतिवाहित कर रहे थे ; उस समय उन्होंने प्रति दिवस अपने कुछ घण्टे अतीव सावधानीसे प्लूटार्कके ढङ्गपर सुप्रसिद्ध कोरसिका-वासियोंकी जीवनियाँ लिखनेमें नियुक्त किये थे । उनका यह कार्य्य बहुत कुछ उन्नत होनेपर भी बादको सामयिक अशान्तिके कारण नष्ट हो गया । उन्हीं दिनों उन्होंने तर्कको एक सभा प्रति-ष्ठित की थी । इसमें इस द्वीपके कितने ही सैनिक अफसर सम्मिलत

किये गये थे और उस समय यूरोपको विक्षुब्ध करनेवाले कितने ही महत्त्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्नोंपर तर्क-वितर्क किया जाता था। इन विषयोंको उन्होंने अतीव मनोयोगपूर्वक मनन किया था। उन दिनों नेपोलियन साधारणकी स्वाधीनताका पथ अनुरागपूर्वक ग्रहण करके भी अराजकताके अत्याचारका कठोरतापूर्वक विरोध किया करते थे। जब मृत्युका राजत्व पेरिसपर अपने विषादकी प्रतिच्छाया उत्पन्न करने लगा और जेकोबिन अत्याचार तथा ध्वंसके नित्य नये समाचार आने लगे; तब नेपोलियनमें अराजकताकी ओरसे वह गभीर घृणा समाई, जो आजन्म उनके साथ रही और जिसे कोई भी प्रलोभन लोप कर न सका। एक दिन उस सभामें उन्होंने उपस्थित अराजकताके विरुद्ध ऐसी तीव्रतासे भाषण किया, कि सेलीकेट्टी नामक उनके एक शत्रुने उन्हें विश्वासघातक बता उनकी सूचना फ्रान्स-सरकारके सम्मुख उपस्थित की। इसपर नेपोलियन पकड़े जाकर फ्रान्स पहुँचाये गये। वहाँ उन्होंने अपने उस बन्धनसे सस-म्मान छुटकारा पाया।

इस घटनाके कुछ वर्ष बाद नेपोलियनको अपने उस शत्रुसे अतीव सदाशयतापूर्वक प्रतिशोध लेनेका सुअवसर मिला, जिसने ऐसी नीचतासे उनके प्राणनाशका यत्न किया था और जिससे वह घृणा किया करते थे। बात यह हुई, कि घटनाक्रमसे सेलीकेट्टी जेको-बियोंका घृणापात्र बन गया और उनकी ओरसे प्रकाश्य रूपसे वह राजद्रोही बताया गया। पुलिस-कर्मचारी उसके पीछे लगे और शूली उसका आखेट करनेके लिये लोलुपता प्रकट करने लगी। जिस नवयुवतीने एकबार नेपोलियनको 'बूटमें बिल्ली' बताया था, उस नवयुवतीकी माता श्रीमती परमनके घर सेलीकेट्टी अतीव स्वार्थ-परतासे जा छिपा। अपने इस कार्य्यसे उसने श्रीमती परमन और उनके घरकी लोगोंका जीवन अतीव आसन्न विपद्के सम्मुख उपस्थित कर दिया। उस परिवारके साथ नेपोलियनकी सुविदित मैत्री थी

और सेलीकेट्टीको इस बातका बड़ा भय था, कि नेपोलियन उसका रक्षास्थान जान उसका समाचार पुलिसको दे देंगे। सेलीकेट्टीने जिस घृणासे नेपोलियनके प्राणनाशका यत्न किया था; उसका हाल जान श्रीमती परमन भी सेलीकेट्टी हीको तरह भय कर रही थीं।

दूसरे ही दिन नेपोलियन श्रीमती परमनके बैठनेके कमरेमें जा उपस्थित हुए।

उन्होंने कहा,—"सुनती हो, शुभे! अब बन्धनका कड़वा फल चखनेको सेलीकेट्टीकी बारी आई है। इसमें सन्देह नहीं, कि उसे यह फल अधिक कटु जान पड़ेगा; क्योंकि जिस वृक्षका यह फल है, वह वृक्ष उसने अपने हाथों आरोपित किया है।"

श्रीमती परमनने आश्चर्य करनेके भावका बहानाकर कहा,—"क्या! सेलीकेट्टी पकड़ लिया गया है?"

प्रत्युत्तरमें नेपोलियनने कहा,—"क्या यह सम्भव है, कि आप उसके प्रकाश्यरूपसे अपराधी बताये जानेके समाचारसे अवगत नहीं? जब वह आप हीके मकानमें छिपा हुआ है; तब मैंने अनुमान किया था, कि आप इस समाचारसे अवगत होंगी।"

श्रीमती परमनने चीत्कारकर कहा,—"क्या!—सेलीकेट्टी मेरे मकानमें छिपा हुआ है? प्रिय नेपोलियन! तुम निश्चय ही विक्षिप्त हो गये हो। भगवान्‌के लिये; यह हँसी किसी औरके सामने कर न बैठना। ऐसा करोगे, तो मुझे अपनी जानके लाले पड़ जायेंगे।"

यह सुन नेपोलियन अपनी जगहसे उठे। धीरे-धीरे श्रीमती परमनकी ओर अग्रसर हुए। उनके सम्मुख ठहर उन्होंने अपनी दोनों भुजायें जोड़ अपनी छातीपर रक्खीं। इसके उपरान्त उनपर वह अपनी दृष्टि सरलभावसे जमा एक क्षणतक सम्पूर्ण निस्तब्ध रहे।

अन्तमें नेपोलियनने स्पष्टाक्षरमें और दृढ़रूपसे कहा,—"श्रीमती

परमन ! आपके मकानमें सेलीकेट्टी सचमुच ही छिपा हुआ है। नहीं, नहीं ;—आप मेरी बातमें बाधा न दीजिये। मैं जानता हूँ, कि कल पाँच बजे वह बोलेवार्डसे इस ओर आता देखा गया है। यह बात अच्छी तरहसे जानी हुई है, कि इस अञ्चलमें सिवा तुम्हारे और कोई उसका ऐसा परिचित नहीं, जो उसे छिपा अपना और अपने मित्रोंका जीवन सङ्कटमें डाले।"

श्रीमती परमनने अविच्छिन्न धूर्त्ततासे प्रत्युत्तरमें कहा—"किन्तु सेलेकेट्टी अपने किस स्वत्वके बलसे यहाँ आश्रय अन्वेषण कर सकता था ? उसे यह बात अच्छी तरहसे विदित है, कि मेरे और उसके राजनीतिक विचारमें भेद है और वह यह भी जानता है, कि मैं पेरिस परित्याग करनेपर उद्यत हूँ।"

नेपोलियनने उत्तर दिया,—"आप निपुणतापूर्वक यह पूछ सकती हैं, कि वह किस स्वत्वके बलसे आपसे अपने छिपाये जानेकी प्रार्थना कर सकता था। जो अनाथा स्त्री उस दण्डार्ह अपराधी मनुष्यको कुछ घण्टोंके लिये अपने मकानमें छिपा अपनेको अपराधिनी बना सकती है उस अनाथा स्त्रीके पास जाना ऐसी नीच कल्पना है ; जैसी नीच कल्पनाको किसी भी कारणसे उसके मनमें आना न चाहिये था।"

श्रीमती परमनने कहा,—"यदि तुम अपनी इस भ्रमात्मक प्रमाणशून्य निश्चय-उक्तिको लोगोंके सामने प्रकट करोगे, तो इसका परिणाम मेरे लिये अतीव शोचनीय होगा।"

नेपोलियनने एकबार फिर अतीव प्रत्यक्ष मनोविक्षोभसे अपनी दृष्टि श्रीमती परमनपर जमाई और कहा,—"तुम श्रीमति ! उदाराशय रमणी हो और सेलीकेट्टी बड़ा ही पाजी है। उसे यह बात विदित थी, कि वह जब तुम्हारे द्वारपर आयेगा, तब तुम उसे निकाल न दोगी, यही सोच उसने स्वार्थवश अपनी रक्षाके लिये तुम्हारा और तुम्हारे बच्चोंका जीवन विपद्के सम्मुखीन कर दिया।

उसे मैं सदासे नापसन्द करता हूँ; किन्तु अब मैं उससे घृणा करता हूँ!"

इसपर चूड़ान्त धूर्त्ततासे श्रीमती परमनने नेपोलियनका हाथ पकड़ और अपनी न झेपनेवाली निगाहें उनकी निगाहोंसे मिला अतीव दृढ़तापूर्वक इसतरह मिथ्याभाषण किया,—"नेपोलियन! मैं अपनी साधुताकी भद्रताके शपथसे तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ, कि सेलीकेट्टी मेरे कमरेमें नहीं। किन्तु ठहरो—क्या मैं तुमसे सब बातें कह दूँ?"

नेपोलियनने तीव्रतासे कहा,—"हाँ, सब बातें! सभी बातें!"

श्रीमती परमनने अतीव प्रत्यक्ष स्पष्टतासे कहा,—"यदि यह बात है, तो सब बातें सुनो। मैं स्वीकार करती हूँ, कि कल छः बजे सेलीकेट्टी मेरे मकानपर आया था; किन्तु कुछ घण्टोंके उपरान्त ही वह यहाँ से चला गया। उससे मैंने कह दिया, कि जैसे प्रकाश्यरूपसे मैं रहती हूँ; उससे तुम्हारा इस मकानमें छिपना अतीव कठिन है। सेलीकेट्टीने मेरी आपत्तिकी सार्थकता स्वीकार कर ली और वह यहाँ से चला गया।"

श्रीमती परमनकी यह बातें सुन नेपोलियन द्रुतगतिसे उस कमरेमें ओरसे छोरतक टहलते रहे; तदनन्तर उन्होंने कहा,—

"मैं भी ऐसी ही प्रत्याशा करता था। उसमें इतना साहस कहाँ, कि वह किसी स्त्रीसे यह कहता,—'तुम मेरी प्राण-रक्षाके लिये अपना प्राण सङ्कटमें डालो।'" किन्तु यह कह नेपोलियनने श्रीमती परमनके सम्मुख खड़े हो और उन्हें सन्दिग्ध दृष्टिसे देखकर कहा,—"तब क्या आप इस बातका विश्वास करती हैं, कि वह आपके मकानसे चला गया और अपने घर वापस पहुँचा?"

श्रीमती परमनने प्रत्युत्तर दिया,—"हाँ; उससे मैंने कहा, कि

उसे जब पेरिस होमें छिपना है ; तब वह अपने होटल जाये और वहाँके मनुष्योंको रिशवत दे अपने पक्षमें कर ले ; कारण, उसके शत्रु उसे सर्वत्र ढूँढ़नेपर भी उसके होटलमें ढूँढ़नेकी कल्पना न करेंगे ।”

इसके उपरान्त नेपोलियन श्रीमती परमनसे विदा हुए। उन श्रीमतीने उस गुप्त कोठरीका द्वार खोला, जिसमें सेलीकेट्टी छिपाया गया था। नेपोलियन और श्रीमती परमनके बीच होनेवाली सब बातें अक्षरशः उसने सुनी थीं। वह एक छोटी कुरसीपर बैठा था। उसका शिर उसके हाथपर झुका हुआ था। उसके रक्ताशयसे निकलनेवाले रक्तसे उसका चेहरा रंगा हुआ था। उसी समय पेरिससे भागनेका अयोजन किया गया। श्रीमती परमनके उच्चपदस्थ भृत्यके नामसे सेलीकेट्टीके लिये राहदारीका आज्ञापत्र लिया गया। दूसरे दिन प्रत्यूषको उन सबने पेरिस परित्याग किया। भृत्य बननेके कारण सेलीकेट्टी उनकी गाड़ीके कोच-बकसपर बैठा। जब वह सब पेरिससे कई कोस दूर अपनी पहली मञ्जिलके छोरपर पहुँचे ; तब उस गाड़ीके कोचवानने उस गाड़ीकी खिड़कीके सम्मुख जा श्रीमती परमनको एक चिट्ठी दी। उसने कहा, कि जिस समय हमारी गाड़ी पेरिससे चलने लगी थी ; उस समय एक युवक मनुष्यने यह चिट्ठी मुझे दे, इसे पहली मञ्जिलमें आपको देनेके लिये कहा था। यह चिट्ठी नेपोलियनकी लिखी थी। श्रीमती परमनने इसे खोल इसमें निम्नलिखित बातें पढ़ीं :—

“मैं यह कभी नहीं चाहता, कि लोग मुझे सहज ही प्रतारित होनेवाला मनुष्य समझें। यदि मैं आपसे यह कह न दूँगा, कि मैं सेलीकेट्टीके छिपनेका स्थान अच्छी तरहसे जानता था, तो आप मुझे प्रतारित मनुष्य समझेंगी। ऐसी दशामें, सेलीकेट्टी ! तुम यह देख सकते हो, कि मेरे साथ तुमने जो कुव्यवहार किया था, उसका प्रतिशोध तुमसे मैं ले सकता था। तब तुम्हीं सोचो, कि अपेक्षाकृत

वाञ्छनीय दृष्टिसे हम दोनोंमें कौन इस समय उत्तम स्थानमें खड़ा है ? मैं अपने प्रति होनेवाले अपकारका बदला ले सकता था ; किन्तु मैंने ऐसा न किया । कदाचित् तुम यह कहोगे, कि मैंने तुम्हारी हितैषिणी रमणीके विचारसे तुम्हारी रक्षा की । इसमें सन्देह नहीं, कि उनका विचार मेरे लिये अतीव शक्तिशाली है । किन्तु तुम अकेले थे , निरस्त्र थे और एक विधिवहिर्भूत मनुष्य थे ; ऐसी दशामें तुम्हें मैं बलिग्रस्त कर न सकता था । तुम शान्ति-पूर्वक जाओ और ऐसा आश्रय-निकेतन ढूंढो, जिसमें बैठ अपने मन-में उत्तम विचारोंका परिपोषण कर सको । मैं तुम्हारा नाम अपने मुंहसे न निकालूंगा । तुम अपने किये कुकर्मका पश्चात्ताप और मेरे उद्देश्यका आदर करो ।

"श्रीमती परमन ! मैं आपकी और आपके बच्चोंकी शुभकामना करता हूँ । आप अबला और अनाथा हैं । जगदीश और आपके एक मित्रका आशीर्वचन आपकी रक्षा करे । आप सावधान रहें और अपनी इस यात्रामें जिन नगरोंमें पहुंचे ; उनमें अधिक समय-तक न ठहरें । विदा !"

यह पत्र पढ़ श्रीमती परमनने सेलीकेट्टीकी ओर घूमकर कहा,—"नेपोलियनके इस ऊंचे व्यवहारकी तुम्हें प्रशंसा करना चाहिये। तुम्हारे प्रति उन्होंने बड़ी ही सदाशयता प्रकट की है ।"

प्रत्युत्तरमें सेलीकेट्टीने घृणापूर्ण मुस्कुराहटसे मुस्कुराकर कहा,—"सदाशयता ! तुम उनसे क्या कराया चाहती थीं ? क्या तुम यह चाहती थीं, कि वह मुझे पकड़वा देते ?"

यह सुन श्रीमती परमन क्रुद्ध हुईं और उन्होंने सेलीकेट्टीको घृणापूर्ण दृष्टिसे देखकर कहा,—"मैं नहीं जानती, कि मैं तुमसे किस बातकी प्रत्याशा कर सकती हूँ । फिर भी ; इतनी बात मैं अवश्य जानती हूँ, कि तुममें यदि कुछ भी कृतज्ञता होती, तो वह देखनेमें सुखद होती ।"

जब वह दोनो एक बन्दरमें पहुँचे और जब सेलीकेट्टी इटली जानेके लिये एक क्षुद्र जलपोतमें सवार हुआ; तब वह एक क्षणके लिये अपने प्रति प्रकट होनेवाले साधु व्यवहारके प्रभावको अपने मनसे निकाल न सका। उसने श्रीमती परमनका हाथ अपने हाथोंमें ले उनसे कहा,—"यदि मैं शब्दों द्वारा तुम्हारे प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकाशित करूँगा; तो मुझे बहुत कुछ करना होगा। रह गये नेपोलियन। उनसे कह देना, कि मैं उनका धन्यवाद करता हूँ। अभीतक मुझे इस बातका विश्वास न था, कि वह ऐसी सदाशयता प्रकाशित करनेमें समर्थ हैं। अब मैं अपनी त्रुटि स्वीकार करनेपर बाध्य हुआ हूँ। उनका मैं धन्यवाद करता हूँ।"

सेलीकेट्टी द्वारा आरोपित किये जानेवाले अपराधसे रहित होनेके उपरान्त कोई दो या तीन मासतक नेपोलियन पेरिस हीमें रहे। वह अतीव मितव्ययितापूर्वक रहते और अपना धन या हृदय खान-पान या आमोद-प्रमोदमें नष्ट किया न करते थे। उनका अधिकांश समय पुस्तकालयोंमें प्रकृत गुणको पुस्तकोंके पढ़ने तथा प्रसिद्ध पुरुषोंसे सम्भाषण करनेमें व्यतीत होता था। उनकी दृष्टि जगत्‌की परीक्षा कर रही थी। वे साम्राज्योंके उत्थान और पतनपर विचार कर रहे थे। फ्रान्स तो फ्रान्स;—यूरोप भी उनकी महत् कल्पनाओंके लिये छोटा प्रतीत होता था। उन्होंने अतीव मनोनिवेशपूर्वक अभ्यन्तरस्थ एशियाकी नदियोंके किनारों और गिरि-श्रेणियोंके नीचे पुञ्जीकृत लक्ष-लक्ष मनुष्योंकी दशाका मनन किया था और वहाँ अपने द्वारा संगठित होनेवाले उस साम्राज्यकी कल्पना की थी; जिसके सम्मुख यूरोपीय साम्राज्य नगण्य प्रतीत होते थे। यथार्थमें अपने भावी जीवनमें अपनी उन्नतिके विषयमें उन्होंने कभी थोड़ा भी आश्चर्य्य प्रकट किया न था। वह क्रम-क्रमसे उत्थित हुए; उनकी दृष्टिमें प्रत्येक उन्नति मानो पहले हीसे स्थिर हो चुकी थी! किसी तरहका भी दायित्वभार ग्रहण करनेमें उन्होंने कभी थोड़ा भी संकोच न

किया और पलितकेश योद्धाओंके भी हाथोंसे कर्त्तव्यभार ग्रहण करते समय उन्होंने कभी थोड़ा भी विचार अपने मनमें आने दिया न था।

सन् १७९२ ई० की २७ वीं जूनके प्रसिद्ध प्रातःकालतक वह पेरिस होमें थे और अपने मित्र बोरेनीके साथ सीन नदीके किनारे-किनारे जा रहे थे। ऐसे समय उन्हें भीषण उग्र चीत्कार करता और पागलोंजैसी अङ्गभङ्गी दिखाता और हर तरहके अस्त्र-शस्त्र घुमाता-नचाता पुरुषों, स्त्रियों और बालकोंका बहुत बड़ा एक दल आता दिखाई दिया। यह दल बाढ़के जलकी तरह उस राजधानीको प्लावित करता फ्रान्सके कैदी सम्राट्के प्रासादकी ओर बढ़ रहा था। इस दलका कार्य्य देखनेके लिये नेपोलियन उसके आगे-आगे दौड़े। लोह-निर्म्मित एक बेड़ेके साहाय्यसे समीपके एक मकानके पुश्तेपर चढ़ नेपोलियनने देखा, कि कोई तीस सहस्र दुर्वृत्तोंके इस मैले दलने तुइलेरीस राजप्रासादकी वाटिकामें घुस इस राजप्रासादके द्वारमें जा अन्तमें अपमानित तथा अपदस्थ कैदी फ्रान्स-राजको एक खिड़कीमें खड़ाकर उन्हें जेकोबियोंकी एक मैली लाल टोपी पहननेपर बाध्य किया। जघन्यताके भूगर्भस्थ भाण्डारों तथा मकानोंकी सबसे ऊपरकी खपरेलोंके रहनेवाले इन मतवाले आवारोंकी न्याय तथा सभी विधियोंपर इस विजय और जगत्की एक अतीव अभिमानी जातिके एक स्वीकृत नरेशके अपमानके इस दृश्यने नेपोलियनका क्रोध चरमको पहुँचा दिया। यह दृश्य उनके लिये असह्य था। इस स्थानसे हटते समय उन्होंने कहा,—"अभागोंने इस दुष्ट दलको राजप्रासादमें घुसने क्यों दिया? इस दलके आगेके पाँच सौ पिशाचोंको उन्हें गोलेसे उड़ा देना चाहिये था। ऐसा होते ही इस दलके अवशेष मनुष्य शीघ्र ही भाग जाते।"

फिर तो पेरिसके बाजारोंमें नेपोलियनकी दृष्टिके सम्मुख अत्याचारके नये दृश्य नित्य ही संघटित होने लगे। अन्तमें वह भीषण

नेपोलियन बोनापार्ट । १० वीं अगस्तका दिन ।

नेपोलियनका टुइलेरीज-ध्वंस-दर्शन । [पृष्ठ ६१
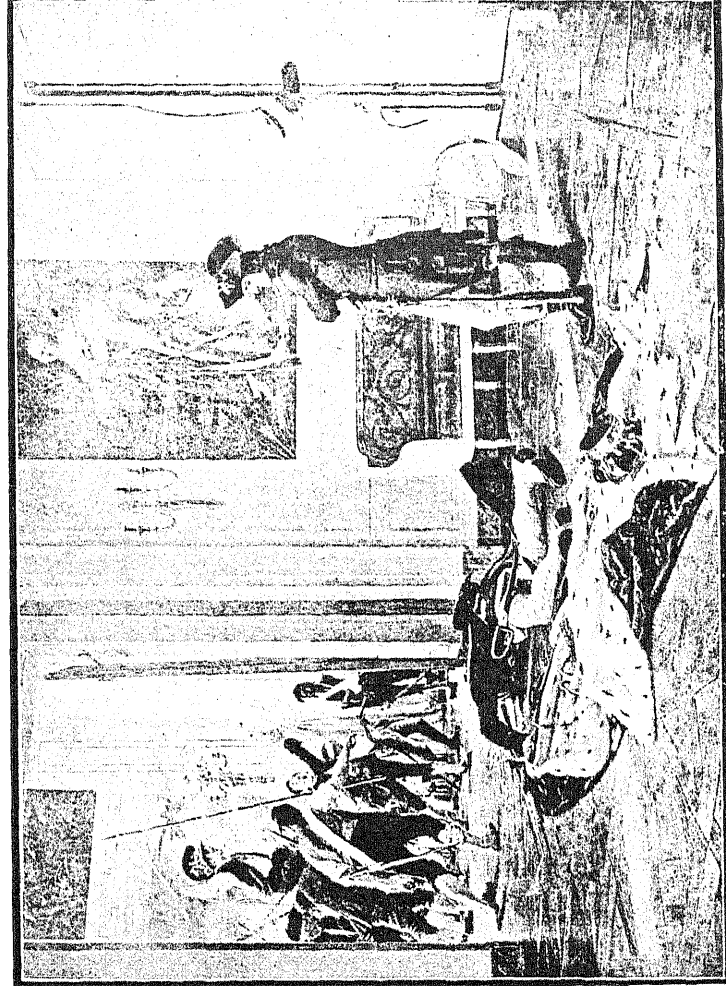
१० वीं अगस्तका दिन उपस्थित हुआ। उस दिन उन्होंने एकबार फिर साधारण लोगोंके दलको विजयपूर्वक अबाध्यरूपसे टुइलेरीसके राजप्रासादमें घुसते और उसका ध्वंस साधन करते देखा। उन्होंने सपरिवार फ्रान्स-नरेशको अपने पूर्वपुरुषोंके इस प्रासादसे निकाले जाते देखा। प्रति क्षण मारे जानेके भयसे भीत सपरिवार फ्रान्स-राज आगे-आगे जा रहे थे; घृणासूचक चीत्कार करता, धतकार बताता और कल्पनामें आनेवाली हर तरहकी अप्रतिष्ठा करता लोगोंका दल उनके पीछे पीछे जा रहा था। अन्तमें फ्रान्स-राज तथा उनके परिवारके मनुष्योंने ऐसेम्बली सभा-भवनमें घुस आत्मरक्षा की। उन्होंने इन नरेशकी रक्षक-सैन्यके सिपाहियोंकी हत्या देखी। इनमें कुछ सिपाही उस राजप्रासादकी वाटिकामें गोलियोंसे मार दिये गये; कुछ सिपाही भगाये जाकर बाजारोंमें छुरेसे मारे गये और कुछ सिपाही जो आत्मरक्षार्थ मूर्त्तियोंपर चढ़ गये थे; वह सङ्गीनें वेध नीचे उतारे जाकर अपने अनुष्ण शोणितमें हलाल कर दिये गये। उन्होंने लज्जा और क्रोधसे जलती हुई छातीसे यह भी देखा, कि इस हत्याकाण्डके उपरान्त मतवाले बलवाई, उन मारे गये सिपाहियोंके भौतिक शिर अपने उठे हुए बरछोंपर खोंस मानो अपना विजय-चिह्न दिखाते जयोल्लास करते दलबद्ध हो बाजारोंसे निकले।

इन भीषण दृश्योंने नेपोलियनके मनमें सम्पूर्ण विप्लव सम्पादित किया। उन्हें इङ्गलेण्डकी विधिसङ्गत स्वाधीनता बड़ी ही प्यारी थी; उससे भी अधिक अमेरिकाकी प्रजातन्त्री स्वाधीनता प्यारी थी। अब उन्हें इस बातका विश्वास हो गया, कि फ्रान्सके अज्ञ और पतित अधिवासी स्वराज्य पानेके योग्य न थे और उस समय उन्हें पथप्रदर्शन तथा अनिवार्य्य विधि-विधानकी आवश्यकता थी। वह जराजीर्ण राजतन्त्रकी विलासिता, निर्बलता और अत्याचारसे घृणा करते और उसे तुच्छ समझते थे। पुराने रईसोंके औद्धत्यसे वह

स्वयं अतीव प्रखरतापूर्वक व्यथित हुए थे। उन सबने केवल अपनी विलास-वासना परितृप्त करनेके लिये आय तथा प्रतिष्ठाके समस्त स्थानोंपर अधिकार कर रखा था और योग्यताके लिये कोई भी पथ छोड़ न रखा था। नेपोलियनको अपना सौभाग्य-संगठन आप करना था और उन्हें यह देख आनन्द हुआ, कि निकम्मे अभिजात-वर्गके प्रतिपालन और श्रेणी तथा धनसे शून्य क्षमताशाली तथा उच्चाभिलाषी मनुष्योंके लिये सब तरहकी कीर्त्ति और प्रभावका पथ बन्द करनेको अतीत कालके दम्भ तथा असङ्गत अभिमानने जो गढ़ प्रस्तुत किये थे; वह इसतरह धराशायी किये जा रहे थे। फिर भी; इतरजनका यह प्राधान्य उन्हें ऐसा जघन्य प्रतीत हुआ था, कि उन्होंने स्पष्टाक्षरमें कहा था,—"मैं स्वच्छ हृदयसे यह सूचना देता हूँ, कि यदि मैं पुराने राजत्व तथा जेकोबियोंकी अराजकता इन दोनोंमें एकको चुननेके लिये बाध्य किया जाऊँ, तो मैं अन्ततक पुराने राजत्व हीको पसन्द करूँगा। परिणामकी चिन्ता भुला प्रकाश्य भाव और अतीव उत्साहपूर्व्वक वह उन दुर्वृत्तोंके प्रति घृणा प्रकाशित करते, जो दया और न्यायको अपने पैरोंतले कुचल रहे थे और जो अपने इस कार्य्य द्वारा समस्त जातियोंमें फ्रान्सको प्रवाद बना रहे थे।

नेपोलियनके चरित्रकी यह एक कुञ्जी है। इन्हीं परस्परविरोधी शक्तियोंने उनके भावी जीवनके लिये पथ निर्द्देश किया था। इसके उपरान्त भी उन्होंने जेकोबियोंके कुचल डालनेके अतीव निश्चित संकल्पको अपने मनसे दूर न किया था। उन्होंने अविश्रान्त शक्ति प्रकटकर फ्रान्सके लिये ऐसे एक राजसिंहासनका पुनर्निर्म्माण किया, जिसकी शक्ति अजेय थी, जो प्रजाका शासन करता था, जिसने सभी प्रतियोगियोंके लिये उन्नतिका पथ समान भावसे उन्मुक्त कर दिया था और योग्यताके पुरस्कारमें धन, पद, प्रभाव तथा शक्ति प्रकट किया करता था। नेपोलियनने अपना यह विचार प्रकाश्य भावसे प्रकट

कर दिया था, कि जबतक फ्रान्स शिक्षा तथा धर्म्म प्राप्त न करेगा, तबतक वह अ. मेरिकाजैसा प्रजातन्त्र प्राप्त करनेके उपयुक्त न होगा। फ्रान्सीसी जातिके अद्वितीय बुद्धिमान् पुरुष लाफेटो इस विषयमें नेपोलियनसे सहमत थे। नेपोलियनने अपनी एक भुजाकी यथेच्छाचारिणी शक्तिसे फ्रान्सके सब तरहके अराजकतापूर्ण उत्थानको कुचल दिया और दूसरी भुजासे कारीगरोंकी दुकानों, सैन्यके सिपाहियों, कृषकोंकी झोपड़ियों आदि प्रत्येक स्थानसे चुन श्रेष्ठ योग्यताओंको ग्रहणकर अपने राजसिंहासनको चारो ओर संग्रह किया। उस समय फ्रान्सके साधारण लोगोंमें धर्म्म भी न था, बुद्धि भी न थी; चरित्र भी न था। मानवीय या दैवी किसी भी विधिको फ्रान्सीसी पूज्य दृष्टिसे देखते न थे। नेपोलियनने इङ्गलेण्डके विधिसङ्गत राजतन्त्रको बहुत पसन्द किया था और यह कहा था, कि इसी शासन-प्रणालीको सम्मुख रख मैं फ्रान्सके लिये नई शासन-प्रणाली संगठित करूँगा। उनके विचारसे उस समय फ्रान्सको ऐसे एक कर्त्तव्यसूचक सिंहासनकी आवश्यकता थी, जो प्रसिद्ध अभिजातवंशों द्वारा साहाय्य पाये, जिसकी स्थायी सैन्यकी क्षमता अजेय हो और जिसके हाथ वह मुल्की अधिकार हों, जिन्हें वह सावधानीसे धीरे-धीरे साधारण लोगोंमें वितरण करे। इसके उपरान्त यद्यपि घटनाक्रमसे बाध्य हो नेपोलियनको अपने हाथ अनियन्त्रित क्षमता लेना पड़ी; तथापि ऐसे मनुष्य विरल होंगे, जो नेपोलियनकी तरह उस सुदीर्घ शासनकालमें और उस असाधारण जीवनके प्रलोभनोंमें पतित होकर भी अधिक समानता दिखा सकते हों।

एक दिन सन्ध्या समय वह पेरिसके विचलित बाजारोंमें घूमफिरकर अपने आवासस्थान पहुँचे। उस समय उनके कान एक नई प्रजातन्त्री शासन-प्रणालीके पक्षमें उत्थित होनेवाली साधारण लोगोंकी चीत्कारध्वनिसे बसे हुए थे। यह मृत्युके राजत्वका मध्यकाल था और सूनी नररक्तसे सिक्त थी। ऐसे समय एक भद्र महि-

लाने नेपोलियनसे पूछा,—"नई शासन-प्रणालीको आप कैसा समझते हैं?" प्रत्युत्तरमें नेपोलियनने सङ्कोचपूर्वक कहा,—"इसमें सन्देह नहीं, कि एक विचारसे यह शासनप्रणाली बहुत अच्छी है; किन्तु इसका जो अंश हत्याकाण्डसे सम्बन्ध रखता है, वह अंश अच्छा नहीं।" इसके उपरान्त मानो अपने सत्य विचारका वेग एकाएक फूट पड़नेकी वजह उन्होंने वेगपूर्वक कहा,—"नहीं, नहीं! हटाओ इस शासन-प्रणालीको! मैं इसे पसन्द नहीं करता।"

अपने उस समयके अर्थ-सङ्कटमें नेपोलियनने अपने लिये एक बूटसाज नियुक्त किया था। वह बड़ा ही भद्दा कारीगर था, फिर भी, नेपोलियनके प्रति अतीव दया प्रकाशित करता और उनसे अपने बूटका मूल्य उनके सुविधानुसार लिया करता था। जिस समय नेपोलियन फ्रान्स-साम्राज्यके प्रथम कनसल और सम्राट् हुए; उस समय उनसे वारंवार यह कहा गया, कि आप उस बूटसाजको छोड़ कोई अच्छा बूटसाज नियुक्त कीजिये; किन्तु ऐसे किसी भी अनुरोधके वश हो नेपोलियनने अपने यौवनके मित्र उस दरिद्र बूटसाजको न छोड़ा। उनकी स्वाभाविक चचुलज्जाने उनके हृदयमें यह बात बैठा दी थी, कि वह बूटसाज फ्रान्स-सम्राट्का बूटसाज होनेसे अधिक सन्तुष्ट रहेगा और उसके हितके लिये कोई और दया प्रकाशित करनेकी अपेक्षा यही बहुत बड़ी दया होगी।

जिस समय नेपोलियन निर्धन थे; उस समय उनके हाथ एक सुनारने परिच्छद रखनेका एक सन्दूक उधार बेचा था। उसके इस उपकारको नेपोलियन कभी न भूले। अपनी इटलीकी चढ़ाईसे लौटनेपर नेपोलियनने उस सुनारके पास जा उसे प्रचुरपरिमित पारितोषिक दिया। इसके उपरान्त वह उससे सद्व्यवहार करते रहे। अपना समय पलटनेपर उस सुनारकी सिफारिश उन्होंने अपने सेनापतियों तथा अपने दरबारसे की। इसके फलसे वह सुनार प्रचुर धन अर्ज्जन करनेमें समर्थ हुआ।

फल, कारणकी अपेक्षा करता है। नेपोलियनने अपनी सैन्य और प्रजामें जो असीम ख्याति प्राप्त की थी; वह किसी घटनाके फल या एकाएक प्रकट होनेवाली किसी चिप्र भित्तिके प्रभावसे प्राप्त न की थी। जिस शीघ्रतासे उनके इन स्वाभाविक और अचिन्त्यपूर्व उन्नत मनोभावोंने उनकी प्रजाका मन वश किया था; उसी त्वरासे उनके सर्वश्रेष्ठ गुणों और असाधारण श्रमने ख्याति अर्ज्जन की।

पेरिसके अवैध अत्याचारोंके देखनेके कारण अपने राजनीतिक मूलसूत्रोंको परिवर्त्तितकर नेपोलियन एकबार फिर कोरसिका वापस लौटे। अपनी मातृभूमिमें लौटनेके उपरान्त ही सन् १७९३ ई० के फरवरी मासमें दो पलटनोंकी अधिनायकतामें नौ-सेनापति टरगीटके साथ उन्हें सारडीनिया द्वीपपर अधिकार करनेकी आज्ञा प्रदान की गई। सदलबल नेपोलियन इस द्वीपमें उतरे और चढ़ाईके सम्बन्धका अपने भागका कार्य्य उन्होंने सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। फिर भी; वह नौ-सेनापति अपने भागका कार्य्य कर न सके और इसके फलसे नेपोलियनको अपने मोरचे छोड़ कोरिसिका वापस आना पड़ा।*

उन्होंने देखा, कि उस समय भी फ्रान्स अतीव भीषण विशृङ्खलासे परिपूर्ण था। फ्रान्स-राज और उनकी रानी दोनो ही शूली चढ़ाये जा चुके थे। उस समय पावली कोरसिकाके गवरनर थे। उन्होंने अपने देशके राजनीतिक रूपसे घृणाकर कोरसिकाको इङ्गलेण्ड-राजके हाथ समर्पित कर देनेके राजद्रोहात्मक कुचक्रकी रचना की। यह विश्वास-

* इस विषयमें सन् १८०९ ई० की ३ री फरवरीको विलायती पारलीमेण्टमें एक वक्तृता दे आनरेबल चार्ल्स जे० फाक्सने कहा था,—"उनके प्रथम आक्रमण या अत्याचारोंके सुदीर्घ विवरणकी आलोचनाकर, महाशय! मैं आपको ठहराया नहीं चाहता। मैं उदाहरणस्वरूप सारडीनिया द्वीपको उपस्थित करता हूँ, जिसके सम्बन्धमें बड़ा आग्रह प्रकाशित किया गया है। क्या फ्रान्सीसियोंने सारडीनियापर अकारण ही आक्रमण किया था? नहीं, ऐसा नहीं हुआ। सारडीनियाके राजाने अङ्गरेजोंका अर्थ-साहाय्य ग्रहण किया था और इसतरह सारडीनिया हर तरहसे युद्धमें प्रवृत्त एक देशके रूपमें परिणत हुआ था।"

घातकताका कार्य्य था और उस समय फ्रान्सको कलङ्कित करनेवाले पाशविक अत्याचारोंके सम्पूर्ण कलङ्कके बलसे उद्धार पानेके लिये ही इसकी कल्पना की गई थी। कोरसिकावासियोंका एक बड़ा दल पावलीका साथी हो गया था। जिन नेपोलियनके गुणोंका वह बड़ा आदर करते थे; अपने पुराने मित्र तथा सहयोगीके पुत्र उन नेपोलियनको अपने झण्डेके नीचे लानेका उन्होंने अपना सारा सामर्थ्य व्यय किया। उधर, भविष्यत्‌के रहस्यको अपेक्षाकृत बड़ी अधिकतासे भेद करनेवाले नेपोलियनने पावलीको इस देशद्रोही असमसाहसिक कार्य्यसे निवृत्त होनेके लिये बहुत समझाया। उन्होंने तर्कपूर्वक कहा, कि जो प्रचण्डता इस समय सारे फ्रान्समें व्याप्त है, वह अतीव भीषण है; इसलिये अधिक समयतक स्थिर रह नहीं सकती और फ्रान्स-जाति बुद्धि तथा न्यायकी ओर शीघ्र ही प्रत्यावर्त्तन करेगी। उन्होंने यह भी कहा, कि कोरसिका अतीव क्षुद्र तथा निर्बल है; यूरोपके शक्तिशाली साम्राज्योंके बीच इसका स्वाधीनभावसे रहना असम्भव है और यह अपने भाव, भाषा, परिच्छद तथा धर्मकी विभिन्नताके कारण इङ्गलेण्डका समस्वभावापन्न हो नहीं सकता। उन्होंने कहा, इस द्वीपका स्वाभाविक सम्बन्ध फ्रान्सके साथ है और फ्रान्स-साम्राज्यका एक प्रदेश बना रहने हीमें इस द्वीपका गौरव है और फ्रान्सके प्रत्येक अधिनायकका सबसे अधिक यह कर्त्तव्य है, कि वह फ्रान्सके इस दुर्दिनमें दृढ़तापूर्वक और निर्भीक भावसे अपने देशका साथ दे और अपना प्रत्येक बल लगा ऐसा उद्यम करे, जिससे फ्रान्समें एकबार फिर ऐसी शान्ति प्रतिष्ठित हो, जिससे फ्रान्सकी सभी बातें एकबार फिर सुशृङ्खलित हो जायें। नेपोलियनकी इन युक्तियोंका कोई उत्तर न था, किन्तु पावलीके मनमें इङ्गलेण्डकी ओरसे प्रबल आकर्षण उत्पन्न हो चुका था और वह अपनी प्रतिशोधबुद्धिसे उस समयको स्मरण कर रहे थे, जिस समय वह फ्रान्सकी विजयिनी सैन्यके सम्मुखसे भागे थे।
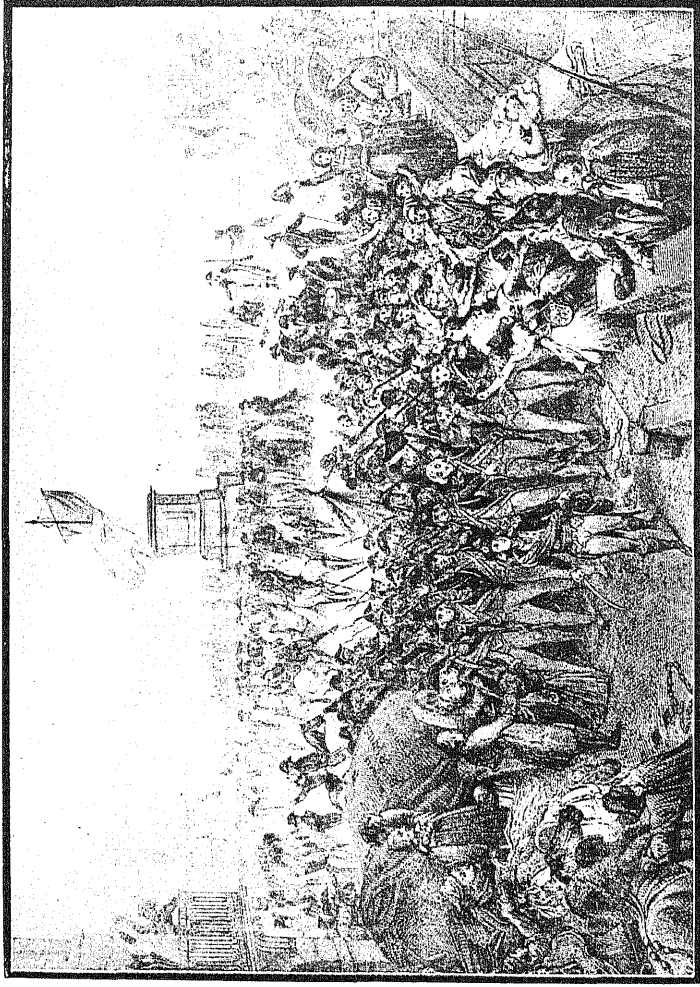
नेपोलियन और उनकी सैन्य 'नेशनल गार्ड।' [पृष्ठ ६८

इन दोनो प्रसिद्ध पुरुषोंकी अन्तिम भेंट इस द्वीपके भीतरी भागमें अवस्थित एकान्तमें बने खृष्टान संन्यासियोंके एक मठमें हुई। वह दोनो एक दूसरेके अतीव अनुरक्त परम मित्र थे; इसलिये देर तक और अत्यानुरागपूर्वक एक दूसरेसे तर्क-वितर्क करते रहे। उस समय योद्धा गवरनर पावली अस्सी वर्षके वृद्ध और नेपोलियन केवल चौबीस वर्षके युवक थे। अतीव अनिच्छापूर्वक वह दोनो एक दूसरेके विरुद्ध खड्ग धारण करनेपर सम्मत हुए। इस विषयमें और कोई उपाय न था। कोरसिकाको अङ्गरेजोंके हाथ अर्पण करनेकी कल्पनामें पावली दृढ़ थे। उधर, कोई भी प्रवञ्चना नेपोलियनसे उनका स्वदेशानुराग छुड़ा न सकती थी। एक दूसरेके विरुद्ध गृह-युद्धमें प्रवृत्त होनेके लिये वह दोनो एक दूसरेसे दुःखपूर्वक विदा हुए।

जब निस्तब्ध और चिन्ताशील नेपोलियन घोड़ेकी सवारीसे अपने मकानको ओर लौटे, तब राहमें पर्वतोंके बीचके एक सङ्कीर्ण पथसे होकर निकले। ऐसे समय उन्हें पावली द्वारा नियुक्त पहाड़ियोंके एक दलने घेर अपना कैदी बना लिया। कौशलवश वह इस कैदसे छूटे और इसके उपरान्त नेशनल गार्ड्स नाम्नी जिस पलटन-के सेनापति बनाये गये थे, उस पलटनको उन्होंने युद्धके लिये प्रस्तुत किया। शीघ्र ही युद्ध आरम्भ हुआ। अजाकियो नगरपर गवरनर पावली और उनके विशाल दलका अधिकार था। पावलीने अङ्गरेजोंको बन्दरमें बुला उनके हाथ कोरसिका द्वीप अर्पित किया। हमारे पाठकोंको स्मरण रह सकता है, कि पूर्वकालमें अजाकियोके सम्मुखकी खाड़ीके दूसरे पार्श्वकी उच्च भूमिकी नेपोलियनने बड़ी सावधानीसे परीक्षा की थी, अङ्गरेजोंने कोरसिकाका प्राधान्य पाते ही इस भूमिपर अधिकार कर लिया। उस समय उस उच्च भूमिके सम्बन्धमें नेपोलियनने जो अभिज्ञता प्राप्त की थी; इस समय वह उनके बड़े काम आई। एक अन्धकारमयी तथा तूफानी रातको

अपने कुछ सौ सिपाहियोंको साथ ले नेपोलियन मध्यश्रेणीके एक जङ्गी जहाजमें सवार हुए और उस उच्च भूमिमें बने शत्रुके मोरचोंके समीप जा उतरे । इसके उपरान्त उस अन्धकारमें अपनी उस सुपरिचित भूमिमें अपने साथियोंको पथ दिखाकर सोते हुए अँगरेजोंपर एकाएक टूट पड़े और अल्पकालीन अथच रक्तपूर्ण युद्धके उपरान्त उस उच्च भूमिमें बने दुर्गका अधिकार पा गये । उधर उस तूफानने बढ़कर प्रचण्ड मूर्त्ति धारण कर ली और जब सवेरा हुआ ; तब नेपोलियन और उनके साथी दूर होते हुए कुहरेके भीतरसे आँखें फाड़-फाड़कर अपने उस जङ्गी जहाजके देखनेका निरर्थक प्रयास करने लगे । वह जहाज प्रचण्ड वायुसे दूरके समुद्रमें चला गया था । कोरसिकन तथा उनके मित्र अङ्गरेजोंने नेपोलियन और उनके छोटेसे दलको शीघ्र ही घेर लिया और उनकी स्थिति नैराश्यपूर्ण हो गई । उन सबने अतीव वीरत्वपूर्वक पाँच दिनतक आत्मरक्षा की ; इस अवसरमें वह सब अपनेको क्षुधाकी मृत्युसे बचानेके लिये घोड़ोंको मार उनका मांस भक्षण करनेपर बाध्य हुए थे । अन्तमें वह जहाज वापस आया । जिस स्थानमें बैठ नेपोलियनने ऐसी वीरतासे अपने प्रचुरसंख्यक शत्रुओंसे युद्ध किया था ; उस स्थानको नेपोलियन और उनके साथियोंने परित्याग किया । वह सब वहाँका दुर्ग उड़ानेका असफल यत्नकर सकुशल उस जहाजमें सवार हुए । पावलीकी शक्ति दिन-दिन बढ़ रही थी और उनके साहाय्यके लिये दलके दल अङ्गरेज एकत्र हो रहे थे । नेपोलियनने देखा, कि अब युद्ध करनेका कोई फल न होगा और उनका तथा उनके परिवारका कोरसिकामें रहना उचित नहीं । इस विचारके अनुसार उन्होंने अपना दल तोड़ दिया और यह द्वीप परित्याग करनेपर उद्यत हुए ।

एक दिन पावलीने नेपोलियनकी माता श्रीमती लेटिशियाके पास जा अपनी प्रवर्त्तन करनेकी सारी शक्ति व्ययकर समझाया, कि मेरे इस द्वीपके अङ्गरेजोंके हाथ अर्पित करनेके राजद्रोहात्मक

कार्य्यमें आप अपने परिवारको मेरे साथ मिलानेका यत्न करें। उन्होंने कहा,—"प्रतिरोधका कोई फल न होगा। अपने इस अदमनीय विरोधसे आप अपने ऊपर और अपने परिवारपर असंशोधनीय दारिद्र्य तथा विपद् उपस्थित कर रही हैं।" इसपर श्रीमती लेटिशियाने साहसिकतापूर्वक उत्तर दिया,—"मैं ऐसे दो ही आदेशोंको जानती हूँ, जिनका प्रतिपालन करना मेरा धर्म्म है। इनमें एक मनुष्यत्वका आदेश : दूसरा कर्त्तव्यादेश है।" इसके उपरान्त ही नेपोलियनके परिवारको इस द्वीपसे निकालनेका आदेशपत्र प्रचारित हुआ। एक दिन प्रातःकाल नेपोलियनने त्वरापूर्वक जा अपनी माताको यह सूचना दी, कि राष्ट्रविप्लवी क्रोधके अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित कई सहस्र कृषकोंका एक दल हमारे मकानपर आक्रमण करनेके लिये अग्रसर हो रहा है। यह सूचना पा नेपोलियन-परिवार उसी घड़ी अपनी जिन चीजोंको ले सकता था; उन चीजोंको ले अति शीघ्रतापूर्वक अपने मकानसे भागा और आश्रयविहीन तथा गृहविहीन हो कई दिनतक सागर-तटमें मारा-मारा फिरता रहा। अन्तमें नेपोलियनने अपने परिवारके पोतारोहणकी व्यवस्था की। नेपोलियनका मकान लोगोंने लूट लिया और उसका माल-असबाव सम्पूर्ण नष्ट कर दिया गया।

एक दिन अर्द्धनिशाको एक खुली हुई नाव श्रीमती लेटिशियाके लुटे-पिटे मकानके समीप सागर-तटसे आ लगी। चार माँझी मढ़े हुए डाँड़ोंसे खेकर वह नाव लाये थे। एक भृत्यके हाथ एक लालटेन थी, जिससे धुंदला-धुंदला प्रकाश हो रहा था। इसी धुंदले प्रकाशमें मर्म्माहत और निस्तब्ध नेपोलियन-परिवार सुविस्तृत जगत् तथा उसके दारिद्र्य और विपदोंको सम्मुख रक्खे उस नावमें सवार हुआ। कुछ लोहेके सन्दूक और कई बन्दसे जड़े सन्दूक ही नेपोलियन-परिवारकी लब्ध सम्पत्ति थी। माँझी उस नावको अन्धकारपूर्ण तथा जनशून्य सागरकी ओर खे ले चले। किसी पार्थिव

नावने इससे पहले देशान्तरित होनेवालोंका ऐसा दल और कभी देखा न था। उस नावमें बैठे वह दरिद्र तथा मित्रहीन-भगोड़े उस समय यह बात कैसे सोच सकते थे, कि एक दिन यूरोपके समस्त राजसिंहासन उनके सम्मुख डग-डग हिलनेको थे और उनकी प्रतिष्ठा धराधामको आच्छन्न करनेवाली थी। उस समय नेपोलियन उस नावकी पतवारके समीप खड़े थे। द्वितीय पुत्र होनेपर भी वह अपने परिवारके कर्त्तव्यसूचक जीवनाधार बन गये थे।*

नेपोलियन-परिवार किनारेके निकट सागर-जलमें खड़े एक छोटे जहाजके समीप पहुँच, उसके पार्श्वकी सीढ़ीसे उसमें सवार हुआ। उस समय उसके पाल सागर-समीरसे फड़-फड़ा रहे थे। दूसरे दिन प्रातःकाल जब सूर्य्य भूमध्यसागरसे उदित हुए; तब नेपोलियन-परिवारने अपने जहाजको नाइसके बन्दरके समीप पाया। यह परिवार नाइस-बन्दरमें अल्पकालतक ठहरा रहा। इसके उपरान्त वह मारसेलेस चला गया और जबतक नेपोलियनके भाग्योदयसे प्राप्त होनेवाला साहाय्य न मिला; तबतक वह मारसेलेस हीमें रह अतीव आर्थिक कष्टसे अपने दिन बिताता रहा।

अङ्गरेज कोरसिकामें तुरन्त ही प्रतिष्ठित हो गये और दो वर्षतक इस द्वीपको उन्होंने अपने हाथ रखा। चञ्चलचित्त कोरिकावासी अपने उन नये प्रभुसे शीघ्र ही उकता गये; जिनकी भाषा, भाव और धर्म्ममें उन्हें किसी प्रकारकी भी तुल्यता दिखाई न दी। समस्त कोरसिकावासी अङ्गरेजोंके विरुद्ध उठ खड़े हुए। अङ्गरेजी क्रूजर

---

* लुई नेपोलियनने अपने 'सर वाल्टर स्काटका उत्तर' नामी पुस्तकमें इस पलायनके सम्बन्धकी इतिहासमें होनेवाली कुछ त्रुटियोको सुधारते हुए इसतरह लिखा है,—"उस समय बालक होनेपर भी मैं अपनी माताके साथ था। उस समय लुसियन नहीं, जोजेफ नेपोलियनके साथ थे। यद्यपि मैं और मेरे चाचा आर्कडोकन फिश मेरी माताके साथ थे, तथापि सात वर्षके जेरोम और आठ वर्षकी कैरीलाइन आजाकियो हीमें रह गई थी। यह दोनों कुछ कालके उपरान्त हमसे आ मिले।"

जङ्गी जहाजोंके सतर्क रहनेपर भी एक क्षुद्र फ्रान्सीसी फौज इस द्वीपमें जा उतरी। राष्ट्रविप्लवी चिह्न विपद्सङ्केतकी अग्नि पूर्व-निर्द्धारित व्यवस्थानुसार प्रत्येक पहाड़ीपर जला दी गई और शिङ्गेके कर्कश नादने समग्र पार्वत्य भूमि और उसके बीचके सङ्कीर्ण पथोंमें प्रतिध्वनित हो-होकर वीर कृषकोंको अस्त्र ग्रहण करनेके लिये आमन्त्रित किया। जिस फुरतीसे अङ्गरेजोंने इस द्वीपपर अधिकार किया था; उसकी अपेक्षा अधिक फुरतीसे वह इस द्वीपसे निकाल दिये गये। पावली, नेपोलियनकी बात न माननेपर अतीव पश्चात्ताप करते हुए अङ्गरेजोंके साथ लण्डन चले गये।

इसके उपरान्त नेपोलियन केवल एकबार कोरसिका गये। वह उस द्वीपके उन मनुष्योंके प्रति प्रेम प्रकाशित कर न सकते थे, जिनकी रक्षा करनेमें उन्हें बहुसंख्यक अन्यायका दुःख भोगना पड़ा था। फिर भी; अपने अन्तिम समयतक वह अपनी जन्मभूमिके चित्र-जैसे सौन्दर्य्यकी जीती-जागती स्मृतिको अपने हृदयमें धारण किये रहे। अपने बाल्यके विविध भाव-सम्बन्धसे प्रिय बने हुए इस द्वीपकी अद्‌भुत उपत्यकाओं, अत्युच्च चट्टानों तथा उज्ज्वल आकाशकी बातें वह प्रायः ही अतीव उत्साहपूर्वक कहा करते थे। काव्य तथा गणित-सम्बन्धीय उपादान नेपोलियनकी बुद्धिमें अतीव उच्च परिमाणसे मिले हुए थे और यद्यपि उनकी वीरोचित बुद्धि घृणित तथा काय-रतापूर्ण भाव-विलासितासे घृणा किया करती थी, तथापि वह जगत्‌की यावत् सुन्दर तथा पवित्र वस्तुओंको गौरवमयी गुणग्राहकताका आनन्द उपभोग किया करती थी। उनके स्मरणक्षम मस्तिष्कमें कारनेली, रेसाइन और वोलटायरके अत्युज्ज्वल विचार भरे हुए थे और उन्हें जिस औचित्यसे वह प्रयुक्त किया करते थे; उस औचित्यसे और कोई भी प्रयुक्त कर न सकता था।

अब हम इन असाधारण पुरुषके जीवनके और अधिक घटनापूर्ण दृश्योंके समीप पहुँचते हैं। यूरोपके बहुतेरे राजतन्त्री साम्राज्योंने

फ्रान्सीसी प्रजातन्त्री साम्राज्यके विरुद्ध मैत्री कर ली और उनकी सम्मिलित फौजें धीरगतिसे किन्तु बिना विघ्न-बाधाके फ्रान्स-राजधानी पेरिसकी ओर बढ़ रही थीं। फ्रान्स छोड़ देशान्तरित होनेवाले फ्रान्सके सहस्र-सहस्र अभिजातवर्गीय तथा राजवंशोद्भूत पुरुष उन मित्र-राज्योंकी युद्धार्थ प्रस्तुत सैन्यके साथ सम्मिलित हो गये थे। फिर; फ्रान्सके कितने ही प्रयोजनीय नगरोंमें भी फ्रान्सकी प्रजा-तन्त्री सरकारके विरुद्ध द्रोहभाव अतीव दृढ़तापूर्वक प्रकट होने लगा था। भूमध्यसागरके किनारे अवस्थित टूलोन नगर फ्रान्सके जङ्गी जहाजोंका बहुत बड़ा अड्डा और गोली-गोलोंका विशाल भाण्डार था। इसमें कोई पचीस हजार मनुष्योंका निवास था। इसके बन्दरमें पचाससे अधिक जङ्गी जहाज तथा मध्यश्रेणीके जङ्गी जहाज थे और इसका युद्धोपकरण-भाण्डार प्रत्येक प्रकारके जल तथा स्थल सैन्यके प्रचुर परिमित युद्धोपकरणसे परिपूर्ण था।

इस नगरके अधिकांश अधिवासी पुरानी राजतन्त्री सरकारके मित्र थे। मारसेलेस, लायन्स तथा दक्षिण-फ्रान्सके और भी कितने ही अंशके राजतन्त्रियोंने टूलोनके नगरमें आश्रय ले और इस नगरके राजतन्त्री अधिवासियोंसे साटकर इस नगर, इसके युद्धोपकरण-भाण्डार, इसके जहाजों और इसके दुर्गको टूलोन-बन्दरके सम्मुख घूमते हुए ब्रटिश तथा स्पेनके सम्मिलित जङ्गी जहाजोंके बेड़ेके हाथ समर्पित कर दिया। ब्रटिश जङ्गी जहाजोंने विजयोल्लासपूर्वक इस बन्दरमें घुस इस नगरमें पाँच सहस्र अङ्गरेज सिपाही और नीपोलिटन तथा पीडमोण्टीज द्वारा संगठित आठ सहस्र स्पेनी सिपाही उतार इस स्थानको स्वाधिकारभुक्त कर लिया। इस विश्वास-घातकताके कारण फ्रान्सकी प्रजातन्त्री सरकारका भय तथा क्रोध चरमको पहुँच गया और उसने स्थिर किया, कि किसी भी तरह टूलोनका पुनरुद्धार और फ्रान्सीसी भूमिसे अङ्गरेजोंका बहिष्कार करना चाहिये। किन्तु अङ्गरेज जिस भूमिमें एकबार पैर जमा देते

हैं; उस भूमिसे उनको निकालना कठिन होता है। फिर; टूलोनजैसे जिस दुर्भेद्य स्थानमें अपनी सुदृढ़ स्थल-सैन्य तथा अजेय नौ-सैन्यके साथ इस समय वह सुप्रतिष्ठित हो गये थे; जिस दुर्भेद्य स्थानमें अपने लिये एकत्र प्रचुरपरिमित प्रत्येक प्रकारके युद्धोपकरण-के वह अधिकारी हो गये थे, उस दुर्भेद्य स्थानसे उन्हें निकालना साधारण महत्त्वकी बात न थी।

दो फ्रान्सीसी फौजें तुरन्त ही टूलोनकी ओर भेजी गईं। इस नगरके नाके रोक दिये गये और इस नगरका नियमित घेरा आरम्भ किया गया। तीन मास बीत गये; इस अवसरमें इस नगरके जीतनेके कार्य्यमें कोई भी प्रत्यक्ष उन्नति की न गई। मित्रोंकी सैन्य तथा इस नगरके राजतन्त्री अधिवासियोंने मिल इस नगरके मोरचों-को सुदृढ़ बनाया। इस नगरके समीप एक दुर्ग था, जो अपनी दृढ़ताके कारण छोटा जिब्राल्टर कहलाता था और जो इस नगर तथा इसके सम्मुखके बन्दरपर कर्त्तृत्व करता था। यह दुर्ग और भी दृढ़ किया जाकर दुर्भेद्य बना दिया गया। इस स्थानको घेरनेवाली फ्रान्सीसी फौजोंमें कोई चालीस सहस्र सिपाही थे। यह सब शत्रुके गोलोंकी पहुंचसे बहुत दूर रह अपने मोरचोंके बाहर अवस्थानकर अपना समय नष्ट कर रहे थे। इन फौजोंके प्रधान सेनापतिका नाम कारटो था। वह इससे पहले पेरिस नगरमें मनुष्योंके चित्र अङ्कित किया करते थे। वह युद्ध-विद्यासे जैसे अनभिज्ञ थे; वैसे ही आत्माभिमानी भी थे।

इस घेरेकी ऐसी ही स्थिति थी; ऐसे समय नेपोलियन, जिनकी कर्त्तृत्वसूचक योग्यताओंकी ओर लोगोंका ध्यान आकृष्ट होने लगा था और जो अब प्रथम लेफ्टिनेण्टपदसे ब्रिगेडियर जेनरलके पदपर उन्नत किये गये थे; कई तोपखानोंकी एक श्रेणीके प्रधान कार्य्य-सञ्चालक बनाये जाकर टूलोन भेजे गये। वहाँ पहुँचते ही वह युद्धस्थलमें उप-नीत हुए और जिस अयोग्यतासे घेरेका कार्य्य चलाया जा रहा था;

उसे देख उनके आश्चर्यकी सीमा न रही। उन्हें दिखाई दिया, कि तोपखाने ऐसी जगह लगाये गये हैं, जहाँसे तोपोंके गोले अपने और निशानेके बीचके आधे अन्तरको भी अतिक्रम कर न सकते थे। फिर; तोपोंके गोले तोपखानोंके समीपकी कृषकोंकी झोपड़ियोंमें तपाये जाते थे। तोपों और इन झोपड़ियोंके बीच अतीव असङ्गत अन्तर था; मानो तपे हुए तोपोंके गोलोंको तोपोंके पास शीघ्र पहुँचानेकी कोई आवश्यकता ही न थी। प्रधान सेनापतिके आज्ञानुसार यह तोपखाने लगाये गये थे। उनसे नेपोलियनने प्रार्थना की, कि मैं इन तोपोंकी मारका फल देखना चाहता हूँ; आप इन्हें छूटनेकी आज्ञा दें। बड़ी कठिनतासे इन सेनापतिने यह आज्ञा दी और जब इन तोपोंके गोले अपने निशानेसे आधी ही दूरपर गिरते दिखाई दिये; तब यह सेनापति यह कह वहाँसे टल गये,—"मैं देखता हूँ, कि जो बारूद मुझे दी गई है; उसे अभिजातवर्गीय लोगोंने किसी तरहसे बिगाड़ दिया है।"

यह सब देख-सुनकर नेपोलियनने फ्रान्सका शासनकार्य्य चलानेवाली प्रतिनिधि-सभाके समीप एक प्रतिवादपत्र भेजा। इसमें उन्होंने ससम्मान अथच दृढ़तापूर्व्वक इस बातका निश्चय दिलाया, कि यदि कांक्षित सुफल प्राप्त करना अभीष्ट है, तो घेरेका कार्य्य अत्यधिक अध्यवसाय और युक्तिके साथ चलाना चाहिये। उन्होंने यह सिफारिश की, कि नगर जीतनेका कार्य्य अपेक्षाकृत शिथिलकर आक्रमणका सारा उद्यम उस छोटे जिबराल्टरके ग्रहण करनेमें व्यय करना चाहिये। उन्हें यह बात स्पष्ट दिखाई देती थी, कि जब उस दुर्गपर अधिकार हो जायेगा; तब ब्रुटिश जङ्गी जहाजोंका बेड़ा गोलोंकी ध्वंसी मारके सम्मुखीन होनेसे पहले इस नगरके सम्मुखका बन्दर तुरन्त ही खाली कर देगा और इसके उपरान्त यह नगर अपनी रक्षा कर न सकेगा। यथार्थमें उन्होंने ठीक उसी चालका अनुसरण किया था, जिस चालसे पूर्व्वकालमें अमेरिकाके उद्धारकर्त्ता वाशि-

ङ्गटनने अङ्गरेजोंको बोष्टनसे भगाया था। इन सुप्रसिद्ध अमेरिकान सेनापतिने बोष्टन नगर छोड़ एक अतिशय दक्ष गतिसे अपने तोपखानोंको डोरचेष्टरकी उच्चभूमिपर लगाया और वहाँसे वह बृटिश जहाजोंके डेकोंपर गोलोंकी खासी वृष्टि करने लगे थे। इसके फलसे उनके आक्रमणकारी शत्रु अपने रक्षणशील दलके मित्रोंको अपने साथ ले वहाँसे भागनेपर बाध्य हुए थे। जो वाशिङ्गटनने बोष्टनमें किया था; वही नेपोलियन टूलोनमें करनेपर उद्यत हुए। फिर भी; यह असम साहसिक कार्य्य अपेक्षाकृत अत्यधिक दुःसाध्य था; कारण, उस दुर्गकी उपयोगिता अङ्गरेज पहले होसे समझ चुके थे और उन्होंने उसे दुर्भेद्य मोरचोंसे घेर ऐसा सुदृढ़ बना लिया था, कि उसका नाम छोटा जिबराल्टर रखते वह तनिक भी सङ्कोच न करते थे।

नेपोलियन उस दुर्गसे शत्रुके उच्छेदसाधनमें प्रवृत्त हुए। डुगोमियर नामक एक क्षतचिह्नित तथा रणदक्ष योद्धा सर्व्वप्रधान बनाये गये। वह तोपखानोंके अपने उन युवक प्रधान अफसरको प्रत्येक कल्पनाके प्रति आन्तरिकतासे सहानुभूति प्रकाशित करने लगे। इस फ्रान्सीसी छावनीमें गुप्तचरोंकी तरह अपनी सरकारको समाचार देनेके लिये फ्रान्सीसी प्रतिनिधि-सभाके कितने ही प्रतिनिधि भी थे। उन्हें नेपोलियनकी इस विचित्र रीतिसे टूलोनके विजय होनेका तनिक भी विश्वास न हुआ। एक दिन इनमें कुछ प्रतिनिधियोंने नेपोलियनके तत्त्वावधानमें लगनेवाली एक तोपकी स्थितिमें दोष निकालनेका साहस किया। इसपर नेपोलियनने कठोरतापूर्व्वक कहा,—"आपलोग सरकारी प्रतिनिधि हैं; अपने प्रतिनिधित्वका कार्य्य सँभालिये; इस तोपके लगवानेका कार्य्य मेरा है; इसमें यदि कोई त्रुटि होगी, तो उसके लिये मैं अपना मस्तक देनेपर प्रस्तुत हूँ।"

जिस समय इस घेरेका कार्य्य चल रहा था; उस समय लुई अपने भाई नेपोलियनसे भेंट करने गये। एक दिन प्रातःकाल वह दोनो भाई एक ऐसी जगह पहुँचे; जिस जगह उस फ्रान्सीसी

सैन्यके एक भागने व्यर्थका आक्रमण किया था। उस भूमिमें कोई दो सौ फ्रान्सीसी सिपाहियोंकी कटी-कँटी लाशें जहाँ-तहाँ पड़ी थीं। उस स्थानमें होनेवाले इस हत्याकाण्डका दृश्य देख नेपोलियनने कहा,—"देखो, लुई! यह सब सिपाही व्यर्थ ही कटवा दिये गये हैं। यदि बुद्धिपूर्व्वक कार्य्य किया जाता, तो इनमेंसे एक भी सिपाही मारा न जाता। इससे यह शिक्षा ग्रहण करो, कि जो लोग दूसरोंके कर्त्तृत्वके उच्चाभिलाषका दावा करते हैं; उनका ज्ञान-सम्पन्न होना अनिवार्य्य है।"

नेपोलियन अपने अङ्गीकृत इस कार्य्यमें उस उत्साहसे प्रवृत्त हुए; जिस उत्साहकी कोई सीमा न थी। अपने अतीव अध्यवसायके बलसे उन्होंने शीघ्र ही सभी स्थानोंसे अपने वारंवारके गोला-वर्षणसे पाषाणखण्डको चूर्ण-विचूर्ण करनेवाली कोई दो सौ बड़ी-बड़ी तोपें मँगाईं। जिस समय गोली गोलोंका तूफान बह रहा था और उनकी चारो ओर अग्नि-वृष्टि हो रही थी; उस समय उन्होंने शत्रुके आक्रान्त होनेवाले मोरचोंके ठीक सामने समर-रेखामें पाँच या छः शक्तिशाली तोपखाने लगवाये। जैतूनके वृक्षोंमें छिपा एक विशेष तोपखाना उन्होंने शत्रुके मोरचोंके और भी समीप लगवाया। उस समय वह अपनी रक्षाकी ओरसे बिलकुल बेपरवा थे। उनकी सवारीके कितने ही घोड़े उनके आसनके नीचे मारे जा चुके थे और एक अङ्गरेज सिपाहीकी सङ्गीनकी मारसे उनकी बाईं जांघमें ऐसा जख्म आया था, जिससे कुछ समयतक उनकी वह जाँघ काटकर जुदा कर देनेकी आशङ्का की गई थी। यह सब कार्य्य उन्होंने उस समय किये, जिस समय युद्धका तूफान वेगपूर्व्वक बह रहा था। अहर्निश खण्ड-युद्ध होते थे; अवरुद्ध नगरके भीतरसे शत्रु-सैन्य एकाएक निकलकर घोर युद्ध करती थी और फ्रान्सीसी फौजें शत्रुके मोरचोंपर अतीव भीषण चढ़ाइयाँ करती थीं। युद्धकी सफलता या असफलताकी भीषण तरङ्गें कभी आगे बढ़तीं; कभी पीछे

टूलोनके घेरेमें नेपोलियन ।

आरम्भिक युद्ध-कल्पनायें ।

[पृष्ठ ७८
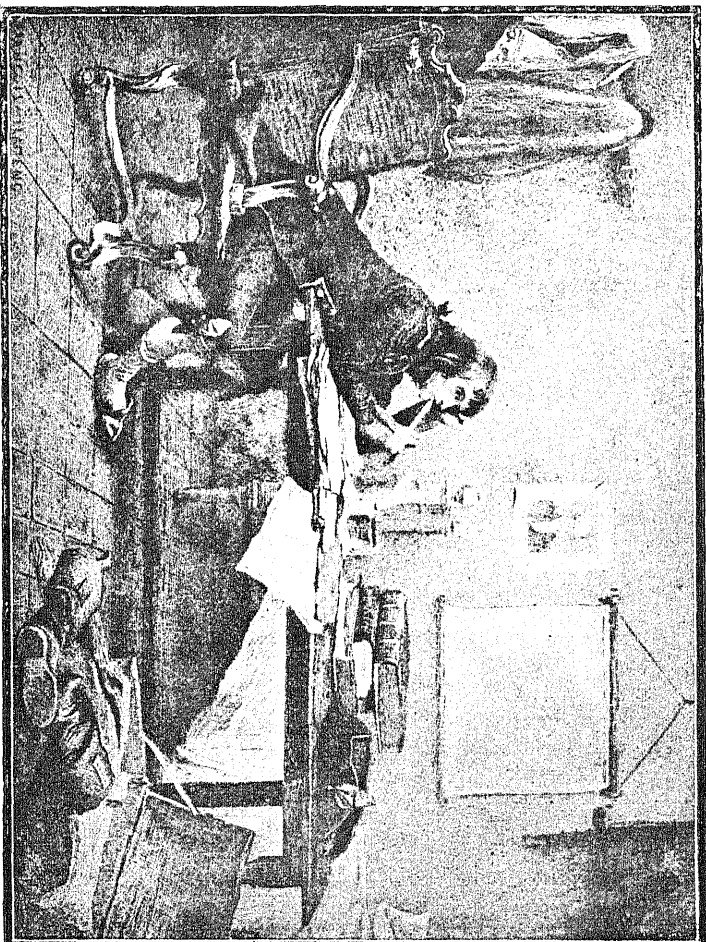
छुटती थीं। एक दिन नेपोलियनकी बगलमें खड़ा एक गोलन्दाज गोलेसे मारा गया और उसके रक्तसे उसके हाथका तोपका गज रञ्जित हुआ। यह देख नेपोलियनने झपटकर उस मृत गोलन्दाजका स्थान ग्रहण किया और उसकी तोप उन्होंने अपने हाथसे कई बार भरी। नेपोलियनका यह कार्य्य देख फ्रान्सीसी सिपाहियोंका उत्साह बढ़ गया।

जब इस घेरेका कार्य्य अग्रसर हो रहा था; तब एक दिन पेरिससे चली पन्द्रह गाड़ियाँ एकाएक इस छावनीमें आईं। इन गाड़ियोंसे कोई साठ मनुष्य उतरे। यह सब भड़कीली वरदियाँ पहने हुए थे और इन सबने प्रजातन्त्री सरकारके दूतोंके आडम्बरविशिष्ट तथा प्रयोजनीय दम्भके साथ अपनेको प्रधान सेनापतिके सम्मुख पहुँचानेकी आज्ञा दी।

प्रधान सेनापति डुगोमियरके सम्मुख पहुँच उस दलके वक्ताने कहा,—"प्रजातन्त्री सेनापति! हमलोग पेरिससे आये हैं। वहाँके स्वदेशभक्तगण तुम्हारा अकर्म्मण्य और विलम्ब देख असन्तुष्ट हुए हैं। प्रजातन्त्री मातृभूमि कलङ्कित हुई है। प्रजातन्त्री सरकार यह सोच काँप रही है, कि इस अपमानका प्रतिशोध अभीतक लिया नहीं गया है। वह पूछ रही है, कि टूलोन अभीतक लिया क्यों नहीं गया है? अङ्गरेजोंके जङ्गी जहाजोंका बेड़ा अभीतक नष्ट क्यों नहीं किया गया है? उसने क्रोधके वशीभूत हो अपने वीर सन्तानोंसे साहाय्यकी प्रार्थना की है। हमने अपनी मातृभूमिकी पुकार शिरोधार्य्य की है और इस समय हम सब अपनी मातृभूमिकी आकांक्षा पूर्ण करनेके लिये व्याकुल हैं। हम सब पेरिसके स्वेच्छासेवक गोलन्दाज हैं। हमें अस्त्र-शस्त्र प्रदान करो। कल हम सब शत्रुपर चढ़ाई करेंगे।"

प्रधान सेनापति डुगोमियर यह आडम्बरविशिष्ट और आदेशमूलक बातें सुन अतीव अप्रतिभ हुए। ऐसे समय उनसे नेपो-

लियनने मृदुस्वरमें कहा,—"इन भद्र पुरुषोंको मेरे हाथ अर्पित कीजिये ; मैं उनकी विहित सेवा करूँगा ।" उस दिन उनका अतीव सत्कारपूर्व्वक आतिथ्य किया गया । दूसरे दिन उनमेंसे प्रत्येकको नेपोलियन अपने साथ सागरतटमें ले गये । वहाँ नेपोलियनने रात्रि होको कुछ तोपें लगा रखी थीं । इन तोपोंका भार उन स्वेच्छासेवकोंको दे नेपोलियनने कहा, कि सागर-तटसे कुछ दूर खड़े एक अङ्गरेजी मध्यश्रेणीके जहाजको जो भीषण देह प्रातःकालीन धुँदलकेमें दिखाई देती है ; उसे आप लोग अपने गोलोंकी चोटसे नष्ट कर दें । वहाँ अपनेको अनावृत स्थानमें पा वह काँपते हुए स्वेच्छासेवक अपनी सहज ही उत्तेजित होनेवाली विकलतासे अपनी चारो ओर देखने लगे । उन सबने नेपोलियनसे अधीर हो पूछा, कि क्या यहाँ ऐसा कोई रक्षाका स्थान नहीं, जिसके पीछे हम-लोग खड़े हो सकें । ठीक इसी समय उस बृटिश जङ्गी जहाजके पार्श्वकी समूची चौड़ाईसे एक साथ दगे हुए गोले उस स्थानमें आये और उन स्वेच्छासेवकोंके शिरोंके ऊपरसे सनसनाते हुए निकल गये । वह बेचारे सुलभ मूल्यपर ऐसा आनन्द क्रय करनेपर प्रस्तुत न थे । उन गोलोंकी वृष्टि होते ही उन दाम्भिकोंका वह समूचा दल अविवेचनायुक्त त्वरासे युद्धस्थल छोड़ भागा । नेपोलियन शान्ति-पूर्व्वक अपने घोड़ेकी पीठपर बैठे रहे । अपने उन दुःखद मित्रोंका भागना देख उन्हें अतीव सन्ताप हुआ सही ; किन्तु उनकी मर्म्मर पाषाणजैसी मूर्त्तिसे मुस्कुराहटकी एक रेखा भी प्रकट न हुई ।

और एक अवसरपर जब शत्रु उनके द्वारा प्रस्तुत कराई जाती हुई गढ़बन्दीपर गोला-वर्षण कर रहा था ; तब उन्हें अपने मोरचेसे एक पत्र भेजनेकी आवश्यकता हुई और वह पत्र अपने आदेशा-नुसार लिखानेके लिए उन्होंने अपने पास एक आदमी बुलाया । एक युवक सिपाही अपनी पंक्तिसे निकल उनके पास आया और मोरचे-की छातीतक ऊँची दीवारपर कागज रख नेपोलियनके आदे-

आनुसार पत्र लिखनेके कार्य्यमें प्रवृत्त हुआ। जिस समय यह कार्य्य हो रहा था, उस समय शत्रुके तोपखानेसे आनेवाला एक गोला उन दोनोंसे कुछ हाथके अन्तरपर भूमिमें गिरा। वह दोनो मनुष्य और वह कागज धूलिसे भर गया।

इसपर उस सिपाहीने उत्साहपूर्व्वक मानो उस गोलेको सम्बोधनकर कहा,—"बहुत-बहुत धन्यवाद! अब मुझे अपने लिखे हुए अक्षरोंपर उन्हें सुखानेके लिये धूलि छिड़कनेकी आवश्यकता न होगी।" उस सिपाही द्वारा प्रकट होनेवाली इस निर्भीकता तथा मुस्तैदीने अपनी ओर नेपोलियनका ध्यान आकृष्ट किया। अपनी तीक्ष्ण तथा मर्म्मभेदिनी दृष्टि उस सिपाहीपर एक क्षणके लिये जमा मानो वह उसके मस्तिष्क तथा शारीरिक गुणोंकी सूक्ष्मरूपसे परीक्षा करते रहे। तदनन्तर उससे उन्होंने कहा,—"क्यों भई जवान! कहो मैं तुम्हारा कौनसा हित साधन कर सकता हूँ?" यह सुन वह सिपाही विनीतभावसे अतीव आरक्तिमुख हो गया। इसके उपरान्त उसने तुरन्त ही कहा,—"आप मेरा सब तरहका हित कर सकते हैं।" इसके उपरान्त अपने वाम स्कन्धपर हाथ रख उसने कहा,—"आप इस सिपाहियोंकी यशकी डोरीको अफसरोंके कन्धेपर लगनेवाले झब्बेसे परिणत कर सकते हैं।" इस घटनाके कुछ दिन बाद नेपोलियनने इसी सिपाहीको शत्रुके मोरचेके परिदर्शनके लिये अपने पास बुलाया और उससे कहा, कि तुम्हारे पहचाने जानेकी बहुत अधिक सम्भावना है; इसलिये तुम वेश बदलकर इस कार्य्यके लिये जाओ। इसपर उसने प्रत्युत्तरमें कहा,—"कभी नहीं। क्या आप मुझे सिपाहीसे जासूस बनाया चाहते हैं? चाहे मेरी जान ही क्यों न जाये; मैं जाऊँगा अपनी इसी वरदीमें।" यह कहकर वह सिपाही इस कार्य्यके लिये चला गया और सौभाग्यवशात: जीता-जागता वापस लौटा। इन दोनो घटनाओंसे उस सिपाहीका चरित्र प्रकट हुआ और उसकी पदवृद्धिके लिये नेपोलियनने तुरन्त ही

सिफारिश की। जूनट नामक यही सिपाही अन्तमें डिउक आफ एब्रास्टेस तथा नेपोलियनके अतीव सुयोग्य मित्र हुए। एक समय उन्होंने अतीव धृष्टतापूर्व्वक कहा था,—"मैं नेपोलियनको अपना परमेश्वर मानता हूँ। मैंने अपना सब कुछ नेपोलियन होके प्रसादसे प्राप्त किया है।"*

अन्तमें वह समय आया, जिस समयकी बड़ी चढ़ाईके लिये सारा आयोजन किया गया था। सन् १७९३ ई० को १७ वीं फरवरीको अर्द्धनिशाको आक्रमण करनेका सङ्केत किया गया। उस समय वायु तथा वृष्टिका एक शीतल तूफान अपना अर्द्धनिशाका महा दैन्यके समयका गीत गाता शीघ्र ही उपस्थित होनेवाले हत्याकाण्ड, ध्वंस तथा विषादके दृश्योंके स्वरसे स्वर मिला रहा था। नेपोलियनकी बुद्धिने सभी बातोंकी सुव्यवस्था की थी और अपने सिपाहियोंके मनमें इस प्रचण्ड दुरूह कर्म्मका उत्साह भर दिया था। जिस समय यह आक्रमण हुआ, उस समय की इसकी भीषणताका वर्णन किसकी लेखनीसे लिखा जा सकता है? उभयपक्षकी फौजोंने अपना सारा शक्ति-सामर्थ्य इस भीषण संघर्षमें लगा दिया। शत्रु-सैन्यका ध्यान स्थानान्तरित करनेके लिये प्रत्येक स्थानके मोरचोंपर आक्रमण किया जा रहा था; साथ-साथ चारो ओर विषाद तथा मृत्यु फैलानेवाली बमके गोलोंकी वृष्टि उस दण्डार्ह नगरपर की जा रही थी। कुछ ही घण्टोंमें नेपोलियनके कार्य्यकुशल तोपखानोंने कोई आठ हजार गोले उस छोटे जिब्राल्टरपर बरसाये। इसके फलसे उसकी स्थूल रचना प्रायः ध्वंसस्तूपमें परिणत हुई। रात्रिके उस अन्धकार, तूफान, आर्द्र करनेवाली वृष्टि, तोपखानोंके घननादमें और बमके

* कृतज्ञताका प्रदर्शन देखनेमें मधुर होता है, किन्तु नास्तिकता जगदीशका कोप उत्पन्न करती है। धनी, सुप्रसिद्ध और अभागे जूनट अन्तमें उन्मादके आकस्मिक प्रबलाक्रमणके वश ही अविवेचित त्वरापूर्वक अपनी कोठरीकी खिड़कीसे फाँद पड़े। नीचेके फर्शपर गिर तड़प-तड़पकर उन्होंने प्राण विसर्ज्जन किया।

गोलोंकी चमकमें फ्रान्सीसी फौजें अङ्गरेजोंकी तोपोंके मुँहतक पहुँच गईं और वहाँ वह फटनेवाले गोलोंकी भीषण चोटों तथा बन्दूकोंकी बाढ़ोंसे घास काटनेवाली कलसे कटनेवाली घासकी तरह काट दी गईं। खाइयाँ मृत तथा मुमुर्षु सिपाहियोंसे परिपूर्ण हो गईं। वारंवार फ्रान्सीसी फौजें निवारित की जाने लगीं, वारंवार फ्रान्सीसी फौजें आक्रमण करनेके लिये अग्रसर होने लगीं। अपने सिपाहियोंको उत्साह प्रदान करते हुए नेपोलियन प्रत्येक स्थानमें उपस्थित रहते थे; वह अपने सिपाहियोंके प्राणोंकी और अपने प्राणकी बहुत कम परवा कर रहे थे। दीर्घकालके इस युद्धका परिणाम अनिश्चित था। फिर भी; शत्रुकी अन्तिम पराजयके लिये नेपोलियनने अतीव चिन्ता-पूर्व्वक कल्पनायें की थीं। अन्तमें उनकी कटी-छंटी और रक्त बहाती सैन्य-पंक्ति उस दुर्गकी प्राचीरोंके बीच समा गई और कुछ ही क्षणमें उस दुर्गकी सारी सैन्य मृत्युकी स्थिरता और निस्तब्धतासे ठण्ढी हो गई।

नेपोलियनने उस दुर्गकी ध्वंसशील प्राचीरपर चढ़ स्वागतसूचक ध्वजा उड़ा प्रधान सेनापति डुगोमियरसे कहा,—"सेनापति महाशय! अब आप जाकर विश्राम कीजिये। टूलोनका उद्धार हो गया।"

इस विषयमें स्काटने लिखा है,—"विभीषिका, अग्निदाह, अश्रु-पात और रक्तपातकी इसी रातको नेपोलियनका भाग्य-नक्षत्र पहले-पहल चक्रवालमें उदित हुआ और यद्यपि अस्त होनेसे पहले यह कितने ही भीषण दृश्योंपर चमका; किन्तु इस बातमें सन्देह किया जाता है, कि इसके उपरान्त इसकी ज्योतिके साथ विभीषिकाका इतना संमिश्रण और कभी हुआ या नहीं।"

यद्यपि वह छोटा जिबराल्टर इसतरह ले लिया गया; तथापि युद्ध नगरकी चारो ओर प्रातःकालतक चलता रहा। फटनेवाले गोले फट रहे थे और तपाये हुए गोले जनाकीर्ण आवास-स्थानोंपर

गिर रहे थे। फटे हुए गोलोंके भीषण टुकड़ों द्वारा पालनोंमें लेटे शिशुओं तथा कोठरियोंमें बैठी कुमारियोंके प्रत्यङ्ग उनके अङ्गसे छिन्न किये जा रहे थे। अग्निदाह अविरामरूपसे उत्पन्न हो रहा था, जिसमें पतित हो कटे-छंटे तथा मरते हुए मनुष्य जल रहे थे। इसीके साथ-साथ भग्नोद्यम तथा यन्त्रणाकी मर्मभेदी चीखें भीषण गोला-वृष्टिके घोर-गर्ज्जनके भी ऊपर उत्थित हो रही थीं। वायु इस त्रासजनक दृश्यसे सङ्कुत करती हुई आर्त्तनाद कर रही थी और शीतल तथा खिन्न करनेवाली वृष्टि बाजारोंको ध्वंस कर रही थी। इस संघर्षको देख यह बात मनमें सहज ही उदित होती है, कि क्या दयामय परमात्माने अपने पुत्रोंको उनको सन्तापके जगत्‌की जीवनी शक्ति द्वारा अपनी यह सुन्दर रचना इस पाशविकतामें विकृत करनेकी अनुमति दी थी? इसमें सन्देह नहीं, कि उस रातको व्यथित मानवजातिको शारीरिक तथा मानसिक यन्त्रणाका जो दण्ड दिया गया, उसका भीषण दायित्वभार किसी पक्षपर अवश्य रक्खा जायेगा। उस रात्रिको सहस्र-सहस्र हृदय विदीर्ण किये और कुचले गये, जिनकी जीवनकी प्रत्येक आशा सदाके लिये नष्ट कर दी गई। अङ्गरेजोंकी सरकारने विचार किया, कि जैसा सुअवसर था, उसमें उसने सैन्य भेज टूलोनपर अधिकारकर सुकार्य्य ही सम्पादित किया। नेपोलियनने यह अनुमान किया, कि उन्होंने अपने भीमपराक्रम तथा सफल यत्न द्वारा आक्रमणकारियोंको फ्रान्सकी भूमिसे भगा अपना महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य पालन किया। परिमित बुद्धिके मनुष्यके लिये कुकार्य्य और सुकार्य्यके तुलादण्डको समान करना आसान नहीं। किन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि इस रात्रिको बड़े विस्तारका अपराध किया गया। हत्याकाण्ड और लूट; गृहदाह तथा अत्याचार सभी किये गये। जगदीशकी शान्ति-रक्षाकी आज्ञायें व्यापक परिमाणमें भङ्ग की गईं। इसमें सन्देह नहीं, कि न्यायका वह दिन आनेवाला है, जिस दिन सूक्ष्म तथा समुचित

विचारके फलसे इस हत्याकाण्डका दायित्वभार ग्रहण करनेवाला पक्ष दण्ड पायेगा।

इतना होनेपर भी यह भयङ्कर दुःखान्त अभिनय समाप्त न हुआ था। दूसरे दिन जिस समय बालरविका धुँदला तथा ठण्डा रूप प्रगाढ़ नीलवर्णीय बादलोंके बीचसे प्रकट हुआ; उस समय नेत्रोंके सम्मुख एक अतीव त्रासजनक दृश्य प्रकट हुआ। उस समय दिखाई दिया, कि टूलोनके बाजार नर-रक्तसे प्लावित थे और अङ्गच्छेदके अतीव भीषण रूपसे सहस्र-सहस्र कटे-छटे तथा मृत मनुष्य मकानों तथा बाजारोंमें पड़े थे। इस नगरके कितने ही स्थानोंमें भीषण अग्निदाहकी ज्वाला प्रकट हो रही थी तथा बहु-संख्यक धूमायित भग्न स्थान और नष्ट-भ्रष्ट मकान मानवीय भ्रष्टता-के अद्वितीय नमूने बनाये तूफानकी शक्तिका प्रमाण दे रहे थे। उस समय भी गोला-वृष्टि हो रही थी और भयभीत तथा छिपे हुए मनुष्योंके बीच फटनेवाले गोले अविरामरूपसे फट रहे थे।

अपने यत्नके प्रधान उद्देश्य उस छोटे जिबराल्टरका पतन साधित करनेके उपरान्त नेपोलियनने विजयोल्लास, विश्राम या पश्चात्तापके लिये एक क्षणका भी अवसर ग्रहण न किया। उन्होंने तुरन्त ही अपनी तोपें इस ढङ्गसे लगाईं, जिससे उनके गोले अङ्गरेजोंके जङ्गी जहाजोंपर बरसें और वह जहाज प्रत्येक अनावृत स्थानमें सताये जायें। उस अङ्गरेजी बेड़ेके नौ-सेनापति लार्ड हीवोने जैसे ही उस छोटे जिबराल्टरकी प्राचीरपर फ्रान्सीसियोंकी तिरङ्गी पताका उड़ती देखी; वैसेही नगरको रक्षणीय न समझ अपने जङ्गी जहाजों-को उसी समय वह स्थान परित्याग करनेकी तय्यारीका सङ्केत किया। सारे दिन अङ्गरेज फ्रान्सीसी युद्धोपकरण-भाण्डारमें भरी वस्तुओंसे अपने जहाज परिपूर्ण करते रहे। उनका उद्देश्य यह था, कि इस भाण्डारकी जो वस्तु जहाजोंमें लादी जा सके, वह लादी जाये; जो बच जाये, वह नष्ट कर दी जाये। भगते हुए शत्रुको क्षति-

ग्रस्त करने और सुविधानुसार नष्ट करनेके लिये विजयी फ्रान्सीसी भी अपना सारा उद्यम लगा नये-नये तोपखानोंकी प्रतिष्ठा कर रहे थे। इसतरह दिन बीत गया; एकबार फिर उस अवरुद्ध तथा कष्ट-क्लान्त नगरपर शीतकालीन रात्रिकी विमर्ष प्रतिच्छाया उपस्थित हुई। उस नगरके राजतन्त्रियोंका भय अतीव त्रासजनक था। वृटिश आहत तथा रोगी मनुष्योंका पोतारोहण देखकर वह सब समझ गये, कि अब अङ्गरेज वह नगर परित्याग करेंगे और उसके अधिवासी अपने भाग्यानुसार अपना कर्म्म-फल भोगनेके लिये छोड़ दिये जायेंगे। और उन्हें यह समझानेकी आवश्यकता न थी, कि उन उच्छृङ्खल अत्याचारके दिनोंके प्रजातन्त्री प्रकोपसे वह, उनकी स्त्रियां और उनके सन्तान कैसे दण्डकी आशङ्का कर सकते थे।

अङ्गरेजोंने भागते समय अपने साथ ले जानेके लिये उतने फ्रान्सीसी जङ्गी जहाज लिये; जितने फ्रान्सीसी जङ्गी जहाजोंको वह तय्यार कर सके। अवशेष जहाज, जिनमें पन्द्रह जङ्गी जहाज और आठ मध्यम श्रेणीके जङ्गी जहाज थे, जलाये जानेके लिये एकत्र किये गये। दहनीय पदार्थों से परिपूर्ण एक आगका जहाज उन जहाजोंके बीच पहुँचा दिया गया। रातके दश बजे उस आगके जहाजमें बत्ती लगाई गई। उस बन्दरके बीच खड़े उस जहाजसे आग्नेय गिरिके उत्थानकी तरह ज्वाला निकलने लगी और एक बदरङ्ग प्रकाशसे समूचा दृश्य दोपहरके सूर्य्य प्रकाशकी तरह प्रकाशित हुआ। उस बन्दरका सागर-जल भागनेवालोंसे परिपूर्ण नावोंसे भरा था, जो नैराश्यपूर्ण उत्साहसे अङ्गरेजी तथा स्पेनी जहाजोंकी ओर भगाई जा रही थीं। बीस सहस्रसे अधिक राजतन्त्री दलभुक्त अकथनीय हृत्कम्पसे व्यथित उच्चपदस्थ पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे सागर-तटकी रेतपर एकत्र थे। यह सब उस क्रुद्ध सैन्यसे बचानेकी प्रार्थना कर रहे थे, जो अपने आखेटपर टूट पड़नेका औत्सुक्य प्रकाश करती हुई

उस अभागी नगरकी चारो ओर एकत्र हो भेड़ियोंकी तरह आर्त्तनाद कर रही थी।

उस भीषण दृश्यकी विभीषिकाको और भी बढ़ानेके लिये उस समय समस्त जङ्गी जहाजों तथा समस्त तोपखानोंसे भयङ्कर गोलन्दाजी हो रही थी। पारिवारिक झुण्डोंको विदीर्ण करते हुए गोले जा रहे थे और मनुष्योंसे परिपूर्ण जहाजोंके डकों तथा जनाकीर्ण नावोंपर बमके गोले गिर रहे थे। इसतरह बहुतेरी नावें डूब गईं और डूबती हुई स्त्रियों तथा बच्चोंके आर्त्तनाद तोपोंका गभीर गर्ज्जन भेद उत्थित हुए। पति तथा पत्नियाँ, माता-पिता तथा बच्चे; भाई बहनें एक दूसरेसे जुदा होनेपर संज्ञाहीन यन्त्रणासे सागर-तटमें इधर-उधर दौड़ रहे थे। छटी-छंटी पुत्री मरनेके लिये सागर-तट-की रेतपर छोड़ दी गईं थी, भीड़के रेलेमें आ पिता एक नावपर पहुँच गये थे; पत्नी एक दूसरी नावमें सवार हो गई थी और इनमें किसीको यह बात विदित न थी, कि कौन जीता बचा और कौन अपने सौभाग्यक्रमसे कालके गालमें समा चुका था। उस समय जहाज, युद्धोपकरण-भाण्डार, बारूद-भाण्डार सभी धांय-धांय जल रहे थे।

सुअवसर देख टूलोन नगरके जैकोबिन अपने खपरैलों तथा भूग-र्भस्थ घरोंसे निकले। अन्धकारके निशाचरोंकी तरह यह सब नशेके मतवाले तलवारें हाथोंमें ले सारे नगरमें उपद्रव करने लगे। इन सबने भागते हुए राजतन्त्रियोंपर आक्रमण किया; उनके वस्त्र उनकी देहसे नोच लिये और कुमारियों तथा रमणियोंपर हर तरहके अनु-धावनीय पाशविक अत्याचार किये। अर्द्धनिशाके कुछ ही बाद बारूदके सहस्र-सहस्र पीपोंसे परिपूर्ण दो मध्यश्रेणीके जङ्गी जहाज उड़े और उनके उड़नेसे ऐसा भीषण धड़ाका हुआ, कि उससे और तो और,—ठोस पहाड़ियाँ भी भूकम्पके कम्पकी तरह डग-डग डोलीं। अन्तमें अङ्गरेजोंकी पश्चाद्गामिनी रही सैन्य जैसेही इस नगरकी प्राचीर

छोड़ नावोंमें सवार होनेके लिये द्रुतवेगसे बढ़ी; वैसे ही इस नगरके प्रत्येक भागसे कोई चालीस सहस्र विजयी प्रजातन्त्री सिपाही इस नगरमें धंसे। मिस्रोंका जहाजी बेड़ा अनुकूल वायुमें अपने पाल चढ़ा निस्तब्ध सागरके चक्रवालकी ओर जा शीघ्र ही अन्तर्द्धान हो गया। वह गया और अपने साथ कोई बीस हजार अभागोंको गृहविहीनता, अभाव तथा आजन्मके क्लेशकी विपद् भोगनेके लिये अपने साथ लेता गया।*

प्रजातन्त्री फौजोंके प्रधान सेनापति डुगोमियर अपना सारा बल व्यय करके भी अपने विजयी सिपाहियोंके मनोवेगको तनिक भी रोक न सके। कई दिनतक इस दण्डित नगरमें अत्याचारों और अपराधोंका बड़ा जोर दिखाई दिया। राजतन्त्री पताका उत्थित करने तथा नगर और उसका भाण्डार शत्रुके हाथ समर्पित करनेका अपराध ऐसा न था, कि क्षमा कर दिया जाता। पेरिसकी जेकोबी सरकारने एक आज्ञापत्र भेज ऐसा रक्तरञ्जित तथा भीषण प्रतिशोध लेनेकी आज्ञा दी, जिसे देख सारे फ्रान्सके राजतन्त्री भीत हों और शत्रुके साथ फिर साट करनेका साहस न करें। नेपोलियनने इस नगरके अधिवासियोंको प्रतिफलके प्रकोपसे बचानेका यथासाध्य यत्न किया। वह अत्याचारके उन दृश्योंको अतीव मानसिक यन्त्रणापूर्वक देखते थे, जिनके रोकनेमें वह सम्पूर्ण असमर्थ थे।

---

* इस विषयमें एलाइसनने लिखा है,—"इसतरह फ्रान्सके इतिहासका,—फ्रान्स हीके इतिहासका क्यों—जगत्के इतिहासका अतीव सुप्रसिद्ध यह स्मरणीय युद्ध समाप्त हुआ। अपनी अप्रतिम विपद्‌पूर्ण अवस्थासे, ऐसी फौजोंके आक्रमणसे, जो फ्रान्सराज चतुर्दश लुईको भी उनकी शक्तिकी अधिकतामें कुचल सकती थीं और गृहविवादसे, जो फ्रान्स-साम्राज्यको छिन्न-भिन्न कर देनेकी धमकी दे रहा था, फ्रान्सकी प्रजातन्त्री सरकारने विजयपूर्वक आत्मरक्षा की। फिर भी, इस समय उस शिशु 'रक्त बीज'को ही पालनेमें मार डालनेका जैसा सुअवसर मिस्रोंको मिला था, वैसा सुअवसर फिर कभी प्राप्त हो नहीं सकता। उस समय अङ्गरेजोंने यदि बीस सहस्र सिपाही टूलोन भेजे होते, तो सारे दक्षिणीय फ्रान्समें विधिबद्ध सिंहासनकी प्रतिष्ठा हो जाती।"

कोई चौरासी वर्षके वृद्ध एक बहरे और प्रायः अन्धे व्यापारी-का अपराध यह था, कि वह कोई डेढ़ करोड़ रुपयेका अधिकारी था। फ्रान्सकी प्रतिनिधि-सभाने पहले उस व्यवसायीके धनकी आकांक्षा की; इसके उपरान्त उसे फाँसीका दण्ड दिया। इस घटनाके सम्बन्धमें नेपोलियनने कहा,—"जब मैंने इस वृद्ध मनुष्यकी फाँसी देखी; तब मुझे ऐसा विदित हुआ, कि महाप्रलय अतीव सन्निकट है।"

जेकोबियोंके क्रोधसे असहाय मनुष्योंकी रक्षा करनेके यत्नमें उन्होंने अपने प्राणपर घोर सङ्कट उपस्थित किया था। एक दिन एक स्पेनी जहाज पकड़ा जाकर टूलोन बन्दरमें लाया गया। इसपर सवार फ्रान्सका प्रसिद्ध प्रजातन्त्री अतीव कुलीन चेब्रिलेग्ट परिवार पकड़ा गया था। यह इस जहाज द्वारा फ्रान्ससे भाग रहा था। साधारण लोग यह समझे, कि यह परिवार फ्रान्ससे भागे मनुष्योंमें मिल पेरिसपर चढ़ाई करनेवाली मित्रोंकी सैन्यमें सम्मिलित हुआ चाहता था। यह समझ वह इस परिवारके घृणित रईसोंको पकड़ने तथा इसमें सम्मिलित स्त्रियों तथा पुरुषोंको सबसे समीपके लेम्पके खम्बेसे फाँसी लटकानेके लिये झपटे। इनके रक्षक सिपाही इनकी रक्षा करनेपर उद्यत हुए; किन्तु वह सब मार भगाये गये। नेपोलियनने देखा, कि बलवाइयोंमें कुछ गोलन्दाज भी थे, जो टूलोनके घेरेके समय उनकी अधीनतामें कार्य्य कर चुके थे। नेपोलियन एक चबूतरेपर चढ़ गये और अपने उम अफसरको देखकर गोलन्दाज उनकी बात सुननेपर उद्यत हुए। नेपोलियमने अपनी प्रवर्त्तन करनेकी असाधारण शक्तिके फलसे उन सबको इस बातपर राजी कर लिया, कि वह इस परिवारको नेपोलियनके हाथ सौंप दें। उनसे नेपोलियनने कहा, कि कल प्रातःकाल मैं इस परि-वारको विचार तथा दण्डके लिये उपस्थित करूँगा। इसी दिन अर्द्धनिशाको नेपोलियनने इस परिवारको युद्धोपकरणकी एक गाड़ी-

में भरे बारूदके पीपों तथा गोलियोंके सन्दूकोंके बीच छिपा उस गाड़ीको इस नगरसे बाहर निकाल दिया। इसीके साथ-साथ इस नगरके बाहर सागर-तटमें उन्होंने एक नाव प्रस्तुत करा रखी थी, जिसमें सवार करा इस परिवारको विपद्से निकाल दिया।

यद्यपि प्रतिनिधि-सरकारके प्रतिनिधियोंने इस नियमके सम्बन्धकी अपनी रिपोर्टमें नेपोलियनका नामोल्लेख किया न था, तथापि अपनी दिखाई शक्ति तथा चतुरताके कारण उन्होंने सैनिक अफ़सरोंमें कम ख्याति अर्ज्जन न की थी। फिर भी; एक प्रतिनिधिने कारनटको लिखा था,—"मैं आपके पास एक ऐसा युवक भेजता हूँ, जिसने इस घेरेमें अपनेको अतीव प्रशंसनीय प्रमाणित किया है। मैं उसकी पदोन्नतिके लिये आपसे उत्सुकतापूर्वक सिफारिश करता हूँ। यदि आप उसकी पदवृद्धि न करेंगे, तो निश्चय ही वह आप अपनी पदवृद्धि करेगा।"

टूलोनके पुनरुद्धारके उपरान्त ही नेपोलियन सेनापति डुगोमियरके साथ मारसेलेस गये। वहाँ एक दिन वह इन सेनापतिके साथ थे; जब उनका स्त्रियोंजैसा रूप देख किसीने डुगोमियरसे पूछा,—"यह छोटेसे अफसर कौन हैं और इन्हें आपने कहाँ पड़ा पाया?"

इसपर डुगोमियरने गम्भीरतापूर्व्वक उत्तर दिया,—"इन अफसरका नाम नेपोलियन बोनापार्ट है। इन्हें मैंने टूलोनके घेरेमें पड़ा पाया था और इस घेरेकी सफलतामें इन्होंने प्रधान भाग लिया है। इसमें सन्देह नहीं, कि एक दिन आप इन्हीं छोटेसे अफसरको एक उच्च पुरुषके रूपमें देखेंगे।"

नेपोलियनकी अविराम गति---पदवृद्धि---नाइसकी यात्रा---अष्ट्रियनपर आक्रमण---नेपोलियनकी गिरफ्तारी और उनका पद छिन जाना---प्रलोभन और उद्धार---इटलीकी सैन्यकी पराजय---नेपोलियनका पाठाभ्यस्त चरित्र---उनका आन्तरिक दया---फ्रान्समें धर्म्मशून्यता---नई शासन-व्यवस्था---प्रतिनिधि-सभाकी विपद्---प्रतिनिधि-सभाके सम्मुख नेपोलियनका उपस्थित किया जाना---आयोजन---परिणाम---नई सरकार---अपनी माताके प्रति नेपोलियनका ध्यान---सतेज वक्तृता।

इस घटनाके उपरान्त ही नेपोलियन मित्रोंके जहाजी बेड़ोंके आक्रमणसे देशके अधिवासियोंकी रक्षाके लिये फ्रान्सके दक्षिणस्थ सामुद्रिक तटकी मोरचेबन्दीमें नियुक्त किये गये। जिस कठोर मनोयोगने टूलोनमें उनका चरित्र स्मरणीय बनाया था; उसी अक्लान्त कठोर मनोयोगसे वह अपने इसे नये कठिन कार्य्यमें प्रवृत्त हुए। सभी उच्च भूमिपर वह चढ़े; समस्त खाड़ियोंका उन्होंने परिदर्शन किया और सागर-तटके सभी सागर-जलकी उन्होंने थाह ली। उन्होंने न तो कोई आमोद-प्रमोद किया, न विश्रामके विचारको अपने मनमें स्थान दिया। उस समय शीतकाल था और वायु तथा वृष्टिका सुशीतल

तूफान निरानन्दमयी पहाड़ियोंके ऊपरसे बहा करता था। किन्तु जैसी प्रचुर तथा गतिशील मानसिक शक्ति नेपोलियनमें थी; वैसी शक्ति उससे पहले कदाचित् और किसी मनुष्यके भाग्यको मयस्सर हुई न थी। इसी शक्तिने उन असाधारण पुरुषको उनकी उस चौबीस वर्षकी युवावस्था होमें व्यक्तिगत आसक्तिसे सम्पूर्ण निस्पृह बना दिया था। वह वृष्टिमें भीगते, कृषकों तथा मछुओंकी झोपड़ियोंमें दैवात् मिले कदर्य खाद्यसे अपनी उदरपूर्त्ति करते और अपना लबादा ओढ़ किसी साधारण चारपाईपर लेट कुछ घण्टोंके लिये रात्रिको विश्राम कर लिया करते थे। इसतरह उन्होंने अपने शरीर तथा माथेसे ऐसा श्रम किया; जैसा श्रम कोई साधारण शारीरिक संगठन सहन कर न सकता और कोई साधारण उत्साह स्वीकार कर न सकता था।

इसतरह जो कार्य्य औरों द्वारा कई वर्षके श्रममें सम्पन्न होता; उस कार्य्यको उन्होंने कुछ सप्ताहमें समाप्त किया। यह बात समझमें नहीं आती, कि एक अकेली मानवीय बुद्धिने कैसे इतने बड़े तथा सर्व्वाङ्गसम्पूर्ण कार्य्यकी कल्पना की होगी और किसतरह उसका वृहत् फल प्रकट किया होगा। जिस समय उनकी उम्रके अन्यान्य सैनिक अफसर मछली मारनेकी बंसी हाथमें ले पार्व्वत्य झरनोंके किनारे-किनारे भटकते फिरते थे; या पक्षी मारनेकी बन्दूक हाथमें ले खेतोंमें चक्कर लगाते थे, या पान-भोजनके कोलाहलसे परिपूर्ण विशाल कमरोंमें युवती कुमारियोंके साथ आठ मनुष्यों या दो मनुष्योंके नृत्यमें प्रवृत्त हो अपनी भाग्य-परीक्षा करते थे; उस समय नेपोलियन भीमशक्तिसे कार्य करते हुए अहर्निश अपनी वह गति परिलक्षित कर रहे थे; जो गति अपना जोड़ न रखती थी। उन्होंने सागर-तटके तोपखानोंको तीन भागोंमें विभक्त किया था। एक भागके तोपखाने प्रयोजनीय बन्दरोंमें अवस्थित जङ्गी जहाजोंकी रक्षाके लिये थे। दूसरे भागके तोपखाने सौदागरी जहाजोंकी रक्षाके लिये थे।

तीसरे भागके तोपखाने सागर-तटमें होनेवाले व्यवसायकी रक्षाके लिये थे और यह सब अन्तरीपों तथा उच्चभूमिपर प्रतिष्ठित किये गये थे।

अपने इस विशाल अङ्गीकृत कार्य्यको शीतकालीन दो मास जनवरी और फरवरीमें समाप्तकर सन् १७९४ ई० के मार्च मासके आरम्भिक भागमें वह नाइसमें अवस्थित इटलीपर चढ़ाई करनेवाली फ्रान्सीसी सैन्यके सदरमें सम्मिलित हुए। उस समय वह तोपखानोंके ब्रिगेडियर जेनरलके पदपर प्रतिष्ठित थे। उस समय नेपोलियनका आकार-प्रकार चित्ताकर्षक न था। उनका आकार खर्व्व तथा निर्बल था और वह अतीव कृश थे। उनकी मुखाकृति नुकीली तथा कर्कश थी और उनका वर्ण पीला था। वह अपने बाल प्रचलित प्रथानुसार न संवार अपने माथेसे ऊपर सीधे चढ़ा दिया करते थे। उनके हाथ अपने आकारमें ठीक स्त्रियोंजैसे प्रतीत होते थे। वह परिच्छद द्वारा अपने बनाव-शृङ्गारका यत्न किया न करते और सदा बिना दस्तानोंके रहते थे। वह कहते, कि दस्ताने पहनना व्यर्थकी विलासिता मात्र है। वह शिरपर सादी गोल टोपी और पैरमें भद्दे ढँगसे बैठा बूट पहनते थे। अपनी वर्दीके ऊपर वह एक बड़ा भूरा कोट पहनते थे। काल पाकर यह कोट उसीतरह प्रसिद्ध हुआ; जिसतरह चतुर्थ हेनरीकी श्वेत कलगी प्रसिद्ध हुई थी। फिर भी; उनकी आँखोंमें बड़ी ज्योति और उनकी मुस्कुराहटमें अद्भुत मनोहारिणी शक्ति* थी।

---

* इङ्गरसल्के द्वितीय युद्धमे लिखा निकला है,—"नेपोलियन बोनापार्ट अपने समयके अतीव उदाहरणीय युवकोंमें थे। युवक फौजी अफसरोंमें नियमित दुर्गुणों तथा दुर्बुद्धिताकी जो आसक्ति रहती है, उनमे वह आसक्ति न थी। जुआ, कलह, द्वन्द्व-युद्ध या पानासक्ति प्रभृति किसी भी दुर्गुणने उनके सैनिक जीवनके आरम्भिक भागको कलुषित न किया। उनका चरित्र जैसा विशुद्ध था, उनकी बुद्धि वैसी ही श्रेष्ठ थी और उनका स्वभाव वैसा ही हृदयग्राही था। यह बात प्रकृति-विरुद्ध जान पड़ती है, कि जो युवक ऐसा सुस्पष्ट हो, वही युवक उस दुष्ट वार्द्धक्यकी परिपक्वता प्राप्त करे, जिस दुष्ट वार्द्धक्यका दोष उनपर इतनी अधिकतासे आरोपित

नेपोलियनने नाइस पहुँच देखा, कि फ्रान्सीसी सैन्य सागर-तटस्थ आल्पस पर्व्वतके अपने मोरचोंमें निकम्मी बैठ विश्राम कर रही थी और उसे अष्ट्रिया तथा सारडीनियाकी अपेक्षाकृत बड़ी फौजें घेरे हुई थीं। सेनापति डुमेरट्रिन इस फ्रान्सीसी सैन्यके प्रधान सेनापति थे। आप एक निर्भीक तथा रणनिपुण योद्धा थे; किन्तु अपने बुढ़ापे और दुर्बलतासे वह अस्थिरचित्त हो गये थे और वात-वेदनासे अतीव कष्ट भोग रहे थे। आती हुई वसन्त ऋतुके सूर्य्यसे पार्व्वत्य भूमि तथा उपत्यकायें आनन्दमयी हो रही थीं। दक्षिणसे बहता हुआ मन्द समीरण खिलती हुई पत्तियोंपर हलकी-हलकी थपकियाँ दे रहा था और कलकण्ठ पक्षियोंका कूजन और पुष्पोंका परिमल प्राणियोंका मन यत्नहीन आसक्तिकी ओर आकृष्ट कर रहा था। उस समय नेपोलियन टूलोनके घेरेके श्रम तथा सागर-तटकी मोर्चेबन्दीके निद्राहीन श्रमसे पीतवर्णीय तथा दुर्बल हो रहे थे। अपनी प्रत्यक्ष निर्बल देहके सबल बनाने तथा विश्राम करनेके लिये यह अच्छा सुअवसर था। फिर भी; उन्होंने एक दिनके लिये भी अपनेको सुख या आराम न दिया। और तो क्या; जिस घण्टे वह इस सदरमें पहुँचे; उसी घण्टेसे वह उभयपक्षकी फौजोंके प्राप्य अवलम्बन, संगठन, स्थिति तथा संख्याके सम्बन्धका सविशेष विवरण प्राप्त करनेमें अतीव

किया गया है। अपने स्कूलमें वह अपने सहपाठियोंके प्रियपात्र थे। वह सब जब अपने खेलों तथा अन्यान्य अवसरपर किसी बालककी सभापति चुनना चाहते, तब अधिकांश स्थलमें नेपोलियन हीको चुनते थे। सैन्यमें भी उन्होंने इसी समान रूपसे आदर प्राप्त किया। अपने सेनापतिके रूपमें सिपाही उनकी जैसी प्रतिष्ठा करते थे, वह अच्छी तरह विदित है। नेपोलियन अपने अधीनस्थ सिपाहियोंके प्रति समभाव तथा प्रफुल्लतासे दया दिखाते; उनके अभाव तथा प्रयोजनका ध्यान करते और अफसरोंसे भी अधिक उनकी शुभकामना किया करते थे। फिर, स्कूलमें तथा सैनिक समस्त पदोंमें वह कठोर सुशासक थे। उन्होंने अपने किसी पुरुषत्वरहित या अयोग्य आत्मगौरवत्यागसे कभी किसीकी कृपा प्राप्त करनेका यत्न न किया, वह आजन्म चतनाशाली, सरल, व्यवस्थानुयायी, सदय तथा चतुर्दिकदर्शी बने रहे।"

मनोयोगपूर्व्वक प्रवृत्त हुए। उन्होंने फ्रान्सीसी सैन्यकी प्रत्येक चौकी-का निरीक्षण किया और अतीव सूक्ष्म दृष्टिसे शत्रु-अधिकृत सैन्य-पंक्तिका परिदर्शन किया। उन्होंने उस अञ्चलके मानचित्रका परि-शीलन किया। वह उस अञ्चलके सभी स्थानोंसे सम्पूर्ण अवगत होनेके लिये सङ्कीर्ण वन-पथों और पर्व्वतोंपर भी घण्टों और दिनों अपना घोड़ा उड़ाते फिरे। दिनभर अविराम श्रम करनेके उपरान्त वह सारी रात अपने मानचित्रों तथा युद्धस्थलकी आकृतियोंके पर्य्यवेक्षणमें बिताते। वह उनमें अङ्कित प्रत्येक तीव्रगति जलस्रोत, प्रत्येक उपत्यका, प्रत्येक नदीको ध्यानपूर्व्वक देखते और उनपर फ्रान्सीसी सैन्य प्रकट करनेवाली मुहरके लाल चपड़ेसे रञ्जित मस्तक वाली आलपीनें और शत्रु-सैन्य प्रकट करनेवाली नीले चपड़े-से रञ्जित मस्तकवाली आलपीनें बैठाते। वह सभी सम्भवनीय संयोगोंको संयुक्त करते और फ्रान्सीसी सैन्य द्वारा अधिकृत होनेवाली भावी सभी स्थितियोंकी असुविधा तथा सुविधाकी गवेषणा करते थे। पिछली रातको एक चारपाईपर लेट कुछ घण्टे वह विश्राम करते और प्रत्यूषको फिर जाग अपने घोड़ेपर सवार हो आल्पस गिरिके पेचीले तथा विपदसङ्कुल सुदृढ़ स्थानोंका पर्य्यवेक्षण करने लगते थे।

रोजा नदीकी उर्व्वरा तट-भूमिके सौरगिया स्थानमें अष्ट्रियनकी एक बड़ी सैन्य मोरचे बाँधे पड़ी थी। वह सुख तथा प्राचुर्य्यका आनन्द भोग कर रही थी, उसे स्वप्नमें भी किसी विपद्की आशङ्का होती न थी। इधर नेपोलियनने अतीव विचारपूर्व्वक अपनी कल्पना प्रस्तुत की। उन्होंने सभी सम्भवनीय दैवी घटनाओंकी पूर्व्वकल्पना कर ली थी और सभी नैमित्तिक विपद्से रक्षा पानेका उपाय कर लिया था। फ्रान्सीसी उच्चपदस्थ सैनिक अफसरोंकी एक सभा हुई। इसके सम्मुख नेपोलियनने अपना युद्धका प्रस्ताव इस दृढ़ता तथा स्वच्छतासे उपस्थित किया, कि वह तुरन्त ही कार्य्य-

में परिणत किया जानेके लिये स्वीकार कर लिया गया। मेसेनासे* कहा गया, कि वह पन्द्रह सहस्र सिपाहियोंके साथ गुप्तरूप तथा द्रुतगतिसे रोजासे समान्तरालमें बढ़नेवाली ओरेगलिया नदीके तट-देशमें चढ़ें; बहुत ऊपर जा इन दोनो नदियोंके उद्गम स्थानके समीप पहुँच रोजा नदी पारकर उसकी घाटीसे निकलें और अष्ट्रियन सैन्यके पश्चाद्भागपर एकाएक टूट पड़ें। प्रधान सेनापति डुमेरट्रिन-से यह कहा गया, कि उसी समय आप दश सहस्र सिपाही अपने साथ ले शत्रु-सैन्यके अग्र भागपर आक्रमण करें। नेपोलियनने अपने सम्बन्धमें यह स्थिर किया, कि वह दश सहस्र सिपाहियोंके साथ भूमध्य सागर-तटके समीप जा वहाँके प्रयोजनीय स्थानोंपर अधिकारकर दक्षिणकी उर्वरा भूमिसे शत्रु-सैन्यके पीछे लौटनेका पथ अवरुद्ध कर

१० एन्ड्री मेसेना एक साधारण सिपाहीसे उन्नत हो सेनापतिके पदपर पहुंच, इसके उपरान्त रिवोलीके डिउक तथा फ्रान्सके मारशल सेनापति हुए। इनके सम्बन्धमे नेपोलियनने कहा है,—"वह असाधारण बुद्धिके मनुष्य थे। फिर भी, किसी युद्धसे पहले वह दूषित विन्यास किया करते थे। जिस समय उनकी चारो ओरके सिपाही मर-मरकर गिरने लगते थे; उस समय वह उस विचारमें उपनीत होते थे, जिस विचारमें उन्हें उससे पहले उपनीत होना चाहिये था। हत तथा मुमुर्ष सिपाहियोंके बीच अवस्थानकर और अपनी चारो ओरके सिपाहियोंके गोला-वृष्टिसे उड़ते रहनेपर वह अपनी आज्ञायें देते और अतीव शान्ति तथा विचारसे अपना विन्यासक्रम स्थिर रखते थे। उनके विषयमें यह बात बहुत ही ठीक कही गई है, कि युद्धके समय जबतक उनकी पराजय आरम्भ न होती थी; तबतक उनकी बुद्धि अपना चमत्कार प्रकट न करती थी। फिर भी, वह लुटेरे थे। वह फौजी ठेकेदारो तथा कमसरियटसे आधा धन लिया करते थे। मैंने उनसे प्रायः ही कहा, कि आप यदि अपनी नीच-खसोट छोड़ दें, तो आपको मैं साढे चार या छः लाख रुपये भेंट दूं। पर उन्हें सर-कारी जमा पचा जानेका अभ्यास हो गया था और वह धन देख अपना लोभ संवरण कर न सकते थे। उनके इस दुष्कर्मके कारण उनके सिपाही उनसे घृणा करते थे। फिर भी; समयकी स्थितिकी ओर ध्यान देनेसे वह बहुमूल्य पुरुष थे। उनके चरित्रका उज्ज्वलांश यदि लिप्सा द्वारा कलुषित न होता, तो निःसन्देह वह एक महत् पुरुष कहलाते।" मेसेना नेपोलियनके समस्त युद्धमें सम्मिलित रहे। वह अपने स्वामी नेपोलियनको बहुत चाहते थे। जब नेपोलियन सेन्ट हेलेनामें निर्वासित किये गये; तब मेसेनाने विरक्तिसे अपनी इह लीला समाप्त की।

एण्ड्री मेसेना ।　　[पृष्ठ ९६

दें। इसतरह नेपोलियनके नाइसके सैनिक सदरमें पहुँचनेके तीन सप्ताहके उपरान्त ही उस अञ्चलकी समूची फ्रान्सीसी सैन्यमें गति-विधि होने लगी।

उन नवयुवक सेनापतिका उत्साह समूची फ्रान्सीसी सैन्यमें तुरन्त ही प्रचारित किया गया। इसके उपरान्त ही नैराश्यपूर्ण तथा रक्तरञ्जित लड़ाइयाँ हुईं और उनकी कल्पनायें जयोल्लासपूर्वक कार्य्यमें परिणत की गईं। कोई बीस सहस्र अष्ट्रियन सिपाही अपने ऊपर एकाएक विपद्‌का तूफान आ जानेसे आश्चर्य्यचकित हुए और अविवेचनापूर्ण त्वरासे रणस्थल छोड़ भागे। युद्धोपकरण तथा खाद्यसे सुपरिपूर्ण मित्रोंकी फौजोंका प्रधान स्थान सौरजिया फ्रान्सीसियोंके हाथ आया। मई मासकी समाप्तिसे पहले सागरतटस्थ आल्प्‌स गिरिकी सभी घाटियोंपर फ्रान्सीसियोंका आधिपत्य प्रतिष्ठित हो गया। माण्ट सेनिस, माण्ट टेण्डी तथा माण्ट फिनिसटेरीकी चोटियोंपर चढ़ी फ्रान्सीसी पताकायें वायुमें लहराने लगीं। इस अनपेक्षित एकाएककी विजयका समाचार तड़ितप्रवाहकी त्वरासे समूचे फ्रान्समें फैल गया। फ्रान्सीसी जातिने इस विजयका श्रेय प्रधानतः नाइसकी फ्रान्सीसी सैन्यके प्रधान सेनापति डुमरट्रिन हीको प्रदान किया; किन्तु फ्रान्सीसी सैन्यको यह बात सम्पूर्ण रूपसे विदित हो गई थी, कि किसके बुद्धिबल तथा यत्नके प्रति इस विजय-का श्रेय आरोपित करना चाहिये था। यद्यपि उस समयतक साधारण लोगोंमें नेपोलियनका नाम उतना प्रसिद्ध हुआ न था; तथापि फ्रान्सीसी सैन्यके अफसर तथा सिपाही नेपोलियनकी बढ़ती हुई प्रसिद्धिको दिन-दिन अधिकाधिक मनोयोगपूर्वक निरीक्षण कर रहे थे। उधर प्रधान सेनापति डुमरट्रिन अपने उन ब्रिगेडियर जेन-रलके दिखाये रणपाण्डित्य तथा चतुरतासे ऐसे प्रभावान्वित हुए थे, कि उन्होंने नेपोलियनकी बुद्धिके पथप्रदर्शनके हाथ अपनेको निर्वि-वाद रूपसे समर्पित कर दिया था।

ग्रीष्मकाल शीघ्र-शीघ्र बीत गया और इस अवसरमें एक ओर गिरिशिखरपर बैठी फ्रान्सीसी सैन्य शत्रुका आक्रमण रोकनेके लिये स्वाधिकृत स्थानकी मोर्चेबन्द करती रहीं, दूसरी ओर अष्ट्रियन तथा पीडमोण्टीजकी भीषण फौजें सम्मिलित हो शत्रु फ्रान्सीसियों-के उच्छेदका यत्न करती रहीं। नेपोलियन उस समय भी अपने उसी अक्लान्त भावसे उस अञ्चलकी नैसर्गिक स्थितिका परिचय प्राप्त और सैन्यकी गति, शासन तथा पोषणकी विधिकी आलोचना कर रहे थे। इसीके साथ-साथ वह उत्सुकतापूर्व्वक अपनी प्रसिद्धि प्राप्त करनेका सुअवसर देख रहे थे; कारण; उन्हें अब इस बात-का विश्वास होने लगा था, कि यश तथा कीर्त्ति प्राप्त करनेके लिये ही वह उत्पन्न किये गये थे।

ऐसे समय वह आगे लिखे एक विचित्र अपराधके लिये गिरफ्-तार कर लिये गये और शूली चढ़नेसे बाल-बाल बचे। इस समय-से पहलेके शीतकालमें नेपोलियन जब फ्रान्सके सागर-तटकी मोर्चे-बन्दीमें प्रवृत्त थे; तब उन्होंने मारसेलेसके एक पुराने सरकारी कैदखानेकी मरम्मत इस ढङ्गसे करानेका प्रस्ताव किया, जिससे वह स्थान समयपर बारूदके भाण्डारका काम दे सके। मारसेलेसके नेपोलियनके स्थानापन्न अफसर नेपोलियनका यह प्रत्यक्ष युक्तियुक्त प्रस्ताव कार्य्यमें परिणत करनेमें तत्पर हुए। इसपर कुछ असन्तुष्ट मनुष्योंने इन अफसरके विरुद्ध साधारण लोगोंकी रक्षाकी कमिटी-के अफसरसे यह शिकायत की, कि यह अफसर स्वदेशभक्त प्रजा-तन्त्रियोंको कैद करनेके लिये पेरिसके बैष्टिल कारागार दुर्गजैसा दूसरा कारागार बनवा रहा है। इसके फलसे यह अफसर तुरन्त पकड़ा और राष्ट्रविप्लवके न्यायालयके सम्मुख उपस्थित किया गया। यहाँ उसने बड़ी ही स्वच्छतासे यह प्रमाणित कर दिया, कि यह कल्पना मेरी नहीं; मैं केवल अपनेसे पहलेके अफसरकी कल्पनाके अनुसार कार्य्य मात्र कर रहा था। इसपर यह अफसर छोड़ दिया

कैदमें नेपोलियन।
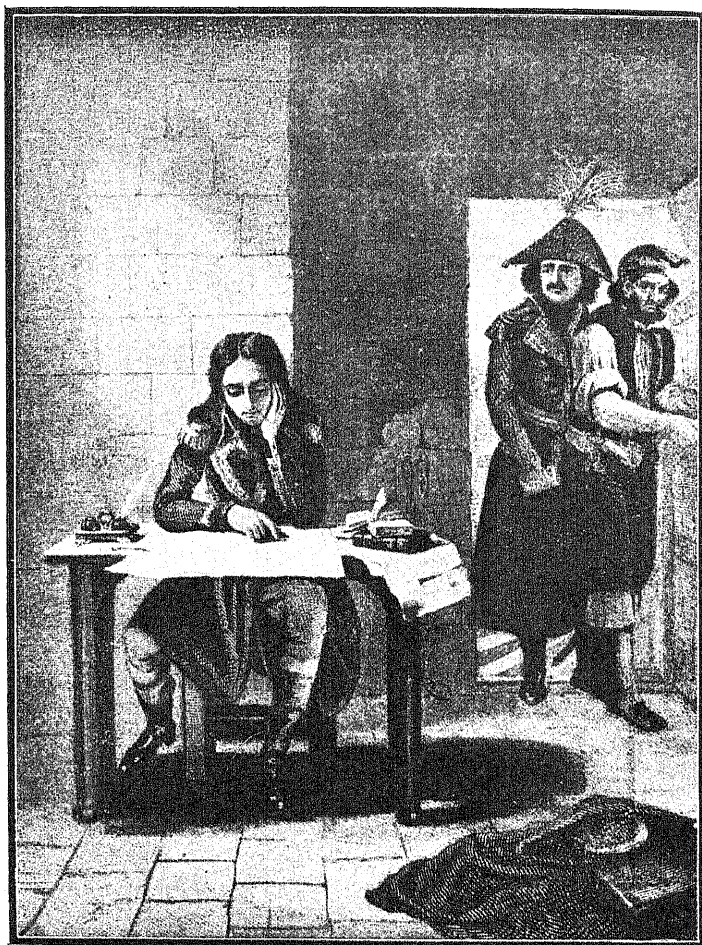
"रात दो बजे एक फ़ौजी अफ़सर इस छुटकारेका समाचार ले नेपोलियनकी कोठरीमें पहुँचे।

[पृष्ठ ८८

गया और नेपोलियनकी गिरफ्तारीकी आज्ञा निकाली गई। नेपोलियन पकड़े गये और पन्द्रह दिन कैदमें रहे। अन्तमें उनके छुटकारेका पेरिससे आज्ञापत्र आया। रात दो बजे एक फौजी अफसर इस छुटकारेका समाचार ले नेपोलियनकी कैदकी कोठरीमें पहुँचे। वहाँ उन्हें यह देख बड़ा आश्चर्य हुआ, कि नेपोलियन वस्त्रादि पहने अपने टेबुलके सम्मुख बैठे थे और उनके सम्मुख मानचित्र, पुस्तकें तथा स्थान-विशेषके मानचित्र फैले थे।

उनके मित्रने पूछा,—"यह क्या! अभीतक आप जाग ही रहे हैं?"

प्रत्युत्तरमें नेपोलियनने कहा,—"मेरा सवेरा हो गया है। मैं आज रातका विश्राम समाप्त कर चुका हूँ।"

उनके मित्रने फिर कहा,—"क्या रातके दो ही बजे आपका सवेरा हो गया?"

प्रत्युत्तरमें नेपोलियनने कहा,—"हाँ; इसी समय मेरा सवेरा हो गया। किसी मनुष्यके लिये दो या तीन घण्टोंका विश्राम यथेष्ट है।"

यद्यपि सरकारी प्रतिनिधियोंने नेपोलियनकी सेवाओंका मूल्य समझते हुए पेरिसकी प्रतिनिधि-सभाको यथार्थ विषयोंका ऐसा विवरण लिख भेजा था, जिससे वह तुरन्त ही छुटकारा पा गये; फिर भी; आत्मसमर्थनके स्वार्थपूर्ण यत्नके लिये उन्हें यह उचित जान पड़ा, कि नेपोलियनका तोपखानेका सेनापतित्व छीन लिया जाये और इसके बदले उन्हें पल्टनमें कोई पद दिया जाये। नेपोलियनको यह पद-परिवर्त्तन अपमान बोध हुआ। उन्होंने अपने नवनियोगका आज्ञापत्र घृणापूर्व्वक फेंक दिया और अपेक्षाकृत दैन्यमें अपना समय अतिवाहित करनेके लिये वह सैन्य छोड़ अपनी माता तथा अपने परिवारके अन्यान्य लोगोंके पास मारसेलेस चले गये। यह घटना सन् १७९४ ई० के शरत्कालकी है। उन्होंने

शीतकाल अपेक्षाकृत निश्चल भावसे बिताया। फिर भी; वह समयकी हलचल; पूर्व्वकालके राष्ट्रविप्लवोंके इतिहासों और राज्य-शासनके शास्त्रोंकी सम्मालोचना करते रहे।

अन्तमें अनुद्यमसे उकताकर मई मासके आरम्भमें नेपोलियन कोई कार्य्य ढूँढने पेरिस पहुँचे। उस समय उनको अवस्था कोई पचीस वर्षकी थी। अपने इस यत्नमें उन्हें सफलता न हुई। फ्रान्स-सरकार अपने प्रियपात्रोंको पारितोषिक तथा पदवृद्धिका प्रस्ताव कर रही थी और नेपोलियन यह देख अतीव विरक्त तथा मर्म्माहत हुए, कि उनको सेवाकी सभी प्रार्थनायें अस्वीकार कर दी गईं। युद्धसे अल्पपरिचित तोपखानेके एक वृद्ध अफसर उस समय सरकारी सैनिक समितिके सभापति थे। नेपोलियनके स्त्रियोंजैसे रूपसे कर्त्तव्यका कोई भाव न देख उन वृद्ध अफसरने कुछ गर्व्वसे कहा,—"तुम अतीव दुष्ट हो और जैसा दायित्वभारपूर्ण पद तुम पानेकी इच्छा करते हो, वैसा पद तुम्हें दिया जा नहीं सकता।" इसपर नेपोलियनने असाव-धानीसे उत्तर दिया,—"किन्तु महाशय! युद्धस्थलकी उपस्थितिको वार्द्धक्यके दावेके ऊपर स्थान मिलना चाहिये।" इस व्यक्तिगत निन्दाने इन सभापतिको इतना चिढ़ा दिया, कि वह उन युवक अफसरकी उच्च कामनाओंको साहाय्य देनेके बदले रोकने लगे। जैसे-जैसे उनका थोड़ासा धन शीघ्र-शीघ्र घटने लगा; वैसे-वैसे उनकी अवस्था दुःखदसे और भी दुःखद होती गई। उन्होंने यहाँतक कल्पना की, कि वह रूस जायें और वहाँके ग्राण्ड सीनियरसे नौकरीकी प्रार्थना करें। उस समय उन्होंने अपने एक साथीसे कहा था,—"एक क्षुद्र कोरसिकन अफसरका यरूसलोमका राजा बनना सचमुच ही बड़े तमाशेकी बात होगी।"

सेण्ट हेलेनाकी एक निरानन्दमयी रजनीमें जब नेपोलियन सो न सकते थे; तब उन्होंने अपना वह क्लान्तिजनक समय अतिवाहित करनेके लिये वार्त्तालाप आरम्भ किया था। उस समय उन्होंने अपने

इस समयकी एक निम्नलिखित आख्यायिका कही थी, जिससे उनके इस समयके आरम्भिक विपद्के दिनोंके दारिद्रय तथा दुःखका चित्र अङ्कित हुआ था। उन्होंने कहा था,—"अपने उस समयके जीवनमें एक समय मैं उस असीम उत्साहाभावसे व्यथित था, जो मस्तिष्क शक्तियोंका कार्य्य स्थगित कर देता है और जिसमें पतित होनेपर मनुष्यको अपना जीवन असह्य भारमात्र प्रतीत होता है। इससे कुछ ही देर पहले मैंने अपनी माताका लिखा एक पत्र पाया था। इसमें उनके अतीव दारिद्रयमें पतित होनेकी बातें लिखी थीं। कोरसिकाका ध्वंस करनेवाले गृह-युद्धके फलसे वह कोरसिका छोड़ भागनेपर बाध्य हुई थीं। उस समय वह मारसेलेसमें रहती थीं, उनके सम्मुख भरण-पोषणका कोई उपाय न था और केवल अपने वीरोचित सद्गुण द्वारा उस समयकी सामाजिक विशृङ्खलाके सब तरहके प्रचलित दूषणोंसे अपनी पुत्रियोंकी मर्य्यादाकी रक्षा कर रही थीं। इधर मेरी सामान्य पूँजी व्यय हो चुकी थी और अपनी नौकरी न रहनेके कारण वेतन पाता न था। उस समय मेरी जेबमें सिर्फ तीन रुपये नकद थे। अपने ऐसे अन्धकारपूर्ण भावी समय तथा ऐसी असह्य मानसिक यन्त्रणासे बचनेके लिये अपनी पाशविक प्रवृत्तिसे प्रणोदित हो मैं नदीकिनारे जा टहलने लगा। उस समय मेरे मनमें एक विचार यह आता था, कि आत्महत्या करना पुरुषोचित धर्म्म नहीं; दूसरा विचार यह आता था, कि इस समय आत्महत्या करने होमें मेरा उद्धार है। कुछ क्षण और बीतता तो मैं निश्चय ही नदी-जलमें कूद अपनी जीवन-लीला समाप्त करता; ऐसे समय एक मनुष्यसे मेरी टक्कर हो गई। वह साधारण कारीगरकी पोशाक पहने था। उसने मुझे पहचान मेरे गलेमें अपनी बाहें डाल दीं और कहा,—'यह तुम हो, नेपोलियन! मैं कैसे बताऊँ, कि तुम्हें देख मुझे कितना आनन्द हुआ है।' इनका नाम डिमासिस था और यह तोपखानेकी सैन्यके मेरे पुराने साथी

थे। वह फ्रान्स छोड़ विदेश चले गये थे और कुछ कालके उपरान्त भेष बदल अपनी वृद्धा माताके दर्शनके लिये फ्रान्स वापस लौटे थे।

"वह मुझे छोड़ अपनी राह लगनेको थे; ऐसे समय मेरी आकृति देख उन्होंने कहा,—'कुशल तो है, नेपोलियन! तुम ऐसे अन्यमनस्क क्यों हो? मुझसे मिल तुमने कुछ भी प्रसन्नता प्रकट न की। तुमपर कौनसी विपद् उपस्थित है? तुम विक्षिप्त जैसे दिखाई देते हो? मानो अभी आत्महत्या करनेपर उद्यत हो।' मैं जिस स्पर्शज्ञानके वशीभूत हो रहा था, उस स्पर्शज्ञानको लक्ष्यकर किये जानेवाले उस निवेदनने मेरे मनपर ऐसा प्रभाव उत्पन्न किया, कि सङ्कोच परित्यागपूर्व्वक उनसे मैंने सब बातें प्रकट कर दीं। इसपर उन्होंने कहा,—'बस; इतने होके लिये तुम इतना बड़ा काण्ड करनेपर उद्यत थे।' यह कह अपने भद्दे वेष्टकोटके बटन खोल और उसके नीचे कसा एक कमरबन्द निकाल उसे मेरे हाथ दे उन्होंने फिर कहा,—'इसमें अट्ठारह सहस्र रुपयेकी अशरफियाँ हैं। इनका मुझे इस समय प्रयोजन नहीं। इन्हें ले तुम अपनी माताको कष्टसे निवृत्त करो।' आज भी मैं यह नहीं बता सकता, कि उस समय मैं वह अशरफियाँ लेनेपर कैसे प्रस्तुत हो गया। फिर भी; उस समय मैंने आतुरतापूर्व्वक वह सुवर्ण हस्तगत किया और उत्ते-जनाके आधिक्यसे विक्षिप्तवत् हो वह अशरफियाँ अपनी दुःखिनी माताके समीप भेजनेके लिये दौड़ा।

"जब मैं उन अशरफियोंको भेज चुका और वह मेरी माताके निवासस्थान मारसेलेसकी ओर चलीं; तब मैंने इस बातका विचार किया, कि यह मैंने क्या किया। मैं त्वरापूर्वक उस स्थानको ओर वापस लौटा, जिस स्थानमें डेमेसिसको छोड़ गया था। उस समय वह वहाँ न थे। इसके उपरान्त लगातार कई दिनतक उन्हें मैं ढूँढता रहा। उन्हें ढूँढनेके लिये मैं प्रातःकाल निकलता

और पेरिसके जिन स्थानोंमें उनके पानेकी सम्भावना करता ; उन स्थानोंमें उन्हें ढूँढ सन्ध्या समय अपने आवास-स्थानमें लौटता। किन्तु उस समय और अपनी शक्ति-प्राप्तिके समय मैंने उनके ढूँढने-का जो यत्न किया ; उसका कोई फल न हुआ। अन्तमें जब मेरा साम्राज्य पतनके समीप पहुँच रहा था ; तब एकबार फिर उनसे भेंट हुई। अब उनसे प्रश्न करनेकी मेरी बारी थी। उनसे मैंने पूछा, कि उस समय मेरे उस कार्य्यके सम्बन्धमें तुमने क्या विचार किया था और इसका क्या कारण है, कि विगत पन्द्रह वर्षमें मुझे तुम्हारा नाम भी सुनाई न दिया। प्रत्युत्तरमें उन्होंने कहा, कि अबतक मुझे धनकी आवश्यकता न थी, इसीलिये वह ऋण-शोध करनेके लिये तुमसे मैंने न कहा ; फिर, मुझे इस बातका भी विश्वास था, कि तुम इच्छा करते ही आसानीसे वह ऋणशोध कर दोगे। उन्होंने यह भी कहा, कि मै तुम्हारे सम्मुख आते डरता था। मुझे विश्वास था, कि जैसे ही तुम्हारे पास जाऊँगा ; वैसे ही तुम मुझे मेरा एकान्तवास और उद्यान-विद्याका परिशीलन परित्याग करनेपर बाध्य करोगे। उन्हें बड़ी कठिनतासे मैंने उनके अठारह सहस्र रुपयेके बदले एक लाख अस्सी हजार रुपये स्वीकार करनेपर बाध्य किया। उनसे मैंने कहा, कि तुमने अपने एक मित्रको उसके दुस्समयमें अर्थ-साहाय्य किया था ; तुम्हारे सुकार्य्यके प्रतिफलस्वरूप तुम्हें यह राजकीय धन प्रदान किया जाता है। इसीके साथ-साथ उन्हें मैंने राज-प्रासादके कर्म्मचारियोंका अफसर होनेकी प्रतिष्ठा प्रदान की और अठारह सहस्र रुपये वार्षिक वेतनपर सरकारी बागों-का प्रधान निरीक्षक नियुक्त किया। मैंने उनके भाईको भी एक अच्छा पद प्रदान किया।

"अपने बाल्यकी मैत्रीकी सहानुभूतिके प्रभावसे अपने फौजी स्कूलके दो साथियोंसे मेरी अतीव घनिष्ठता थी। जगत्‌में प्रायः ही दिखाई देनेवाले जगदीशके वैचित्र्यसे मेरे इन दोनो मित्रोंने मेरे

भाग्यपर बहुत बड़ा प्रभाव उत्पन्न किया था। जिस समय मैं आत्म-हत्या करनेपर उद्यत हुआ था; उस समय डेमासिसने प्रकट हो, मेरी प्राणरक्षा की थी और जिस समय मैं सेण्ट जीन डिएकरकी विजयपर उद्यत हुआ था; उस समय फिलफिउने मेरे इस कार्यमें बाधा उपस्थित की थी। उन्होंने मेरे इस कार्य्यमें यदि बाधा उपस्थित की न होती, तो मैं एशियाकी इस कुञ्जीका स्वामी हो गया होता। मैंने रूम-राजधानी कुस्तुनतुनियापर चढ़ाई की होती और एशियामें मेरे एक साम्राज्यकी प्रतिष्ठा होती।"

उधर इटलीपर चढ़ाई करनेवाली फ्रान्सीसी सैन्यके लिये दुस्समय उपस्थित हुआ। उसे पराजयपर पराजय प्राप्त होने लगी। नेपोलियनने फ्रान्सीसी सैन्यको जिस स्थानमें पहुँचा दिया था; उस स्थानसे उसे अष्ट्रियनने मार भगाया था और अब वह अपने शत्रुके सम्मुखसे पीछे हट रही थी। इसके फलसे फ्रान्सकी प्रजा-रक्षक समिति थर्रा उठी थी। उस बेचारीको यह न सूझता था, कि वह क्या आज्ञा दे। किसी मनुष्यको नेपोलियनकी आल्प्सकी विजयकी बातें विदित थीं; उन्होंने इस समितिके सम्मुख नेपोलियनका नाम उपस्थित किया। नेपोलियन परामर्श देनेके लिये इस समितिके अधिवेशनोंमें बुलाये गये। वह स्थानीय तथा पारिभाषिक सूचनाओंसे अपने ज्ञान, रण-पाण्डित्य और अपनी अतीव परिमार्ज्जित बुद्धिके विपुल उपायोंके प्रासादसे तुरन्त ही इस समितिके प्रधान पुरुष बन गये।

यद्यपि वह अभी नवयुवक थे और यद्यपि वह अपनी आकृतिसे अपनी उम्रसे भी छोटे प्रतीत होते थे; तथापि उनका गाम्भीर्य्य और उनकी गुरुतर तथा विमर्ष चिन्ताशीलता उनके परामर्शको बड़ा गुरुत्व प्रदान करती थी और उनकी कल्पनायें निर्व्विवाद ग्रहण कर ली जाती थीं। उन्होंने सागरतटवर्त्ती आल्प्सका विवरण उत्साह-समन्वित प्रगाढ़ अनुरागसे परिशीलन किया था और

वह इस पर्वतके प्रत्येक झरनेके घुमाव तथा विशेष लक्षण, गिरि-श्रेणियोंकी गति और गिरि-सङ्कटों तथा उपत्यकाओंकी सामरिक उपयोगितासे अवगत थे। फ्रान्सीसी सैन्यके सम्बन्धमें उनके द्वारा स्थिर किये न्याय-सङ्गठित विभागके फलसे फ्रान्सीसी सिपाहियोंने अष्ट्रियनोंकी बढ़ती हुई विजय-तरङ्ग रोक दी और फ्रान्सीसी फौजोंको इस योग्य बना दिया, कि वह अपने लिये निर्धारित स्थानोंमें बैठकर अपनेसे अधिक संख्यक अष्ट्रियन फौजोंके आक्रमणोंसे आत्मरक्षा करने लगीं।

नेपोलियन पेरिसमें एक ओर समिति-भवनमें बैठकर इटलीकी फ्रान्सीसी सैन्यकी गति-विधि निर्द्धारित करते थे, दूसरी ओर सुअवसर पाते ही प्रगाढ़ मनोयोगपूर्वक विद्याध्ययन करते थे। इसमें सन्देह नहीं, कि वह यदि साहित्यिक तथा वैज्ञानिक प्रतिष्ठा प्राप्त करनेके अत्युच्च भावोंसे प्रणोदित हो विद्याध्ययन करते, तो उस कार्य्यमें इससे अधिक प्रचुर तथा अविराम श्रम कर न सकते।

वह कभी-कभी पेरिसस्थ रमनेके किनारे-किनारे सन्ध्या समय टहला करते थे। उस समय जब वह इस राजधानीके इन्द्रिय-सुखरत नवयुवकोंको विलासिताके रङ्गमें शराबोर देखते और उनको थियेटरमें गानेवालोंके स्वरोंकी निन्दा तथा नाचनेवालियोंके अङ्ग-प्रत्यङ्गकी अत्युत्तम बनावटोंकी कृत्रिम वक्तृतायें सुनते; तब वह अपनेको अपनी घृणा प्रकट करनेसे रोक न सकते थे। एक दिन सन्ध्या समय जब वह इसतरह ऐसे दृश्य देखते धूलि-पूर्ण पथमें पदचारण करते चले जाते थे; तब उन्होंने असन्तोष-पूर्वक कहा था,—"क्या ऐसे ही मनुष्योंपर सौभाग्यलक्ष्मी अपना करुणा-वारि बरसाया चाहती हैं? मानवीय प्रकृति कितनी घृणा-व्यञ्जक होती है।" यद्यपि नेपोलियनने कामासक्तिके दृश्यों तथा सदा गुलजार स्थानोंका सर्वथा वर्ज्जन कर रखा था और यद्यपि वह साम्यवके उन पथोंसे सदा दूर रहते थे, जिन पथोंमें उस समयके नव-

युवक परिणामकी चिन्ता छोड़ चला करते थे ; तथापि उन्होंने यह कार्य्य प्रत्यक्षमें अपनी विवेकबुद्धिकी प्रेरणासे प्रणोदित हो सुपथ ग्रहणकर जगदीशको प्रसन्न करनेके लिये किया न था। उनके इस कार्य्यका कारण थी,—"नये प्रेमकी बहिष्कारकारक शक्ति।" उच्चाकांक्षाओंने उनके मनसे और सब अनुरागोंका बहिष्कार कर दिया था। महत् तथा उज्ज्वल कार्य द्वारा कीर्त्ति प्राप्त करने और प्रसिद्ध पुरुष तथा मानवजातिके प्रख्यात शुभचिन्तक होकर अपना नाम अमर करनेकी प्रबल वासनायें उनकी सारी प्रकृतिमें ऐसी अधिकतासे समा गई थीं, कि इससे उनकी पाशविक वृत्ति भी दब गई थी और सांसारिक सुखके साधारण अनुधावन भी उन्हें तुच्छ तथा घृणित प्रतीत होने लगे थे।

एब्राण्टेसकी डचेजकी कही हुई निम्नलिखित घटनासे नेपोलियनका दयालु तथा सहानुभूतिसम्पन्न स्वभाव सुन्दरतापूर्वक प्रकट होता है। उस समय इन डचेजके पिता पीड़ित थे और आन्दोलित पेरिस अराजकताकी स्थितिमें उपनीत था ;—

"नेपोलियन, मेरे भाईसे सूचना पा तुरन्त ही हमें देखने आये। वह मेरे पिताकी दशा देख व्यथित होते दिखाई दिये और मेरे पिताने अतीव व्यथित रहनेपर भी नेपोलियनके देखनेका अनुरोध किया। नेपोलियन प्रति दिन आते और प्रातःकाल वह या तो स्वयं आ या अपने किसी मनुष्यको भेज यह जानते, कि मेरे पिताकी रात कैसे बीती। उनका उस समयका यह कार्य मैं सदा आन्तरिक कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किया करती हूँ।

"उन्होंने हमें सूचना दी, कि इस समय पेरिसकी जैसी स्थिति है ; उससे भावी हलचल अनिवार्य्य है। फ्रान्सकी प्रतिनिधिसभाने अविरामरूपसे और वारंवार अपनी प्रभुताकी घोषणाकर साधारण लोगोंको भी अपनी प्रभुताकी घोषणा करनेकी शिक्षा दे दी थी। पेरिस नगरके विभाग अन्ततः अङ्गीकृत बलवेके लिये यदि

खुले हुए नहीं, तो उसके पक्षमें अवश्य थे। इस नगरका लेजिस्लेटियर विभाग हमलोगोंका विभाग था और यह विभाग सर्वापेक्षा अधिक हलचल उपस्थित करनेवाला और यथार्थमें अतीव भयङ्कर था। इसके वक्ता अतीव उद्दीपक वक्तृतायें देनेसे सङ्कोच न करते थे। वह यह बात प्रतिपादित करते थे, कि एकत्र मनुष्योंकी शक्ति आईनकी शक्तिके ऊपर थी। नेपोलियनने कहा,—'इसतरह अवस्था शोचनीयसे शोचनीयतर होती जाती है। शीघ्र ही प्रति-राष्ट्रविप्लव प्रकट होनेको है और इसके फलसे बहुतेरी मुसीबतें आयेंगी।"

"जैसा, कि मैं कह चुकी हूँ, नेपोलियन प्रति दिवस हमारे पास आते। वह हमारे साथ भोजन करते और अपनी सन्ध्या हमारे बैठनेके कमरेमें बिताते थे। मेरी माता अपने पीड़ित पतिकी शय्याके समीपसे कभी न हटतीं; थकावटसे क्लान्त हो कुछ क्षण ऊँघ अपनी शक्ति संग्रह करनेके लिये सन्ध्या समय हमारे बैठनेके कमरेमें आ बैठा करती थीं। नेपोलियन उन्हींकी कुरसीके समीप बैठ मृदु स्वरमें बातें किया करते थे। मुझे स्मरण है, कि एक दिन रात्रिको मेरे पिताके अतीव पीड़ित हो जानेके कारण मेरी माता रो और बड़ा सन्ताप कर रही थीं। रातके नौ बज चुके थे और उन दिनों उस समय किसी नौकरको बाहर भेजनेके लिये उद्यत करना असम्भव था। नेपोलियनने कुछ न कहा। वह त्वरापूर्वक सीढ़ीसे उतरे और डाक्टर डुकन्नाइसके पास पहुँचे। उनके आपत्ति करनेपर भी उन्हें नेपोलियन अपने साथ लाये। मौसम भयङ्कर था। मूषलधार वृष्टि हो रही थी। डाक्टर डुकन्नाइसके पास जाते समय नेपोलियनको घोड़ागाड़ी मिली न थी; वह आपादमस्तक भीगे हुए थे। इसमें सन्देह नहीं, कि उस समय नेपोलियनका हृदय अनुराग करने योग्य था।"

यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि उस समय फ्रान्समें किसी तरहका भी धर्म्म माना न जाता था। सभी फ्रान्सीसी खृष्टानोंका परि-

त्याग कर चुकी थी। पादरी देशान्तरित कर दिये गये थे ; गिरजे या तो नष्ट कर दिये गये थे या विज्ञान-मन्दिरों या सदा खाले-जानेके उत्सवस्थानोंमें परिणत किये गये थे। आत्माकी नित्यता अस्वीकार कर दी गई थी और प्रत्येक समाधिस्थानके द्वारपर लिख दिया गया था,—"मृत्यु अनन्त निद्रा है।" इसके फलसे नेपोलियन-को अपने चरित्र-संगठनमें धर्म्मके प्रभावका किसी तरहका साहाय्य प्राप्त न हुआ। फिर भी ; यदि यह कहना सङ्गत है, तो कहा जा सकता है, कि उनकी बुद्धि स्वाभाविक रूपसे उपासना-सम्बन्धीय बुद्धि थी। उनका स्वभाव गम्भीर, चिन्ताशील और विषादपूर्ण था। जगत्की सभी महत् और रहस्यपूर्ण बातें उनके चित्तको आकृष्ट और भय दिखा वश किया करती थीं। और तो क्या ;—उनकी उच्चाकांक्षा भी उल्लासकारिणी या आनन्दवर्द्धिनी होनेकी जगह विषादपूर्ण, विराट् और श्रेष्ठ थी। वह भीमपराक्रम, निद्राशून्य श्रम और वीरोचित कर्म्म हीकी चिन्ता किया करते थे। सुख, विलास और आत्मासक्ति उन्हें प्रिय बोध न होती। फिर भी ; वह पुरुषश्रेष्ठ बनकर वह कार्य्य किया चाहते थे, जो कार्य्य किसी भी नश्वर देहसे सम्पन्न हुआ न हो। युवावस्थामें उन्हें जीवनमें किसी तरहकी भी मोहिनी दिखाई न देती थी। वह मनुष्यकी पार्थिव यात्रा-को विषादपूर्ण लोचनसे देखते थे। उन्होंने बारंबार इस बातका विश्वास दिलाया था, कि संसार सुखका स्थान नहीं। जिस समय उनका जीवन समाप्तिके समीप पहुँचा था ; उस समय उन्होंने कहा था, कि इस जगत्में मुझे सुखके कुछ ही क्षण प्राप्त हुए और उन सुखपूर्ण कुछ क्षणोंके लिये मैं और किसीका नहीं ; जोजेफाइनके प्रेमका ही ऋणी हूँ।

इस अवसरमें फ्रान्सकी जातीय प्रतिनिधि-सभाने फ्रान्सके साधा-रण लोगोंके ग्रहण करनेके लिये और एक शासन-प्रणालीकी रचना की। फ्रान्स-साम्राज्यकी कार्य्यकारिणी क्षमता किसी राजा या

सभापतिके हाथ अर्पित करनेके बदले अध्यक्ष नामधारी पाँच सरदारोंको प्रदान की गई। अमेरिका—युक्तराज्यकी तरह फ्रान्सको भी व्यवस्थापित शक्ति दो संस्थाओंको दी गई। युक्तराज्यकी सेनेट-सभाके ढँगपर सङ्गठित पहली सभाका नाम प्राचीनोंकी सभा रखा गया। इसमें ढाई सौ सदस्य होनेको थे। स्थिर किया गया था, कि इनमें प्रत्येक सदस्यकी अवस्था कमसे कम चालीस वर्षकी हो और वह सस्त्रीक या विवाहित हो। साम्राज्य-सेवाके ऐसे प्रतिष्ठित पदपर किसी अविवाहित मनुष्यको प्रतिष्ठा युक्तियुक्त समझी न गई। दूसरी संस्थाका नाम 'पाँच सौकी सभा' रखा गया। यह पाँच सौ सदस्यों द्वारा संगठित होनेको थी। यह अमेरिकाकी प्रतिनिधि-सभाके ढँगपर संगठित होनेको थी और प्रत्येक सदस्यको कमसे कम तीस वर्षका होना चाहिये था।

इसके पहले जो शासन-प्रणालियाँ उपस्थित की गई थीं; उनकी अपेक्षा यह शासन-प्रणाली अधिक उत्कृष्ट थी। यह शासन-प्रणाली नर्म दलके प्रजातन्त्रियोंने रची थी। वह सब चाहते थे, कि इस प्रजातन्त्री शासन-प्रणाली द्वारा एक ओर फ्रान्स-सिंहासनपर एकबार फिर बोरबन्सकी प्रतिष्ठाका यत्न करनेवाले राजतन्त्रियोंके हाथसे दूसरी ओर फ्रान्समें अनिश्चित मृत्युका शासनकाल उपस्थित करनेकी कामना करनेवाले जेकोबियोंके अत्याचार-पूर्ण कुशासनसे फ्रान्सकी रक्षा की जाये। नई शासन-प्रणालीकी यह कल्पना साधारण लोगोंकी प्राथमिक मण्डलियोंमें उनकी स्वीकृति या अस्वीकृतिके लिये भेजी गई। यह प्रणाली प्रायः समस्त ग्राम्य जिलोंने तुरन्त ही स्वीकार कर ली और इसे फ्रान्सीसी सैन्यने आनन्दध्वनिपूर्वक ग्रहण किया।

फ्रान्स-राजधानी पेरिस नगर छियानवे विभागोंमें विभक्त था। अन्यान्य नगरोंके विभागोंकी तरह इस नगरके भी प्रत्येक विभागके मनुष्य वोट देनेके लिये एकत्र हुआ करते थे। जब यह नई शासन-प्रणाली पेरिसके इन विभागोंके सम्मुख उपस्थित की गई; तब

अड़तालीस विभागोंने इसके पक्षमें और छियालीस विभागोंने इसके विरुद्ध वोट दिये। प्रजातन्त्री तथा जेकोबी चरमसीमाके यह दोनो दल इस शासन-प्रणालीका विरोध करनेमें एक हो गये। इनमें प्रत्येक दलने यह आशा की, कि प्रतिनिधि-सभाका विनाश साधित होनेसे उनके अपने विचार प्राधान्य पा सकते थे। प्रतिनिधि-सभाने घोषणा की, कि प्रत्येक स्थानमें जातिके अधिकांश मनुष्योंने यह नई शासन-प्रणाली पसन्द की है और इस घोषणाके उपरान्त ही यह सभा इस शासन-प्रणालीके नियमानुसार कार्य्य करनेपर उद्यत हुई। इसका फल यह हुआ, कि पेरिस नगरके जिन विभागोंने इस शासन-प्रणालीका विरोध किया था; वह विभाग सम्पूर्ण उत्तेजित हो संघर्ष निश्चयकर सशस्त्र होने लगे। बलवेके लिये सदा प्रस्तुत रहनेवाले पेरिसके साधारण लोग अतीव आन्तरिकतापूर्वक अपने अपेक्षाकृत अधिक अभिजातवर्गीय नेताओंके साथ सम्मिलित हो गये और ऐसा विदित हुआ; मानो सारा पेरिस प्रतिनिधि-सभापर आक्रमण करनेके लिये प्रस्तुत हो रहा हो। नेशनल गार्ड सैन्य फुरतीसे बलवाइयोंमें मिल गई। बलवेकी सूचना देनेवाली तोप सर की गई; साधारण लोगोंको सावधान करनेवाला घण्टा बजने लगा और सुयोग्य नेताओं द्वारा परिचालित विषादपूर्ण तथा त्रास दिखाती हुई जनता पेरिसकी राहोंमें एकत्र हुई।

प्रतिनिधि-सभाके लिये थरथराहटकी चरमावस्था उपस्थित थी। कारण; उन आराजकताके दिनों रक्त जलकी तरह बहाया जाता था और प्राणकी किसी तरहकी भी पवित्रता दी न जाती थी। प्रतिनिधि-सभाका भवन अवरुद्ध करनेके लिये जो दल प्रस्तुत हुआ था, वह कुछ सौ छिटके हुए मनुष्यों तथा बालकोंका ऐसा दल न था, जो घृणासूचक चीत्कारध्वनि करता हुआ उस भवनको घेर उसकी खिड़कियाँ तोड़कर ही शान्त हो जाता; वह दल चालीस सहस्र मनुष्योंका जन-सागर था, जो युद्धके विन्याससे सुसज्जित था और जिसके पास

बन्दूकें भी थीं; तोपें भी थीं। पुराने राजतन्त्री साम्राज्यकी लड़ाइयोंमें सम्मिलित योद्धा सेनापतिगण उस जनसागरके अधिनायक थे। ऐसा ही वह जनसागर अपनी चमकीली ध्वजा उड़ाता और भेरीनिनादसे गर्ज्जन करता नगरके विविध भागसे निकल प्रतिनिधि-सभाके स्थान टुइलेरीसकी ओर अग्रसर हो रहा था। अपने इन शत्रुओंसे सम्मुखीन होनेके लिये प्रतिनिधि-सभाके पास मात्र पाँच सहस्र शिक्षित सिपाही थे। फिर, उनपर भी विश्वास किया जा न सकता था; विपदके समय वह सब बागियोंके साथ भ्रातृभाव उत्पन्न कर सकते थे। यह बलवा दबानेके लिये प्रतिनिधि-सभाने सेनापति मेनौको नियुक्त किया। वह शत्रुसे सामना करने चले। इन होती हुई घटनाओंके प्रति प्रगाढ़ मनोयोग रखनेके कारण नेपोलियन सेनापति मेनौकी सघन सैन्य-श्रेणियोंके पीछे-पीछे चले। सेनापति मेनौ एक कोमलस्वभाव और असमर्थ मनुष्य थे। उनमें ऐसी विपद्के सम्मुखीन होनेका बल न था। वह अपने शत्रुओंकी संख्या तथा प्रभाव देख भीत हुए और उनके सम्मुखसे वापस लौटे। यह देख बागियोंमें सम्मिलित नेशनल गार्ड सैन्यने विजयकी हर्षध्वनि की, जिससे पेरिसके समस्त बाजार प्रतिध्वनित हुए। इस विजयसे उनकी हिम्मत बहुत बढ़ गई और उन्हें इस बातका विश्वास हो गया, कि प्रतिनिधि-सभाकी शिक्षित सैन्य साधारण लोगोंपर अग्निवृष्टि करनेका साहस न करेगी।

उस समय रात्रिकी प्रतिच्छाया उस निस्तब्ध नगरपर घनीभूत हो रही थी। नेपोलियन, मेनौके कार्य्यकी असफलता देख चुकनेपर राहोंसे दौड़ और टुइलेरीस पहुँच उस बरामदेमें जा खड़े हुए, जिसके नीचे प्रतिनिधि-सभा बैठी थी। वहाँ वह अपने मर्म्मर पाषाणवत् ललाट और प्रत्यक्ष निश्चल हृदयसे भयके भाँति-भाँतिके दृश्य देखने लगे। उस समय रातके ग्यारह बजे थे और प्रतिनिधि-सभाकी मृत्यु सुनिश्चित प्रतीत होती थी। चूड़ान्त आतङ्कपूर्वक मेनौ पदच्युत किये गये

और उपस्थित सैन्यका असीम कर्तृत्व बेरासको सौंपा गया। इसमें सन्देह नहीं, कि यह पद त्रासपूर्ण था। सफल युद्ध असम्भव प्रतीत होता था और असफलतासे मृत्यु सुनिश्चितथी। यह पद ग्रहण करनेमें बेरास सङ्कोच कर रहे थे; ऐसे समय उन्हें नेपोलियन एकाएक याद आये। नेपोलियनको उन्होंने टूलोनमें देखा था। नेपोलियनका रणपाण्डित्य तथा अदम्य उत्साह और उनको अपने तथा दूसरोंके प्राणकी निर्बोध बेपरवाई उन्हें याद थी। उन्होंने तुरन्त ही कहा,—"हमें कोई यदि बचा सकता है, तो एक मनुष्य बचा सकते हैं। उन्हें मैं जानता हूँ। उनका नाम नेपोलियन बोनापार्ट है। और वह एक युवक कोरसिकन अफसर हैं। उनको सैनिक योग्यता मैं टूलोनमें देख चुका हूँ। वह शिष्टाचारके आदमी नहीं।" जिस समय यह बात कही गई, उस समय नेपोलियन उस बरामदेमें थे और यह सम्भव है, कि नेपोलियनपर उनको दृष्टि पड़ गई हो और नेपोलियनको देखनेके उपरान्त ही उन्होंने अपना यह प्रस्ताव किया हो।

नेपोलियन उसी समय प्रतिनिधि सभाके सम्मुख उपस्थित किये गये। इस सभाके सभ्योंने अनुमान किया था, कि नेपोलियन सैनिक भङ्गीके उद्दत तथा प्रभुत्वसूचक कोई महाशय पुरुष होंगे। ऐसे मनुष्यके बदले उनके सम्मुख जब एक खर्वाकार, दुर्बल, पीताकृति बिना दाढ़ी-मूँछके कोई अट्ठारह वर्षके प्रतीत होनेवाले एक युवक उपस्थित किये गये; तब उनके आश्चर्यको सीमा न रही। इस सभाके सभापतिने पूछा,—"क्या आप प्रतिनिधि-सभाका रक्षाभार अपने ऊपर लिया चाहते हैं?" प्रत्युत्तरमें शान्ति तथा स्पष्टतासे नेपोलियनने कहा,—"जी हां।" उन सभापतिने एक क्षणतक संशयकर फिर कहा,—"जो कार्य्य आप किया चाहते हैं; उसका गुरुत्व आप जानते हैं?" इस बार नेपोलियनने अपनी उस तीक्ष्ण दृष्टिसे उन सभापतिको देखा, जिसके सम्मुख बहुत कम निगाहें अप्रतिभ होनेसे बचती थीं और कहा,—"बहुत अच्छी तरहसे।

और जो कार्य्य मैं अपने हाथ लेता हूँ; उसे सम्पन्न करनेका मुझे अभ्यास है।" इन अद्भुत पुरुषके स्वर तथा भावमें ऐसी शक्ति थी, जिसने इस सभाके समस्त सभ्योंका विश्वास तुरन्त ही उत्पन्न कर लिया। ऐसी हलचल और उत्तेजनाके बीच अवस्थान करके भी उनकी आत्मामें जो शान्ति तथा दृढ़ता दिखाई; उसे देख वहांके उपस्थित सभी मनुष्योंके मनपर इस विश्वासने अपना प्रभाव उत्पन्न किया, कि वह सब एक असाधारण शक्तिशाली मनुष्यके सम्मुख उपस्थित थे। और कुछ बातोंके उपरान्त नेपोलियनने कहा,—"एक नियम अनिवार्य्य है। अपनी सैन्यपर मुझे असीम प्रभुता मिलना चाहिये। यह प्रभुता ऐसी हो, जिसे यह सभा भी अपनी किसी आज्ञा द्वारा अवरुद्ध कर न सके।" वादविवादका समय न था। उनकी यह बात बिना सङ्कोचके स्वीकार कर ली गई।

अब नेपोलियनकी त्वरा, शक्ति और असीम युक्तियां अतीव सुस्पष्ट भावसे प्रकट हुईं। पेरिससे कोई ढाई कोस दूर सेवलन्स स्थानमें बड़ा ही शक्तिशाली एक तोपखाना था, जिसमें पचास बड़ी-बड़ी तोपें थीं। नेपोलियनने तुरन्त ही ड्रगून रिसालेके कुछ सवारोंके एक दलके साथ मुरेटको यह तोपें टुइलेरीस लानेके लिये भेजा। इन तोपोंपर मुरेटका अधिकार होनेके कुछ ही मिनट बाद पेरिसके उन बागी विभागोंका भेजा हुआ दल इसी अभिप्रायसे सेवलन्स पहुँचा। इस दलके पास अधिक मनुष्य रहनेपर भी इसने ड्रगून सवारोंपर आक्रमण करनेका साहस न किया। यह तोपें सकुशल नेपोलियनके पास पहुँचाई गईं। उन्होंने इन तोपोंको फटनेवाले गोलोंसे अच्छी तरह भरवा उन स्थानोंमें लगवा दिया, जिन स्थानोंसे इन तोपोंके गोले प्रतिनिधि-सभा भवनकी ओर आनेवाली सभी वृक्षश्रेणियोंके बीचकी राहोंमें सुथराव कर सकते थे।

उन युवक सेनापतिको कार्य्य तत्परताको एक क्षणका भी विराम न था। रात्रिको वह सभी जगह उपस्थित हो आज्ञायें दे रहे थे;

उत्साह प्रदान कर रहे थे और अपने सिपाहियोंके मनमें साहस उत्पन्न कर रहे थे। अपने सम्मुखके भीषण वैषम्यसे वह सम्पूर्ण अवगत थे। वह यह जानते थे, कि उन्हें अपने पाँच सहस्र सिपाहियोंको शत्रुके अनुभवी सेनापतियोंकी अधीनतामें रातदिन अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित तथा सुशासित चालीस सहस्र मनुष्योंके साथ लड़ाना है। शत्रुका सैन्य-सागर उन्हें आसानीसे घेर और क्षुधाकी यन्त्रणा-से अधीरकर आत्मसमर्पण करनेपर बाध्य कर सकता था। फिर; शत्रुपक्षके लोग राहोंमें बेड़े बना और उनके पीछे तथा मकानोंकी छतों और खिड़कियोंमें बैठ गोलियाँ चला उनकी मुष्टिमेय सैन्यको ऐसा घटा सकते थे, जिससे युद्ध करनेका कोई भी फल हो न सकता था। फिर भी; बागियोंमें मिली नेशनल गार्ड सैन्यको यह बात कुछ भी विदित न थी, कि उसे कैसी दृढ़, दुर्दम्य और अपराङ्मुख आत्मासे सामना करना था। उन्हें इस बातका विश्वास न था, कि कोई भी मनुष्य पेरिसके अधिवासियोंपर अग्नि-वृष्टि करनेका साहस प्रकाशित कर सकता था। इधर जब रात्रिकी निस्तब्धतामें प्रचुर-संख्यक कारतूसोंके साथ आठ सौ बन्दूकें नेपोलियनकी आज्ञासे उस सभा-भवनमें लाई गईं और उस सभाके प्रत्येक सदस्यको बन्दूक धारणकर रक्षित सैन्यमें सम्मिलित होनेके लिये कहा गया; तब इस सभामें अपनी शोचनीय स्थितिका अतीव सजीव भाव जाग उठा। इस पूर्वसतर्कताने उन्हें एक ओर अपनी विपदका यथार्थ रूप; दूसरी ओर उनकी रक्षा करनेवाले पुरुषका अविचलित सङ्कल्प दिखाया। जब प्रत्यूषका प्रकाश पेरिसपर प्रकट हुआ; तब टुइलेरीस एक मोरचेबन्द सैनिक छावनीके रूपमें दिखाई दिया। जिन पुलों तथा वृक्षश्रेणीसे अलङ्कृत राहोंसे होकर शत्रुसैन्य इस सभा-भवनकी ओर आ सकती थी; नेपोलियनने उन पुलों तथा राहोंमें सुथराव करनेके लिये स्थान-स्थानमें अपनी तोपें लगा दी थीं। उन-की अपनी अविचलित शान्ति, दृढ़ता और आत्मनिर्भरता उनके

अधीनस्थ सिपाहियोंके भी मनमें समा गई थी। जिन कुछ संक्षिप्त शब्दोंमें उन्होंने अपने सिपाहियोंको सम्बोधन किया; उन शब्दोंने बिजलीकी अग्निकी तरह उनके हृदयमें प्रवेशकर उनकी भक्ति अर्जित की और वह नेपोलियनकी सेवामें प्राण तक विसर्ज्जन करनेके लिये प्रस्तुत हो गये।

अब सैन्य-सज्जाके घण्टे बजने लगे थे और सारे नगरमें साधारण लोगों के युद्धार्थ प्रस्तुत होनेकी धूम मच गई थी। सघन कृष्णवर्णीय जनतामें विभक्त मनुष्यों के समस्त दल अपने पूर्वनिर्द्धारित अड्डों में एकत्र होने लगे। वहाँ पहुँच वह सब सघन सैन्य-श्रेणियों में विभक्त हो प्रतिनिधि-सभा-भवनकी ओर जानेकी तय्यारियाँ करने लगे। उधर इस सभा-भवनमें अपने आसनों में उपविष्ट सभ्यगण भय तथा निस्तब्धतासे उस भीषण आक्रमणकी प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसके फलाफलपर उन सबका जीवन-मरण निर्भर करता था। पीत, धीर तथा सम्पूर्ण शान्त नेपोलियन अपना सारा युद्धायोजन समाप्त कर शत्रु-सैन्यके आगमनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने यह स्थिर कर लिया था, कि प्रथम आक्रमणका दायित्वभार उनपर नहीं; उनके आक्रमणकारियों पर होगा; इसके उपरान्त जो प्रत्याक्रमण होगा, उसका दायित्वभार वह स्वयं ग्रहण करेंगे।

कुछ ही समयके उपरान्त प्रत्येक दिशासे शत्रु-सैन्य आती दिखाई दी। वह सघन श्रेणियों में विभक्त थी और उसने नगरकी राहों को सम्पूर्ण रूपसे परिपूर्ण कर दिया। वह सब शत्रुदल आनन्दवर्द्धक बाजे बजाते और पताकायें उड़ाते उस सभाभवनमें अवरुद्ध मनुष्यों-पर चारों ओरसे आक्रमण करनेके लिये दम्भपूर्वक आगे बढ़ रहे थे। उन्हें अपनी संख्याकी अधिकतासे इस बातका विश्वास था, कि वह शीघ्र ही विजय प्राप्त कर लेंगे। उन्हें इस बातका ज्ञान न था, कि प्रतिनिधि-सभाकी मुट्ठीभर तथा निर्बल सैन्य उनपर आक्रमण करनेका साहस करेगी। उन्होंने इस भ्रान्तिको अपने मनमें स्थान दे

रखा था, कि उनकी ओरसे कुछ गोली-गोले चलते ही विपक्षी भाग जायेंगे। यही सब सोचकर साधारण लोगोंके दल-बादल उन तोपों-की मारके भीतर निःसङ्कोच घुस आये, जिन तोपोंको नेपोलियनने उनके मुँहतक फटनेवाले गोलोंसे भरवा रखा था।

किन्तु उन्हें जब यह दिखाई दिया, कि प्रतिनिधि-सभाकी फौजें दृढ़तापूर्वक जमी खड़ी हैं और उनके आगमनकी प्रतीक्षा कर रही हैं; तब उनको आगेकी सैन्यश्रेणियोंके आरम्भिक भागने अपनी बन्दूकें छतियाईं और अपने शत्रुओंपर बन्दूकोंकी गोलियों-की एक बाढ़ दागी। विपक्षकी यह बाढ़ नेपोलियनका तोपोंके दगनेका सङ्केत हुई। जैसे ही यह बाढ़ दगी; वैसे ही नेपोलि-यनकी प्रत्येक तोपसे सीधी, रक्तपूर्ण और निर्दय गोलावृष्टि हुई। फिर तो नेपोलियनकी तोपें गोलोंकी बाढ़पर बाढ़ दागने लगीं और उन जनाकीर्ण राहोंमें फटनेवाले गोलोंका अच्छा-खासा तूफान बहने लगा। बाजारोंकी भूमि अङ्ग-भङ्ग तथा मृत मनुष्योंसे परिपूर्ण हो गई। साधारण लोगोंका दल-बादल हिल गया—फिर भी; गोलोंका तूफान बहता रहा; साधारण लोगोंके दल पीछे घूमे—फिर भी, यह तूफान उसी वेगसे बहता रहा; साधारण लोगोंके दल अतीव भग्नोत्साह हो प्रत्येक ओर भागने लगे; यह तूफान उनका पीछा करने लगा। अब नेपोलियनने प्रचण्डतापूर्वक अपनी क्षुद्र सैन्यको भागते हुए शत्रुओंका पीछा करने और बिना गोलेकी तोपें सर करने-की आज्ञा दी। इन बड़ी-बड़ी तोपोंकी गर्ज्जनध्वनिसे बाजारोंके प्रतिध्वनित होनेपर बलवाई प्रत्येक प्राप्य राहों और गलियोंमें भङ्ग हो गये और एक घण्टेके भीतर-भीतर एक भी शत्रु सामने रह न गया। साधारण लोगोंकी भावी दलबन्दी रोकनेके विचारसे नेपो-लियनने अपने सिपाहियोंको पेरिस नगरके प्रत्येक विभागमें भेज वहांके अधिवासियोंको निरस्त्र किया। इसके उपरान्त उन्होंने मृत मनुष्योंको सन्नाधिस्थ करने और आहत मनुष्योंको अस्पताल भेजने-

शत्रु-सैन्य पर गोले ।

"फिर तो नेपोलियनकी तोपें गोलोंकी बाढ़ पर बाढ़ दागने लगीं ।" [पृष्ठ ११६
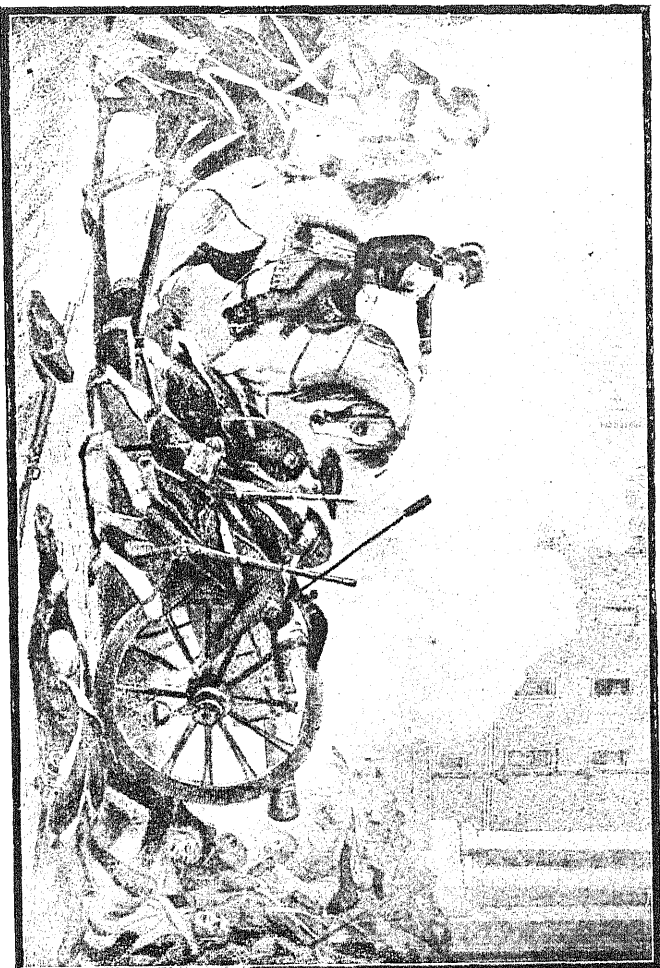
। आज्ञा दी। इतना कार्य्य कर चुकनेपर वह अपने उसी पीत-
र्णीय मर्म्मरपाषाणवत् ललाटके साथ ऐसी शान्तिसे अपने सदर
इलेरोस लौटे; मानो कोई अतीव प्रयोजनीय घटना हुई
न हो।

वहाँ एक भद्र महिलाने नेपोलियनसे पूछा,—"तुमने अपने
ा-भाइयोंपर ऐसी निर्दयतासे अग्निवृष्टि कैसे की?" प्रत्युत्तरमें
ोलियनने अतीव शान्तिपूर्वक कहा,—"सिपाही और कुछ नहीं;
ाज्ञानुसार कार्य्य करनेका एक यन्त्र मात्र है। यह मेरी मुहर है,
से मैंने पेरिसपर लगाई है।" इसके उपरान्त नेपोलियनने पेरिस-
ी राहोंको फ्रान्सीसियोंके रक्तसे प्लावित करनेकी इस घटनाको
दा दुःखपूर्वक स्मरण करते और इसे स्वयं भूल जानेका यत्न करनेके
ाथ-साथ औरोंके मनसे भी निकाल देनेका यत्न करते रहे।

इसतरह नेपोलियनने फ्रान्समें इस नई सरकारकी प्रतिष्ठा की।
ह डिरेक्टरी कहलाई; कारण, पाँच कार्य्यकर्त्ता डिरेक्टरों द्वारा
सका संगठन हुआ था। इस घटनाके कुछ ही मासके उपरान्त
स फ्रान्स-सरकारको नेपोलियनके निर्दय तोपखानेने प्रतिष्ठित
िया था; उसी फ्रान्स-सरकारको नेपोलियनने बिना एक विन्दु
ी रक्तपात किये अपने चारित्रिक बलके साहाय्यसे भङ्ग कर दिया।
रिसके विभागोंमें शान्ति-प्रतिष्ठा होनेके उपरान्त ही प्रतिनिधि-सभा-
नेपोलियनका जयोल्लासपूर्वक स्वागत किया। सर्वसम्मतिसे यह
ात विघोषित की गई, कि नेपोलियन हीकी शक्तिसे उस समय
ान्सीसी प्रजातन्त्रकी रक्षा हुई है। नेपोलियनके मित्र बेरास
डरेक्टरीके एक डिरेक्टर बन गये और नेपोलियनको अभ्यन्तरस्थ
न्यका प्रधान सेनापतित्व प्रदान किया गया। राजधानीकी
ानिक रक्षा तथा शासन-कार्य्यका भार उनपर न्यस्त किया गया।

इस युद्धमें बलवाइयोंकी पराजय राजतन्त्रियोंकी आशाओंके लिये

बैठ गया। अपनी इस विजयके समय नेपोलियनने अपनी स्वाभाविक दया अतीव स्पष्टरूपसे प्रकट की। जब प्रतिनिधि-सभा मैनोको विश्वासघाती बता प्राणदण्ड देनेपर उद्यत हुई; तब नेपोलियनने उनका पक्ष ग्रहणकर उनकी अव्याहति प्राप्त की। उन्होंने सफलतापूर्वक यह अनुरोध किया, कि अब जब बलवाई अनपकारक बन चुके हैं; तब मेनौको दण्ड मिलना न चाहिये और बलवाइयोंके समस्त दुष्कर्म्मोंपर साधारण क्षमाका पर्दा गिरा देना चाहिये। प्रतिनिधि-सभापर नेपोलियनके भावोंका बड़ा प्रभाव हुआ और वह पिछले अपराधोंके लिये साधारण क्षमाका एक आईन बना और देशका शासन-कार्य्य डिरेक्टरीके हाथ सौंप मर्य्यादापूर्व्वक भङ्ग हो गई।

इसमें सन्देह नहीं, कि अब नेपोलियनकी स्थिति अतीव अनुकूल हो गई थी। उस समय उनकी अवस्था मात्र पचीस वर्षकी थी। जो प्रसिद्ध सेवायें उन्होंने की थीं; जो उच्च पद उन्होंने प्राप्त किया था; जो प्रचुर आय उनके आयत्त हुई थी; उसके फलसे साधारण लोगोंकी दृष्टिमें उनका शासन बहुत ऊँचा हो गया था। अब वह जिस उच्च पदपर प्रतिष्ठित हुए थे; वह पद उन्होंने प्रसिद्धिके एकाएक वेग या आकस्मिक प्रकाशसे प्राप्त न किया था। अबसे पहले वर्षों तक उन्होंने जो सुदीर्घ परिश्रम किया था; यह उसीका फल था। उन्होंने सैनिक स्कूलके विद्याभ्यासमें जो अविराम मनोयोग प्रदान किया था; अफसर होनेके बाद उनकी ओरसे विज्ञान तथा साहित्यके अनुशीलनमें जो अविच्छिन्न प्रेम प्रकट हुआ था, टूलोनमें उन्होंने जो शक्ति, निर्भीकता और अक्लान्त प्रगाढ़ मनोयोग प्रकट किया था; फ्रान्सके सागरतटकी मोरचेबन्दीमें उनकी ओरसे दिनके समय शीतसहन और रात्रिके समय जागरणका जो गुण प्रकाशित हुआ था और आल्प्सगिरिके सुदृढ़ स्थानोंमें उन्होंने जो अक्लान्त श्रम किया था; उससे जो बीज बोया गया था, इस समय नेपो-

लियन उसीका सुस्वादु फल प्राप्त कर रहे थे। इससे पहले और कभी इससे अधिक भीमपरिश्रमसे पुण्य अर्ज्जन किया न गया था; प्रसिद्धि प्राप्त की न गई थी। यदि नेपोलियनमें असाधारण धीशक्ति थी और इसमें सन्देह नहीं, कि अवश्य थी; तो उनकी इस शक्तिने उन्हें असाधारण श्रमके लिये उत्तेजित कर दिया था।

प्रचुर धनागमविशिष्ट पद, उच्चपद और प्राधान्य पानेके उपरान्त ही नेपोलियन अपनी माताको सम्यक् सुखकी स्थितिमें प्रतिष्ठित करनेके लिये पेरिससे मारसेलेस गये। इसके उपरान्त वह अपनी माताको और सदा अतीव सन्तानोचित प्रगाढ़ मनोयोगपूर्व्वक ध्यान देते और अपनेको एक अनुरक्त भक्त तथा कर्त्तव्यपरायण पुत्र प्रमाणित करते रहे। इसी समयसे उन्होंने अपनी माता, बहनों, भाइयों आदि समूचे परिवारकी रक्षाका भार अपने ऊपर लिया और उसके हितको अपने हितमें मिला लिया।

इस समय नेपोलियन जिस पद पर आरूढ़ हुए थे; वह पद बड़े ही महत्त्वका था; अविराम चिन्ता, चारित्रिक बल और नैपुण्यकी अपेक्षा करता था। उस समय राजतन्त्री तथा जेकोबी अतीव क्रुद्ध थे। फिर; उस समय फ्रान्स-सरकार भी न तो दृढ़ी-भूत थी और न उसने साधारण लोगोंके मनपर कर्त्तत्वाधिकार प्राप्त किया था। पेरिस नगर हलचल तथा विश्रृङ्खलासे परिपूर्ण था। प्रजातन्त्रजनित ध्वंसने लक्ष-लक्ष मनुष्योंको जीविका-विहीन कर दिया था और उपवास पेरिसके बाजारों द्वारा चुपके-चुपके आगे बढ़ रहा था। प्राय: विश्वासवर्ज्जित तथा उपाय-रहित फ्रान्स-सरकारका यह कर्त्तव्य था, कि वह क्षुधित मनुष्योंके लिये अन्नसंस्थान करती। उस समय नेपोलियन अशान्ति दमन करनेमें अपराङ्मुख दृढ़ताके साथ मिली हुई अतीव चतुरता और मनुष्यत्व प्रकट कर रहे थे।

अराजकताकी प्रकृतिके उठते हुए विन्यासको दबानेके लिये प्राय: ही सैनिक शक्तिकी कठोर भुजाओंसे साहाय्य लेनेकी आव-

श्यकता हुआ करती थी । ऐसे अवसरपर प्रायः ही नेपोलियनकी सुसंलग्न तथा सतेज वक्तृतायें साधारण लोगोंमें सद्भाव उत्पन्न करती थीं और उनका दल सहज ही भङ्ग हो जाता था । एक समय बहुत ही मोटी एक मछली बेचनेवालीने अतीव तीव्र वाचालतापूर्व्वक साधारण लोगोंके एक दलको यह परामर्श दिया, कि वह भङ्ग न हो । उसने कहा,—"अपने कन्धोंपर झब्बे लटकाये इन भड़कीले मनुष्योंकी कुछ भी परवा न करो। यह सब अपनी उदरपूर्त्ति और मोटे होनेकी चिन्ता करते ; हम दरिद्रोंके उपवासको कोई परवा किया नहीं करते हैं ।" इसपर प्रतिच्छायाजैसे दुर्ब्बल तथा क्षीण नेपोलियनने इस स्त्रीकी ओर पलट कर कहा;—"ओ नेक स्त्री! एकबार मेरी ओर देख और बता, कि हम दोनोमें मोटा कौन है ; तू या मैं ?" नेपोलियनके इस सरस उत्तरने इस रणचण्डीको सम्पूर्ण अप्रतिभ किया और वहाँ एकत्र साधारण लोगोंका दल प्रसन्नतापूर्वक भङ्ग हो गया ।

चौथा परिच्छेद।

इटलीमें प्रथम युद्ध——पीडमोण्ट।

नेपोलियनकी आकृति और चरित्र—उनकी परहितैषिता—जोजेफाइन बीउहारनेस—यूजेनी—नेपोलियनके साथ जोजेफाइनका विवाह—नेपोलियनका इटलीकी सैन्यका प्राधान्य ग्रहण करना—पेरिस परित्याग—इंगलेण्डमें अनुभूति—नाइसकी सैन्यकी स्थिति—अपने सेनापतियों तथा सिपाहियोंपर नेपोलियनका प्राधान्य—लेटिशियाका प्रभाव—नेपोलियनकी कल्पना—उनकी घोषणा—सैन्यका श्रम और कष्ट—इटालियनकी मैत्री प्राप्त करनेका यत्न—सेराका युद्ध—सारडिनियन प्रतिनिधियोंके प्रति उग्र व्यवहार—घोषणायें।

नेपोलियनके पेरिसके बलवाई विभागोंके पराजित करने और इसके उपरान्त अशान्त पेरिस नगरके शासन-कार्यमें उत्साह, नैपुण्य तथा मनुष्यत्व प्रकट करनेसे नेपोलियनका नाम इस राजधानीके प्रत्येक भागमें घर-घर प्रसिद्ध हो गया था। उनकी स्त्रियोचित तथा सुगठित क्षुद्र तथा दुर्ब्बल देहने; रमणियोंके मनमें ईर्ष्या उत्पन्न करानेवाले उनके छोटे, श्वेत और नर्म्म हाथोंने और उनकी मृदुता तथा वात्सल्य प्रकट करनेवाली आकृतिने परस्पर मिल-जुलकर उनको

किसी नश्वर देहको कभी प्राप्त न होनेवाली दुर्दम्य उत्साह तथा कर्तृत्वसूचक इच्छासे अद्भुत संमिश्रणकर उन युवक सेनापतिको एक अद्भुत और प्रायः अलौकिक आकर्षण-शक्ति प्रदान की थी।

दुर्भिक्ष पेरिसके बाजारोंमें मचल रहा था। सब तरहका शिल्पाश्रम स्थगित था। जीविकाविहीन दरिद्र मनुष्य नष्ट हो रहे थे। धनाढ्य मनुष्य अपनी सम्पत्तिका ध्वंसावशेष संग्रहकर फ्रान्ससे भाग रहे थे। कोई आईन प्रचलित न था; नेपोलियनकी तोपें अपनी गर्ज्जनध्वनिसे जो आईन चला दिया करती थीं; वही आईन चला करता था। उन्होंने तुरन्त ही नेशनल गार्ड सैन्यका पुनर्संगठन किया था और शीघ्र ही फलोत्पादनक्षम शान्ति प्रतिष्ठित की थी। नेपोलियन पेरिसके सभी भागोंमें अनवरत गश्त लगाया करते थे। उन्होंने सदय तथा सहानुभूतिपूर्ण शब्दोंके साथ सैनिक नियमोंकी सुदृढ़ तथा अपरिवर्त्तनीय शक्तिको कष्टपूर्वक मिला दिया था। एब्राण्टेसकी डचेजका कहना है, कि उस समय उन्होंने अपने व्यक्तिगत यत्नसे एक सौसे अधिक परिवारोंको नष्ट होनेसे बचाया था। वह स्वयं दारिद्र्यके खपरैलोंमें चढ़ा और अभाव तथा यन्त्रणाकी भूगर्भस्थ कोठरियोंमें घुमा करते थे और उस समय जिस भीषण दुरवस्थामें सारा पेरिस पतित हुआ था, उस भीषण दुरवस्थाके दृश्योंको अपने अश्रुपूर्ण लोचनसे देखा करते थे। उन्होंने पेरिसके दरिद्र अधिवासियोंमें रोटी तथा ईंधन वितरण करानेकी व्यवस्था की थी और वह अपने सुख तथा आत्मानुरक्तिको सम्पूर्ण जलाञ्जलि दे कष्टातुरोंका कष्ट मिटानेके सम्बन्धमें जो कुछ कर सकते; वह किया करते थे।

एक दिन जब वह अपनी गाड़ीसे उतर श्रीमती परमनके घर भोजन करने जाते थे, तब उन्हें एक ऐसी स्त्रीने सम्बोधन किया, जिसके हाथमें एक मृत शिशु था। दुःख तथा क्षुधाने उसकी छातीसे उसके जीवनका उत्स सुखा दिया था और उसका मातृदुग्धपर जीनेवाला बच्चा निराहार रहनेके कारण मर गया था। उसका पति

मर चुका था और उसके पाँच बालक घरमें भोजनके लिये विलाप कर रहे थे। अन्नाभावसे मरती हुई उस स्त्रीने कहा,—"यदि मेरा उद्धार किया न जायेगा, तो मैं अपने अवशेष पाँचों बच्चोंको अपने साथ ले डूब मरूँगी।" नेपोलियनने उससे सूक्ष्मरूपसे प्रश्न किये, उसका निवास-स्थान निर्द्धारित किया और उसके उस समयके अभावके प्रतिकारार्थ उसे कुछ धन प्रदान किया। इसके उपरान्त वह उस मकानमें जा वहाँकी भड़कीली दावतमें सम्मिलित होनेवाले अतिथियोंमें मिल बैठे। फिर भी; दुर्द्दशाका जो दृश्य वह अभी-अभी देख आये थे, उस दृश्यने उनके मनपर ऐसा गहरा प्रभाव उत्पन्न किया था, कि उसे वह अपने मनसे दूर कर न सकते थे और उनके उचटे हुए मन और विषादाङ्कित आकृतिकी ओर सभीका ध्यान आकृष्ट हुआ। भोजनोपरान्त ही उन्होंने उस दरिद्र स्त्रीकी कही बातोंका याथार्थ्य निर्द्धारित करनेकी व्यवस्था की और जब उनको उस स्त्रीकी निश्चयउक्तिका प्रमाण मिल गया; तब उन्होंने तुरन्त ही इस परिवारको अपने आश्रयमें ग्रहण किया। उन्होंने इस परिवारकी लड़कियोंको अपने मिलोंमें सिलाईका कार्य्य दिलाया और यह परिवार अपने उन रक्षकके प्रति सदा गभीर कृतज्ञता प्रकाशित करता रहा। नेपोलियनने अपने चरित्रके ऐसे ही विशेष लक्षण अविरामरूपसे प्रकटकर फ्रान्सीसियोंके हृदयको अपनी चारों ओर लिपटा लिया था।

उस समय पेरिसमें एक भद्र महिलाका निवास था, जिन्हें उनकी मिलनसारीके आकर्षणों, व्यक्तिगत सौन्दर्य्य और उच्चपदने समाजमें सर्वतोभावसे सुस्पष्ट बना दिया था। वह विधवा थीं, अट्ठाईस वर्ष की उनकी अवस्था थी। उनके पति राष्ट्रविप्लवी क्रोधके एक प्रसिद्ध आखेट वाइकाउण्ट बिउहारनाइस हाल हीमें फाँसी द्वारा नष्ट हो चुके थे। काल पाकर नेपोलियनकी जगत्प्रसिद्ध वधू बननेवाली जोजेफाइन तासचेर बिउहारनाइस अमेरिका—वेष्ट इण्डीजके मार-

टिनिकी द्वीपमें उत्पन्न हुई थीं । वाइकाउण्ट बिउहारनाइस उस द्वीपमें व्यवसायके लिये जा उन विशुद्ध फ्रान्सीसी वीर्य्यसे उत्पन्न सुन्दरी नवयुवतीके सौन्दर्य्य-पाशमें फँस गये । जोजेफाइनकी अल्पवयस्कतामें ही उनका इन वाइकाउण्टके साथ विवाह हो गया । पेरिस पहुँचने-पर जोजेफाइन तुरन्त ही फ्रान्सकी रानी मेरी एण्टोइनेटके ऐश्वर्य्य-पूर्ण दरबारमें पहुँचाई गईं । इस घटनासे कुछ ही समयके उपरान्त जोजेफाइनके आवास-स्थानपर राष्ट्र विप्लवका तूफान अपने निर्दय कोपके साथ बह पड़ा । इसके फलसे जोजेफाइनको मित्रविहीनता, आत्मीय वियोग, बन्धन और दारिद्र्यके अतीव कष्टप्रद वैपरीत्यका अनुभव करना पड़ा । अन्तमें यह तूफान गया और जोजेफाइनको उनके दो सन्तान यूजेनी तथा होर्टेन्सके साथ विधवा कर गया । अपने सुदिनके ध्वंसावशेषसे बचाई प्रचुर उपयुक्तता उनके पास रह गई थी और वह अपने प्रभावशाली तथा प्रशंसा करनेवाले मित्रोंसे घिरी हुई थीं ।

प्रतिनिधि-सभाके आज्ञानुसार नेपोलियनने पेरिसके अधिवासियों-को अराजकताके वेगके पुनरुत्थानकी सम्भावना नष्ट करनेके लिये उनके अस्त्र-शस्त्र ले उन्हें निरस्त्र बना दिया । इस प्रक्रियाके समय जोजेफाइनके मकानसे उनके मृत पति बिउहारनाइसकी तलवार ले ली गई । इस घटनाके कुछ दिनबाद अतीव बुद्धिमान् तथा शोभा-सम्पन्न बारह वर्षका बालक यूजेनी नेपोलियनकी सेवामें उपस्थित हुआ और उसने अतीव चित्ताकर्षक भोलेपन तथा सुगभीर मनो-विक्षोभपूर्वक नेपोलियनसे अपने पिताकी तलवार पानेकी प्रार्थना की । सहृदय नेपोलियन ऐसी प्रार्थना अस्वीकार कर न सके । उन्होंने वह तलवार मँगाई और प्रशंसासूचक वाक्यके साथ उसे अपने हाथों यूजेनीको प्रदान की । इसपर वह कृतज्ञ बालक सजलनयन हुआ और एक शब्दका भी उच्चारण करनेमें असमर्थ हो उस तलवारको अपनी छातीसे लगा और नेपोलियनके सम्मुख शिर

नेपोलियनका धर्म्मपुत्र ।

यूजेनी बिउहारनेस ।

[पृष्ठ १२४

झुका वहाँ से चला गया। इस बालकके सन्तानोचित प्रेमका प्रकाश नेपोलियनको बहुत भाया और उनका ध्यान उसी समय उस माताकी ओर गया, जिसने ऐसे बालकका चरित्र संगठित किया था। उधर अपने बच्चोंके प्रेममें पगी जोजेफाइन अपने अनाथ पुत्र यूजेनीके प्रति उन सुप्रसिद्ध नवयुवक सेनापतिका यह सुव्यवहार देख ऐसी कृतज्ञ हुईं कि वह दूसरे दिन अपनी गाड़ीमें सवार हो अपना धन्यवाद प्रकट करनेके लिये नेपोलियनके पास पहुँचीं। उस समय वह गम्भीर शोकसूचक काला परिच्छद धारण किये थीं। उनका अद्भुत कर्णसुखकर स्वर उनके मनोक्षोभसे काँप रहा था। अपने मातृसम्बन्धीय स्नेहकी आन्तरिकता तथा स्निग्धता और अपने भाव तथा भाषाकी जिस सम्पूर्ण शोभासे उन्होंने अपना यह कार्य्य सम्पादित किया; उस शोभाने नेपोलियनको सविस्मय प्रशंसाको उत्तेजित कर दिया। इसकी उपरान्त ही वह जोजेफाइनके मकान जा उनसे मिले। उन दोनोंके बीचका परिचय शीघ्र ही एक असाधारण दृढ़ तथा अनुरागविशिष्ट प्रेममें परिपक्व हुआ।

जोजेफाइन नेपोलियनसे दो वर्ष बड़ी थीं। फिर भी; उनके आकार तथा आकृतिने समयके अन्याय अधिकारसे द्वन्द किया था और उनके आनन्द तथा उल्लासने उन्हें आरम्भिक यौवनकी समस्त मोहिनी शक्ति प्रदान कर रखी थी। नेपोलियनकी तोपोंकी शक्तिने जिन पाँच डिरेक्टरोंकी प्रतिष्ठा की थी; बारास उनमें अन्यतम थे और वह जोजेफाइनके एक अनुरागविशिष्ट मित्र थे। उन्होंने नेपोलियन तथा जोजेफाइनके पारस्परिक सङ्कल्पित सम्बन्धको उभयपक्षके लिये लाभजनक समझ उत्साहपूर्वक समर्थित किया। समाजमें इतना ऊँचा आसन अधिकार करनेवाली तथा प्रभावशाली मित्रोंसे घिरी रहनेवाली जोजेफाइनसे सम्बन्ध स्थापितकर नेपोलियन अपना प्रभाव बहुत बढ़ा सकते थे। बेगासने यह बात उसी समय देख ली थी, कि उन युवक तथा उत्साहपूर्ण सेनापतिमें ऐसी बुद्धि थी, जिससे

भविष्यत्‌में उनका प्राधान्य प्राप्त करना सुनिश्चित था। उस समय जोजिफाइनने एक पत्र लिख उसमें इस प्रस्तावित विवाहके सम्बन्धमें अपने मनोभावोंको इसतरह व्यक्त किया था :—

"मुझसे फिर विवाह करनेका अनुरोध किया जाता है। मेरे मित्र मुझे यह कार्य्य करनेकी सलाह देते हैं; मेरी चाची ऐसा करनेके लिये मुझे प्रायः ही आदेश देती हैं और मेरे बच्चे वश्यता स्वीकार करनेके लिये मुझसे प्रार्थना करते हैं। मेरे मकानमें तुम सेनापति बोनापार्टसे भेंट कर चुकी हो। वही मनुष्य हैं, जो अलकजन्धर बिउहारनाइसके अनाथ बच्चोंके पिताका स्थान और उनकी विधवाके पतिका आसन ग्रहण किया चाहते हैं। इन सेनापतिका साहस, इनके ज्ञानका प्रसार, जिसके बलसे यह सभी विषयोंमें समान दक्षतासे वार्त्तालाप कर सकते हैं और इनके विचारकी त्वरा, जिसके द्वारा यह दूसरोंके मनके विचार प्रकट होनेसे भी पहले समझ लेते हैं, देख इनकी मैं विस्मयपूर्ण प्रशंसा करती हूँ। फिर भी, मैं यह स्वीकार करती हूँ, कि यह अपने समीप पहुँचनेवाले प्रत्येक मनुष्यपर अपनी जिस यथेच्छाचारिताका अनुशीलन करनेके इच्छुक जान पड़ते हैं; उस यथेच्छाचारितासे मैं संकोच करती हूँ। उनकी तीक्ष्ण दृष्टि बहुत कुछ असाधारण तथा बोधातीत है। यह जब इस साम्राज्यके डिरेक्टरोंपर अपना दबाव डालती है; तब तुम्हीं सोच देखो, कि एक स्त्रीको भीत क्यों न करेगी ?

"बेरासने मुझे यह विश्वास दिलाया है, कि मैं यदि उनके साथ विवाह कर लूँगी, तो वह इटलीकी फ्रान्सीसी सैन्यके प्रधान सेनापतिका पद प्राप्त करेंगे। कल बोनापार्टने मुझसे इस सरकारी कृपाकी चर्चा चला कहा,—'वह समझते हैं, कि शक्ति प्राप्त करनेके लिये मुझे डिरेक्टरोंकी रक्षाकी आवश्यकता है। यह उनका विकट भ्रम है। एक दिन ऐसा आयेगा, जब यदि मैं उनकी रक्षा करनेकी लघुता स्वीकार करूँगा, तो वह अतीव आनन्दित होंगे।'

"नेपोलियनको इस आत्म-निर्भरतापर तुम्हारा क्या विचार है? क्या उनको यह बात उनके वृथा अहङ्कारके आधिक्यका प्रमाण नहीं? वामन चन्द्र चूमा चाहता है; एक ब्रिगेड सैन्यका सेनापति फ्रान्स-साम्राज्यके डिरेक्टरोंको रक्षा करनेका दम भरता है! किन्तु ऐसा होना अत्यन्त सम्भव है। नहीं जानती कैसे; कभी-कभी मेरा मन अबाध्यताके इतना वश हो जाता है, कि मैं इस विचित्र मनुष्यके मनमें आनेवाली सभी बातोंको उसके लिये यत्नसाध्य समझने लगती हूँ। और जैसी उनकी कल्पना-शक्ति है; उससे वह जगत्की सभी बातोंको अपने मनमें धारण कर सकते हैं।"

यद्यपि जोजेफाइनने नेपोलियनके मनमें अतीव प्रचण्ड तथा उग्र अनुराग उत्पन्न कर दिया था, तथापि इससे उनके मनकी सर्व्वोच्च उच्चाकांक्षाओंकी कल्पनाओंमें किसी प्रकारका भी व्याघात उपस्थित हुआ न था। सारे दिन वह अतीव श्रमपूर्वक अपने पदके कर्त्तव्य-कार्य्य तथा विद्यानुशीलनमें रत रहते थे। फिर भी; प्रत्येक सन्ध्याको वह जोजेफाइनके प्रासादमें जाते और वहाँ एकत्र होनेवाले इस राज-धानीके अतीव प्रसिद्ध तथा अतीव प्रभावशाली मनुष्योंको कर्त्तृत्व-सूचक बुद्धि तथा अपनी प्रभापूर्ण वार्त्तालापकी शक्तिसे चकाचौंध लगाया करते थे। इस सामाजिक आमोद-प्रमोदमें जोजेफाइनको इस बातका पता लग गया, कि नेपोलियनमें असीम आकर्षिणी शक्ति है और वह इच्छा करते ही इसका व्यवहार कर सकते हैं। इसतरह उन लोगोंमें उनकी पहचान हुई और उनका प्रभाव फैला, जिन लोगों द्वारा उनकी कल्पनाओंके प्रवर्द्धनमें अतीव साहाय्य प्राप्त होनेको था।

सन् १७९६ ई० को ९ ठीं मार्चको जोजेफाइनके साथ नेपोलियनका विवाह हुआ। उस समय नेपोलियनकी अवस्था छब्बीस वर्ष-की थी। उभयपक्षके बड़े सच्चे प्रेमसे यह मिलाप हुआ था। इसमें सन्देह नहीं, कि उच्चाभिलाषके बाद जोजेफाइन ही नेपोलियनकी

प्रशंसा तथा प्रणतिकी प्यारी सामग्री थीं । उस समयके नास्तिक फ्रान्समें विवाह धर्म्म-सम्बन्धीय प्रक्रिया समझी न जाती थी । उस समय यह केवल एक साझा समझा जाता था, जिसे कोई भी मनुष्य स्वेच्छानुसार कर या तोड़ सकता था । राष्ट्रविप्लवी अदालतोंने गिरजे बन्द कर दिये थे, पादरियोंको देशसे निकाल दिया था और भगवान्‌को सिंहासनच्युत बना दिया था । जो स्त्री-पुरुष परस्पर विवाह करनेका संकल्प किया करते थे, वह केवल अपनी यह इच्छा पेरिसके साम्राज्य-रजिष्टरमें लिखा दिया करते थे और इस लिखावटके नीचे उनके साक्षीस्वरूप दो या तीन मित्रोंके हस्ताक्षर हो जाया करते थे। ऐसी ही साधारण प्रक्रियासे जोजेफाइनके साथ नैपोलियनका विवाह हुआ । किन्तु उन दोनोंमें एकने भी इस ऐसे पवित्र आदान-प्रादानका यह व्यवसायिक रूप पसन्द न किया । वह दोनो ही अपने स्वाभाविक भावसे गम्भीर, चिन्ताशील और मानवीय शक्तिसे ऊपरकी किसी शक्तिकी पथप्रदर्शकताके अभिलाषी थे । नास्तिकता तथा साधारण लोगोंकी नास्तिकताके साथ सतत विद्यमान रहनेवाले अधर्म्मसे घिरे रहनेपर भी यह दोनो खृष्टानोंकी लोक-शिक्षार्थ दैववाणीकी सभी महत् और हृदयग्राहिणी बातोंकी भक्ति किया करते थे ।

नैपोलियनका कहना है,—"जीवनमें प्रेरित होनेपर मनुष्य अपनेसे पूछता है,—'मैं कहांसे आया हूँ ? मैं कौन हूँ ? मैं कहाँ जाऊँगा ?' यह रहस्यपूर्ण प्रश्न मनुष्यको धर्म्मकी ओर आकृष्ट करते हैं ; कारण, मनुष्यका हृदय धार्म्मिक विश्वासकी सहाय्य तथा पथ-प्रदर्शनकी आकांक्षा करता है । हम जगदीशके अस्तित्वका विश्वास करते हैं ; क्योंकि हमारी चारो ओरकी चीजें जगदीशके अस्तित्वकी घोषणा करती हैं । बोसुएट, न्यूटन, लेबनिज आदि जैसे महापुरुषोंकी भी बुद्धिने यही सिद्धान्त धारण किया है । जैसे शरीर स्वास्थ्यकी आकांक्षा करता है ; उसीतरह मत विश्वासकी आकांक्षा करता है । और हम अपनी विवेचनाशक्तिके बिना अनुशीलनके

निःशङ्कभावसे अतीव अधिकतासे विश्वास किया करते हैं। जैसे ही हम तर्क आरम्भ करते हैं; वैसे ही हमारा विश्वास हिल जाता है। किन्तु उस समय भी हमारा हृदय यही कहता है,—'यदि भगवान्‌की दया होगी, तो कदाचित् मैं फिर आप ही आप विश्वास करने लगूँगा।' कारण, हम यह बात अनुभव करते हैं, कि अपने संरक्षक देवतामें यह विश्वास एक परमानन्द है, दुस्समयका बहुत बड़ा धैर्य्य और अमरत्वके प्रलोभनका एक शक्तिशाली आश्रय है।

"धार्म्मिक पुरुष जगदीशके अस्तित्वके सम्बन्धमें कभी सन्देह नहीं करते, कारण, जब उनकी विवेचना-शक्ति भगवान्‌के समझनेमें समर्थ नहीं होती; तब उनकी आत्माकी समझ विश्वासका आश्रय ग्रहण करती है। आत्माका प्रत्येक आन्तरिक स्पर्श-ज्ञान धार्म्मिक मतोंके प्रति सहानुभूति प्रकाशित करता है।"

यह गहरे विचार हैं और कितने आश्चर्य्यकी बात है, कि यह एक उस मनुष्यके मनसे निकले हैं, जिस मनुष्यने कठोरता, कर्कशता तथा युद्धके अपराधके बीच शिक्षा पाई थी और जिसे अपनी चारों ओरके मनुष्योंके मुँहसे धार्म्मिक मतोंकी निन्दा ही सुनाई देती थी और यह सुनाई देता था, कि धर्म्म अतीव निर्ब्बल तथा विश्वासी मनुष्योंका अन्धविश्वास मात्र है।

जब नेपोलियन सेण्ट हेलेनामें अवरुद्ध थे, तब उन्होंने एक दिन सन्ध्याको खृष्टानी धर्म्मग्रन्थ बाइबिलका 'नवीन दानपत्र' नामक अंश मँगाया और अपने मित्रोंको उसका वह भाग सुनाया, जिस भागमें खीष्टने अपने शिष्योंको पर्व्वतपर उपदेश दिया था। इसे पढ़ उन्होंने कहा, कि मैं इन वाक्योंकी पवित्रता, महिमा और इसके चारित्रिक सौन्दर्य्यपर सदा ही अतीव विस्मय-विमुग्ध हुआ करता हूँ। नेपोलियनने गिरजोंके कलङ्कके सम्बन्धमें भी लघुतापूर्व्वक कदाचित् ही कोई बात कही होगी। इसके विरुद्ध वह योग्य खृष्टके धर्म्मके प्रति सदा ही अपना अतीव उत्साहविशिष्ट अनुराग प्रकट किया करते थे।

जब नेपोलियन मुकुटधारी सम्राट् हुए; तब उन्होंने खृष्टानी धर्म्मके अनुसार कारडिनेल फ़ेच द्वारा गुप्त रूपसे अपनी वैवाहिक प्रक्रिया सम्पन्न कराई। फ्रान्स-सम्राट् होनेपर फ्रान्समें नेपोलियनने खृष्टान धर्म्मानुसार विवाह होनेकी प्रथा एकबार फिर प्रचलित कर दी थी।

नेपोलियनने कहा है,—"जोजेफाइन एक अतीव सुन्दर स्त्री थीं; वह जैसी निर्मल थीं वैसी ही सुशीला और मनोहारिणी भी थीं। शृङ्गारकी तो मानो वह देवी ही थीं। वस्त्रादिकी प्रचलित परिपाटी मानो उनके साथ आविष्कृत हुई थी। वह जिस चीजको अपने अङ्गपर धारण करती थीं, वही चीज सुन्दर प्रतीत होती थी। वह बड़ी ही दयालु; बड़ी ही सहृदया रमणी थीं। उन जैसी अतीव शोभासम्पन्ना तथा उच्चकोटिकी रमणी सारे फ्रान्समें न थीं। अपने सम्पूर्ण एकत्र निवास-कालमें एकबार भी मैंने उनके द्वारा कोई भद्दा कार्य्य होते न देखा। मेरे चरित्रके विविध सामान्य प्रभेदका उन्होंने सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया था और वह अपने इस ज्ञानका उत्तम उपयोग करनेमें अत्युत्तम नैपुण्यको स्पष्ट दिखाया करती थीं। उदाहरणस्वरूप,—यूजेनीके लिये उन्होंने मुझसे कभी किसी प्रकारकी दया-भिक्षा न की और उसके प्रति जब मैंने किसी प्रकारकी दया प्रकाशित की, तब उसके लिये उन्होंने मेरा कभी धन्यवाद न किया। यूजेनीके मेरे द्वारा श्रेष्ठतर प्रतिष्ठा प्राप्त करनेपर भी जोजेफाइनने कभी मेरे प्रति अतिरिक्त सौजन्य या प्रगाढ़ मनोयोग न दिखाया। उनके ऐसे कृत्यका महत् उद्देश्य यह दिखाता था, कि यह और किसीका नहीं; मेरा ही कार्य्य था और यूजेनी केवल 'उनका' नहीं, 'हमारा' पुत्र था। वह निःसन्देह इस विचारको अपने मनमें धारण किये हुई थीं, कि यूजेनीको मैं अपने उत्तराधिकारीके रूपमें ग्रहण करूँगा।"

इससे अधिक एक पक्षके अत्युत्तम शिष्टाचारका अत्युत्तम दिखाव और दूसरे पक्षकी सम्पूर्ण गुणग्राहकता इतिहासमें दिखाई नहीं देती।

नेपोलियनने जोजेफाइनके सम्बन्धमें फिर कहा है;—"सन् १८०५ ई० तक हम दोनो अपने पारस्परिक सम्बन्धमें धार्म्मिक गृहस्थोंकी तरह रहे और रात्रिको सदा एक साथ विश्रामार्थ गये। इसके उपरान्तकी राजनीतिक घटनाओंने मुझे अपना अभ्यास परिवर्त्तन करनेपर बाध्य किया और मैंने अपने दिनके परिश्रमके साथ अपना रातका भी परिश्रम मिला दिया। हमारी यह सुशृङ्खला हमारी गृहस्थीकी उत्तमताकी उत्कृष्ट प्रतिभू थी। इससे गृहिणीकी प्रतिष्ठा, पतिकी वश्यता निश्चित होती और मनोभावोंका सख्य तथा उत्तम चरित्रकी प्रतिष्ठा होती है। यदि ऐसा न हो, तो एक सड़ीसी घटना एकको दूसरेसे भुला देनेके लिये यथेष्ट होती है।

"यदि मेरे औरस तथा जोजेफाइनके गर्भसे एक भी पुत्र उत्पन्न होता, तो मुझे आनन्द होता और मेरा साम्राज्य मेरे वंशमें चला आता। फ्रान्सीसी मेरी लुइसीके गर्भसे उत्पन्न मेरे पुत्रकी अपेक्षा जोजेफाइनके गर्भसे उत्पन्न मेरे पुत्रको अधिक प्यार करते और मैं भी पुष्पोंसे ढँके उस गर्त्तपर कभी पैर न रखता, जिसमें गिर मैंने अपना सर्वनाश किया। अबसे किसीको भी मानवीय संमिश्रणकी बुद्धिपर विश्वास करना न चाहिये। जीवन समाप्त होनेसे पहले उसके दुःखी या सुखी होनेके सम्बन्धमें किसीको भी कोई बात कहना न चाहिये। मेरी जोजेफाइनको भविष्यत्के सम्बन्धका स्वाभाविक ज्ञान था, ऐसे समय वह अपने ही बन्ध्यात्वसे आतङ्कित हुईं। वह यह बात अच्छी तरहसे जानती थीं, कि जिस विवाहसे फल उत्पन्न हो, वही विवाह सच्चा विवाह है। इसके उपरान्त जैसे-जैसे सौभाग्य-लक्ष्मीकी कृपा बढ़ती गई; वैसे-वैसे उनकी चिन्ता बढ़ती गई। मैं उनके सुगभीर प्रेमकी सामग्री था। यदि मैं अर्द्धनिशाकी किसी लम्बी यात्राके लिये निकलता, तो मुझे यह देख आश्चर्य होता, कि मुझसे पहले ही वह मेरी यात्राकी गाड़ीमें बैठ मेरी बाट देखती रहती थीं। यदि मैं उन्हें अपने साथ जानेसे रोकनेका

यत्न करता, तो वह ऐसी अच्छी तथा अनुरागपूर्ण युक्तियाँ उपस्थित करतीं, जिनके सम्मुख प्रायः सदा ही मुझे अवनत होनेकी आवश्यकता होती थी। एक बातमें,—वह मेरे लिये सदा एक सुखपूर्ण तथा स्नेहमयी पत्नी प्रमाणित हुईं और मैंने उनकी कोमलतर स्मृतिको अपने हृदयमें रक्षित कर रखा है।

"जिन जोजेफाइनको मैं अतीव कोमलतापूर्वक चाहता था; राजनीतिक कारणोंने उन जोजेफाइनका वैवाहिक सम्बन्ध भङ्ग करनेके कार्य्यमें मुझे प्रवृत्त किया। अपने सौभाग्यक्रमसे वह बेचारी मेरी अन्तिम दुरवस्था देखनेसे पहले ही इहलोक छोड़ परलोक गईं। पति-पत्नी-विच्छेदके आईनानुसार मुझसे बलपूर्वक छुड़ाई जानेके उपरान्त मेरे निर्वासनके समय उन्होंने हृदयग्राही शब्दों द्वारा मेरे निर्वासनमें मेरा साथ देनेकी अपनी इच्छा प्रकट की थी और अश्रुपूर्ण लोचनसे मेरी ओर उनके प्रति होनेवाले मेरे व्यवहारकी प्रशंसा की थी। अङ्गरेजोंने मुझे निर्दयताका दैत्य अङ्कित किया है। एक निर्म्मम हृदयहीन अत्याचारीके व्यवहारका क्या ऐसा ही फल होना चाहिये? मनुष्य अपनी स्त्री, अपने परिवार और अपने अधीनस्थ मनुष्योंके प्रति होनेवाले व्यवहार हीसे पहचाना जाता है।" ११

---

११ इङ्गरसलके द्वितीय ग्रन्थमें लिखा है,—"नेपोलियनने अपने भाई जोजेफके नाम कोई छः सौ अप्रकाशित अतीव गोपनीय पत्र लिखे थे। नेपोलियनने यह पत्र हृदयसे लिखे थे और इनसे उनके यथार्थ चरित्र, विचार तथा उद्देश्यपर सच्चा प्रकाश पड़ता और उनके विरुद्ध होनेवाले कुसंस्कारके मेघोंका निवारण होता है। इन पत्रोंको जोजेफने यूरोपमें बड़ी कठिनतासे छिपा रखा था। इसके उपरान्त इन्हें वह रक्षित रखनेके लिये अमेरिका लाये। इनकी मृत्यु होनेपर यह पत्र मेरे उपाय द्वारा अमेरिका—युक्तराज्यकी फिलाडेलफियाकी टकसालमें रखवा दिये गये। यह स्थान इन पत्रोंका रक्षास्थान समझा गया। इस घटनाके चार वर्ष बाद सन् १८४३ ई० की २३ वीं अक्तोबरको मेरे सम्मुख जोजेफके दानपत्रके कार्य्यनिर्वाहकार ने यह पत्र जोजेफके पौत्र जोजेफके हाथ अर्पित किये। उस समय वह पचीस वर्षके थे। उनके दादाने अपने दानपत्रमें यह लिख दिया था कि यह पत्र तथा इनके साथ-साथ

अपने विवाहके ठीक पहले नेपोलियनको इटलीकी सैन्यके प्रधान सेनापतिका पद प्राप्त हुआ। इसे पा वह अतीव सन्तुष्ट हुए। उनसे पहले इस सैन्यके जो प्रधान सेनापति थे, वह अपने अधिक मद्यपानके कारण अपने पदसे हटा दिये गये थे। जिस समय नेपोलियनको यह दायित्वपूर्ण पद प्राप्त हुआ; उस समय उनकी अवस्था केवल छब्बीस वर्षकी थी। इसपर उनसे एक डिरेक्टरने कहा था,—"आपकी अवस्था थोड़ी है; आप इस गुरुभार दायित्व तथा योद्धा सेनापतियोंका कर्त्तृत्व कैसे ग्रहण कर सकेंगे?" प्रत्युत्तरमें नेपोलियनने कहा था,—"एक वर्षमें या तो मैं वृद्ध हो जाऊँगा या मर जाऊँगा।" कारनेटने कहा,—"हम आपको केवल सिपाहियोंका कर्त्तृत्व दे सकते हैं, कारण, सिपाहियोंके पास कोई अवलम्ब नहीं और हमारे पास आपके देनेको धन नहीं, जिससे आप सामान संग्रह कर सकें।" नेपोलियनने उत्तर दिया था,—"मुझे यथेष्ट सिपाहियों हीका प्रयोजन है, इससे अधिक और किसी बातका प्रयोजन नहीं। फलाफलका दायित्व मुझपर रहेगा।"

अपने विवाहके कुछ दिन बाद नेपोलियनने अपनी नवविवाहिता वधूको पेरिसमें छोड़ इटलीकी सैन्यके सदर नाइसकी यात्रा की। अपनी जिन माताका प्रेम वह आजन्म अतीव यत्नपूर्वक अपने हृदयमें परिपोषण करते रहे; उन माताासे दमभरको मिल लेनेके लिये

अन्यान्य अप्रकाशित कागज-पत्र भी मेरे पोतेको मिले। अन्यान्य अप्रकाशित कागजापत्रमें जोजेफकी अपनी लिखाई आंशिक जीवनी तथा उनके द्वारा लिखी गई प्रजातन्त्री मारशल जोरदानीकी जीवनी थी। यह सम्पूर्ण अकपट तथा भ्रातृभावपूर्ण विश्वसनीय पत्र थे। इनमें कई सौ नेपोलियनके हाथके लिखे वह पत्र थे, जो नेपोलियनके श्रेष्ठत्व प्राप्त करनेसे पहले लिखे गये थे। यह सब उनके यथार्थ विचारों तथा चरित्रको प्रकट करते थे। कारण, उस समय अतीव नवयुवक होनेके कारण वह अपने पत्र-व्यवहारमें अतीव अकपट थे और अपने मनोभावोंको बदल न सकते थे। जोजेफने उन्हीं पत्रोंपर निर्भरकर यह प्रमाणित करनेका यत्न किया था और बारबार मुझसे कहा था, कि नेपोलियन "उच्चगुणगणपूर्ण, कोमलहृदय और धार्म्मिक सिद्धान्तके पुरुष थे।" हालमें यह पत्र प्रकाशित किये गये हैं।

वह मारसेलेसकी राहसे गये और २७ वीं मार्चको उस शीतल तथा निरानन्दपूर्ण सैनिक छावनीमें पहुँच गये, जिसमें अवस्थानकर भग्नोत्साह फ्रान्सीसी सैन्य भाँति-भाँतिकी कठोरता सहन कर रही थी। वह बहुसंख्यक शत्रुओं द्वारा घिरी हुई थी। शत्रुओंने फ्रान्सीसी सैन्यको इटलीके उर्व्वर मैदानोंसे निकाल आल्प्सके अनुर्व्वर तथा घोर दुर्गम्य स्थानोंमें पहुँचा दिया था। एक ओर धनी नगरों तथा प्रकाशपूर्ण और अङ्गूरके वनसे आच्छादित पर्व्वत-पार्श्वों में अवस्थित अष्ट्रियन सैन्य रत्ना तथा प्राचुर्य्यका सुख भोग कर रही थी; दूसरी ओर व्याकुल तथा दरिद्र प्रजातन्त्री फ्रान्सीसी सैन्य अक्षरशः ठिठर और उपवास कर रही थी। किन्तु इस स्थलमें और बातोंके देखनेसे पहले हमें एक क्षणके लिये ठहर यह सोचना चाहिये, कि इस युद्धके आरम्भ होनेका क्या कारण था और किस उत्साहसे उत्साहित हो उभयपक्षकी फौजें एक दूसरेसे युद्ध करनेपर उद्यत हुई थीं।

फ्रान्सने अपने सुनिश्चित स्वत्वके अनुसार अमेरिका युक्तराज्यका अनुसरणकर और उसके उदाहरणसे प्रणोदित हो राजतन्त्री शासन परित्यागपूर्वक प्रजातन्त्री शासनकी प्रतिष्ठा की थी। असंख्य शताब्दियोंतक फ्रान्सके इन्द्रियसुखनिरत राजों तथा विलासी रईसोंने फ्रान्सके कोटि-कोटि मनुष्योंको पददलित किया तथा अत्याचारके पेषणसे धूलिमें मिलाया था। किन्तु अब इन्हीं धूलिमें मिले कोटि-कोटि साधारण लोगोंने उत्थित हो कर्त्तृत्व प्राप्त किया था और फ्रान्सराजको उनके सिंहासनसे हटा तथा रईसोंको उनकी सुविस्तृत रियासतोंसे भगा अपना स्वार्थ अपने हाथ ग्रहण किया था। इसमें सन्देह नहीं, कि वह राज्यशासन-विज्ञानमें अनुभवी तथा दक्ष न थे; इसलिये उन सबने बहुतेरी तथा दुःखद त्रुटियाँ की थीं। युरोपके समस्त शक्तिशाली नरेशों तथा रईसोंने अपनी फौजों द्वारा फ्रान्सको चूर-चूर कर डालनेका जो एका कियाथा, उसे देख फ्रान्सीसी सन्त्रस्त हुए थे।

ध्वंसको अपनी ओर तुषारगिरिकी तरह फिसलता देख भयके आकस्मिक आक्रमणसे फ्रान्सीसियोंने अतीव निष्ठुर अत्याचारके कितने ही कर्म्म कर डाले थे। उन्होंने केवल स्वराज्यके स्वत्वका दावा किया था और इसपर जब वह आक्रान्त हुए, तब वह अपने आक्रमणकारियोंपर दृष्टि-शून्य तथा दयाहीन क्रोधपूर्वक टूट पड़े।

युरोपीय नरेशोंने फ्रान्सका यह अशुभ शासन-परिवर्त्तन अकथनीय भयपूर्ण लोचनसे देखा। अतीव भयपूर्वक उन्होंने फ्रान्सीसी साधारण लोगोंका उत्थान प्रत्यक्ष किया और अपने एक भाई नरेशको अपने राजप्रासादसे बलपूर्वक खींचे जाकर शूलीपर कटते देखा। फ्रान्सीसी प्रजातन्त्रको सफल प्रतिष्ठा सम्भवतः प्रत्येक युरोपीय नरेशको उनके सिंहासनसे च्युत कर सकती थी। फ्रान्समें शासनको प्रतिष्ठाने इङ्गलैण्डके सभी विभागोंमें हलचल उपस्थित कर दी थी। आयरलैण्डकी मट्टीकी झोपड़ियोंसे; अन्धकारमयी तथा कर्द्दमपूर्ण खानियोंसे, नगरोंकी जनाकीर्ण राहोंसे; समग्र इङ्गलैण्डमें फैले जनपूर्ण कारखानोंतकसे स्वाधीनता तथा समानताकी चीत्कारध्वनि उत्थित होने लगी थी। पेरिसकी अपनी आत्मासे उज्ज्वलता प्राप्त करनेवाला प्रजातन्त्री भाव यूरोपके समस्त सिंहासनोंपर आक्रमण कर रहा था। ऐसी दशामें यूरोपीय सिंहासनके अधिकारियोंके लिये सिवा इस नई शक्तिके कुचलने या इसके द्वारा कुचले जानेके और कोई उपाय न था।

इसके फलसे जो युद्ध हुआ; उसमें राजतन्त्रियोंकी सहानुभूति मित्रनरेशोंके साथ थी। उधर जगत्‌के प्रजातन्त्री मात्र यह कह रहे थे,—"जगदीश फ्रान्सको साहाय्य प्रदान करें।" दोनो यही समझते थे, कि वह आत्मरक्षार्थ युद्ध कर रहे थे। युरोपीय नरेशोंपर फ्रान्समें विजय प्राप्त करनेवाले मूल तत्त्वोंका आक्रमण हो रहा था, जिसके फलसे उनके सिंहासन पोले होते जाते थे। उधर फ्रान्सीसियोंपर सङ्गीनों तथा तोपखानोंकी मार पड़ रही थी। मित्रराज्यों-

को सम्मिलित फौजें फ्रान्सीसियोंके राज्योंपर आक्रमण कर रही थीं ; उनके नगरोंपर गोले बरसा रही थीं और अस्त्र-बलसे ऐसा यत्न कर रही थीं, जिससे तीन करोड़ मनुष्यों द्वारा संगठित फ्रान्सीसी जाति वैदेशिक आज्ञानुसार फ्रान्स-सिंहासनसे उतारे गये बोरबन्सको एकबार फिर फ्रान्स-सिंहासनपर प्रतिष्ठित करे। फ्रान्समें बिखरे समस्त राजतन्त्रियोंको मित्रोंने अस्त्र धारण करने ; उनके रक्षार्थ आती हुई मित्रोंको सैन्यके झण्डोंके नीचे फिरसे एकत्र होने और अपने देशको अभ्यन्तरीण युद्धके रक्तसे सिक्त करनेके लिये आह्वान किया था। उधर फ्रान्सीसियोंने अपना अवसर पानेपर समस्त देशोंके मनुष्योंको उन्हें युग-युगके बन्धनसे छुड़ानेवाले स्वाधीनताके दूत तिरङ्गी फ्रान्सीसी पताकाको वन्दना करनेके लिये बुलाया था।

यूरोपके प्रत्येक नगरमें जब अपनी विजयिनी सैन्यके साथ नेपो-लियन पहुँचते थे ; तब वहाँके राजतन्त्री भागते और प्रजातन्त्री धार्म्मिक पूजाजैसे तोषामोदपूर्व्वक उनका स्वागत करते थे। फिर ; फ्रान्सके किसी नगरमें जब मित्रोंकी फौजें पहुँचती थीं ; तब राज-तन्त्री शासनकी कामना करनेवाले मनुष्य अश्रुपूर्ण लोचनसे उनका स्वागत किया करते थे। इसतरह इस युद्धमें एक ओर प्रजातन्त्रका भाव था ; दूसरी ओर राजतन्त्र तथा धर्म्मयाजक-सम्बन्धीय प्राधान्य था।

इङ्गलैण्ड जङ्गी जहाजोंके अपने आग्नेय बेड़ेके साथ प्रजातन्त्री फ्रान्सके किनारोंके समीप मँडलाता फिरता था। वह प्रत्येक अर-क्षित स्थानपर आक्रमण करता ; फ्रान्स-राज्यमें अपनी सैन्य उतारता और फ्रान्सीसी प्रजातन्त्रियोंको मुल्की युद्धके लिये उत्साह प्रदान तथा सशस्त्र करता था। उत्तरीय फ्रान्सपर आक्रमण करनेके लिये अष्ट्रिया दो लाख सिपाहियोंकी सैन्य ले राइन नदीके किनारे चढ़ आया था। उसने इटलीके स्वाधिकृत सभी स्थानोंको अपने साथ युद्धमें सम्मिलित होनेकी आज्ञा दी थी और ब्रुटिश जङ्गी जहाजों,

सारडीनिया नरेशको फौजों और नेपल्स तथा सिसिलीकी धर्म्मोन्मत्त बड़ी-बड़ी फौजोंको मिला अस्सी हजार योद्धाओंकी सैन्य आल्प्स-सीमामें संग्रह की थी। यह विशाल सैनिक दल अनुभवी सेनापतियोंके कर्त्तृत्वमें था और इसे युद्धके सभी उपकरण प्रचुर परिमाणसे दिये गये थे। यही वह बलपूर्व्वक प्रवेश करनेवाला शत्रु-दल था, जिससे रक्त-रञ्जित रणक्षेत्रमें नेपोलियन टक्कर लेनेको थे।

फ्रान्सीसियोंके पक्षमें यह सम्पूर्ण आत्मरक्षाका युद्ध था। वह अपने ऊपर प्रत्येक स्थानसे आक्रमण करनेवाली राजकीय युरोपकी फौजोंकी गोलियों तथा सङ्गीनोंसे युद्ध कर रहे थे। मित्रनरेशगणकी भी यही धारणा थी, कि वह आत्मरक्षार्थ इस युद्धमें प्रवृत्त हुए थे; वह उन मूल लक्षोंसे द्वंद्व कर रहे थे, जो उनके सिंहासनोंके खोखला करनेका काम दिखा रहे थे। लोगोंको यह बात सुन कर आश्चर्य हो सकता है, किन्तु यथार्थमें किसी निरपेक्ष तथा स्पष्टभाषी मनुष्यके लिये किसी भी पक्षके प्रति दोषारोपण करना कठिन था। मानवीय स्वभावकी निर्बलताका ध्यान करते हुए यदि यह देखा जाये, कि राजकीय पैतृक स्वत्व धारण कर उत्पन्न होनेवाले यूरोपीय नरेशोंने प्रजातन्त्री मूल तत्त्वोंके आक्रमणसे अपने सिंहासनोंके धारण करने तथा अपने साम्राज्यकी रक्षा करनेके लिये प्रत्येक प्रकारका यत्न किया, तो इससे किसीको उतना आश्चर्य प्रकट करनेका प्रयोजन क्या है? फिर; इसमें भी आश्चर्य्यकी कौनसी बात है, कि जिस प्रजातन्त्री फ्रान्सने असह्य अत्याचारोंकी शृङ्खलाओंको भङ्ग कर दिया था, वह फ्रान्स आत्मनिर्वाचित शासनप्रणालीका स्वत्व दूसरोंके हाथ समर्पित करनेके बदले अतीव नैराश्यपूर्ण युद्धकी विभीषिकाओंके सन्मुखीन होनेके लिये कृतसङ्कल्प हो गया? अमेरिकाका प्रजातन्त्री युक्तराज्य सम्मिलित यूरोपके ऐसे आक्रमण द्वारा आक्रान्त होनेसे केवल इसलिये रक्षित रहा, कि यूरोप तथा अमेरिकाके बीच महासागरकी प्रशस्त बाधा

उपस्थित थी। फिर; यदि राजकीय यूरोपकी सम्मिलित फौजें यह बाधा दूरकर अमेरिका-तटपर आक्रमण करतीं और अमेरिका-वासियोंको अपने देशमें तृतीय जार्जको सिंहासनारूढ़ करनेपर बाध्य करतीं, तो इसमें सन्देह नहीं, कि अमेरिकावासी उस नेपोलियनको आशीर्वाद करते, जो उनके बीचसे प्रकट हो उनके देशकी स्वाधीनताके लिये युद्ध करता और अन्तमें आक्रमण करनेवाली शत्रु-सैन्यको सागरमें वापस निकाल देता।

जब नेपोलियन नाइस पहुँचे; तब उन्हें फ्रान्सीसी सैन्यमें केवल तीस सहस्त्र सिपाही मिले, जिन्हें अस्सी सहस्त्र मित्र सैन्यके सम्मुखीन करना था। फ्रान्स-सरकार निर्द्धन थी और उसके पास सिपाहियोंको वेतनादि देनेका कोई साधन न था। सिपाही हतोत्साह हो भयको प्राप्त हो रहे थे। उनके पास पहननेको वस्त्रतक न था। रिसालेके घोड़े निरानन्दपूर्ण तथा तुषाराच्छादित गिरि-शृङ्गोंपर मर चुके थे और सैन्यमें तोपखानोंका प्रायः सम्पूर्ण अभाव था। उस युवक सेनापतिने अपनी सैन्यके सदरमें पहुँचनेके उपरान्त ही अपने सेनापतियोंको अपने पास बुलाया। उनमें कितने ही रणदर्शी योद्धा थे और जब उन्होंने अपने प्रधान अफसरको एक युवक; युवकही क्यों,—बिना दाढ़ी-मूँछका एक बालक पाया; तब उन्हें बड़ा दुःख हुआ। किन्तु इस भेंटके पहले ही घण्टेमें उनकी प्रधानता स्वीकार कर ली गई और उन्होंने सबपर सम्पूर्ण तथा निर्विवाद प्राधान्य प्राप्त कर लिया। बरथियर, मस्सेना, उगरिउन, सेरुरियर और लेनेस वहाँ उपस्थित थे। यह सब प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे और इनमें धीशक्ति जाननेकी क्षमता थी। नेपोलियनको पहली सभा परित्याग करनेपर इनमेंसे एकने कहा था,—"यह वह नेता है, जो निश्चय ही हमें सफलता तथा सौभाग्यकी ओर ले जायेगा।"

फ्रान्सीसी पर्वतोंकी शीतल चोटियोंपर अवस्थित थे। उधर मित्रोंकी फौजें उन उष्ण तथा उर्वर उपत्यकाओंमें छावनी डाले पड़ी

थीं, जो इटलीके मैदानोंकी ओर खुलती थीं। उन नवयुवक प्रधान सेनापतिकी अक्लान्त शक्ति, कर्त्तृत्वसूचक बुद्धि, अपने बुद्धिबलपर संशयशून्य निर्भरता, अपने पूर्व्वके पर्य्यटन द्वारा प्राप्त किये युद्धस्थलके सम्पूर्ण ज्ञान, उनके आकारकी गम्भीरता तथा सतर्कता; छावनीके उन भ्रष्ट दृश्योंके बीच उनके असाधारण दूषणशून्य चरित्रने उनको चारो ओरके उन सेनापतियोंकी बड़ी भक्ति अर्ज्जित की, जो वीर तथा प्रतिभाशाली होनेपर भी दूषितप्रकृति तथा कामुक थे। नेपोलियनकी आकृतिमें एक अकथनीय ज्योति थी, जो तुरन्त ही भय तथा भक्ति उत्पन्न करती और सब तरहकी घनिष्ठताको दूर कर देती थी।

डेकरेस नेपोलियनसे पेरिसमें अच्छी तरहसे परिचित थे और नेपोलियनके साथ उनकी बड़ी घनिष्ठता थी। वह टूलोनमें थे, जब उन्हें नेपोलियनके इटलीके प्रधान सेनापति होनेका समाचार मिला। उनका कहना है,—"जब मुझे यह विदित हुआ, कि वह नये सेनापति इसी नगरसे होकर निकलेंगे; तब मैंने उसी समय उनके सम्मुख अपने कितने ही साथियोंको उपस्थित करना और नेपोलियनकी मैत्रीसे लाभान्वित होना निश्चय किया। जब वह टूलोन पहुँचे; तब मैं औत्सुक्य तथा आनन्दसे परिपूर्ण हो उनसे भेंट करने चला। वह जिस कमरेमें बैठे थे; उसका द्वार खोल दिया गया और मैं अपनी अभ्यस्त घनिष्ठताके अनुसार झपटकर उनसे भेंट करनेपर उद्यत हुआ। किन्तु उनके भाव, उनकी दृष्टि और उनके कण्ठस्वरने मुझे एकाएक निवारित किया। उनकी आकृति या भावमें दम्भ या अपमानसूचक कोई बात न थी; फिर भी, उस समय उन्होंने मुझपर जो प्रभाव उत्पन्न किया; उसके फलसे मैंने उस अन्तरको बलपूर्वक घटानेका कभी यत्न न किया, जिस अन्तरने हम दोनोको जुदा कर दिया था।[12]

---

१२ नेपोलियनने डेकरेसको काल पाकर डिउक बनाया और फ्रान्सके नौ-विभागका मन्त्रित्व प्रदान किया। वह नेपोलियनके बड़े भक्त थे। जिस समय नेपोलियनका

अपना स्त्रियोंजैसा रूप और किशोरोंजैसी आकृति रहनेपर भी उन्होंने अपने सिपाहियों तथा सेनापतियोंपर ऐसा हो प्राधान्य प्राप्त किया था। जो मनुष्य उनके सम्मुख जाता; वही उनकी कर्त्तृत्व-सूचक बुद्धिके वर्णनातीत प्रभावसे सन्नस्त होता था। उनपर प्राधान्य लाभ करनेके लिये उनसे संघर्ष करनेका साहस कोई भी कर न सकता था। सैनिक छावनियोंमें जो कामुकता तथा कामासक्ति सदा विद्यमान रह छावनियोंको कलङ्कित करती रहती है; उससे वह घृणापूर्वक दूर रहते थे और प्राचीनकालके महापुरुषोंजैसी ऐसी चारित्रिक कठोरता प्रकट किया करते थे, जिससे सताचार द्वारा सतत शासित प्रतिष्ठा प्राप्त किया करते थे।

नाइस नगरमें बहुतेरी रूपवती तथा भ्रष्टा वेश्यायें तथा थियेटरमें गानेवालियां रहती थीं। यह सब अपने रूपका व्यवसाय किया करती थीं और प्रचुर धन तथा भोग-विलासका आनन्द प्राप्त किया करती थीं। उन नवयुवक सेनापतिको अपने रूप-पाशमें फँसानेके लिये उन सबने यथासाध्य बड़ा यत्न किया; किन्तु उनके प्रलोभनका कोई फल न हुआ। नेपोलियन वह अर्जुन प्रमाणित हुए, जिन्हें कोई भी उर्वशी वशीभूत कर न सकती थी। यह बात कम

पतन होने लगा था, उस समय इस बातकी जाँच की गई, कि वह नेपोलियनके विरुद्ध साजिशमें सम्मिलित होनेके इच्छुक हैं या नहीं। यह घटना इसतरह हुई, कि एक दिन वह एक प्रसिद्ध पुरुषसे भेंट करने गये। उन प्रसिद्ध पुरुषने डेकरेसको एक किनारेकी एक अंगीठीके सम्मुख ले जा एक पुस्तक खोल कहा,—"अभी-अभी मैं यह पुस्तक पढ रहा था। इसकी एक बातने मुझपर बड़ा प्रभाव उत्पन्न किया है। इस पुस्तकमें मण्टेस्क्यिउने कहा है,—'जब कोई राजा न्यायको पददलित करता है और जब अत्याचार असह्य हो जाता है, तब अत्याचारसे उत्पीडित मनुष्योंके लिये सिवा इसके और कोई उपाय नहीं, कि········' " यह बात सुन डेकरेसने अपना हाथ इस पुस्तकके पाठकके मुंहसे लगा कहा-—"बस—बस। मैं यह पुस्तक इससे अधिक सुना नहीं चाहता। अब आप यह पुस्तक बन्द कर दें।" यह बात सुन उस पुस्तकके उन पाठकने शान्तिपूर्वक वह पुस्तक रख दी और बिलकुल दूसरी बातें करने लगे, मानो कोई विशेष घटना हुई हो नहीं।

विचित्र नहीं। कारण; नेपोलियनका प्राकृतिक भाव अतीव उज्ज्वल तथा प्रचण्ड था और उन्हें उनके आत्मविसर्जनसे रोकनेके लिये उनके मनमें कोई भी धार्मिक शङ्का न थी।

काल पाकर नेपोलियनने कहा था,—"जब मैंने इटलीकी सैन्यका सेनापतित्व ग्रहण किया; तब मेरी अतीव अल्पवयस्कताके कारण यह बात आवश्यक हुई, कि मैं किसीसे घनिष्ठता न करूँ और कठोर चारित्रिक बल धारण करूँ। अपनेसे वयस तथा अनुभवमें बहुत ज्येष्ठ मनुष्योंपर अपना प्रभाव स्थापित करनेके लिये मैं अपना ऐसा भाव प्रकट करनेपर बाध्य हुआ था। मैंने अपना चरित्र ऐसा बना लिया, जो अतीव दोषशून्य तथा अनुकरणीय था। अपने निर्दोष नैतिक चरित्रमें मै एक केटो बन गया था और इसमें सन्देह नहीं, कि अन्यान्य मनुष्योंको भी मैं इसी रूपमें दिखाई देता था। मैं दार्शनिक पण्डित और महात्मा था। अपनी सैन्यके समस्त पुरुषोंकी अपेक्षा अपनेको अच्छा पुरुष प्रमाणित करनेसे ही मैं अपना प्राधान्य स्थिर रख सकता था। यदि मैं मानवीय निर्बलताओंके वश हो गया होता, तो मैं अपनी शक्ति गंवा देता।"

मद्यपानसे वह अपनेको बहुत बचाते थे। यथासाध्य एक ग्लास भी मद्य पीनेसे बचते थे। उन्होंने अपनी उपस्थितिसे किसी भी मद्यसेवकके आनन्दको उत्साहित नहीं किया। उस समय वह सभी तरहके जुएको बहुत ही नापसन्द करते और उनका यह मनोभाव आजन्म उनके साथ रहा। जिस मनुष्यमें जुएका दोष होता, उसपर वह कभी विश्वास स्थापित न करते। सेण्ट हेलेनामें एक दिन वह लासकेसाससे बातें करते थे। बातों-बातों लासकेसासने ऐसी बात कही, जिससे नेपोलियनने पूछा,—"क्या तुम जुआ खेला करते थे?"

प्रत्युत्तरमें लासकेसासने कहा,—"मुझे बड़ाही दुःख है, श्रीमन्, कि मैं कभी-कभी जुआ खेल लिया करता था।"

इसपर नेपोलियनने कहा,—"मुझे इस बातका बड़ा आनन्द है, कि तुम्हारे ज्वारी होनेका हाल मुझे उस समय विदित न हुआ। यदि ऐसा होता, तो तुम मेरी निगाहोंसे गिर जाते। ज्वारीका विश्वास क्या? जिस मनुष्यमें मैं जुएकी आसक्ति देखता था; उस मनुष्यपर मैं विश्वास करना छोड़ देता था।"

इन नवयुवक योद्धाने किस उद्गमस्थानसे इन ऊँचे मूल तत्वोंको प्राप्त किया था? व्यभिचार, अधर्म और जुआ; यही तीनो प्रजातन्त्री फ्रान्सके ईश्वरीय त्रिभाव बन गये थे। अधिक नास्तिकताने कहीं तीनोको 'दयालु पिता,' 'पक्ष समर्थक योशु' तथा 'पवित्रता प्रदान करनेवाली आत्मा' के बदले ग्रहण किया था। नेपोलियन-चरित्र भ्रष्टताके ऐसे ही प्रभावोंके बीच पला था। फिर भी, सैनिक छावनोमें रहनेवाले तथा सिंहासनपर बैठे उनके साथियोंकी अपेक्षा उनका चरित्र बड़ा ही निष्कलङ्क था। नेपोलियनका कहना है, कि अपने हृदयमें उत्पन्न होनेवाले प्रत्येक पवित्र तथा उच्च विचारके लिये वह और किसीके नहीं; एकमात्र अपनी माता हीके ऋणी थे।

नेपोलियनकी माता लेटिशिया असाधारण सद्गुणविशिष्टा रमणी थीं। वह कठिनतासे अभी अपना बाल्य अतिक्रम करने पाई थीं; उनकी अवस्था केवल अट्ठारह वर्षकी थी; जब उनके द्वितीय पुत्र नेपोलियनने उनके गर्भसे जन्म ग्रहण किया था। उन्होंने क्रन्दन-निरत असहाय शिशु नेपोलियनको भगवान्‌का धन्यवाद करते हुए अपनी खेदपूर्ण छातीसे लगा लिया। ऐसे बच्चेको उसके अज्ञान तथा उच्च सौभाग्यकी दीक्षा तथा शिक्षा देनेके लिये उनकी माताकी अवस्था बहुत थोड़ी थी। उन्होंने उस बच्चेको अपनी रक्षा करने-वाली भुजाओंमें आवेष्टित कर लिया; उधर वह बच्चा अपनी उन नन्ही-नन्ही बाहोंसे अपनी माताकी छातीका आदर करने लगा; जिन बाहोंसे उसने अपने बादके जीवनमें राजदण्ड ग्रहण किया, सिंहा-सनोंको उड़ा दिया और अपने अनिवार्य्य खड्गसे फौजोंपर फौजें काट

डालीं। उस समय उन्होंने जिन शिशुकालीन होंटोंको तुतला-तुतला 'मा'—'बा' कहना सिखाया था; बादको उन्हीं होंटोंसे निकली आज्ञाओंसे सारा यूरोप हिला और उन्हीं होंटोंसे कर्कशता तथा तीच्णतासे निकलनेवाले ज्वलन्त, उज्ज्वल तथा विक्रान्त शब्दोंने जगत्में गूँज जातिपर जातिको युद्धको रेल-पेलमें बलपूर्वक निक्षेप किया। उस समय उन्होंने जिन निर्बल पैरोंको फर्शपर लड़खड़ा-लड़खड़ा कर चलनेकी आरम्भिक शिक्षा दी थी और उनके सफलयत्नपर मातृचुम्बन तथा मातृस्नेहका पुरस्कार प्रदान किया था, काल पाकर वही पैर लम्बे-लम्बे डग बढ़ाते मरुभूमिकी रेतपर चले, रूसकी रक्त-रञ्जित तुषारावृत भूमिपर कष्टपूर्वक आगे बढ़े और अन्तमें धुंदले, अनुर्वर तथा प्रचण्ड वाताहत सेण्ट हेलेनाके शृङ्गपर मृत्यु तथा पीड़ाकी निर्बलतासे डगमगाते फिरे। उन्होंने अपने पुत्रके हृदयमें मर्य्यादा तथ आत्मसाधनके वह मूलतत्त्व धीरे-धीरे प्रवेश करा दिये थे, जिनके कारण वह जगत्के समस्त प्रलोभनोंसे परिवृत रहनेपर भी मतवाले व्यभिचारी तथा ज्वारीके शोचनीय परिणामसे आत्मरक्षा करनेमें समर्थ हुए। इसीके फलसे नेपोलियनका दर-बार एक ओर जिसतरह जगत्का अद्वितीय ऐश्वर्य्यपूर्ण दरबार हुआ; दूसरी ओर उसीतरह अपने नैतिक चरित्रकी पवित्रता तथा अपनी नीतिकी अटूटताके लिये प्रसिद्ध हुआ।

लेटिशियाकी शक्ति और स्वाभाविक धर्म्मनिष्ठा उस समयके पापिष्ठ तथा पतित धर्म्म मन्दिरोंके दूषणोंसे बहुत ऊँची थी; इसी-लिये उनके पुत्र नेपोलियन सामयिक सार्वत्रिक नास्तिकतासे परिवृत रहकर भी अपनी स्नेहमयी जननीके जीवनको अलङ्कृत करनेवाले धर्म्मभावका आदर करनेपर बाध्य हुए थे। इसी धर्म्मभावने उनके शक्तिलाभके उपरान्त उन्हें तीन करोड़ फ्रान्सीसियोंको आनन्दविहीन, पाशविकताप्रद तथा सुखशून्य अविश्वाससे हटा खृष्टानीके समस्त सन्तोषप्रद, श्रेष्ठलक्ष्यव्यञ्जक और पवित्रता प्रदान करनेवाले प्रभावमें

लानेपर प्रवर्त्तित किया। जब नेपोलियनकी आज्ञासे फ्रान्सके प्रत्येक पर्वत-पार्श्व तथा उपत्यकामें गिरजोंके घण्टे एकबार फिर प्रार्थनाका समय बजाने लगे ; जब खृष्टानशास्त्रोक्त साप्ताहिक उपासनाका दिन रविवारका प्रातःकाल जनाकीर्ण नगरों तथा शान्त ग्रामोंके आनन्दित सहस्र-सहस्र मनुष्योंको धर्म्म-मन्दिरका पथ दिखाने लगा और जब नवयुवक अपने विवाह तथा वृद्ध अपनी मृत्युके समय खृष्टीय प्रतिनिधित्वके पवित्र भावों द्वारा सुखी बनाये जाने लगे,—तब यथार्थमें एक माता होके प्रभावने अपने कर्त्तव्यपरायण पुत्रके हृदयमें प्रतिष्ठित होकर उनके द्वारा एक घण्टेमें धर्म्म-विहीन फ्रान्स देशको नाममात्रके खृष्टानी देशमें परिणत करा दिया। वैदेशिक राजप्रतिनिधिके आदेशोंमें भी लेटिशियाका शान्त, मृदु तथा प्रवृत्तिजनक स्वर निबद्ध रहता था। नेपोलियनकी ऐसी गुणसम्पन्ना माता लेटिशियाकी जय !

इसमें सन्देह नहीं, कि उन प्रायः श्मश्रुविहीन नवयुवक और वह जिन योद्धा सेनापतियोंपर कर्त्तृत्व करनेको थे, उन सेनापतियोंके बीचकी प्रथम भेंटने एक विचित्र दृश्य उपस्थित किया होगा। उनके क्षत-चिह्नसे चिह्नित तथा युद्ध-जीर्ण दलपतियोंने जब उन 'शिशु' को देखा, तब यह सोच उनके आश्चर्यकी सीमा न रही, कि सैन्यकी वर्त्तमान नैराश्यपूर्ण स्थितिमें फ्रान्सकी प्रतिनिधि-सभाने ऐसे एक नवयुवकको प्रधान सेनापति बना कैसी मूर्खताका कार्य्य किया है। सेनापति रेम्यन उन नवयुवक प्रधान सेनापतिको कुछ परामर्श देनेपर उद्यत हुए। नेपोलियन परामर्श नहीं ; वश्यता प्राप्त करनेका दावा करते थे ; उन्होंने असन्तोषपूर्वक रेम्यनको निवृत्तकर कहा,—"सज्जनो ! युद्धका विज्ञान अपने शैशवमें है। वह समय चला गया ; जब उभयपक्षके योद्धा युद्धस्थल निर्द्धारित करते और अपनी टोपियाँ अपने हाथोंमें ले अभिवादन करते हुए अग्रसर हो एक दूसरेसे कहते थे,—'भद्रपुरुष ! क्या आप गोली चलानेकी कृपा प्रकाशित करेंगे?'

इस समय हमें शत्रुको खण्ड-खण्ड करना चाहिये; उनकी पल-टनोंपर खरस्रोतकी तरह पतित हो उन्हें पीस सुरमा बना देना चाहिये। इसमें सन्देह नहीं, कि शत्रु-सैन्य अनुभवी सेनापतियों द्वारा परिचालित हो रही है। यह अच्छी ही बात है—बहुत ही अच्छी बात है, किन्तु मेरे विरुद्ध उनका अनुभव उन्हें लाभान्वित न करेगा। मेरी बातें याद रखिये; वह शीघ्र ही अपने रणकौशलकी पुस्तकोंको जला किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जायेंगे। हाँ सज्जनो! इस सैन्यका पहला ही आक्रमण सामरिक विषयोंमें नवयुग उपस्थित करेगा। रह गये हम। हमें उचित है, कि शत्रुपर हम अपनेको वज्रकी तरह गिरायें और वज्र हीकी तरह प्रहार करें। हमारे रण-कौशलसे व्याकुल हो और वैसा रण-कौशल स्वयं ग्रहण करनेका साहस न कर हमारे शत्रु हमारे सम्मुखसे उसतरह भागेंगे, जिस तरह रात्रिकी प्रतिच्छाया उदयोन्मुखी सूर्य्यके प्रकाशके सम्मुखसे भागती है।"

जिस कर्त्तृत्वसूचक और आत्मनिर्भरतापूर्ण स्वरसे नेपोलियनने यह शानदार बातें कहीं; उनसे उनके अधीनस्थ सेनापतिगण क्षुब्ध हो निस्तब्ध हुए। उन्होंने नेपोलियनकी प्रधानता अनुभव की। यह सभा परित्याग करनेपर मेसेनाकी ओर मर्म्मपूर्ण सङ्केतकर औजरो-ने कहा,—"मैं सोचता हूँ, कि यह मनुष्य सरकारके लिये कोई कार्य्य प्रस्तुत करेगा।" इसके उपरान्त इस विषयमें नेपोलियनने कहा,—"उस समय मैं यदि कठोर भाव धारण न करता, तो मेरे अधीनस्थ सेनापति मेरी पीठ ठोंक देते।"

इस युद्धके सम्बन्धमें नेपोलियनकी दृष्टिमें निम्नलिखित विषय थे,—प्रथमतः, सारडोनियाके राजको अष्ट्रियाकी मैत्री परित्याग करने-पर बाध्य करना। द्वितीयतः, अष्ट्रियापर ऐसे वेगसे आक्रमण करना, जिससे वह राइनकी अपनी सैन्यको अपने साम्राज्यके लिये बुलानेपर बाध्य हो और इसतरह राइनकी ओरसे फ्रान्स प्रजातन्त्रपर चढ़ाई

करनेवाला प्रबल शत्रुदल निर्बल हो जाये। तृतीयतः, पोपको अवनत करना, जो अपना सारा आध्यात्मिक बल लगा बोरबन्सको एकबार फिर द्वन्द्वपूर्वक फ्रान्स-सिंहासनपर बैठानेका यत्न कर रहे थे।

फिर; पोपने फ्रान्सीसी प्रजातन्त्रका एक अत्यन्तत्य अपमान किया था। पोपकी राजधानी रोम जानेवाले फ्रान्सीसी राजदूत बाजारोंमें आक्रान्त होनेपर भागकर अपने आवास-स्थान पहुँचे थे। इसपर साधारण लोगोंके दलने उनके आवास-स्थानमें घुस उनके निरस्त्र तथा समर-विमुख रहनेपर भी उनकी हत्या कर डाली थी। इसके उपरान्त उन हत्यारोंको दण्ड दिया न गया और इस अति निष्ठुर अपराधपर किसी तरहका पश्चात्ताप किया न गया। किन्तु वेतन-विहीन, हृदयभग्न क्षुधित तथा युद्धोपकरणसे रहित कोई तीस सहस्र मनुष्योंकी सैन्य ले कोई विनश्वर मनुष्य प्राचुर्य्यका सुखोपभोग करते और विजयोत्साहसे उत्साहित सहस्र-सहस्र शत्रु-सैन्यके विरुद्ध अपनी यह कल्पना कार्य्यमें कैसे परिणत कर सकता था?

नेपोलियनने अपना पहला घोषणा-पत्र प्रचारित किया। यह सैन्यकी प्रत्येक पल्टनमें पढ़ा गया और सिपाहियोंके कानोंमें भविष्य-वाणीकी तरह गूँजा। इस घोषणामें कहा गया,—"योद्धागण; तुम्हारे पास अन्न नहीं; वस्त्र भी नहीं; तुम्हारी सरकार अतीव ऋणी होकर भी तुम्हें कुछ दे नहीं सकती है। इन चट्टानोंके बीच तुम्हारा सन्तोष और तुम्हारा साहस प्रशंसनीय है, फिर भी, इससे तुम्हारी तलवारपर किसी तरहकी चमक नहीं आई है। मैं तुम्हें जगत्की अतीव उर्व्वर समतल भूमिमें ले जानेके लिये आया हूँ। बहुमूल्य प्रदेश तथा धनाढ्य नगर शीघ्र ही तुम्हारे अधीन होंगे। वहाँ तुम्हें धान्य मिलेगा; प्रतिष्ठा मिलेगी और ऐश्वर्य्य मिलेगा। वीरगण! ऐसे समय क्या तुम हिम्मत हारोगे?"

इसमें कोई आश्चर्य्यकी बात नहीं, कि अपने नवयुवक तथा निर्भय नेताकी यह बातें सुन इस सैन्यके सिपाहियोंमें उत्साह उत्पन्न

हुआ और निरुत्साहोंका हृदय आशा तथा उत्साहसे उछल उठा। नेपोलियनकी साधारण कल्पना यह थी, कि वह अपनी सारी सैन्यको अष्ट्रियन सैन्यके विभिन्न भागोंसे जुदा-जुदा भिड़ायें और इसतरह आक्रमणके समय अपनी सैन्यमें सिपाहियोंका आधिक्य रहनेके कारण शत्रु-सैन्यको जुदा-जुदा नष्ट कर दें। उन नवयुवक योद्धाने ठीक ही कहा था,—"युद्ध बर्ब्बरोंका विज्ञान है; इसमें जिस पक्षमें सिपाहियोंकी अधिकता रहती है; वही पक्ष विजयी होता है।"

शीघ्र ही समूची फ्रान्सीसी सैन्यमें हलचल प्रकट हुई। इस सैन्यके सेनापतिगणने अपने दुर्दमनीय नेताकी बुद्धिमत्ता तथा निर्भीकता समझ उनका तेज अपनेमें धारण किया और उनके औत्सुक्यसे प्रतियोगिता की। नेपोलियनके दिन और रातें घोड़ेकी पीठपर बीतने लगीं। जान पड़ता था, कि वह न तो भोजन करते थे न निद्रा। वह सिपाहियोंके पास पहुँचते, उनके कष्टमें समवेदना प्रकाशित करते और उनसे अपनी युद्धकी कल्पना कह सुनाते थे। वसन्त-ऋतु समागतप्राय थी। निरानन्दपूर्ण-हिम-नद तथा आल्प्स-की हिमाच्छादित गिरिश्रेणियाँ नेपोलियन तथा अष्ट्रियन सैन्यके बीच थीं। इस पर्देके पीछे नेपोलियनने अपनी सैन्य संग्रह की। ऐसी भयङ्कर चढ़ाईके लिये आवश्यक क्षिप्रगतिसे सिपाहियोंको एक निर्द्धारित स्थानसे दूसरे निर्द्धारित स्थानमें पहुँचानेके लिये प्रचुर आत्मोत्सर्गकी आवश्यकता थी। उन्होंने किसी भी विघ्न-बाधाको उपस्थित होनेका अवसर न दिया। एक निर्द्धारित समयमें विभिन्न पथोंसे चल विभिन्न सैन्यदल एक निर्द्धारित स्थानमें एकत्र होनेको थे। यह कार्य्य सम्पूर्ण करनेके लिये सुख तथा प्राणका बहुत बड़ा भाग उत्सर्ग होनेको था। यह फल प्राप्त करनेके लिये प्रयोजन होनेपर दलभ्रष्ट योद्धा पीछे छोड़ दिये जानेको थे, माल-असबाबकी परवा की न जानेको थी, तोपेंतक पहियोंकी लकीरोंमें छोड़ दी जानेको थीं; एकमात्र फौजें बिना अक्षतकार्य्यताके निर्द्धारित समय और निर्द्धारित

स्थानमें पहुँचाई जानेकी थीं। वृष्टि तथा बरफके तूफानके बीचसे; पर्वतोंके ऊपर तथा अनुर्व्वर मैदानोंसे, अहर्निश क्षुधित, निद्रा-रहित, आर्द्र तथा शीतल सिपाहियोंका वह दल आगे बढ़ता गया। नेपोलियनके पास खच्चर न थे, जिनसे वह आल्प्सके बीचमें होकर निकलनेका यत्न करते; उनके पास धन न था, जिससे वह आवश्यक द्रव्योंको खरीद सकते। ऐसी दशामें उन्होंने आल्प्सगिरिको उस स्थानमें पार करनेकी व्यवस्था की, जिस स्थानमें वह भूमध्य-सागरके किनारे पहुँच अपना विशाल कलेवर छोड़ समतल भूमिके बराबर हो गया था।

उधर शत्रुके सेनापति बिउलिउकी सैन्य तीन भागोंमें विभक्त थी। दश हजार सिपाहियोंका उसका मध्यभाग माण्टीनोट्टीके क्षुद्र ग्राममें अवस्थान करता था। ११ वीं अपरैलकी रजनी जैसी अन्धकारमयी; वैसी ही तूफानी भी थी। मूषलधार वृष्टि हो रही थी और कर्दमपूर्ण राहें प्रायः अगम्य हो रही थीं। इस तूफानी रातमें एक ओर अष्ट्रियन फौजें अपने खीमोंमें गर्म्म होकर विश्राम कर रही थीं; दूसरी ओर वृष्टि-जलसे भीगे नेपोलियन तथा उनके सिपाही कर्दमपूर्ण गिरि-सङ्कट कष्टपूर्वक अतिक्रम कर रहे थे, बढ़े हुए जल-स्रोतोंको मँझा रहे थे और फिसलनदार चट्टानोंपर चढ़ रहे थे। जैसे ही छँटे हुए बादलोंके बीचसे दिनका प्रकाश प्रकट होने लगा; वैसे ही वह नवयुवक प्रधान सेनापति माण्टीनेट्टी ग्रामके पश्चाद्भागकी उच्चभूमिपर जा पहुँचे और उन्होंने अपने नीचे पहले-पहल उस शत्रुकी छावनी देखी, जिस शत्रुके साथ वह फैसलेके युद्धमें प्रवृत्त होनेको थे। उन्होंने अपनी सैन्यकी परिचालना इस ढङ्गसे की थी, जिससे उनका असन्दिग्धचित्त शत्रु सम्पूर्ण घिर गया था।

अपनी सैन्यको एक घण्टेका भी विश्राम न दे वह अष्ट्रियन तथा सारडोनियनकी सम्मिलित सैन्यपर आँधीकी तरह टूट पड़े और

एक ही समयमें उसके आगे, पीछे और बगलसे उसपर आक्रमण करने लगे। बहुत देरतक और बड़ा ही खूनी युद्ध हुआ। उसके ध्वंसके भीषण दृश्योंका सविस्तार विवरण व्यथादायक है। आक्रमणके निनाद; व्यथाकी चीत्कारध्वनि; धावा करते हुए रिसालोंकी नाल-बन्द टापोंके तले विक्षताङ्ग तथा पिसे हुए नवयुवक तथा श्रेष्ठ पुरुषोंका कुचला जाना; कीचड़में धँसे आहत मनुष्योंके ऊपरसे गुरुभार तोपेंके निर्दयतापूर्वक ले जानेसे उनके पहियोंके बोझसे उन आहतोंकी हड्डियोंका पिसकर सुरमा होना और उनके सुदूरके गृहोंमें बैठी उनकी विधवाओं तथा अनाथ बच्चोंकी क्रन्दनध्वनिका प्रतिध्वनित होना आदि दृश्य युद्धस्थलकी मनुष्यताके मर्म्मको आघात पहुँचानेवाला बताया करते हैं। अन्तमें अष्ट्रियनके पैर उखड़े और वह सम्पूर्ण छत्रभङ्ग हुए। अपने तीन सहस्र हताहत साथियोंको युद्धस्थलमें छोड़ और अपनी तोपें तथा पताकाओंको फ्रान्सीसियोंके हाथ रख अष्ट्रियन त्रासपूर्वक भागे। यह पहला युद्ध था, जिसमें नेपोलिजन सर्वप्रधान सेनापति थे; यह पहली विजय थी, जिसकी प्रतिष्ठाका फल नेपोलियनको प्राप्त हुआ। इसके उपरान्त उन्होंने अष्ट्रिया सम्राट्से साभिमान कहा था,—"मेरी कुलीनता माण्टी-नोट्टीके युद्धकी तारीखसे आरम्भ हुई है।"

अष्ट्रियन फौजें अपने साहाय्यके लिये आती हुई फौजोंसे भेंट तथा मिलानकी रक्षा करनेके लिये डेगोकी ओर भागीं, सारडि-नियन फौजें अपनी राजधानी टूरिनकी रक्षा करनेको मिलेसिमोकी ओर भागीं। इसतरह अष्ट्रियन फौजें एक ओर; सारडिनियन फौजें दूसरी ओर भागीं। नेपोलियनके इच्छानुसार यह दोनो फौजें एक दूसरेसे जुदा हो गईं। उन अक्लान्त प्रधान सेनापतिने अपनी क्लान्त तथा रक्तमोचित सैन्यको कुछ घण्टोंका विश्राम देकर भी; स्वयं एक भी घण्टेका विश्राम न किया। जिस समय उनकी फौजें विजयानन्द भोग और शत्रुकी फौजें पराजय तथा क्षतिका निरानन्द

भोग रही थीं ; उस समय वह शत्रु की भागी हुई दोनो फौजोंपर शीघ्र ही आक्रमण करनेकी कल्पना कर रहे थे। १३ वीं और १४ वीं अपरैलको लगातार युद्ध होता रहा। सुदृढ़ दुर्गों तथा असम पर्वत-पार्श्वमें जमी बैठी अष्ट्रियन तथा सारडिनियन फौजें अपनी ओर द्रुत गतिसे बढ़नेवाली सहायक फौजोंका साहाय्य प्रति घण्टे पा रही थीं। यह दोनो फौजें अपने ऊपर आक्रमण करनेवाली फ्रान्सीसी फौजोंपर पत्थरोंकी वर्षा कर रही थीं और बड़ी-बड़ी चट्टानें लुढ़का फ्रान्सीसी फौजोंकी कम्पनीकी कम्पनी साफ कर रही थीं। नेपोलियन प्रत्येक स्थानमें दिखाई देते थे। वह अपने सिपाहियोंके परिश्रममें भाग लेते थे ; उनके भयको अपना भय बनाते थे और उनके मनमें अपना उत्साहविशिष्ट साहस तथा उष्णता उत्पन्न करते थे। इसका फल यह हुआ, कि इन दोनो स्थानोंके युद्धमें फ्रान्सीसियोंने सम्पूर्ण विजय प्राप्त की। डिगोमें अष्ट्रियन फौजें अपनी तोपें तथा माल-असबाब छोड़ जिसतरह सम्भव हुआ, उसतरह पहाड़ोंमें भाग गईं। तीन सहस्र अष्ट्रियन सिपाही विजयी फ्रान्सीसियोंके हाथ कैद हुए। उधर मिलेसिमोमें पन्द्रह सौ सारडिनियन फ्रान्सीसियोंके हाथ आत्मसमर्पण करनेपर बाध्य हुए। इस प्रकार वज्रकी तरह नेपोलियनने यह युद्ध आरम्भ किया। तीन दिनमें तीन नैराश्यपूर्ण लड़ाइयाँ लड़ी और तीन फैसलेकी विजय प्राप्त की गईं।

फिर भी ; नेपोलियनकी स्थिति अतीव शोचनीय थी। वह अपनी सैन्यकी अपेक्षा बहुत अधिक शत्रु-सैन्यके बीच घिरे हुए थे। शत्रु-सैन्यकी भीड़ उनकी सैन्यपर बढ़ती आती थी। नेपोलियनका असम साहस देख अष्ट्रियन दङ्ग हुए थे। वह समझते थे, कि किसी अकेले मनुष्यका सशस्त्र शत्रु-दलके बीच घुस जाना किसी उन्मत्त मनुष्यका उन्मत्तताका वेग प्रकट करना है। उनका विनाश सुनिश्चित था। उनकी रक्षाका एक ही उपाय था और वह यह, कि

मिलेसिमोमें सारडिनियनका आत्मसमर्पण।   [पृष्ठ १५०

वह प्राय: दैवी त्वरासे अग्रसर हो शत्रु-सैन्यका समावेश रोकें और अपेक्षाकृत बड़ी सैन्य ला शत्रु-सैन्यके विभिन्न भागोंपर आक्रमणकर उन्हें नष्ट कर दें। एक दिनकी भी अकर्म्मण्यता और एक घण्टेके भी सङ्कोचसे उनका नाश हो सकता था। डेगोके युद्धमें नेपोलियनको यह पहले-पहल लेनेस नामक एक नवयुवक अफसरका वीरत्व-प्रकाश सविशेष रूपसे दिखाई दिया। उन असाधारण पुरुषकी बुद्धि प्राय: प्रमाणनिरपेक्ष प्रवेश द्वारा मनुष्यका चरित्र पहचाननेमें जितनी प्रखरता दिखाती थी, और किसी कार्य्यमें उतनी प्रखरता न दिखाती थी। अन्तमें लेनेस माण्टीबेलोके डिउक और फ्रान्स-साम्राज्यके अन्यतम प्रधान सेनापति हुए।१२

जिस समय यह सैन्य-यात्रायें तथा प्रति-सैन्ययात्रायें हो रही थीं और अविराम रूपसे युद्ध चल रहा था; उस समय फ्रान्सीसी सैन्यमें नियमितरूपसे खाद्य वितरण करनेका सुअवसर न मिलता था। इसपर सभी चीजोंके अभावसे क्लान्त फ्रान्सीसी सिपाही लूट-ताराज करने लगे। नेपोलियन, इटलीके अधिवासियोंकी मङ्गलेच्छा प्राप्त करनेके लिये अतीव उत्सुक थे और वह यह चाहते थे, कि इटलीके अधिवासी उन्हें अपनेको दाम्भिक अत्याचारियोंके हाथसे बचानेवाला समझ उनका स्वागत करें। इस भावसे प्रणोदित हो नेपोलियनने लूट-ताराज करनेवाले अपराधियोंको कठोर शास्तिकी व्यवस्था की और शीघ्र ही अपनी सैन्यमें कठोर सुशृङ्खला प्रतिष्ठित की।

१२ नेपोलियनने कहा था,—"लेनेसको शिक्षासे बड़ी उपेक्षा की गई थी; फिर भी, उनकी बुद्धि उत्थित हो उनके साहसकी बराबर पहुँच गई। वह एक भीम बन गये थे। वह मुझे अपना संरक्षक, श्रेष्ठ पुरुष तथा ईश्वरसमान समझ मेरे प्रति अनुरागविशिष्ट भक्ति प्रकाशित किया करते थे। अपने स्वभावकी प्रचण्डताके समय वह कभी-कभी मेरे विरुद्ध वैसीही बातें निकाल बैठा करते थे, फिर भी, उनके साथ कोई दूसरा मनुष्य यदि मेरे विरुद्ध वैसी बातें करता, तो वह उसकी खोपड़ी तोड़ देते। जब उन्होंने अपनी इहलीला संवरण की, तब वह चव्वन घोर युद्ध तथा तीन सौ विभिन्न प्रकारकी लड़ाइयोंमें सम्मिलित हो चुके थे।

नेपोलियन अग्रसर हो अब जेमोलो पर्व्वतके शिखरदेशपर पहुँच गये थे। इस उच्चस्थानसे फ्रान्सीसी सैन्यको अपने नीचे चित्रदर्शनकी तरह खुली हुई इटलीकी समतल भूमि दिखाई दी। नेपोलियनकी काव्यरसयुक्त इन्द्रियबोधपर इस विशाल दृश्यका बड़ा प्रभाव उत्पन्न हुआ। उनके सम्मुखकी सुविस्तृत उपत्यकामें मन्त्रमुग्ध करनेवाली छवि दिखाई देती थी। उनके सम्मुख फल-वृक्षोंके उद्यान, अङ्गूरोंकी टट्टियाँ, उर्व्वर कृषिक्षेत्र तथा शान्तिपूर्ण ग्राम फैले हुए थे। सूर्य्य-रश्मियोंमें चमकती हुई गोटेजैसी शोभा-सम्पन्ना नदियाँ चराईके मैदानों तथा वनोंके बीचसे पेच खाती हुई आगे बढ़ कर सुश्यामल गिरि-गात्रोंका आलिङ्गन तथा धनाढ्य नगरोंकी राहोंको स्नान करा रही थीं। सुदूर विशाल पर्वत खड़े थे। अनन्त तुषार तथा हिमसे इनके मस्तक श्वेत हो रहे थे। यह सीमाबद्ध करनेवाले पर्वत अपनी अभयवरद भुजाओंके बीच इस अङ्गीकृत भूमिका आलि-ङ्गन करते प्रतीत होते थे। नेपोलियन अपने घोड़ेकी पीठपर बैठे निस्तब्धतापूर्वक आश्चर्य्यचकित करनेवाले आनन्दके साथ इस दृश्य-को देखते रहे। इसके उपरान्त उन्होंने कहा,—"हेनिबेलने -आल्पस भेद किया था ; हमने इस पर्वतकी प्रदक्षिणा की।"

फिर भी ; विश्राम या अतीव चिन्ता करनेके लिये एक क्षणका भी अवकाश न था। अष्ट्रियन तथा सारडीनियन प्रत्येक दिशासे अपने पूर्वनिर्द्धारित स्थानकी ओर शीघ्रतापूर्वक अग्रसर हो रहे थे। यह सब सम्मिलित हो उस असमसाहसिक शत्रुदलका ध्वंस किया चाहते थे, जो ऐसे आकस्मिक भाव तथा घटनाक्रमसे उनके बीच घुस आया था। फ्रान्सीसी फौजें शैलगात्रकी क्रमनिम्नतासे प्रधावित हो तानारो नदीके पार पहुँचीं और वहाँ अपनेको इटलीकी उज्ज्वल समतल भूमिमें पा आनन्द-कम्पित हुईं। अपने मित्र सारडी-नियनसे सम्पूर्णरूपसे पृथक् हो जानेवाली अष्ट्रियन सैन्यके पीछे औजरोको भेज नेपोलियन स्वयं अक्लान्त अध्यवसायपूर्वक टूरिनकी

ओर भागते हुए सारडोनियनके पीछे चले। ८ वीं अपरैलको वह कीवा पहुँचे। वहाँ आठ हजार सारडोनियन मोर्चे बाँधे बैठे थे।

नेपोलियनने सारडोनियनपर उसी समय आक्रमण किया। इस दिनके समूचे अवशेष भागमें परिणामविहीन रक्तपूर्ण युद्ध होता रहा। जबतक नैश अन्धकारने उपस्थित हो शत्रु तथा मित्रके बीच प्रभेद करना कठिन न कर दिया; तबतक तोपों तथा बन्दूकोंका ज्वालावमन और गर्ज्जन स्थगित न हुआ। दूसरे दिन प्रत्यूषके अतीव आरम्भिक भागमें युद्ध आरम्भ करनेके लिये प्रस्तुत हो फ्रान्सीसी अपने अस्त्र-शस्त्रके ऊपर सोये। उधर सारडोनियन सैन्य रात्रि होको भागी और वह कारसुग्लियाके गहरे तथा फेनदार खरस्रोतके पीछे एक सुदृढ़ स्थानमें जमकर फिर बैठ गई। दूसरे दिन सन्ध्या-समय नेपोलियन फिर सारडोनियनके सम्मुखीन हुए। एक अकेली ब्रिगेड सैन्य उस द्रुतगामी स्रोतको पार कर सकी। सारडोनियन ऐसी दृढ़तासे जमे बैठे थे, कि उन्हें स्थानभ्रष्ट करना असम्भव प्रतीत होता था। उनके साहाय्यके लिये बड़े-बड़े सैन्यदल त्वरापूर्वक आ रहे थे। फिर, अष्ट्रियनके बड़े-बड़े दल नेपोलियनके पीछे एकत्र हो रहे थे। फ्रान्सीसी सैन्यके वारंवार प्रशंसनीय विजय प्राप्त करनेपर भी उसकी स्थिति अतीव चिन्तनीय थी। रातको नेपोलियनने अपने सेनापतियोंकी एक सभा की, जिसमें यह स्थिर किया गया, कि फ्रान्सीसी सैन्यकी अतीव क्लान्तिका कोई विचार न कर कल जैसे ही दिनका प्रकाश प्रकट हो, वैसे ही पुलपर आक्रमण किया जाये। प्रातःकालका धुंदलका प्रकट होनेसे पहले ही फ्रान्सीसी फौजें युद्ध-विन्यासपूर्व्वक उस खरस्रोतपर बने पुलकी ओर बढ़ीं। उन्हें विश्वास था, कि उस पुलके लिये घोर युद्ध होगा। किन्तु सारडोनियन भयभीत हो रात होको एकबार फिर भाग गये थे और नेपोलियन अपने इस सौभाग्यसे आनन्दित हो बिना बाधाके उस

पुलके पार हुए। अक्लान्त विजयी फ्रान्सीसी अपने शत्रुके पीछे आगे बढ़े और रात्रि होनेसे पहले उन्होंने अपने भागे हुए शत्रुको जा पकड़ा। इस बार वह मोन्दोवीके समीप प्रायः दुर्भेद्य पहाड़ियोंपर मोर्चे बाँधे बैठा था।

फ्रान्सीसी फौजें उसी समय आक्रमण करनेके लिये अग्रसर हुईं। सारडीनियनोंने नैराश्यपूर्व्वक युद्ध किया; किन्तु इसका कोई फल न हुआ। नेपोलियनकी प्रतिभाने विजय पाई; सारडीनियनोंने एकबार फिर पीठ दिखाई। उनके एक सहस्र योद्धा खेत रहे और दो सहस्र योद्धा, आठ तोपें और ग्यारह पताकायें विजयी फ्रान्सीसियोंके हाथ लगीं। नेपोलियनने भागते हुए शत्रुके पीछे चेरास्को पहुँच इस स्थानपर भी अधिकार किया। अब वह सारडीनिया-साम्राज्यकी राजधानी टिउरिनसे कोई दश कोस दूर रह गये। इसके फलसे इस राजधानीमें बड़ी हलचल उपस्थित हुई। इस नगरके सहस्र-सहस्र मनुष्योंके मनमें प्रजातन्त्रका अनुराग उत्पन्न हो चुका था। वह सब अपने उद्धारकर्त्ताके रूपसे नेपोलियनका स्वागत करने और उनसे एक प्रजातन्त्री सरकारकी प्रतिष्ठामें साहाय्यकी प्रार्थना करनेपर प्रस्तुत हुए। इस राज्यके राजा तथा रईस भयसे थर-थर काँप रहे थे। इस नगरके अङ्गरेज तथा अष्ट्रियन राजदूतोंने सारडीनिया-नरेशसे यह अनुरोध किया था, कि आप हमारे साथ रहें और अपनी राजधानी छोड़ युद्ध चलायें। उन्होंने सारडीनिया-राजको इस बातका विश्वास दिलाया, कि वह अविवेकी तथा नवयुवक विजयी उन कठिनाइयोंमें घुसा आ रहा है, जिनसे वह अपनेको सुलझा न सकेगा। किन्तु सारडीनिया-पति अपने सिंहासन तथा मुकुटकी ओरसे आतङ्कित थे। उन्हें इस बातका विश्वास हो गया था, कि ऐसे द्रुतगामी विजयीसे युद्ध करना असम्भव है। उन्हें यह भय भी था, कि दीर्घकालीन युद्धसे चिढ़ नेपोलियन सारडीनियाके साधारण लोगोंकी राजनीतिक स्वाधीनता विघोषित

कर देंगे और इस साम्राज्यमें विप्लव उपस्थित कर देंगे। यही सब बातें सोच सारडीनियनोंने फ्रान्सीसियोंकी शरण लेना और शत्रुके माहात्म्यसे प्रार्थना करना निश्चय किया, जिस शत्रुके स्वत्वपर उन्होंने बड़े ही अचन्तव्य भावसे आक्रमण किया था। समस्त मानवीय नियमोंके अनुसार वह कठोर शास्तिके उपयुक्त पात्र थे। वह इङ्गलेण्ड तथा अष्ट्रिया इन दोनो शक्तिशालिनी जातियोंसे मिल फ्रान्सको केवल इसलिये दण्ड देनेपर उद्यत हुए थे, कि उसने राजतन्त्र छोड़ प्रजातन्त्र पसन्द किया था। उसके इसी अपराधपर सारडीनिया-राजने फ्रान्सके नगरोंपर गोले बरसाने और राजतन्त्री फ्रान्सीसियोंको उभार देशकी प्रतिष्ठित सरकारके विरुद्ध गृह-युद्ध उत्पन्न करानेके लिये फ्रान्समें अपनी फौजें चढ़ा दी थीं।

नेपोलियन अपनी स्थितिकी विपद्‌को अच्छी तरह समझते थे: इसलिये उन्होंने प्रफुल्लतापूर्ण सन्तोषपूर्वक सारडीनियाराजके प्रस्ताव स्वीकार किये। उस समय भी उनकी फौजोंकी अपेक्षा मित्रोंकी फौजें बहुत अधिक थीं। टूरिन तथा उस साम्राज्यके अन्यान्य दुर्गोंके भङ्ग करनेके लिये उनके पास न तो घेरेका साज-सामान था; न गढ़ तोड़नेवाली बड़ी-बड़ी तोपें ही थीं। वह फ्रान्ससे दूर थे। उनके पास उसी समय फ्रान्सीसी सहायक फौजें आ न सकती थीं। फिर; उनकी सैन्य सचमुच ही सब तरहके अभाव अनुभव कर रही और चीथड़े लपेटे थी। दूसरी ओर मित्रगण प्राचुर्य्यका आनन्दोपभोग कर रहे थे। वह प्रति दिवस अपनी शक्ति-वृद्धि कर रहे थे और उनके अवलम्बन प्रत्यक्षमें अटूट थे।

नेपोलियनने कहा है,—"उस समय भी सारडीनियापतिके पास बहुतेरे गढ़ थे और बहुतेरी विजय प्राप्त करनेपर भी थोड़ी ही बाधा या सौभाग्यलक्ष्मीकी एक ही वक्रगतिसे बना-बनाया सारा खेल बिगड़ जा सकता था।" फिर भी; नेपोलियनसे बातचीत करनेके लिये जो प्रतिनिधि भेजे गये थे, उनके सम्मुख नेपोलियनने बड़ा

ही दृढ़प्रत्ययी और उग्रभाव धारण किया। उन्होंने किसी तरहको भी युद्ध-निवृत्तिसे पहले 'आल्पसकी कुञ्जियों' कोनी, टोरटोना तथा अलकजन्धरियाके दुर्गोंके समर्पण करनेका दावा किया। सारडो-नियाके प्रतिनिधियोंने यह दावा स्वीकार करनेमें सङ्कोच किया। उन्होंने प्रस्ताव किया, कि इस दावेको कुछ घटाना चाहिये ; क्योंकि इसके अनुसार कार्य्य होनेसे सारडोनिया सम्पूर्णरूपसे फ्रान्सीसियोंके वश हो जायेगा।

इसपर नेपोलियनने कठोरतापूर्वक कहा,—"तुम्हारे विचार असङ्गत हैं। सन्धि-नियमोंको मेरी ओरसे प्रकट होना चाहिये। अपने देशकी सरकारकी ओरसे जो आईन तुमपर मैं स्थापित करता हूँ ; उसे तुम सुनो और उसके अनुसार कार्य्य करो ; अन्यथा कल मैं अपने तोपखाने बैठा टूरिनको जला भस्म कर दूँगा।" यह बात सुन सारडोनियाके प्रतिनिधि भीत हुए। उभयपक्षके बीच तुरन्त ही सन्धि हो गई। इस सन्धिके अनुसार सारडोनिया-राजने अष्ट्रिया आदिकी मैत्री परित्याग कर दी, तोपों तथा युद्धोपकरणके साथ पूर्व्वोक्त तीनो दुर्ग नेपोलियनके हाथ अर्पित किये, फैसलेकी सन्धि समाप्त करनेके लिये अपना एक दूत पेरिस भेजा, फ्रान्सीसी सैन्य द्वारा जीती भूमिको उसके हाथ छोड़ दिया, अपनी देशरक्षक नैमित्तिक सैन्य भङ्ग कर दी और शिक्षित सैन्यको विभिन्न स्थानोंमें वितरण कर दिया और अष्ट्रियाके साथ युद्ध करनेके लिये फ्रान्सीसियों-को सारडोनियाकी सैनिक राहोंको स्वतन्त्र भावसे व्यवहार करनेका पथ प्रशस्त कर दिया। इसके उपरान्त नेपोलियनने अपनी सैन्यके सिपाहियोंके नाम निम्नलिखित आत्माको उद्दीपित करनेवाला घोष-णापत्र प्रकाशित किया :—

"वीरगण! तुमने पन्द्रह दिनमें छः विजय प्राप्त कीं ; इक्कीस पताकायें, पचपन तोपें तथा बहुतेरे सुदृढ़ स्थानोंपर अधिकार किया और पोडमण्टके अतीव उर्व्वर अंशको जीत लिया। तुमने शत्रुके पन्द्रह

सहस्र योद्धाओंको कैद किया और दश सहस्र योद्धाओंको हताहत किया। अभीतक तुमने अनुर्व्वर चट्टानोंमें युद्ध किया है। इससे तुम्हारे साहसका महत्त्व प्रकट हुआ है सही; किन्तु तुम्हारा अपना कोई उपकार नहीं हुआ। अब तुम अपने परिश्रमके फलसे हालेण्ड तथा राइनकी फ्रान्सीसी फौजोंके समकक्ष हो गये हो। अबसे पहले तुम सम्पूर्ण असहाय थे; अब तुमने अपने समस्त अभाव मोचन किये हैं। तुमने विना तोपोंके लड़ाइयाँ जीती हैं; विना पुलोंके नदियाँ पार की हैं; विना बूट जूतेके मञ्जिलें तय की हैं और विना आहारके युद्धकी प्रतीक्षामें अनावृत स्थानोंमें सतर्कतापूर्वक अवस्थान किया है। एकमात्र प्रजातन्त्रके व्यूह तथा स्वाधीनताके योद्धा ही ऐसे कार्य्य करनेमें समर्थ थे। किन्तु वीरगण! जबतक तुम्हें और भी कार्य्य करना है; तबतक तुम यह न समझो, कि तुमने कोई कार्य्य किया है। अभीतक तुम्हारे हाथ टूरिन भी नहीं आया है, मिलन भी नहीं आया है। मुझे समाचार मिला है, कि तुम्हारे दलमें ऐसे भी लोग हैं, जिनके साहसकी इतिश्री हो चुकी है और वह आल्पसकी चोटियों तथा एपेननाइन्सकी ओर वापस जाया चाहते हैं। नहीं! मुझे इस बातका विश्वास नहीं। मैं तो यही जानता हूँ, कि माण्टीनोट्टी, मिलेसिमो, डेगो और माण्डोवीके विजेता फ्रान्सीसी नामके ऐश्वर्य्यको और भी आगे बढ़ानेके लिये व्याकुल हैं। किन्तु इससे पहले, कि मैं तुम्हें अन्यान्य विजयकी ओर ले जाऊँ तुम एक नियमके अनुसार कार्य्य करनेका दावा करो। वह नियम यह है, कि तुम जिन स्थानोंकी प्रजाका उद्धार करो; उन स्थानोंकी प्रजाकी रक्षा भी करो और अन्याय तथा अत्याचारके प्रत्येक कार्य्यका दमन करो। जातीय प्रभुतासे सम्पन्न तथा विधि तथा न्यायसे सुदृढ़ रहनेके कारण मैं मनुष्यता तथा प्रतिष्ठाकी पुकारको बलपूर्वक प्रवर्त्तित करनेमें सङ्कोच न करूँगा। मैं लुटेरों द्वारा तुम्हारे विजय-मुकुटका कलङ्कित होना सहन न करूँगा। लुटेरे निर्दयतापूर्वक

गोलीसे मार दिये जायेंगे।

"इटलीके अधिवासियो! फ्रान्सीसी सैन्य तुम्हारी शृङ्खला भङ्ग करनेके लिये अग्रसर हो रही है। फ्रान्सके अधिवासी समस्त जातियोंके मित्र हैं। उनपर तुम विश्वास कर सकते हो। तुम्हारी सम्पत्ति, तुम्हारे धर्म्म और तुम्हारे आचार-विचारकी प्रतिष्ठा की जायेगी। हम उदार शत्रुकी तरह युद्ध करेंगे। हमारा प्रधान विवाद उन अत्याचारियोंसे है, जिन्होंने तुमको गुलाम बना रखा है।"

पाँचवाँ परिच्छेद
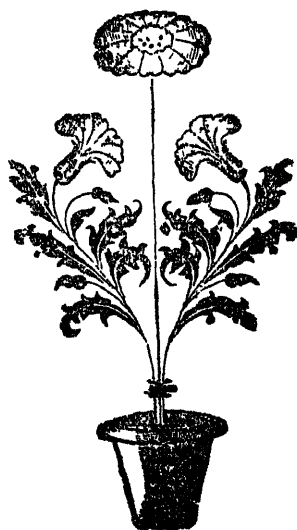
आष्ट्रियनका पीछा।

ने पोलियनके लिये सुदृढ़ प्रलोभन—इटलीके प्रति उनकी इच्छा—पेरिसमें हलचल—जोजेफाइनकी स्मृति—डिउक-आफ परमाके साथ नियम—नेपोलियनका सेनापति बिउलिउको परांमुख करना—लोदीका पुल—उसका भीषण पथ—मिलन प्रवेश—सैन्यका साहाय्य—दूत—ओरियानीको पत्र—केलरमैनका नियोग—मिलनमें बगावत—बनास्को—पेविया—वेनेशियाकी रिशवत—उच्च आकांक्षा—इम्पीरियल गार्ड सैन्यकी उत्पत्ति—पोपसे नियम।

नेपोलियनकी सैन्यके अधिकांश अफसरों तथा सिपाहियोंने किसी राजतन्त्री सरकारसे होनेवाली सन्धिको कठोरतापूर्वक तिरस्कृत किया और सारडीनिया-नरेशकी सिंहासनच्युति तथा सारडीनियामें प्रजातन्त्री शासनकी प्रतिष्ठाके लिये बड़ी हलचल उपस्थित की। फिर; सारडीनियाके साधारण लोगोंने नेपोलियनको घेर उनसे प्रार्थना की, कि आप उत्साह प्रदान करें, तो हम समूचे साम्राज्यमें विप्लव उपस्थित कर दें। उन सबने अनुरोध किया, कि सारडीनिया-नरेश तथा देशी रईसोंके देश-निर्व्वासनसे हमलोग एक

स्वाधीन सरकार प्रतिष्ठित कर सकेंगे और यह सरकार प्राकृतिक रूप और सर्वतोभावसे फ्रान्सीसी प्रजातन्त्रका साथ देगी। उन सबने कहा, कि आपके मुखसे 'हां' निकलते ही सारा कार्य्य सम्पन्न हो जायेगा। इसमें सन्देह नहीं, कि उस एक शब्दके प्रकट करनेके प्रलोभनमें बड़ी शक्ति थी। असाधारण राजनीतिक दूरदर्शिताने ही नेपोलियनके आत्मसंयमसे यह प्रलोभन निवारित कराया।

फिर; नेपोलियनके मनमें अराजकताकी ओरसे घोर आतङ्क उपस्थित हो चुका था। पेरिसकी रक्तप्लावित राहोंमें जेकोबियोंकी अराजकताके कार्य्य देख उनका मन असन्तुष्ट हो चुका था। उन्हें इस बातका विश्वास था, कि किसी सुगठित प्रजातन्त्रके साहाय्यके लिये जिस बुद्धि या जिस चारित्रिक मूलतत्त्वकी आवश्यकता होती है; इटलीके तमसाच्छन्न कृषकोंमें वह बुद्धि तथा मूल-तत्त्व न था।

इसका फल यह हुआ, कि फ्रान्सीसी प्रतिनिधि-सभाकी प्रकट इच्छा, सैन्यके अनुरोध तथा साधारण लोगोंकी अनुनय-विनयका कोई विचार न कर वीरोचित दृढ़तापूर्वक उन्होंने प्रतिष्ठित सरकार-का मूलोच्छेद अस्वीकार किया। उन्होंने अपने सिपाहियोंको और अधिक असम साहसिक महोद्यमोंमें प्रवृत्तकर तथा और अधिक उज्ज्वल विजयकी ओर ले जा उनके मनसे यह विषय निकाल दिया।

नेपोलियन इटालियन नगरोंमें पेरिसके मृत्यु-साम्राज्यकी पुनः प्रतिष्ठा देखा न चाहते थे। वह विप्लवके नहीं; संस्कारके पक्षपाती थे। राजों तथा रईसोंने धन तथा प्रतिष्ठा और जीवनके प्रायः समस्त अतीव बहुमूल्य अनन्य साधारण अधिकारोंका इजारा ले रखा था। साधारण लोग केवल लकड़ी काटनेवाले लकड़-हारे तथा पानी भरनेवाले पनभरे बन रहे थे। नेपोलियन इस इजारेको तोड़ा तथा युगोंसे बन्धनमें पड़ी मेदिनीका उद्धार किया

न चाहते थे, फिर भी; वह यह कार्य्य सिंहासनोंको एकाएक उड़ा तथा शासन-शक्तिको अनुभवशून्य तथा ज्ञानरहित प्रजातन्त्रके हाथ अर्पित कर दिया न चाहते थे। उनकी इच्छा यह थी, कि राजसिंहासन प्रजातन्त्री संस्थापनों द्वारा घेरे जायें और साधारण लोगोंको स्वाधीनताके साथ एक सुदृढ़ तथा सुगठित सरकार प्रदान की जाये। उन्होंने वाक्पटुतापूर्वक कहा है,—"यदि इङ्ग-लेण्ड साधारण लोगोंके चारित्रिक स्वार्थके विचारसे फ्रान्स-राज सोलहवें लुईकी हत्याकी निन्दा करके ही सन्तुष्ट हो जाता और विप्लवी फ्रान्सको मित्ररूपमें स्वीकार कर जगत्‌हितैषिणी नीतिकी अन्वयाओंकी ओर कर्णपात करता, तो इस अनुमानकी कल्पनाके लिये एक विशाल क्षेत्र प्रस्तुत होता, कि ऐसा होनेपर फ्रान्स और यूरोपका भाग्य कैसा हो जाता। उस समय सारे देशमें फाँसियाँ खड़ी की न जातीं; और युरोपके सारे राजे अपने सिंहासनोंपर बैठ थर-थर न काँपते; इसके बदले उनके राज्यमें न्यूनाधिक रूपसे विप्लवी प्रक्रिया प्रकट होती और सारा यूरोप बिना आन्दोलनके नियमतन्त्री तथा स्वाधीन हो जाता।"

सारडीनिया-साम्राज्य, नाइस, पोडमेण्ट, सेवाय और माण्टफेरट इन चार प्रदेशों द्वारा संगठित था। इनमें तीस लाख मनुष्योंका निवास था। सारडीनिया-नरेशने अपने असाधारण यत्न तथा इङ्गलेण्डके अर्थ-साहाय्य द्वारा सुदीर्घ युद्धमें सम्मिलित हो युद्ध-शिक्षा पानेवाले साठ हजार योद्धाओंकी सैन्य तय्यार की थी। अस्त्र-शस्त्रसे सम्पूर्ण सुसज्जित तथा खाद्यादिसे परिपूर्ण उनके बहुतेरे गढ़ पर्वतश्रेणियों-पर प्रतिष्ठित थे और इसके फलसे उनका सीमान्त ऐसी स्थितिको प्राप्त हुआ था, जिससे वह दुर्भेद्य समझा जाता था। सारडीनिया-राज फ्रान्स-राज षोड़श लुईके दोनो भाइयोंके श्वशुर थे। अन्तमें यही दोनो भाई अष्टादश लुई तथा दशम चार्ल्सके नामसे फ्रान्स-सिंहा-सनपर बैठे थे। सारडीनिया-राजने फ्रान्ससे भागी उन दोनो भाइ-

योंका अपने टूरिनके दरबारमें स्वागत किया था और फ्रान्सके बहुतेरे देशत्यागी रईसोंको अपने दरबारमें आश्रय प्रदान किया था। यह सब उस स्थानमें काल्पनिक निर्भयतापूर्वक रहते और मित्रोंकी सैन्यके साथ फ्रान्सपर चढ़ाई करनेकी कल्पना परिपक्व करते तथा इस चढ़ाईके सामान संग्रह करते थे। ऐसे समय नेपोलियनने आ अपने अर्द्धक्षुधित तीस हजार सिपाहियोंको ले एक पक्षमें सारडीनिया-नरेशकी फौजोंको बिखेर दिया, अष्ट्रियनकी फौजोंको सारडीनियासे निकाल दिया, सारडीनियाके केन्द्रतक घुस गये और सारडीनिया-राजधानीपर गोला-वृष्टि करनेपर प्रस्तुत हुए। अन्तमें लाञ्छित सारडीनियानरेश अपने मुकुटके लिये भीत हो एक छब्बीस वर्षके अज्ञात नवयुवकके चरणोंमें अवनत हो सन्धि-प्रार्थना करनेपर बाध्य हुए। इसके उपरान्त वह अपनी दुरवस्था तथा अपने जामाताओंके फ्रान्स-सिंहासन फिर कभी न पानेकी दशा देख ऐसे मर्म्माहत हुए, कि उनकी छाती फट गई और वह चेरास्कोकी सन्धिपर हस्ताक्षर करनेके कुछ ही दिन बाद मर गये।

नेपोलियनने उसी समय अपने प्रथम एडीकाङ्ग मुरेटको युद्ध-निवृत्तिकी एक प्रतिलिपि तथा शत्रुसे जीते इक्कीस झण्डोंके साथ पेरिस भेजा। इन आश्चर्यप्रद विजयके द्रुत क्रमने फ्रान्समें जो कौतूहलपूर्ण उत्तेजना उत्पन्न की थी, वह जैसी अधिक, वैसी ही सार्व्वत्रिक भी थी। प्राचीन वाग्मिताके भावोंसे रञ्जित उन नवयुवक विजेताके घोषणापत्रोंने, फ्रान्सकी प्रतिनिधि-सभाके पास आनेवाले उनके खरीतोंकी सादी भाषाने; उनके लेखोंमें आत्मदम्भके सम्पूर्ण अभावने और उनके द्वारा होनेवाली अपने सिपाहियों तथा सेनापतियोंकी उत्साहपूर्ण वीरताकी चमकीली प्रशंसाने लोगोंके मनमें उनके प्रति सुगभीर प्रशंसाका वेग उत्पन्न कर दिया था। 'नेपोलियन बोनपार्ट' एक वैदेशिक—एक इटालियन नाम था। फ्रान्सके बहुत मनुष्योंने इसे सुना था और यह आसानीसे उच्चारण किया जा न सकता था। यह महाशब्दकारी तथा शानदार था। सभी पूछते थे, कि अपने

बुद्धिबलसे यूरोपको एकाएक उल्कापात-सम्बन्धीय चमकसे चमका देनेवाला यह नवयुवक सेनापति कौन है। उनका नाम तथा यश सभीको जिह्वापर था, उनकी ओर सारे यूरोपकी दृष्टि एकत्र हो रही थी। एक 'पक्षमें' 'तीन बार' फ्रान्सकी प्राचीनोंकी सभा तथा पाँच सौकी सभाने आज्ञापत्र निकाल यह कहा था, कि इट-लीकी फ्रान्सीसी फौजने अपने देशकी श्रीवृद्धि की है और उसकी विजयके उपलक्ष्यमें आनन्दोत्सव किया जाये। बड़ी ही शानके उत्सवके साथ मुरेटने जीती पताकाओंको प्रतिनिधि-सभाके सम्मुख उपस्थित किया। इस अवसरपर कितने ही वैदेशिक राजदूत भी उपस्थित थे। इसतरह विजय प्राप्तकर प्रजातन्त्री सरकारने नया ऐश्वर्य्य प्राप्त किया और उन नवयुवक सेनापतिके साहाय्यसे उत्थित हो उसने मान तथा सम्भ्रमका ऐसा आसन प्राप्त किया; जैसा आसन उसने इससे पहले और कभी प्राप्त किया न था।

जिस समय यह घटनायें हो रही थीं; उस समय नेपोलियन अपनी उन वधूको भूल न गये थे, जिन्हें वह पेरिसमें छोड़ गये थे। यद्यपि सात दिन तथा सात रात वह शान्तिपूर्वक भोजन कर न सके, नियमित विश्राम प्राप्त कर न सके और अपना कोट तथा बूट जूता उतार न सके; फिर भी, इस अवसरमें उन्होंने जोजिफाइनको बारंबार अतीव प्रेमपूर्ण अथच संक्षिप्त पत्र भेजनेका समय निकाल लिया। जोजिफाइनके प्रति प्रकट होनेवाले नेपोलियनके ध्यानका यह सौन्दर्य्य अन्ततक स्थिर रहा। और तो क्या,—इन दोनोंके दुःखद विच्छेदके उपरान्त भी अपनी मृत्युतक नेपोलियन जोजि-फाइनकी ओर ऐसा ही भाव प्रकट करते रहे।

सारडीनियनके साथ यह सुविधापूर्ण सन्धिकर नेपोलियनने अपने ऊपर होनेवाले पीछेके आक्रमणसे अपनी रक्षा की। इसके उपरान्त एक दिनका भी विलम्ब न कर उन्होंने अष्ट्रियन सैन्यके पराजित भग्नावशेषका पीछा आरम्भ किया। भागी हुई अष्ट्रियन सैन्य अपने

प्रधान सेनापति बोउलीउकी अधीनतामें पो नदीके पीछे हट गई थी और वहाँ सुदृढ़ मोर्चे बाँध अपनी ओर द्रुत वेगसे आनेवाली अपनी सहायक सैन्यकी प्रतीक्षा कर रही थी।

सारडीनिया परित्यागकर नेपोलियनने पहले पारमा-राज्यमें प्रवेश किया। फ्रान्सके विरुद्ध अपेक्षाकृत अधिक शक्तिशाली, अपने पड़ोसियोंके साथ मैत्री कर लेनेवाले पारमाके डिउक कोई पाँच लाख मनुष्योंके अधिपति थे। उन्होंने कोई तीन सहस्र योद्धाओंकी एक सैन्य अपने मित्रोंको दी थी। इसमें सन्देह नहीं, कि वह निर्बल नरेश थे और उन्होंने विजयी नेपोलियनकी दया-भिक्षाके लिये उनके पास दूत भेजे। उन्होंने फ्रान्सपर आक्रमण करनेके लिये अपनी सैन्यको अष्ट्रियन सैन्यमें मिलाया था। ऐसी दशामें यह उचित ही था, कि इस आक्रमणके निवारण करनेमें फ्रान्स जो धनव्यय करनेपर बाध्य हुआ था; फ्रान्सको उस धनका साहाय्य करनेपर पारमापति बाध्य किये जाते। उनसे कोई पन्द्रह सौ रुपये नकद, सोलह सौ तोपखानोंके घोड़े और प्रचुरपरिमित अन्न तथा रसद ले उन्हें नेपोलियनने इस युद्धसे निवृत्त किया।

इसी समयसे उन नवयुवक सेनापतिका स्वभावसिद्ध ऐसा कार्य्य आरम्भ हुआ, जिसकी कुछ लोगोंने अतीव प्रशंसा और कितने ही लोगोंने अतीव कठोरतापूर्वक निन्दा की है। नेपोलियन शिल्प तथा सङ्गीत-चित्र-विद्यादिके सूक्ष्म विचारक तथा प्रेमी थे। फिर, वह यह भी जानते थे, कि यह सब शिल्पकार्य्य साम्राज्यकी शोभावृद्धिमें साहाय्य होते और मनुष्यके विचारोंपर बड़ा प्रभाव उत्पन्न करते हैं। यही सब सोच उन्होंने पारमापतिसे कहा, कि आप अपने चित्र-मन्दिरके बीस सर्व्वोत्कृष्ट चित्र मुझे दें, इनसे मैं फ्रान्स-राजधानी पेरिसका अजाइब-खाना सुसज्जित करूँगा। इनमें सुप्रसिद्ध सेण्ट जेरोमका चित्र अपने पास रखनेके लिये उसके बदले पारमापति नेपोलियनको छः लाख रुपया देनेपर प्रस्तुत हुए। नेपोलियनने यह धन अस्वीकार किया और अपनी

सैन्यको सम्बोधनकर कहा,—"पारमापति जो धन हमें दिया चाहते हैं, वह शीघ्र ही व्यय हो जायेगा; किन्तु श्रेष्ठ कार्य्यका फल यह चित्र यदि पेरिसमें पहुँचेगा, तो युगयुगान्तरतक फ्रान्स-राजधानीको शोभा बढ़ाता और बुद्धिको ऐसे यत्नके लिये उत्साहित करता रहेगा।"

युद्धके नियमानुसार धन, अश्व, अन्न तथा मांस ग्रहण करनेपर कोई भी आपत्ति नहीं करता; किन्तु इसतरह चित्रोंके लेनेको कुछ लोगोंने लूट तथा अति लोभका असन्तम कार्य्य बताया है। जब विजय किसी तरहकी भी सम्पत्तिके ग्रहण करनेका स्वत्व प्रदान करती है; तब यह समझना कठिन है, कि विक्री तथा विनिमयकी संज्ञामें आनेवाले शिल्प-कार्य्य इस नियमके व्यतिक्रम करनेका दावा कैसे कर सकते हैं। इसमें सन्देह नहीं, कि प्रयोजनीय वस्तुओंको अपेक्षा विलास-सामग्रियोंके गृहीत होनेमें विलक्षण न्यायानुसारिताका विकाश होता है। बलपूर्वक धन ग्रहण करनेसे उन साधारण लोगों-पर टेक्सका भार आया, जो साधारण लोग नेपोलियन तथा उनके उद्देश्यके पोषक थे। किन्तु चित्रों तथा मूर्त्तियोंका चुनाव होनेसे साधारण लोगोंको अन्नके लिये क्षिन्न होना न पड़ा; इसके बदले समाजके उस श्रेणीके लोगोंको युद्धका कुत्सित फल भोगना पड़ा, जिस श्रेणीके लोगोंने युद्ध आरम्भ किया था। ऐसे चुनावने झोपड़ियोंमें नहीं; महलोंमें ही अपने दावेका रूप प्रकट किया। किन्तु युद्ध अपने बलपूर्वक खींच-तान, लूट, निर्दयता तथा रक्तपात प्रभृति अङ्ग-प्रत्यङ्गके साथ हमारे नैतिक विचारोंको बड़ी उलझनमें फेंक देता है। बुद्धि-सम्बन्धीय कार्य्यको युद्धके विजय-चिह्नमें सम्मिलित करनेकी उप-युक्तताके सम्बन्धमें उत्तरपुरुषोंकी चाहे जो मीमांसा हो; किन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि इस घटनाने नेपोलियनको परिमार्ज्जित तथा उन्नत स्वभावका मनुष्य अवश्य प्रकट किया। नीचात्मा मनुष्य धनलिप्सासे प्रणोदित हो धन ही हस्तगत करता है। किन्तु नेपोलियनने आत्मा-नुरागकी ओर ध्यान न दे केवल फ्रान्सके ऐश्वर्य्य-साधनका यत्न किया।

इस विषयमें अन्ततः उस भावकी उच्चता प्रकट होती है, जिस भावकी प्रेरणासे यह कार्य्य किया गया।

सैनिक साहाय्य पा अष्ट्रियनने कोई चालीस सहस्र संख्यक मनुष्य संग्रह कर लिये और पो नदीके उसपार मोर्चे बाँध बैठ गये। इस नदीकी महत् जल-धारा अष्ट्रियन तथा फ्रान्सीसी सैन्यके बीच अवस्थान करती थी। विपक्षकी सैन्यके सम्मुख नदी पार करना युद्धका अन्यतम दुष्कर कार्य्य है। यह सोचना कठिन था, कि नेपोलियन यह असमसाहसिक कार्य्य कैसे सम्पन्न कर सकते थे। फिर भी; वह वेलेञ्जाकी ओर अपनी सैन्य चढ़ा ले गये। उन्होंने अपने प्रत्येक आडम्बर द्वारा यह दिखाया, कि वह राह रोकनेके लिये प्रस्तुत अपेक्षाकृत बहुसंख्यक शत्रु-सैन्यको कोई परवा न कर उसी स्थानसे पो नदी पार किया चाहते थे। नेपोलियनकी सैन्यका गर्म्मागर्म्म स्वागत करनेके लिये अष्ट्रियन सैन्यने अपनी शक्ति पुञ्जीकृत की। एक दिन रात्रिके समय नेपोलियन एकाएक पीछे पलटे और इस नदीके किनारे-किनारे आश्चर्य्यविशिष्ट त्वरापूर्व्वक छत्तीस घण्टेमें चालीस कोस नीचे उतर आये। राहमें उन्हें इस नदीमें जो नावें मिलीं, उन्हें वह पकड़ते लाये। उन्होंने अपनी कितनी ही डिविजन सैन्यकी यात्रा इस सम्पूर्णतासे निर्द्धारित की थी, कि वह सब आगे पीछे कुछ ही घण्टोंमें निर्द्धारित स्थानमें पहुँच गईं। इसके उपरान्त नावों द्वारा त्वरापूर्व्वक नदी पारकर वह बिना एक भी मनुष्य नष्ट किये लोम्बार्डीकी समतल भूमिमें जा पहुँचे।

यह सुन्दर तथा उर्व्वर देश अष्ट्रियनने जीता था और एक आर्कडिउक द्वारा शासित होता था। इसमें बारह लाख मनुष्योंका निवास था और जगत्का अत्युत्तम ; अतीव उर्व्वर तथा समृद्ध प्रदेश समझा जाता था। इसके अधिवासी अपने वैदेशिक स्वामियोंसे अतीव असन्तुष्ट थे और उनमें अधिकांश राजनीतिक नवजीवन प्राप्त करनेकी कामनासे फ्रान्सीसी सैन्यका स्वागत करनेपर प्रस्तुत थे। उस समय

अष्ट्रियन सेनापति बोउलीउ वेलेञ्जाकी गढ़बन्दीके कार्य्यमें मनोयोग-पूर्वक प्रवृत्त थे। उन्होंने जैसे ही यह सुना, कि उन्हें नेपोलियनने अपने युद्धज्ञानसे नीचा दिखाया और वह पो नदीके इस पार उतर आये, वैसे ही अपनी समस्त सैन्य संग्रह की और फ्रान्सीसी सैन्यके सम्मुखीन होनेके लिये अग्रसर हुए। उभयपक्षके आगे बढ़े हुए डिविजन शीघ्र ही फोम्बियो स्थानमें मिले। अष्ट्रियन सिपाही इस बस्तीके मीनारों, खिड़कियों तथा मकानोंकी छतोंपर बैठ बाजारोंमें समवेत सिपाहियोंपर प्राणघातिनी अग्नि-वृष्टि करने लगे। उन्होंने यह आशा की थी, कि अपने इस कार्य्यके फलसे वह प्रधान सैन्यके साथ आनेवाले अपने प्रधान सेनापतिके आनेतक फ्रान्सीसियोंकी गति रोक सकेंगे। किन्तु फ्रान्सीसी अष्ट्रियनके रोके न रुके। वह अपनी बन्दूकोंपर सङ्गीनें चढ़ा प्रचण्ड वेगसे अग्रसर हुए। अष्ट्रियन अपने दो हजार साथी नेपोलियनके हाथ छोड़ और अपने मृत साथि-योंकी लाशोंसे परिवृत रणभूमि परित्यागकर पीछे हटे।

फ्रान्सीसियोंने भागते हुए अष्ट्रियनका पोछा खूब सटकर किया। फ्रान्सीसी प्रत्येक उच्च स्थानसे लौटते हुए अष्ट्रियनसैन्य-दलमें तोपके गोले मारने लगे और आक्रमण किये जानेके प्रत्येक स्थानसे उनपर गोलियोंकी ध्वंसी बौछारसे आक्रमण करने लगे। इसी दिन सन्ध्याको शत्रुकी रक्तसिक्त तथा क्लान्त फौजें अड्डा नदीके किनारे अवस्थित लोदी नामक एक क्षुद्र ग्राममें पहुँचीं। इस स्थानमें यह नदी कोई दो सौ गज चौड़ी थी और इसपर कोई तीस फुट चौड़ा लकड़ीका एक सङ्कीर्ण पुल बँधा था। अष्ट्रियन फौजें इस ग्रामके बीचसे निकल इस पुल द्वारा यह नदी पार कर गईं। इस नदीके उसपार बोउ-लीउकी प्रधान सैन्य सुदृढ़ मोर्चे बाँधे बैठी थी; उसने अपने साथकी इस पराजित सैन्यको ग्रहण किया। उधर फ्रान्सीसी फौजें इस ग्राममें घुस आईं और अष्ट्रियन तोपोंकी अविराम गोला-वृष्टिसे रक्षा पानेके लिये इस ग्रामके मकानोंकी दीवारोंके पीछे बैठ अपने उन नवयुवक

नेताकी आज्ञाकी प्रतीक्षा करने लगीं, जिन्हें वह अजेय समझने लगी थीं ।

नेपोलियन अपने अदृष्टपर इतना विश्वास करते थे, कि उनके मनमें अपने शारीरिक भयकी ओरसे तनिक भी आशङ्का उत्पन्न होती न थी । वह तुरन्त ही इस ग्रामसे निकले और साधारण तथा फटनेवाली गोलोंकी वृष्टिके बीच इस नदीके तटदेशका परिदर्शन करते फिरे । उन्होंने अपने सम्मुख जो दृश्य देखा, वह बहुतेरे मनुष्यों-के लिये अतीव भीषण था । अष्ट्रियन सैन्यमें सम्मिलित बारह हजार पैदल तथा चार हजार सवार कुल सोलह सहस्र योद्धा तीस बड़ी-बड़ी तोपें ले इस नदीके दूसरे किनारे रणविन्यासपूर्व्वक जमे बैठे थे । उनकी तोपें इस क्रमसे लगी थीं, कि वह उस पुलकी समूची लम्बाईमें ओरसे छोरतक पहुँचनेवाले गोले बरसा सकती थीं । फिर ; इस पुलसे आगे और इसके पीछे भी तोपें लगी थीं । यह सब उस पुलके सङ्कीर्ण पथपर कैंचीदार या आड़ी गोला-वृष्टि कर सकती थीं । फिर; सहस्र-सहस्रके दलोंमें विभक्त अचूक निशाने मारनेवाले गोल-न्दाज प्रत्येक प्रापनीय स्थानोंमें बैठा दिये गये थे । इस पुलकी ओर बढ़नेवाले शत्रुदलके मुखपर गोलियोंकी आँधी बहानेके लिये यह सब आदिष्ट हुए थे ।

बीउलीउ चाहते, तो उस पुलको आसानीसे तोड़ देते ; किन्तु उन्हें अपनी स्थिति ऐसी सुदृढ़ दिखाई दी, कि उस पुलके तोड़नेकी कोई आवश्यकता प्रतीत न हुई । उनकी आन्तरिक कामना यह थी, कि फ्रान्सीसी यह पुल पार करनेका यत्न करें ; कारण, उन्हें इस बातका विश्वास था, कि उनके ऐसा यत्न करनेपर उनकी भीषण तथा असाधारण क्षति होगी । नेपोलियनने तुरन्त ही अष्ट्रियन तोपोंके सम्मुख अपनी उतनी तोपें लगा दीं, जितनी तोपें लगाई जा सकती थीं । प्रबल गोला-वृष्टिके बीच उन्होंने कितनी ही तोपें अपने हाथों लगाईं । इनमें कितनी ही तोपें ऐसे ढङ्गसे लगाई गईं, जिससे

अष्ट्रियन इस पुलको महरावें उड़ानेके लिये इसके समीप पहुँच न सकें। इसके उपरान्त वह उस नगरमें वापस गये। वहाँ अपने प्रधान अफसरोंको एकत्रकर उन्हें यह सूचना दी, कि उन्होंने उसी समय उस पुलपर आक्रमण करना स्थिर किया है। उनमें वीरसे भी वीर अफसर यह कार्य्य ग्रहण करनेसे सङ्कुचित हुए और उन सबने समस्वरसे इस कल्पनाको असम्भव बता नापसन्द किया।

उनमें एकने कहा,—"उस सङ्कीर्ण पुलपर बहनेवाले गोले-गोलियोंके ध्वंसी तूफानके सम्मुखीन हो और उसे भेद मनुष्योंका बलपूर्व्वक आगे बढ़ना असम्भव है।"

प्रत्युत्तरमें नेपोलियनने कहा,—"यह क्या कहते हो? 'असम्भव' शब्द फ्रान्सीसी शब्द नहीं।"

उन नवयुवक विजेताका आत्म-निर्भर विचार दूसरोंके विचारोंसे बहुत कम बदला करता था। अपने सेनापतियोंकी अस्वीकृतिकी कोई परवा न कर उन्होंने छः सहस्र चुने हुए सिपाहियोंको एकत्रकर अपने विलक्षणरूपसे आयत्त प्रसिद्ध सैनिक वाक्पटुताके स्वरमें ऐसी बातें कहीं, जिनसे उन सिपाहियोंका आत्माभिमान तथा उत्साह उमड उठा और वह आक्रमणके लिये अग्रसर किये जानेको विकलता प्रकट करने लगे। उन्होंने उनके सम्मुख इस असमसाहसिक कार्य्यकी विपद्को सम्पूर्णरूपसे प्रकट किया; इसीके साथ साथ उन्हें इस कार्य्यकी सफलतामें प्राप्त होनेवाले यशके उत्साहसे भी उत्साहित किया। वह जानते थे, कि इस कार्य्यमें सहस्र-सहस्र मनुष्योंको प्राण विसर्ज्जन करना होगा। फिर भी, दिये जानेवाले भीषण मूल्यसे जो सफलता प्राप्त की जानेको थी, उस सफलताको वह इस मूल्यके योग्य समझते थे। इस विषयमें वह जिसतरह अपने प्राणको; उसीतरह दूसरोंके भी प्राणोंको तुच्छ समझते थे। इसमें सन्देह नहीं, कि उभयपक्षकी सैन्यमें ऐसा दूसरा मनुष्य न था, जो ऐसे प्रत्यक्ष नैराश्यपूर्ण दुस्साहसिक कार्य्यके करनेका

दायित्वभार अपने ऊपर ग्रहण करनेका साहस प्रकाशित कर सकता।

इस नगरसे कोई डेढ़ कोस ऊपर एक स्थानमें उस नदीका जल छिछला था, जो कठिनतापूर्वक पार किया जा सकता था। किसी अज्ञात भ्रमवश अष्ट्रियनने इस स्थानकी रक्षाका कोई आयोजन किया न था। नेपोलियनने अपने रिसालेके एक बड़े भागको आज्ञा दी, कि वह इस स्थानसे यह नदी पार करे और इसके उपरान्त पीछे पलट भीमवेगसे शत्रु-दलके पश्चाद्भागपर टूट पड़े। इसीके साथ-साथ उन्होंने आक्रमण करनेके स्थानके समीपके एक बाजारके पीछे अपनी सैन्यको एक पंक्तिमें खड़ा किया। यह १० वीं मईकी सन्ध्या थी। सूर्य देव टाइरोलीन पर्व्वतमालाके पीछे डूब रहे थे। ग्राम्य शान्ति तथा सौन्दर्य्यके दृश्यों और मानवीय भ्रष्टतापर उनका सुकोमल मन्द प्रकाश पतित हो रहा था। वायु सम्पूर्ण निश्चल थी। इसके फलसे न तो जलके समतल गात्रपर क्षुद्र तरङ्गें दिखाई देती थीं न वसन्तारम्भके फटे पड़ते हुए पत्तोंमें किसी प्रकारका विक्षोभ दिखाई देता था।

अष्ट्रियनमें हलचल देख नेपोलियनको जैसे ही अपने रिसालेकी उस नदीके पार पहुँचनेका हाल विदित हुआ; वैसे ही उन्होंने आक्रमणका बिगुल बजनेकी आज्ञा दी। उनके सिपाहियोंकी सुदीर्घ पंक्ति उसी समय घूम एक सघन तथा ठोस दलमें परिणत हुई; इस दलने अपनी दुर्भेद्य सघनतासे उस बाजारको परिपूर्ण कर दिया। इसके उपरान्त वह दल पूरी दौड़से दौड़ता हुआ उस बाजारके पीछेसे निकला और अपनी उत्साहपूर्ण ध्वनिसे वायु विदीर्ण करता उस पुलकी ओर झपटा। वहाँ वह प्रचण्ड वायुकी तरह बहनेवाले ध्वंसी क्षेपणास्त्रकी घातक मारके सम्मुखीन हुआ। जिस-तरह हंसियासे घास कटती है; उसीतरह इस मारसे उस दलका समूचा अग्रभाग तुरन्त ही कट गया और आगेके मृत सिपाहियोंकी
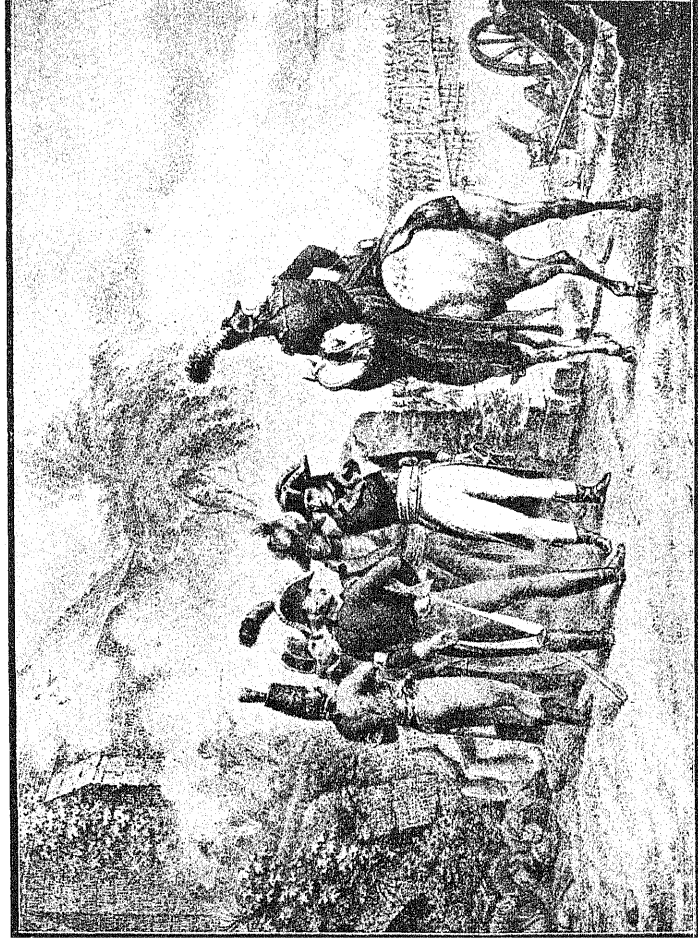
फ्रान्सीसी फौजोंका लोदीका पुल पार करना [पृष्ठ १७१

ढेरने पीछेके सिपाहियोंकी अग्रगतिमें बाधा उपस्थित की। फिर भी; यह दल लोहे तथा सीसेके उस भीषण तूफानकी परवा न कर आगे बढ़ता ही गया और बलपूर्वक अपना पथ बना अन्तमें उस पुलके मध्यभागमें पहुँच गया। यहाँ पहुँच यह संशयशील हुआ ;— कभी आगे; कभी पीछे हटा। इसके उपरान्त वह नश्वर मनुष्यके लिये असह्य अतीव भयङ्कर अग्निके आग्नेयगिरिजैसे उस उत्थानके सम्मुखसे पीठ फेरने होकी था, ऐसे समय लेनिस, मेसेना, तथा बरथियर द्वारा अनुसृत होते हुए नेपोलियन एक पताका ग्रहणकर उस पुलपर अर्द्धनिशाका अन्धकार उत्पन्न करनेवाले उस धुएँके बादलमें घुसे और अपने उस दलके आगे पहुँच उन्होंने गर्ज्जनकर कहा,—"वीरगण! अपने सेनापतिके पीछे आओ!" वह रक्ताक्त और विक्षताङ्ग दल इस उदाहरणसे उत्साहित हो अपनी सङ्गीनें भुका अष्ट्रियन-गोलन्दाजोंकी ओर टूटा। इसी समय फ्रान्सीसी रिसाला उड़ता हुआ आ अष्ट्रियन तोपखानोंके पश्चाद्भागपर बरस पड़ा और इसतरह इस पुलपर फ्रान्सीसियोंका अधिकार हो गया। फ्रान्सीसी सैन्य अब प्लावनके जलकी तरह उस सङ्कीर्ण पुलसे होकर आगे बढ़ने और अपने सम्मुखके मैदानमें फैलने लगी। उस समय भी युद्ध अन्यून प्रचण्डतापूर्वक चल रहा था। हृदयभग्नताकी उत्तेजनासे उत्तेजित हो अष्ट्रियन फ्रान्सीसी सैन्यपर टूट पड़े। किन्तु अपनी आश्चर्य्यप्रद विजयके मदसे मतवाले नेपोलियनके सिपाहियोंने समस्त विपद्से अवज्ञाकर चलते हुए गोली-गोलोंको बालकोंके हाथसे फेंके जानेवाले बरफके गोलोंकी तरह तुच्छ बोध किया।

उस भीषण गोलन्दाजीके घननादके बीच शत्रुका एक विशेष तोपखाना फ्रान्सीसी सैन्य-पंक्तिमें भयङ्कर विनाश प्रकट कर रहा था। बारंबार इसपर आक्रमण करनेका यत्न किया गया था; किन्तु उसका कोई फल न हुआ। इसपर उपस्थित युद्धकी हलचल तथा विभीषिकाके बीच एक अफसर अपना घोड़ा उड़ा नेपोलियनके

समीप पहुँचे और उनसे उन्होंने उस ध्वंसी तोपखानेके निस्तब्ध करनेका और एक यत्न करनेकी प्रयोजनीयता प्रकट की। इसपर अपने कार्य्यकी तरह अपने वाक्यसे भी अपना माहात्म्य प्रकट करनेके प्रेमी नेपोलियनने कहा,—"यदि यह बात है, तो यह तोपखाना निस्तब्ध हो जाये।" इसके उपरान्त उन्होंने ड्रगून सवारोंके एक दलकी ओर पलट कहा,—"आओ, वीरगण! अपने सेनापतिके पीछे आओ।" यह बात सुन उस दलने अपनी पंक्तिमें अङ्गविच्छेद तथा मृत्यु उत्पन्न करनेवाली गोलियोंसे परिपूर्ण गोलोंकी बौछारके सम्मुखीन हो अपने उन नेताके पीछे ऐसे आनन्दपूर्ण मानससे प्रचण्ड धावा किया, मानो वह लड़ने नहीं; किसी छुट्टीके दिन आमोद करने जाते हों। इसका फल यह हुआ, कि उस तोपखानेके अष्ट्रियन गोलन्दाज उसी समय तलवारसे टुकड़े-टुकड़े उड़ा दिये गये और उस तोपखानेकी अष्ट्रियन तोपें अष्ट्रियन सिपाहियोंपर ही गोले बरसाने लगीं।

लेनेसने पहले और नेपोलियनने पीछे वह सङ्कीर्ण पुल पार किया था। वह पुल पारकर लेनेसने परिणामकी चिन्ता सर्व्वथा छोड़ अतीव दुस्साहसिकतापूर्वक अपने उन्मत्त घोड़ेको खारदार एड़ लगा अष्ट्रियन सैन्य-पंक्तिमें घुसेड़ एक पताका छीन ली। ऐसे समय उनका घोड़ा मरकर गिर पड़ा और शत्रुकी कोई छः तलवारें उनके मस्तककी ओर चमक-चमककर चलीं। यह देख भीमपराक्रम तथा भीमत्वरासे उन्होंने अपनेको अपने मृत घोड़ेके बोझसे छुड़ाया और एक छलांगमें समीपके एक अश्वारूढ़ अष्ट्रियन अफसरके घोड़ेपर उन अफसरके पीछे जा बैठे। इसके उपरान्त उन्होंने अपनी तलवार उन अफसरकी देहमें घुसेड़ दी और उन्हें उनकी जगहसे उठा नीचे फेंक दिया। इसतरह उस घोड़ेपर अधिकारकर वह चारो ओर तलवारें मारते शत्रुओंके बीचसे निकल अपनी सैन्यमें वापस पहुँचे। इस युद्धमें उन्हों'ने छः अष्ट्रियनको अपने हाथसे मारा।

लेनेसका यह दैत्योचित कार्य नेपोलियनकी आंखोंके समक्ष हुआ और उन्हों ने उसी जगह लेनेसकी पदवृद्धि की।

अन्तमें अष्ट्रियन पराजित हुए। वह अपने दो हजार साथियों तथा बीस तोपोंको अपने विजेताओंके हाथ दे और ढाई हजार साथियों तथा चार सौ घोड़ोंकी लाशें युद्धस्थलमें छोड़ वापस लौटे। सम्भवतः फ्रान्सीसी हताहतोंकी संख्या भी इतनी ही थी; किन्तु नेपोलियनने इस युद्धकी सूचनामें कोई चार सौ फ्रान्सीसियोंकी क्षति स्वीकार की। अष्ट्रियनकी ओरसे कहा गया, कि फ्रान्सीसियोंने कोई चार सहस्र सिपाहियोंकी बलि दे यह विजय प्राप्त की। फिर भी; नेपोलियनने अपनी नीतिसे यह दिखाया, कि उनकी सैन्यके सिपाही मार खानेवालोंमें नहीं, मारनेवालों में थे। ऐसी ही नीतिके फलसे,—"सरकारी समर-समाचारकी तरह असत्य" कहावत चल गई है। युद्धसे जिन बहुसंख्यक दुष्क्रियाओं का सम्बन्ध है; उनमें विविध रूपका असत्य भाषण तथा प्रवञ्चनाकी प्रयोजनीयता अपेक्षाकृत बड़ी ही छोटी एक दुष्क्रिया है। स्मरणातीत कालसे यह बात निश्चयपूर्व्वक कही जाती है, कि योद्धा साहस तथा प्रवञ्चना दोनो ही प्रकारका अस्त्र समानरूपसे व्यवहार कर सकता है। फ्रान्सीसी भाषामें एक कहावत है, जिसका अभिप्राय है,—"शत्रुकेलिये अस्त्र और मिथ्या दोनो उपयुक्त है।" यदि शत्रु एक मिथ्या समाचारसे पराजित किया जा सकता है, तो ऐसे न्यायपरायण सेनापति बहुत कम होंगे, जो इस कौशलको अस्वीकार करेंगे। शत्रुके हृदयमें भीति उत्पन्न करनेके लिये युद्धके समय जो छल प्रतिष्ठित समझे जाते हैं; उन छलोंसे लाभान्वित होनेमें नेपोलियन निश्चय ही कभी सङ्कोच किया न करते थे। सत्य, उन नैतिक उत्कर्षमें नहीं, जो सैनिक छावनियोंमें वर्द्धित होता दिखाई दे।

इस युद्धमें उपस्थित रहनेवाले एक फ्रान्सीसी योद्धाने कहा है,—"नारकीय अग्नि-वृष्टिके नीचे उस पुलके छोरपर दीर्घकाय ग्रिनेडियर योद्धाओंमें सम्मिलित नेपोलियनको देखना एक विचित्र दृश्य

था। उन योद्धाओंके बीच नेपोलियन बालकजैसे दिखाई देते थे।" उस समय एक अष्ट्रियन सेनापतिने क्रोधपूर्व्वक कहा था,—"यह लौंडा युद्ध-कौशल नहीं दिखाता; खेल करता है, इस खेलके कारण इसे बारंबार पराजित होना चाहिये। यह मूर्ख युद्धका एक भी नियम नहीं जानता। यह आज हमारे पश्चाद्भागमें प्रकट होता है; कल हमारी पार्श्वस्थ सैन्यपर आक्रमण करता है और इसके बादके दिन हमारे सम्मुख पहुँच जाता है। युद्धके प्रतिष्ठित नियमोंको ऐसा सम्पूर्ण निरादर असह्य है।"

जिस समय नेपोलियन अपने निर्व्वासन-कालमें सेण्ट हेलेनामें थे; उस समय उन्हें किसीने लोदीके युद्धका विवरण पढ़ सुनाया था। उसमें यह कहा गया था, कि नेपोलियन अतीव वीरत्व प्रकाशितकर सबसे पहले यह पुल पार हुए थे और लेनेसने नेपोलियनके बाद यह पुल पार किया था। इसपर नेपोलियनने आग्रहपूर्वक कहा,—"पहले;—पहले—लेनेसने मुझसे पहले यह पुल पार किया था। मैंने लेनेसके बाद इसे पार किया। इस अशुद्धिको अभी शुद्ध करना चाहिये।" उसी समय पृष्ठ-पार्श्वमें यह अशुद्धि शुद्ध कर दी गई। इस विजयने समस्त फ्रान्सीसी सैन्यपर असाधारण प्रभाव उत्पन्न किया और उसके सिपाहियोंके मनमें अपने उन नवयुवक नेताके प्रति असीम भक्ति उत्पन्न कर दी।

इस युद्धके उपरान्त ही फ्रान्सीसी सैन्यके कुछ योद्धाओंका सम्मिलन हुआ और उन सबने इस युद्धमें असाधारण वीरत्व प्रकट करनेवाले बालकोंको सूरतके अपने प्रधान सेनापतिको परिहाससे सेनानी या 'कोरपोरेल' का पद प्रदान किया। इस घटनाके उपरान्त नेपोलियन जैसे ही मैदानमें आये; वैसे ही समूची फ्रान्सीसी सैन्यने उत्साहपूर्ण आनन्द-ध्वनि द्वारा उनका अभिवादन किया,—"जय! हमारे नन्हे कारपोरेलकी जय!" इस घटनाके बाद सदा उनकी सैन्य उन्हें देवताकी तरह पूजती रही। उनके कनसल तथा सम्राट्-पदकी

प्रतिष्ठा प्राप्त करनेपर भो उनके सिपाही उन्हें इसी प्रतिष्ठापूर्ण तथा प्रेमद्योतक बिगड़े हुए नामसे स्मरण करते रहे। नेपोलियनने कहा था,— "न तो पेरिसके विभागोंके दमनने न माण्टोनोट्टीको विजय होने मेरे मनमें अपने उच्च चरित्र-होनेका भाव प्रवर्त्तित किया। जिस समय मैंने 'लोदोके पुलका भीषण पथ' अतिक्रम किया; उस समय मेरे मनमें यह विचार दौड़ा, कि मैं राजनीतिक अखाड़ेमें एक मीमांसाकारक पात्र हो सकता हूँ। उसी समय पहले-पहल मेरे मनमें महत् उच्चाकांक्षाकी स्फुलिङ्ग प्रकट हुई।"

भग्नोद्यम अष्ट्रियन भागकर टाइरोल चले गये और अब लोम्बार्डी नेपोलियनकी करुणापर परित्याग कर दिया गया। आर्कडिउक फरडिनण्ड और उनकी पत्नी अश्रुपूर्ण नयनसे अपनी सुन्दर राजधानी मिलन उन विजयीके लिये छोड़ अपने भागते हुए मित्रोंके साथ आत्मरक्षाके अन्वेषणमें तत्पर हुए।

जिस समय डिउक-दम्पती तथा उनके अनुचरवर्गकी गाड़ियाँ उस राजधानीकी राहोंसे म्लानतापूर्वक जा रही थीं; उस समय उन्हें साधारण लोग निस्तब्धतापूर्वक देख रहे थे; मुखसे सम-वेदना या अपमानका एक शब्द भी न निकालते थे; किन्तु जैसे ही यह गाडियाँ आगे निकल गईं; वैसे ही अबाध प्रजातन्त्री उत्साह फूट निकला। साधारण लोगोंकी भीड़की टोपियोंपर तिरङ्गे फीते मानो मन्त्र-बलसे उपस्थित हुए और प्रजावृन्दका अधिक भाग आनन्दके प्रत्येक निदर्शनके साथ फ्रान्सीसी प्रजातन्त्रियोंका अभि-वादन करनेपर प्रस्तुत हुआ। राजप्रासादके ऊपर एक तख्ता लगा दिया गया, जिसपर लिखा था,—"यह मकान किराये दिया जायेगा; चाबीके लिये फ्रान्सीसी कमिश्नरसे प्रार्थना करो।"

माण्टोनोट्टीमें युद्ध आरम्भ करनेके ठीक एक मास बाद १५ वीं मईको नेपोलियनने विजयपूर्वक मिलन प्रवेश किया। वहाँके अधि-वासियोंमें अधिकांशने उद्धारकर्त्ताके रूपसे उनका स्वागत किया।

इटलीके सभी भागोंके स्वदेशहितैषियोंकी मिलनमें भीड़ हुई। वह सब इस आशासे आनन्दित थे, कि नेपोलियन उन्हें स्वाधीनता देंगे, दिलायेंगे और फ्रान्सके सख्य-सम्बन्धसे बँधी एक प्रजातन्त्री सरकार उनके देशको प्रदान करेंगे। तुरन्त ही एक बड़ी देशरक्षक नैमित्तिक सैन्य संगठित की गई। उसका नाम नेशनल गार्ड रखा गया। फ्रान्सकी तिरङ्गी पताकाके प्रति सम्मान प्रकट करनेके लिये इस सैन्यकी पोशाक तिरङ्गी नीली, लाल और श्वेत रखी गई। उन विजयीके प्रति सम्मान प्रकाशित करनेके लिये एक विजयसूचक महराब बनाई गई। नगरकी सारी जनता उनके स्वागतार्थ नगरके बाहर निकली। उनके पथमें पुष्प बिछाये गये। जिस समय वह नगरकी राहोंसे होकर निकले; उस समय नगरकी रमणियोंने मकानोंकी खिड़कियोंमें समवेत हो उनका दर्शन किया और उनके सम्मुख आनेपर मुस्कुरा-मुस्कुरा तथा रूमाल हिला उनका अभिवादन किया। उनके पदतलमें गुलदस्तोंकी वृष्टि हुई। इसतरह फौजी वाद्य तथा फहराती हुई पताकाओंकी शोभा; घण्टोंकी ध्वनि; सलामी दागनेवाली तोपोंकी गर्ज्जन और दर्शकोंको विशाल भीड़से होती हुई हर्षध्वनिके बीच नेपोलियनने उस प्रासादपर अधिकार किया, जिस प्रासादको छोड़ लोम्बार्डीके आर्क डिउक भागे थे।

विजयी नेपोलिययने मिलनके अधिवासियोंको सम्बोधनकर कहा,—"यदि तुम स्वाधीनताके आकांक्षी हो, तो इटलीको अष्ट्रियाके दासत्वसे सदाके लिये मुक्त करनेमें साहाय्य दे स्वाधीनता-प्राप्तिके उपयुक्त पात्र बनो।" मोडिना-राज्यकी सीमा परमा-राज्यसे मिली हुई थी। समय देख मोडिनाके धनी तथा अर्थ-लोलुप डिउकने सन्धि-प्रार्थनाके लिये नेपोलियनके पास अपना दूत भेजा। नेपोलियनने इन डिउकसे साठ लाख रुपये, बीस चुने हुए चित्र और प्रचुरपरिमित घोड़े तथा रसद ले उन्हें युद्ध-निवृत्ति प्रदान की। जिस समय मोडिनाके डिउकसे सन्धि हो रही थी; उस समय फ्रान्सीसी सैन्यके प्रति-

निधिने नेपोलियनके पास आकर कहा,—"मोडेनाके डिउकके भाई चार सन्दूकोंमें बन्द चौबीस लाख रुपयेकी अशरफियाँ ले आये हैं। वह यह धन इन डिउकको ओर से लाये हैं और प्रार्थना करते हैं, कि इसे आप स्वीकार करें। मेरा भी निवेदन है कि आप ऐसा ही करें। यह धन आपका है। इसे आप संशय-रहित हो ग्रहण करें। जो धन डिउक फ्रान्स-सरकारको देनेवाले हैं, उससे यह धन बाकी निकाल दिया जायेगा। आपको यह धन दे और अपना रक्षक बना यह डिउक अतीव आनन्दित होंगे।" इसपर नेपोलियनने शान्तिपूर्व्वक कहा,—"धन्यवाद! इस धनके लिये मैं अपनेको मोडेनाके डिउकके हाथ अर्पित किया नहीं चाहता।" इन डिउकने जो धन दिया, वह सबका सब फ्रान्सीसी धन-कोषमें गया; उससे एक रुपया भी नेपोलियनने अपने लिये लेना स्वीकार न किया।

इसके उपरान्त नेपोलियनने और एक जीवनोद्दीपनकारिणी घोषणा निकाली, जिसने उनकी अपनी सैन्यमें बड़ा उत्साह फैलानेके साथ-साथ इटालियनके भी अनुरागविशिष्ट विचारोंमें शक्तिशाली तडित्प्रवाहका सञ्चार किया। इस घोषणामें कहा गया,—"वीर-गण! तुम वारिधाराकी तरह पर्व्वतसे उतर समतल भूमिमें पहुँचे हो। तुमने अपनी उन्नतिकी बाधक प्रत्येक वस्तुको निष्पेषित किया। पीडमौण्ट अष्ट्रियाके अत्याचारसे मुक्त किया गया; मिलन तुम्हारे हाथ है और प्रजातन्त्र-ध्वजा समूचे लोम्बार्डीपर लहराने लगी है। परमा तथा मोडेनाके डिउकोंका अस्तित्व तुम्हारी उदारताके कारण है। जो शत्रु-सैन्य अतीव दम्भपूर्व्वक तुम्हें जोश दिला रही थी; वह शत्रु-सैन्य तुम्हारी तलवारोंसे आत्मरक्षा करनेके लिये अब कोई रुकावट पा नहीं रही है। पो, टिसिनो, अड्डा आदि नदियाँ तुम्हें एक दिन भी रोक रखनेमें समर्थ नहीं हुई हैं। आल्प्स गिरिकी तरह इटलीके यह स्लाघापूर्ण

आश्रयस्थान भी व्यर्थ प्रमाणित हुए हैं। सफलताकी ऐसी दौड़ने तुम्हारे देशकी छाती आनन्दसे परिपूर्ण कर दी है। फ्रान्सके प्रत्येक जिलेमें तुम्हारी विविध विजयके उपलक्ष्में आनन्द-उत्सव सम्पन्न हुआ है। हाँ; वीरगण! तुमने बहुत कुछ किया है; किन्तु अभी बहुत कुछ करना बाकी है। क्या हमारे उत्तरवंशीय सन्तान यह कहेंगे, कि हम विजय करना जानते थे; किन्तु विजय बढ़ाना जानते न थे? क्या तुम्हारे लिये लोम्बार्डी ही हैनीबालकी सैन्यका कपुआ होगा, जहाँ हैनीबालकी सैन्य वीरत्व छोड़ विलासके दासत्वमें फँस भ्रष्ट हुई थी? हमें अभी बलपूर्व्वक आगे बढ़ना है; शत्रुओंको वश करना है, विजय-मुकुट संग्रह करना है और अपनी क्षतिका प्रतिशोध लेना है। जिन लोगोंने फ्रान्सीसी गृह-युद्धके खञ्जरपर शान चढ़ाई है, जिन लोगोंने मन्त्रियोंकी हत्या की है; जिन लोगोंने हमारे जहाजोंको टूलोनमें जलाया है; उन लोगोंको थर-थर काँपना चाहिये, क्योंकि प्रतिशोधकी घड़ी बज उठी है। किन्तु साधारण लोगोंमें त्रासका सञ्चार होने न दो। हम सर्व्वत्रके साधारण लोगोंके मित्र हैं; विशेषत: ब्रूटिडसेस और सिपिओसके और उन महज्जनके और भी मित्र हैं, जिन्हें हमने अपना आदर्श बनाया है। रोमके प्राचीन दुर्ग केपिटोलकी हम पुनःप्रतिष्ठा करेंगे; होरेशस आदि जिन वीरोंने इस दुर्गको प्रसिद्धि प्रदान की है, उन वीरोंकी मूर्त्तियाँ हम फिर प्रतिष्ठित करेंगे और शताब्दियोंके दासत्वसे अचेत रोमनोंको हम जगायेंगे। हमारी विजयके ऐसे ही फल होंगे। यह विजय उत्तरकालके लिये एक नवदुर्ग प्रस्तुत करेगी। यूरोपके सर्व्वोत्कृष्ट भागका रूप परिवर्त्तित करनेका अनन्त ऐश्वर्य्य तुम्हींसे अपना सम्बन्ध स्थापित करेगा। स्वाधीन तथा समग्र जगत् द्वारा प्रतिष्ठित फ्रान्सीसी यूरोपको एक उज्ज्वल शान्ति प्रदान करेंगे। इसके उप- रान्त तुम अपने घर लौटोगे और वहाँ तुम्हारे देश-भाई तुम्हारी

ओर सङ्केतकर कहेंगे,—"वह सज्जन इटलीको फ्रान्सीसी सेनामें रह चुके है।"

ऐसी ही वह घोषणा थी, जिसे नेपोलियनने कल्पनातीत त्वरापूर्व्वक चिन्ता भय तथा रण-कोलाहलसे परिप्लुत रहकर भी घसीट निकाली। इस घोषणापत्रके निकलनेके बीस वर्ष बाद इसके चमकीले वाक्योंको सेण्ट हेलेनामें पढ़ नेपोलियनने कहा था,—"फिर भी; वह सब यह कहनेकी मूर्खता प्रकट करते हैं, कि मैं लिख न सकता था।" नेपोलियनके कितने ही शत्रुओंने नेपोलियनको एक वर्णका भी उच्चारण करनेमें असमर्थ अशिक्षित मनुष्य बताया है। यथार्थमें वह सुदक्ष तथा सम्पूर्ण विद्वान् थे। उन्होंने अतीव उच्चकोटिकी बुद्धि-शक्ति और मानसिक सफलता प्राप्त की थी। उनका मन प्रचुर तथा दीर्घकालीन विद्याभ्यासकी कठोरतर शासनका अभ्यस्त था। सेण्ट हेलेनामें एक दिन उन्होंने अपने सिकत्तरसे पूछा,—"क्या तुम शुद्ध वर्णविन्यासपूर्व्वक लिखा करते हो?" उन्होंने और भी कहा,—"जो मनुष्य साधारण लोगोंके कार्य्यमें प्रवृत्त रहता है, वह मनुष्य अपने अक्षर बना-बनाकर लिख नहीं सकता। उसके हाथकी चालकी अपेक्षा उसके विचारोंका अधिक द्रुतगति होना चाहिये। उन्हें केवल अपना लक्ष्य प्रतिष्ठित करनेका समय मिलता है। उन्हें शब्दोंको अक्षरोंमें और वाक्योंको शब्दोंमें घनीभूत कर देना चाहिये। इसके उपरान्त उनके सिकत्तरको उन शब्दोंका विस्तार करना चाहिये।" ऐसी ही त्वरासे नेपोलियन लिखा करते थे। उनकी हस्तलिपिकी अधिकांश लिपियाँ प्राचीनकालकी दुर्ब्बोध चित्रलिपिजैसी थीं। प्रायः ही उन्हें वह आप भी समझ न सकते थे।

लोम्बार्डी इटलीका उद्यान है। आल्पसे एपिनाइन्सतक इस सुविस्तृत उपत्यकाका सर्व्वांश कृषि-कार्य्यमें उत्तमरूपसे नियुक्त किया जाता है। इसीसे इसमें कहीं अङ्गूरके वन; कहीं फलोंके वृक्ष-

समूह ; कहीं लहराते हुए शस्यक्षेत्र और कहीं पशुओं तथा बकरियोंके झुण्ड दिखाई देते हैं। भूमि जहाँतक उर्वर तथा चित्ताकर्षक रूप प्रकट कर सकती है, लोम्बार्डीका वैसा ही रूप है। धन तथा विलाससे परिपूर्ण लोम्बार्डीकी सुन्दर राजधानी मिलन नगरमें एक लाख बीस हजार मनुष्योंका निवास था। इस नगरमें नेपोलियनने असाधारण परिश्रमसे क्लान्त अपनी सैन्यको विश्रामके लिये छः दिनका अवकाश दिया। इस नगरके अधिवासियोंने अतीव असाधारण उत्साह तथा आनन्दपूर्व्वक नेपोलियनको स्वीकार किया। लोगोंने उन्हें इटलीके उद्धारकर्त्ता और उस युवक वीरके रूपमें ग्रहण किया, जो प्रायः अमानुषिक शक्तियोंसे शक्तिशाली हो इटलीमें एकबार फिर रोमन ऐश्वर्य्य तथा धर्म्मका साम्राज्य प्रवर्त्तित करने आये थे। उनके ज्वलन्त शब्दों; उनकी उज्ज्वल कीर्त्तियों, उनके उच्चकोटिके अतीव पवित्र और कलङ्कशून्य आचरण ; उनकी कर्त्तृत्वकी इच्छा; उनके स्त्रियोचित रूपके सौन्दर्य्य तथा धज, उनके चटपटके फैसले और संक्षिप्त अथच सुवर्णित भाषामें प्रकट होनेवाले उनके प्राचीन ढङ्गके विचारोंने, लोगोंके मुँहमे उद्धृत वाक्यरूपसे वारंवार प्रकट हो उनके प्रति लोगोंके मनमें सार्व्वत्रिक मोहिनी प्रकट कर दी थी। इटलीके सभी भागोंके उत्साही तथा नवयुवक मनुष्य लोम्बार्डीकी राजधानीमें एकत्र हो रहे थे। इटलीकी भाषा नेपोलियनकी मातृभाषा थी। उनका नाम और उनका मूलस्थान इटली था और उन्हें इटालियन अपना देश भाई समझते थे। वह उनके पद-पदपर एकत्र होते थे और अविराम आनन्द-ध्वनिपूर्व्वक उनका अभिवादन करते थे। इटालियनके लिये वह एक कैटो थे ; एक सिपियो थे ; एक हैनिबाल थे। स्त्रियाँ उनपर सविशेषरूपसे असीम प्रशंसाकी वर्षा करती थीं।

किन्तु नेपोलियन युद्धमें पराभूत लोगोंके लुटे द्रव्यसे अपनी निजकी सैन्यको साहाय्य करनेपर बाध्य थे। फ्रान्सीसी प्रजातन्त्रके अर्थ-

शून्य अर्थ-कोषसे वह एक पैसा भी पा न सकते थे। उन्होंने कहा था,—"एक ओर साधारण लोगोंकी धन-सम्पत्ति अपहरण करना; दूसरी ओर अपनेको उनका हितैषी तथा मित्र होनेका विश्वास दिलाना अत्यन्त कठिन है।" फिर भी, वह यह दोनो ही कार्य्य सम्पादित करनेमें सफल हुए थे। अतीव अनिच्छापूर्व्वक उन्होंने मिलनके अधिवासियोंपर एक करोड बीस लाख रुपयेके करका भार अर्पित किया और 'एम्ब्रोजियन गेलेरी' नाम्नी चित्रशालासे बीस चित्र चुन अपनी विजयके निदर्शनस्वरूप पेरिस भेजे। उन्होंने अतीव दुःखपूर्व्वक यह धन प्राप्त किया; वह जानते थे, कि मिलनके अधिवासी जिस उत्साहके साथ प्रजातन्त्री भण्डेके गिर्द एकत्र हो रहे थे, इस करसे उनका वह उत्साह जाता रहेगा। फिर भी; उनकी कल्पनाओंकी वृद्धिके लिये इस धनका वसूल किया जाना अनिवार्य्य था। एकमात्र इसी उपायसे वह पराजय तथा सम्पूर्ण ध्वंससे आत्मरक्षा कर सकते थे। मिलनके स्वदेशहितैषियोंने भी यह जान लिया, कि जिस युद्धका आह्वान उनकी सरकारने किया था; उस युद्धका व्ययनिर्व्वाह उनकी सरकार द्वारा ही होना चाहिये था। वह यह भी समझ गये थे, कि जब लोम्बार्डीने निर्बल तथा दरिद्र शिशु प्रजातन्त्रपर आक्रमण करनेके लिये यूरोपके शक्तिशाली तथा धन-सम्पन्न राजतन्त्रोंसे मैत्री की थी; तब नेपोलियनका पराजित आक्रमणकारियोंके धनसे अपने सिपाहियोंके लिये अन्न तथा वस्त्र संग्रह करना न्यायसङ्गत था। फलतः, धन दे दिया गया और विजयी नेपोलियन ज्योंके त्यों साधारण लोगोंके अनुरागभाजन बने रहे।

नेपोलियनके सिपाही अब रोटी, मांस तथा मद्यके प्राचुर्य्यका अत्यानन्द उपभोग कर रहे थे। फिर भी; उनके चीथड़े उनकी देहसे दूर हुए न थे। इस समय भी वह वही युद्ध-जीर्ण तथा फटे वस्त्र पहने थे, जिन्हें पहन वह आल्पसकी तुषाराच्छादित चोटियोंसे उतरे थे।

इसतरह अवलम्ब पा नेपोलियनने अपनी सैन्यको प्रचुर वस्त्र प्रदान किया, अपनी सैन्यका धन-कोष धनसे परिपूर्ण किया, अस-पताल तथा वृहत् युद्धोपकरण भाण्डार प्रतिष्ठित किये, दूर देशमें बैठे पिता अपने असहाय परिवारको जिसतरह धन भेजते हैं, उस-तरह गौरवपूर्वक पेरिसको प्रतिनिधि-सभाके नाम तीस लाख रुपये नकद भेजा और राइनमें एक दरिद्र सैन्य लिये बैठे तथा अष्ट्रियनकी अपेक्षाकृत बड़ी सैन्यसे युद्ध करते हुए फ्रान्सीसी सेनापति मोरोउके पास डेढ़ लाख रुपये नकद प्रेरित किये। इसीके साथ-साथ उन्होंने मिलन-में एक शक्तिशालिनी तथा उपयुक्त मिउनिसिपल-सरकार प्रतिष्ठित की और साथ ही लोम्बार्डीके समस्त भागकी देशरक्षक नैमित्तिक सैन्य या मिलिशियाके सम्पूर्ण सैनिक शासनका प्रबन्ध किया।

पाँच दिनमें उन्होंने यह सब कार्य्य किये। फिर; यह पाँच दिन उस एक मासके बादके पाँच दिन थे, जिस एक मासमें उन्होंने ऐसा कायिक तथा मानसिक श्रम किया था, जैसा श्रम इससे पहले किसी भी नश्वर मनुष्यने स्वीकार किया न था। नेपोलियनमें अपने मनपर अतीव असाधारण क्षमता प्रदान करनेवाला उनका वह अतीव विचित्र नियन्त्रित स्वभाव यदि न होता, तो ऐसे भीमकर्म्म उनके द्वारा साधित न होते।

उन्होंने कहा था,—"खानोंकी तरह मेरे माथेमें विभिन्न विषय सजे हुए हैं। जब मैं एक तरहके विचारोंके स्रोतको रोकना चाहता हूँ; तब मैं उस खानेको बन्द कर देता हूँ, जिसमें वह विषय रहता है और उस खानेको खोलता हूँ, जिसमें दूसरा विषय रहता है। यह दोनो विषय न तो परस्पर मिलते न मुझे थकाते या असुविधाके सम्मुखीन करते हैं। मैं आपसे आप उत्पन्न होने-वाले विचारोंके पूर्व्वाधिकारसे कभी भागा नहीं करता हूँ। जब मैं विश्राम किया चाहता हूँ; तब अपने विचारोंके सब खानोंको बन्दकर सो जाता हूँ। जैसे ही मैं सोनेकी इच्छा करता हूँ, वैसे ही मैं सदा सो जाता हूँ।"

ऐसा बहुधा हुआ था, कि वह बिना सोये लगातार कई दिन और रात फैसलेके युद्धका आयोजनकर सो गये और जिस समय युद्धक्षेत्रकी विभीषिका तथा नाद प्रकट हुआ और जिस समय उनके नीचेकी उच्चभूमि गोलोंसे बुहारी जाने लगी; उस समय वह निश्चिन्त मनसे सोते रहे। उन्होंने कहा था,—"प्रकृतिके भी स्वत्व हैं और इनकी प्रवञ्चना करनेपर दण्ड भोग करना ही होगा। जब मैं इस-तरहकी क्षणिक निद्रासे जागता हूँ; तब अपने पास आई हुई सूचनाओंके ग्रहण करने तथा नई आज्ञाओंके देनेमें अपनेको अधिक शान्त पाता हूँ।"

जब वह मिलनमें थे, तब एक दिन प्रातःकाल वह जैसे ही अपने घोड़ेपर सवार हुए; वैसे ही प्रयोजनीय पत्र ले एक सवार उनके सम्मुख उपस्थित हुआ। नेपोलियनने अपने घोड़ेकी पीठपर बैठे-बैठे वह पत्र पढ़े और एक मौखिक उत्तर दे उस सवारसे कहा, कि इसे तुम यथासम्भव शीघ्र ले वापस जाओ!

उस सवारने कहा,—"मेरे पास कोई घोड़ा नहीं। जिस घोड़ेपर सवार हो मैं आया था, वह घोड़ा अधिक दौड़के फलसे आपके प्रासादके द्वारपर गिरकर मर गया है।"

यह सुन नेपोलियन उसी समय अपने घोड़ेसे उतर पड़े और उसे उस सवारके सम्मुखकर कहा,—"तब तुम मेरा घोड़ा लो।"

वह सवार उन प्रधान सेनापतिके शानदार घोड़ेपर सवार होनेसे हिचका।

नेपोलियनने कहा,—"तुम इसे बहुत ही अच्छा और बहुत ही अच्छे साजसे सुसज्जित समझते हो। किन्तु, भाई! तुम इस बातकी परवा न करो। जगतमें ऐसी कोई शानदार चीज नहीं, जो फ्रान्सीसी सिपाहीके उपयुक्त न हो।"

ऐसी घटनायें प्रायः ही होती थीं और यह सब अनुधावनीय अलङ्कारपूर्वक सैनिक छावनीके अग्नि-कुण्डकी चारो ओर बैठे सिपा-

छियोंमें कही-सुनी जाती थीं। इसके फलसे उन नवयुवक सेनापतिको प्राय: अर्चनाके समतुल्य प्रसिद्धि प्राप्त होती थी।

उस समयकी चिन्ता, उलझन तथा उन अतीव त्रासजनक युद्धके भयके बीच नेपोलियनका उच्चबुद्धिविशिष्ट चरित्र भी विकसित हुआ था। प्रमाणस्वरूप उनकी वह खुली चिट्ठी उपस्थित की जा सकती है, जिसे उन्होंने प्रसिद्ध गणितशास्त्री ओरियानीके नाम लिखी थी।

उस चिट्ठीमें उन्होंने लिखा था,—"अभीतक इटलीके पण्डितोंने वह गौरव उपभोग नहीं किया है, जिसके लिये वह उपयुक्त हैं। वह अपने पुस्तकालयोंमें बन्द रहते थे और राजों तथा धर्म्मयाजकोंके निर्य्यातनसे रक्षा पानेमें बड़ा सुख अनुभव करते थे। अब यह बात नहीं। धार्म्मिक अनुसन्धान तथा स्वेच्छाचारिणी शक्तिका अन्त हो गया है। इटलीमें विचारके लिये पूरी स्वाधीनता है। मैं साहित्यिक तथा वैज्ञानिक पुरुषोंको परस्पर परामर्श करनेके लिये आह्वान करता हूँ। यह लोग देशके सूक्ष्मशिल्प तथा विज्ञानमें नवजीवन उत्पन्न करनेके विषयमें मुझे परामर्श दें। जो लोग फ्रान्स आया चाहेंगे, वह लोग सरकार द्वारा प्रतिष्ठापूर्वक ग्रहण किये जायेंगे। फ्रान्सके नगरवासी अपने साम्राज्यमें एक धनाढ्य नगर मिलानेकी अपेक्षा किसी सुचतुर गणित-विद्याविशारद, एक सुप्रसिद्ध चित्रकार या विद्याके किसी प्रसिद्ध विद्वान्को अपना साथी नगरवासी बना अपनेको अधिक गौरवान्वित समझेंगे।"

इसतरह त्वरापूर्वक नेपोलियनने लोम्बार्डीके लिये एक सरकार प्रतिष्ठितकर और शान्ति-प्रतिष्ठाके लिये विभिन्न स्थानोंमें फौजें बैठा अष्ट्रियनका पीछा करनेके सम्बन्धमें एकबार फिर अपना मनोनिवेश किया; किन्तु इस अवसरमें पेरिसकी प्रतिनिधि-सभा नेपोलियन द्वारा प्राप्त होनेवाला आश्चर्य्यपूर्ण प्रभाव तथा प्रसिद्धि देख नेपोलियनकी ओरसे सर्वथा भीत हुई थी। छोटेसे एक मासके भीतर उन्होंने

अपने नामसे सारा यूरोप परिपूर्ण कर दिया था। यह देख इस सभाने नेपोलियनकी उन्नतिमें बाधा उपस्थित करनेका सिद्धान्त किया। इसके फलसे इस सभाकी ओरसे अतीव प्रसिद्ध योद्धा सेनापति केले-रमैन नेपोलियनके साथी नियुक्त किये गये। कहा गया, कि वह फ्रान्सीसी सैन्यका एक भाग ले अष्ट्रियनका पीछा करें; फ्रान्सीसी सैन्यका दूसरा भाग ले नेपोलियन पोप-राज्योंपर चढ़ाई करें। फ्रा-न्सीसी सैन्यके ऐसे विभागसे उसका ध्वंस सुनिश्चित था। नेपो-लियनने उसी समय किन्तु साधुतापूर्वक यह कहते हुए अपना इस्तेफा उपस्थित किया,—"दो अच्छे सेनापतियोंकी अपेक्षा एक बुरा सेना-पति अच्छा होता है। शासनकार्य्यकी तरह युद्धकार्य्य भी प्रधानतः सद्विवेचना होसे निर्भरशील होता है।" नेपोलियनके इस फैसलेने प्रतिनिधि-सभाको तुरन्त ही नियमबद्ध बना दिया। उस समय इटलीकी फ्रान्सीसी सैन्यके प्रधान सेनापति ऐसे निर्बल न थे, कि स्थानच्युत किये जा सकते। इसका फल यह हुआ, कि इस सैन्यका अविभक्त प्राधान्य शीघ्र ही उनके हाथ अर्पित किया गया।

उस समय उन्होंने प्रतिनिधि-सभाको कल्पनाजैसी त्वराके साथ जो पत्र लिखा था, उसमें भाषाके वेग तथा तर्कके बलसे कहा गया था,—"इटलीकी सैन्यको दो भागोंमें विभक्त करना उच्चश्रेणीका अराजनीतिक कार्य्य है, फिर, इस सैन्यका कर्त्तृत्व दो जुदा सेना-पतियोंपर न्यस्त करना और भी अयौक्तिक कार्य्य है। पोप-राज्योंकी चढ़ाई अतीव नगण्य विषय है। यह चढ़ाई ऐसी फौजों द्वारा होनी चाहिये, जो एक दूसरेसे समान्तरालमें हों, फिर भी, जो एक श्रेणीमें न हों और अपने सम्मुखका भाग अपने अग्रगमनके लिये उन्मुक्त पायें। इन फौजोंको इस ढङ्गसे सजाना चाहिये, जिससे वह क्षणमात्रमें पलटकर अष्ट्रियनके सम्मुखीन हो सकें। यह कार्य्य सफलतापूर्वक सम्पन्न करनेके लिये दोनो सैन्यको एक सेनापतिकी अधीनतामें ही रखना आवश्यक है। अभीतक मैंने बिना किसीके

परामर्शके यह युद्ध चलाया है। यदि मैं अपने विचारोंको दूसरोंके विचारोंके साथ मिलानेपर बाध्य होता, तो परिणाम औरका और ही होता। यदि आपलोग मुझे विविध विरक्तिके भारसे आक्रान्त करेंगे; यदि मुझे अपनी प्रत्येक कल्पना सरकारी प्रतिनिधिके सम्मुख उपस्थित करना होगी; यदि उन्हें मेरी गति-विधिके परिवर्त्तन करने तथा मेरी सैन्यके अन्यत्र भेजनेका अधिकार होगा; तो भावी सफलताकी इतिश्री समझना चाहिये। यदि आपलोग अपनी शक्तियोंका विभागकर अपने अवलम्बको निर्बल करेंगे; यदि आपलोग इटलीमें सैनिक विचारके ऐक्यमें व्याघात उपस्थित करेंगे; तो मैं दुःखपूर्वक कहता हूँ, कि इस सर्व्वोत्कृष्ट प्रायद्वीपमें न्याय-प्रतिष्ठाका अबसे पहले कभी उपस्थित न होनेवाला सुयोग आपलोगोंके हाथसे निकल जायेगा। प्रजातन्त्रकी दशाकी वर्त्तमान अवस्थामें आपलोगोंको किसी सेनापतिको अपना विश्वासपात्र बनाना ही होगा। यदि मैं आपलोगोंका विश्वासपात्र हो नहीं सका हूँ; तो इसकी आपसे मेरी कोई शिकायत नहीं। प्रत्येक मनुष्यका युद्ध चलानेका ढङ्ग न्यारा होता है। केलरमैन मेरी अपेक्षा अधिक अनुभवी सेनापति हैं और मेरी अपेक्षा अधिक उत्तमतासे युद्ध चला सकते हैं। हम दोनो एक साथ रह; इटकी जगह अनिष्ट ही करेंगे। अष्ट्रिया-सम्राट्के अपने सेनापति बोलिउके पास पन्द्रह सहस्र नये योद्धा भेजनेकी अपेक्षा आपलोगोंकी इस विषयकी मीमांसा अधिक प्रयोजनीय है।"

२२ वीं मईको नेपोलियनने अष्ट्रियनका पीछा करनेके लिये मिलन परित्याग किया। टाइरोल गिरिश्रेणीकी ओर लौटते समय राहके प्रायः दुर्भेद्य दुर्ग माण्टुआमें विजयी फ्रान्सीसियोंकी अग्रगति रोकनेके लिये अष्ट्रियन सेनापति बोउलीउ बीस हजार योद्धा छोड़ गये थे। वह जानते थे, कि नेपोलियन ऐसे दुर्गको शत्रुके हाथमें अपने पीछे छोड़ उनकी ओर अग्रसर हो न सकते थे। उधर अष्ट्रियामें

एक शक्तिशालिनी सहायक सैन्य संगठित हो रही थी। वह पराजित सेनापति इस सैन्यको ले शीघ्र ही लौटने और अपनी सैन्य-संख्याकी अधिकताके बलसे अपने उन शत्रुके कुचल डालनेकी कल्पना कर रहे थे। नेपोलियन मिलनसे अभी कठिनतापूर्व्वक एक दिनकी भी राह न गये होंगे, कि एक भीषण बगावतका प्रादुर्भाव हुआ। पोप द्वारा उभारे जानेपर धर्म्मयाजकोंने अपने वशवर्त्ती कृषकोंको उत्थित हो फ्रान्सीसियोंकी समाप्ति कर डालनेके लिये खड़ा कर दिया। उन कृषकोंके धर्म्मोन्मादके जिन कारणोंपर पोप-धर्म्मकी सम्पूर्ण प्रभुता थी, उन धर्म्मयाजकोंने उन कारणोंका आश्रय ले, उन कृषकोंके सैनिक अनुरागातिशय्यके उभारनेका यत्न किया। उन सबने उन अबोध कृषकोंको विश्वास दिलाते हुए कहा, कि इटलीमें घुसनेवाले शत्रुओंपर उन्हें पराभूत करनेवाली अष्ट्रियन सैन्यकी चढ़ाई हो रही है, सारा इटली एक ही शत्रुके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ है, इङ्गलैण्ड अपने शक्तिशाली जहाजी बेड़ेसे असंख्य सिपाहियोंको सारडीनिया-तटमें उतार रहा है, स्वयं भगवान् अपने स्वर्गीय दूतोंके साथ स्वर्गकी खिड़कियोंमें बैठे अपने सेवकोंके द्वारा यथार्थ धर्म्मके शत्रुओंका नाश होनेपर प्रशंसा करनेपर प्रस्तुत हैं और नेपोलियनका ध्वंस सुनिश्चित है। यह उत्साह अग्निदाहकी तरह ग्राम-ग्राम तथा झोपड़ी-झोपड़ीमें फैल गया। अधिकांश राजतन्त्रवादियोंका निवास नगरोंमें था। कृषक साधारणत: पोप-धर्म्मके सुदृढ़ भक्त थे और रईसोंको बड़ी ही भक्तिसे देखते थे। प्रत्येक ग्राममें सावधानकारी घण्टे बज उठे। एक दिनमें तीस हजार कृषकोंने उन्मत्त हो शस्त्र ग्रहण किया। भय शिरपर आ गया।

नेपोलियन समझ गये, कि एक घण्टा भी नष्ट करना उचित न था। बारह सौ सिपाही और छ: तोपें अपने साथ लेकर उस अपनी चली राहसे वह वापस लौटे। वह शीघ्र ही कोई आठ सौ बागियोंके सम्मुखीन हुए। वह सब बनास्को नामक एक क्षुद्र

ग्राममें मोर्चे बाँध रहे थे। बागियोंसे किसी तरहकी बातचीत की न गई, उनके सम्मुख किसी तरहका सङ्कोच प्रकाशित किया न गया। किसी तरहकी भी दया-प्रार्थनापर कर्णपात किया न गया। नेपोलियनके साथी रणकुशल योद्धा अपने कार्य्यमें अभ्यस्त होनेके कारण अपनी बन्दूक़ोंपर सङ्गीनें चढ़ा और तलवारें खींच वीरवत् उन बागी कृषकोंपर टूट पड़े और कुछ ही क्षणमें उन सबके टुकड़े-टुकड़े उड़ा दिये। इस भीषण हत्याकाण्डका समाचार ले स्त्रियाँ और बच्चे प्रत्येक ओर भागे। इस ग्राममें मशालें लगा दी गईं। धुएँके बादलोंने इस प्रतिशोधके प्रार्थना मन्दिरसे निर्मल तथा मेघ-शून्य आकाशमें उत्थित हो इटलीकी सुदूरव्यापिनी समतल भूमिमें यह विघोषित किया, कि विजयीको क्रुद्ध करना कितना भयङ्कर कार्य्य है।

नेपोलियन तथा उनके साथियोंने दम न लिया। वह सब नर-रक्त टपकाती अपनी तलवारें अपने हाथोंमें लिये आँधीकी तरह आगे बढ़ पेवियाके फाटकपर पहुँचे। यह नगर बागियोंका सदर बना था। इसमें तीस सहस्र मनुष्योंका निवास था। इस नगरमें नेपोलियन तीन सौ रक्षक सिपाही छोड़ गये थे। कोई आठ हज़ार बागी इस नगरमें घुस आये थे। राजतन्त्री दलके बलसे बलवान् हो यह सब असमसाहसिक युद्ध करनेपर प्रस्तुत हुए। नेपोलियनने मिलनके आर्कबिशपको एक श्वेत झण्डा दे इस नगरके अधिवासियोंके पास भेजा। उनसे उन्होंने कहलाया, कि जो मनुष्य अपने हथियार रख देगा, वह अभय पायेगा।

नेपोलियनने यह भी कहलाया,—"बनास्कोका भीषण उदाहरण देख तुम्हें अपनी आँखें खोलना चाहिये। जो नगर बगावतकी हठ करेगा; उसका ऐसा ही परिणाम होगा।"

इसपर बागियोंने वीरतापूर्व्वक प्रत्युत्तर दिया,—"जबतक पेवियाके गिर्द दीवारें हैं; तबतक हम हथियार न रखेंगे।"

नेपोलियनने इस बातका उत्तर तुरन्त ही अपनी तोपों द्वारा दिया। उन्होंने अपने फटनेवाले गोलोंसे इस नगरकी प्राचीर उड़ा दी, उनके सिपाहियोंने कुल्हाड़ों'से इस नगरका फाटक तोड़ दिया।

प्लावन-जलकी तरह नेपोलियनके सिपाही इस नगरमें घुसे। कृषकों'ने मकानोंकी खिड़कियों तथा छतोंसे निर्भयतापूर्वक युद्ध किया। वह सब ध्वंस करनेवाली प्रत्येक चीज फ्रान्सीसी सैन्यपर ऊपरसे नीचे फेंकते रहे। यह खूनी लड़ाई शीघ्र ही समाप्त हुई। आक्रमणकारियोंके सुशासित पराक्रमकी विजय हुई। अभागी कृषकों-का मैदानोंमें पोछा किया जाने लगा और वहाँ वह निर्दयतापूर्वक काटे जाने लगे। इस नगरके हाकिमको गोली मार दी गई। इस नगरके लूटनेकी आज्ञा दी गई।

नेपोलियनने इस नगरके अधिवासियोंके नाम विज्ञापन निकाल कहा,—"आग लगा इस नगरके ध्वंस करनेकी आज्ञा मेरी जुबान-तक आ चुकी थी; एक समय इस नगरके दुर्गसे निकल मेरे छोड़े तीन सौ सिपाही हर्षध्वनिपूर्व्वक अपने उद्धारकर्त्ताओंके गले लग गये। उनकी हाजिरी ली गई, उनमें कोई भी अनुपस्थित न निकला। यदि मेरे एक भी सिपाहीका रक्त बहाया जाता, तो मैं इस नगरको जला भस्म कर देता और उस भस्मस्तूपपर एक स्तम्भ बनवा उसपर लिखवा देता,—'इस जगह पेविया नगर अवस्थान करता था।" नेपोलियन इस नगरमें अपने छोड़े सिपाहियोंपर उनके इस तरह कैदी बननेसे अतीव क्रुद्ध हुए। उन्होंने उनसे कहा,—"कापुरुषो! मैंने तुम्हें अपनी सैन्यकी रक्षाके लिये अत्यावश्यक एक पदपर प्रतिष्ठित किया था और तुम सबने थोड़ा भी युद्ध न कर वह पद अभागे कृषकोंकी भीड़के हाथ समर्पित किया।" उन्होंने इन सिपाहियोंके कप्तानको फौजी अदालतके सम्मुख उपस्थित किया। वह गोली मार दिया गया।

इस भीषण उदाहरणने समग्र लोम्बार्डीकी बगावत धूलिमें

मिला दी । युद्धकी अवश्यम्भावी और आवश्यक विभीषिकाओं का ऐसा ही हाल होता है । किन्तु इन सब भीषण दृश्योंके संघटित होनेपर उन्होंने इस बातका स्वत्व प्रकट किया था; कि जिस मतके वशवर्त्ती हो प्राणरक्षाके मनुष्यत्वपूर्ण विचारसे डाक्तर असंकुचित हाथसे स्नायु तथा मांसपेशी-बन्धनोंका छेदन करते हैं ; उसी मतके वशवर्त्ती हो उन्होंने यह कार्य्य किया था ।

नेपोलियनकी सैन्यके उद्धारके लिये खूनी प्रतिशोध आवश्यक समझा गया था । नैपोलियन अष्ट्रियनका पीछा करते हुए सुदूरस्थ टाइरल गिरिमालामें प्रवेश करनेको थे । ऐसी दशामें अपनी सफ-लताके लिये उन्हें इस बातकी आवश्यकता थी, कि वह एक भीषण उदाहरण द्वारा अपने पीछे रहनेवाले मनुष्योंको यह बात समझा दें, कि वह सब अदण्डित रह उनके विरुद्ध उत्थित हो न सकते थे । युद्ध अवश्य ही रक्तपात तथा अत्याचारका नियम है । नेपोलियन एक उत्साही योद्धा थे । डिउक आफ वेलिङ्गटनका कहना है,—"परिमार्ज्जित विचारोंका मनुष्य सिपहगरीमें हाथ देनेका अधिकारी नहीं ।" नेपोलियनने कहा है,—"एकमात्र पेविया ही एक ऐसा नगर है, जिसे मैंने अपनी सैन्यसे लुटवा लिया था । मैंने आज्ञा दी थी, कि मेरे सिपाही इस नगरको चौबीस घण्टे लूटें , किन्तु तीन ही घण्टे बाद होते हुए अत्याचारोंके दृश्य मेरे लिये असह्य हो गये और मैंने इस नगरकी लूट रोक दी । कौशल तथा मनुष्यत्व दोनो ही नियमके विरोधी हैं । इसमें सन्देह नहीं, कि इन दोनो द्वारा सैन्यकी विशृङ्खला तथा सम्पूर्ण विनाश सुनिश्चित है ।"

इन भीषण दृश्यों तथा प्रयोजनीयतारासे आक्रान्त रहनेपर भी उन अद्भुत पुरुषका साहित्यिक संस्थापनोंके निरीक्षणकी इच्छा करना तथा समय प्राप्त करना उनके स्वभावसिद्ध वैचित्र्यका परिचय प्रदान करता है । जिस समय समूचे पेविया नगरमें हृत्कम्प उप-स्थित था ; उस समय वह अपने शानदार सैनिक अमात्यवर्गके

साथ इस नगरके प्रसिद्ध विश्व-विद्यालयमें पहुँचे। अतीव त्वरा-पूर्व्वक उन्होंने इस विश्वविद्यालयकी श्रेणियोंका निरीक्षण किया। प्रत्येक श्रेणीमें उसके शिक्षकसे वे इतनी शीघ्रतासे प्रश्न करते थे, कि वह दम लेने या उत्तर देनेका समय बड़ी कठिनतासे पाते थे। प्रकाश्यरूपसे पाठ करनेके प्रथम कमरेमें प्रवेश करते ही उन्होंने पूछा,—"यह किस विषयकी श्रेणी है?" उत्तर मिला,—"मूल-तत्त्व विज्ञानकी।" नेपोलियनके मनमें मानसिक विज्ञानके अनिश्चित सिद्धान्तोंका उतना आदर न था; यह उत्तर पा उन्होंने जोरसे 'वाह' की और एक चुटकी हुलास अपनी नाकमें चढ़ा दी। इसके उपरान्त उन्होंने एक छात्रकी ओर मुड़ उससे पूछा,—"निद्रा और मृत्युके बीच क्या प्रभेद है?" उस व्यथित छात्रने साहाय्यके लिये अपने शिक्षककी ओर देखा। वह शिक्षक मृत्युकी पाण्डित्य-परिचायक आलोचनामें प्रवृत्त हुए। इसपर उनके वह अशिष्ट परीक्षक उन्हें उस आलोचना हीमें प्रवृत्त छोड़, वह कमरा छोड़ दूसरे कमरेमें जा पहुँचे। वहाँ आपने पूछा,—"यह किस विषयकी श्रेणी है?" उत्तर मिला,—"गणितशास्त्रकी श्रेणी।" यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि यह उनकी प्यारी विद्या थी। उनके नेत्र प्रसन्नतासे चमक उठे। उन्होंने एक छात्रके हाथसे एक पुस्तक ले शीघ्र-शीघ्र उसके पृष्ठ उलट बड़ा ही कठिन एक हिसाब उस छात्रको दिया। दैवात् वह छात्र गणितशास्त्रका अच्छा पण्डित था। उसने तुरन्त ही शुद्धतापूर्वक वह हिसाब कर दिया। नेपोलियनने उसके किये हिसाबपर दृष्टि निक्षेपकर कहा,—"तुम्हारा किया हिसाब अशुद्ध है।" उस छात्रने हठपूर्वक कहा, कि नहीं; मेरा किया हिसाब शुद्ध है। इसपर नेपोलियन स्लेट-पेन्सिल ले स्वयं हिसाब करने बैठे। एक क्षणमें उन्हें अपनी भूल विदित हो गई। उन्होंने बुरी तरहसे अपनी विरक्ति छिपा वह स्लेट-पेन्सिल उस छात्रको दे कहा,—"हाँ—! तुम्हारा किया हिसाब शुद्ध है।" इसके

उपरान्त वह दूसरे कमरेमें पहुँचे। वहां प्रसिद्ध वोल्टा या 'वैद्युतिक निउटन'से उनको भेंट हुई। नेपोलियन उन प्रसिद्ध दार्शनिक पण्डितको देख इतने प्रसन्न हुए, कि उन्होंने दौड़कर अपनी भुजायें उनके गलेमें डाल दीं और उनसे शीघ्र ही अपनी श्रेणी परित्याग करनेकी प्रार्थना की। इस विश्वविद्यालयके प्रधान पुरुषने उन नवयुवक सेनापतिको अतीव प्रशंसासूचक सम्मानपत्र प्रदानकर कहा,—"महाचार्ल्सने इस विश्वविद्यालयकी नीवका पत्थर रखा है। अब महानेपोलियन या नेपोलियन दि ग्रेट इसे ऐश्वर्य्यकी पराकाष्ठा प्रदान करें।"

अग्नि तथा रक्त द्वारा ही शान्त होनेवाले इस बलवेकी धग्नि तथा रक्तसे शान्तकर नेपोलियन अपने छोटेसे दलके साथ एकबार फिर अष्ट्रिया-साम्राज्यकी समूची शक्तिके सम्मुखीन होनेके लिये सदम्भ लौटे। उस समय अष्ट्रिया नेपोलियनको पददलित करनेके लिये सफलतापूर्वक खड़ा कर दिया गया था। वेनिसके राज्योंमें कोई तीस लाख मनुष्योंका निवास था। उसके जङ्गी जहाजोंका बेड़ा एड्रियाटिक सागरपर कर्त्तृत्व करता था और उसके पचास सहस्र योद्धाओंकी सैन्य थी। वेनेशियनने फ्रान्सीसियोंसे सख्य स्थापित करनेपर भी निरपेक्षता पसन्द की थी। बोउलीउ वेनेशियन-राज्योंसे होकर भागे थे और माण्टुआमें अपनी सैन्य छोड़ते गये थे। नेपोलियनने बोउलिउका पीछा किया।

वेनेशियनके प्रतिवाद करनेपर नेपोलियनने कहा था,—"वेनिसने दोमें एक बात अवश्य की है। उसने या तो अष्ट्रियनको शरण दी है; ऐसी दशामें वह फ्रान्सका शत्रु हो गया है:—या अष्ट्रियनके स्वदेशप्रवेशमें बाधा उपस्थित करनेमें असमर्थ हुआ है; ऐसी दशामें अपनी निर्ब्बलताके कारण निरपेक्षताके स्वत्वोंका दावा करनेमें सम्पूर्ण असमर्थ प्रमाणित हुआ है।" वेनिसकी सरकारने अतीव विरक्तिपूर्वक इस विषयपर सुविवेचना की, कि वेनिसको मित्रभावसे

फ्रान्सका साथ देना चाहिये या अष्ट्रियाका। अन्तमें उसने यह स्थिर किया, कि यदि सम्भव हो, तो निरपेक्ष ही रहना चाहिये। वेनिस-सरकारने नेपोलियनकी मैत्री प्राप्त करनेके लिये उनके पास रिशवतकी तरह छत्तीस लाख रुपये नकद भेजे। उन्होंने यह धन ग्रहण करनेसे साफ इनकार किया। उनके कुछ मित्रोंने उनसे अनुरोध किया, कि यह धन ग्रहण करना आपके लिये सर्वथा विधेय है। इसपर नेपोलियनने कहा,—"यदि फ्रान्स-सरकारके प्रतिनिधि मुझे यह धन स्वीकार करते देखेंगे, तो इस विषयमें वह बहुत कुछ कर डालेंगे।" वेनेसियन दूतगण नेपोलियनकी बुद्धिसे अतीव प्रभावान्वित हो अपने इस कार्य्यसे वापस लौटे। उन्होंने एक कठोर योद्धासे भेंट करनेकी प्रत्याशा की थी। किन्तु इसके बदले वह ऐसे राजनीतिक पुरुषसे मिले, जिनके विचारोंकी प्रचुरता, जिनकी भाषणकी शक्ति, जिनके ज्ञानका प्रसाद और जिनके फैसलेकी त्वरा देख उनकी भक्ति तथा आश्चर्य्य चरमको पहुँचा। फिर भी; यह योद्धा राजदूत उनकी चमकीली तथा कर्त्तृत्वसूचक शक्ति देख भीत हुए। इन सबने अपनी व्यवस्थापक-सभाको लिखा,—"यह असाधारण नवयुवक पुरुष एक दिन अपने देशपर अपना बड़ा प्रभाव प्रतिष्ठित करेंगे।"

उससे पहले किसी भी मनुष्यके पास नेपोलियन जितना धन हुआ न था तथा उससे पहले और कोई भी मनुष्य उस धनका कोई भी अंश अपने कार्य्यमें व्यय करनेके सम्बन्धमें नेपोलियनकी तरह सावधान न था। अपनी सरकारसे किसी तरहका भी साहाय्य ग्रहण न कर उन्होंने दो वर्षतक फ्रान्सीसी सैन्यका भरण-पोषण किया। उन्होंने अपनी प्रतिनिधि-सभाको विरक्तिसे बचानेके लिये छः लाखसे अधिक रुपये भेजे। वह अनायास ही अपने निजके लिये कोटि-कोटि रुपये संग्रह कर सकते थे। उनके मित्रोंने भी उन्हें ऐसा ही करनेका परामर्श दिया। उन सबने कहा, कि फ्रान्सीसी प्रतिनिधि-सभा

आपकी कीर्त्ति तथा शक्तिसे ईर्षा करती है ; ऐसी दशामें वह आपको पुरस्कृत करनेके बदले कुचलने होका यत्न करेगी। किन्तु उन्होंने इन बातोंपर कर्णपात न किया और इस अतीव शानदार युद्धके उपरान्त अपेक्षाकृत और भी दरिद्रावस्थामें पेरिस लौटे। उन्होंने फ्रान्सीसी सैन्यको परिच्छद प्रदान किया था ; अपनी प्रजातन्त्री सरकारके शून्य धन-कोषको एकबार फिर धन द्वारा परिपूर्ण किया था और पेरिसके रङ्गालयको चित्रों तथा मूर्त्तियोंसे परिपूर्ण किया था। किन्तु यह सब बातें फ्रान्सके लिये की गई थीं। धन, चित्र तथा मूर्त्ति कोई चीज उन्होंने अपने लिये बचा न रखी। इसके उप-रान्त उन्होंने कहा था,—"प्रत्येक मनुष्यमें अपनी विजयकी कोई अभिरुचि होती है। मेरी अभिरुचि प्राप्त करनेकी है ; अपने पास रखनेकी नहीं। ऐश्वर्य और प्रसिद्धि ही मेरा धन है। साधारण लोगों तथा वैदेशिकोंकी दृष्टिमें सिम्पलन तथा लूवरके रङ्गालय मेरी-अपनी विजयकी किसी जागीरकी अपेक्षा विशेष रूपसे मेरी सम्पत्ति समझे जाते थे।" निश्चय ही यह अत्युच्च तथा महत् उच्चाकांक्षा थी।

नेपोलियनने शीघ्र ही अष्ट्रियनको जा लिया। उन्होंने देखा, कि अष्टियनकी एक डिविजन सैन्य मिन्सियो नदीके किनारे सुदृढ़ मोर्चे बाँध फ्रान्सीसी सैन्यकी राह रोकनेपर उद्यत बैठी थी। यद्यपि अष्ट्रियनके पास पन्द्रह सहस्र योद्धा थे और यद्यपि इस नदीका पुल आंशिक रूपसे नष्ट कर दिया गया था, तथापि नेपोलियनकी अग्रगति कठिनतासे केवल एक घण्टे रुकी रही। इस दिन नेपो-लियन पीड़ित थे ; उनके शिरमें बड़ा दर्द हो रहा था। नदी पारकर और भागते हुए शत्रुका पीछा करनेकी समस्त कल्पनायें निर्धारित-कर वह अपनी शिर:पीड़ा निवारणार्थ पद स्नानके प्रयोगके लिये उस नदीके किनारे बने एक प्राचीन दुर्गमें चले गये। उनके साथ गिनतीके अनुचरवर्ग थे, उनकी फौजें विभक्त की जाकर भगोड़ोंका पीछा करनेमें नियुक्त की गई थीं। उस दुर्गमें जा उन्होंने उष्ण जलमें

अपने पैर अभी रखे ही थे, ऐसे समय घोड़ोंकी टापोंको उच्च शब्द उन्हें सुनाई दिया। यह शब्द अष्ट्रियन ड्रगूनके एक रिसालेका था, जो घोड़े फेंकता इस किलेमें आ पहुँचा था। इसे देखते ही इस दुर्गके द्वारपर खड़े सन्तरीने उच्चस्वरसे कहा,—"शस्त्र-लो! शस्त्र लो! अष्ट्रियने आ गये।" नेपोलियन उस गर्म जलसे अपने पैर निकाल एक बूट पहन दूसरा हाथमें ले एक खिड़कीसे कूद इस किलेके पीछे बने एक बागके द्वारसे निकल भागे। वहाँ एक घोड़ेपर सवार हो, उसे भगा, वह सेनापति मेसेनाकी सैन्यमें पहुँचे, जो इस दुर्गसे कुछ दूर भोजन बनानेमें प्रवृत्त थी। अपने प्रधान सेनापतिको ऐसी अवस्थामें अपने बीच पा उसे सैन्यके सिपाही उत्तेजित हुए। वह सब अपनी देगचियाँ छोड़ शस्त्र अस्त्र ले उस अष्ट्रियन रिसालेकी ओर झपटे। इन सिपाहियोंको देख वह रिसाला वापस लौटा। इस व्यक्तिगत विपदने नेपोलियनको एक शरीर-रक्षक सैन्य संगठित करनेके लिये प्रवर्त्तित किया। इस सैन्यमें कमसे कम दस वर्षकी नौकरीके पाँच सौ योद्धा रखे गये। सदा नेपोलियनके साथ रहना इस सैन्यका कर्त्तव्य निर्दिष्ट हुआ। इसी सैन्यसे उस 'इम्पीरियल ब्रिगेड' सैन्यकी उत्पत्ति हुई, जिसने नेपोलियनकी बादकी लड़ाइयोंमें सार्व्वभौमिक ख्याति प्राप्त की।

नेपोलियनने शीघ्र ही मान्टुआके दुर्गम्यप्राय दुर्गके सम्मुख अपनी छावनी डाल दी। इस दुर्गकी सैन्यमें शत्रुके कोई बीस सहस्र सिपाही थे। इस दुर्गके भीषण आश्रय-स्थानोंको धावे द्वारा अतिक्रम करना असम्भव था, इसलिये नेपोलियन अपेक्षाकृत अधिक श्रमसाध्य कार्य्य इस दुर्गका घेरा करनेका उपाय करनेपर बाध्य हुए।

अष्ट्रिया-सरकारने वीउलीउके सेनापतित्वसे असन्तुष्ट हो उन्हें उनके पद-कार्य्यसे हटा उनकी जगह सेनापति वर्मसरको अष्ट्रियन सैन्यकी अधिनायकता प्रदान की। इन नये सेनापतिको साठ सहस्र

नये योद्धा भी दिये गये। नेपोलियनकी सैन्यको भी ऐसा साहाय्य मिला, कि उनके पास सब मिलाकर बीस सहस्र योद्धा हो गये। अष्ट्रियनकी दोनो सैन्य यदि मिल जातीं, तो सेनापति वर्मसरके अधीन अस्सी सहस्र सिपाही हो जाते। नेपोलियनको अपने बीस सहस्र योद्धा ले इन अस्सी सहस्र सिपाहियोंके विरुद्ध युद्ध करना था। फिर भी; सेनापति वर्मसरके मण्टुआके फाटकतक पहुँचनेमें कोई एक मासका समय था। नेपोलियनने अपने इस अवकाशकालमें दक्षिणीय इटलीके अपने शत्रुओंका निरस्त्र करना स्थिर किया।

नेपल्स-राज्य इटलीका अतीव शक्तिशाली राज्य है और यह इटली प्रायद्वीपके दक्षिणीय छोरपर अवस्थान करता है। उस समय एक लम्पट तथा कापुरुष बोरबन नरेश नेपल्सके राज-सिंहासनपर थे। टूलोनके आक्रमणके समय नेपल्सके जङ्गी जहाजोंके बेड़ेने अङ्ग-रेजोंको साहाय्य दिया था। नेपल्सकी फौजें उस समय फ्रान्सके विरुद्ध युद्ध करनेमें अष्ट्रियन फौजोंको साहाय्य दे रही थीं। इस राज्यके राजाने जब यह देखा, कि अष्ट्रियन फौजें तथा उनके साथ मिली उनकी फौजें इटलीके प्रत्येक भागसे भगाई जाकर एकमात्र माण्टुआ दुर्गमें आ बद्ध हुई हैं; तब उनके मनमें भयका सञ्चार हुआ और उन्होंने सन्धि-प्रार्थना करनेके लिये नेपोलियनके पास अपना दूत भेजा। उनके राज्यमें सैन्य भेज उन्हें करके भारसे आक्रान्त करनेमें असमर्थ होनेके कारण, साथ ही कोई साठ सहस्र मनुष्योंकी सैन्य युद्धस्थलमें लानेमें समर्थ नेपल्सको अष्ट्रियासे जुदा करनेकी चिन्तासे अतीव चिन्तित होनेकी वजह नेपोलियनने ऐसे सरल नियमोंपर नेपल्स-राजसे युद्ध-निवृत्ति कर ली, जिससे नेपोलियनपर फ्रान्सकी प्रतिनिधि-सभा क्रुद्ध हो गई। किन्तु नेपोलियन आसन्न विपदसे सम्पूर्ण अवगत थे और उन्होंने बुद्धिमत्तापूर्वक ही यह कार्य्य किया था।

नेपेल्सके परित्यक्त होनेपर पोप अब थर-थर काँप उठे। उन्होंने प्रजातन्त्री फ्रान्सको अभिशाप दिया था। उन्होंने खृष्टान मात्रको

फ्रान्सके विरुद्ध शस्त्र धारण करनेकी व्यवस्था की थी और फ्रान्सके दूतको रोमके बाजारमें हत्या होने दी थी। वह यह बात जानते थे, कि वह शास्तिके उपयुक्त पात्र थे और उन्हें यह बात भी विदित थी, कि वह नवयुवक विजयी जब शास्ति देते थे, तब बड़ी ही कठोर चोटें करते थे। नेपोलियन अपने साथ केवल छः सहस्र सिपाही ले पोपके राज्योंमें घुसे। जो राज्य पोपकी ऐहिक शक्तिके अधीन थे; उनमें कोई पचीस लाख मनुष्योंका निवास था। इनमें अधिकांश पतित बर्ब्बरताकी दशाको प्राप्त थे। पोपके पास कोई पाँच सहस्र सिपाहियोंकी एक निकम्मी सैन्य थी। उनकी ऐहिक शक्ति कुछ न थी। उनकी एकमात्र पारलौकिक शक्तिने ही उन्हें भीषण बना रखा था।

पोण्टिफने तुरन्त ही उन विजयीको दया-भिक्षा प्राप्त करनेके लिये अपना एक दूत बोलोगना भेजा। स्थायी सन्धिके नियमादि निर्धारित करनेके लिये नेपोलियनने पोपसे पेरिसकी प्रतिनिधि-सभासे बात-चीत करनेके लिये कहा। अस्थायी युद्ध-निवृत्ति नेपोलियनने निम्नलिखित नियमोंपर की,—अङ्कोन, बोलोगना और फेरारापर फ्रान्सीसी सैन्यका अधिकार; रुपये और अशरफियोंमें एक करोड़ बाईस लाख रुपयेका दान और पेरिसकी चित्रशालाके लिये एक सौ चित्रों या मूर्त्तियों और पाँच सौ हस्तलिखित पुस्तकोंका दान। पोप अपनी ऐहिक शक्तिके विनाशकी आशङ्कासे थर-थर काँप रहे थे; ऐसे आसान नियमोंपर अपना छुटकारा होते देख उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। अधःपतित तथा अधम शासन द्वारा शासित इन राज्योंके अतीव शिक्षित अधिवासियोंने अत्यन्त उत्साहपूर्व्वक फ्रान्सीसियोंका स्वागत किया। वह सब क्षमाहीनतापूर्वक पवित्र पोपसे घृणा करते थे और उन सबने नेपोलियनसे स्वाधीनता प्रदान करनेकी प्रार्थना की। किन्तु इटलीके राज्योंको विप्लवग्रस्त करने-का नेपोलियनका उद्देश्य न था और यद्यपि उन्होंने राजनीतिक

स्वाधीनताकी इस स्पृहाके प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की ; तथापि उनकी ओरसे प्रतिष्ठित शासन-व्यवस्थाके नष्ट करनेके सम्बन्धमें कोई फैसलेका उपाय होनेमें अनिच्छा प्रकट की गई। वह केवल शान्तिके लिये ही प्रतियोगिता कर रहे थे।

टस्कनीने फ्रान्सीसी प्रजातन्त्रको स्वीकार कर लिया और वह इस युद्धसे निरपेक्ष हो गया। किन्तु इङ्गलेण्डने इस निर्बल राज्यकी इस निरपेक्षताका कोई विचार न कर इसके लेघोर्न-बन्दरपर अपनी प्रभुता प्रतिष्ठित की। यह नगर एक गवरनरके अधीन था और वह फ्रान्सीसियोंके विरोधी थे। अङ्गरेजोंके छोटे जङ्गी जहाज अप-मान प्रकट करते हुए इस बन्दरमें घुस आये और उन सबने इस बन्दरके फ्रान्सीसी व्यवसायके प्रति शत्रुवत् व्यवहार किया। नेपोलियन एपिनाइन गिरिमाला पारकर मारामार लेघोर्न पहुँचे। वहाँ उन्होंने अङ्गरेजोंका कोई मव्वे लाख रुपयेका अङ्ग-रेजी माल पकड़ लिया। फ्रान्सीसियोंके आनेसे कुछ घण्टे पहले अङ्गरेजोंके बहुतेरे जहाज यह बन्दर छोड़ भाग गये थे। बृटिश-शक्ति सागरकी मालिका थी और वह अपने सागर-साम्राज्यमें किसीकी निजकी सम्पत्तिके स्वत्वोंका विचार न करती थी। वह जिस जगह शत्रु-पक्षीय सौदागरी जहाजोंको पाती ; उसी जगह उन्हें न्याय्यरूपसे अपनी लूटका माल समझ पकड़ लेती थी। नेपो-लियन भूमिको अपना साम्राज्य समझते थे। उन्होंने भी स्थिर कर लिया था, कि अङ्गरेजोंसे प्रतिशोध लेनेके लिये उनकी सैन्य जिस जगह अङ्गरेज-पक्षीय द्रव्य पायेगी, उस जगह उसपर अधिकार कर लेगी। इसमें सन्देह नहीं, कि यह दोनो ही डाके डालते थे और इन दोनोके यह कार्य्य समानरूपसे अनुचित थे। फिर भी ; युद्धमें होनेवाले बहुसंख्यक अपराधोंमें एक इस अपराधका भी होना बहुत कुछ आवश्यक था।

नेपोलियनने उन विरोधी गवरनरको पकड़ एक गाड़ीमें बैठा

उनके स्वामी ग्राण्ड डिउकके पास यह कहला फ्लोरेन्स भेज दिया,—"लेघोर्नके गवरनरने फ्रान्सीसी व्यवसायको दबा और देशान्तरित होनेवाले मनुष्यों तथा फ्रान्सके शत्रुओंको आश्रय प्रदानकर निरपेक्षताके सभी स्वत्वोंको भङ्ग किया है। आपकी प्रभुताका सम्मानकर आपके इस नमकहराम कर्म्मचारीको मैं आपके पास भेजता हूँ। आप अपनी समीचता द्वारा इसे दण्डित करें।" इसतरह निरपेक्ष राज्योंको बलपूर्वक इस बातकी शिक्षा दी गई, कि वह अपनी निरपेक्षता स्थिर रखें। वह लेघोर्नमें एक सैन्य छोड़ टस्कनी-राजधानी फ्लोरेन्सको ओर अग्रसर हुए। वहाँ अष्ट्रिया-सम्राट्के भाई टस्कनीके ग्राण्ड डिउकने बड़े आदरके साथ उनको स्वीकार किया और उनके सम्मानार्थ बड़ी ही शानदार एक दावत की। इसके उपरान्त वह मान्टुआ लौटे। वह इस नगरसे बीस दिन अनुपस्थित रहे और इस अवसरमें उन्होंने एक डिविजन सैन्य द्वारा दक्षिणीय इटलीके समस्त राज्योंमें ऐसा सिक्का बैठा दिया, जिसके फलसे इन राज्योंमें अष्ट्रियासे होनेवाले भावी विराट् युद्धमें शान्ति विराजती रही। इन भीषण रक्तपूर्ण लड़ाइयोंमें नेपोलियन केवल उन फौजोंसे स्वदेशकी रक्षा करनेके लिये प्रतियोगिता कर रहे थे, जो बलपूर्वक फ्रान्सके सर बोरबन्सका अत्याचारपूर्ण शासन मढ़नेका यत्न कर रही थीं। उन्होंने बारंबार घोषणाकर अपनी शान्ति-कामना प्रकट की थी। प्रत्येक स्थलमें; विशेषतः जिन राज्योंको जीत उन्होंने अपने वश कर लिया था; उन राज्योंके भी सम्बन्धमें उनकी ओरसे अतीव उपशामक नियम प्रकट हुए थे; एकमात्र फ्रान्ससे युद्ध न करनेके ही नियमपर सन्धि कर ली गई थी। सेण्ट हेलेनामें लासकेसासने कहा था,—"जिन विजयने आपको सारे जगत्में प्रसिद्ध किया; उन विजयको बारंबार प्राप्तकर निश्चय ही आप अतीव प्रमुदित हुए होंगे।" प्रत्युत्तरमें नेपोलियनने कहा था,—"कभी नहीं। जो लोग ऐसा सोचते हैं, वह उस समयकी मेरी स्थितिकी दुरवस्थासे अवगत नहीं। आजकी

विजयका आनन्द कल होनेवाले युद्धकी तय्यारीमें तुरन्त ही भुला दिया जाता था। भयका भूत अविच्छिन्न भावसे मेरी आँखोंके सामने नाचा करता था। उस समय मैं एक क्षणके भी लिये विश्राम कर न सकता था।"

माण्टुआका घेरा ।
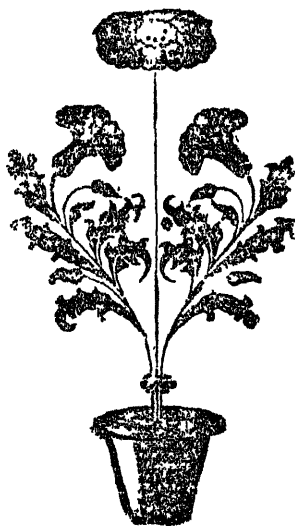
माण्टुआ—ट्रेण्ट—माण्टुआका घेरा परित्याग करना—लोनेटो—काष्टिगालिओन—लोम्बार्डीके अधिवासियोंके नाम पत्र—अष्ट्रियनका सान्धिका झण्डा—नमकहलाल सन्तरी—वर्मसरकी गातिविधि—सेण्टजार्जका युद्ध—आख्यायिका—अपने सेनापतिके प्रति सैनिकोंका प्रेम—इँगलेण्डका प्रभाव—नई अष्ट्रियन सैन्यका संगठन—प्रतिनिधि-सभासे प्रार्थना—भीमपरिश्रम—सिसपेडेन प्रजातन्त्र—कोरासिकाके प्रति नेपोलियनका प्रेम ।

सन् १७९६ ई० के आरम्भिक जुलाईमें सारे यूरोपकी आँखें माण्टुआकी ओर घूमीं। इसी दुर्गकी चारो ओर बड़ फैसलेकी लड़ाइयाँ लड़ी गईं, जिनसे इटलीका भाग्य निर्द्धारित होनेको था। लोम्बार्डीका आश्रय-निकेतन माण्टुआ दुर्भेदप्राय समझा जाता था। कई झीलों तथा मिन्सियो नदीके विस्तारके बीच एक द्वीपपर माण्टुआ अवस्थित था। इस दुर्ग तक पहुँचने की पाँच राहें थीं, राहें क्या थी पाँच लम्बे और सङ्कीर्ण बन्द थे, जिनकी रक्षाके लिये त्रास दिखाती हुई तोपें लगी थीं। धावेसे इस दुर्गको ले लेना असम्भव था। इसका विनाश एकमात्र क्रमिक, समयसापेक्ष और प्रचुर धनसाध्य घेरेकी प्रक्रिया द्वारा ही सम्पन्न हो सकता था।

नेपोलियनने अपनी क्षिप्र अग्रगतिको किसी प्रकारके भी खीमोंके भारसे आक्रान्त होने न दिया था। वृष्टि-जलसे भीगे उनकी सैन्यके सिपाही दिनभरकी यात्राके बाद रात्रिको भीगी-भूमिपर लेट जाते थे। उस समय उनकी देहके ऊपरसे जो निर्दय तूफान बहा करता था; उससे आत्मरक्षा करनेका उनके पास कोई साधन रहता न था। नेपोलियनने सेण्ट हेलेनामें कहा था,—"खीमे अस्वास्थ्यकर होते हैं। सिपाहियोंके लिये युद्धार्थ प्रस्तुत हो अनावृत स्थानमें ही रात बिताना भला है। ऐसा होनेसे वह आग सुलगा अपने पैरोंको गर्मा सो सकते हैं। खीमे केवल बड़े-बड़े अफसरोंके लिये ही आवश्यक हैं; क्योंकि वह मानचित्रादि पढ़ने तथा उसका मेल देखनेपर बाध्य होते हैं।" इसतरह नेपोलियनने जो उदाहरण प्रतिष्ठित किया; यूरोपकी समस्त जातियोंने उसका अनुसरण किया। इन दिनों यूरोपकी समस्त जातियोंने युद्धके समय खीमोंका व्यवहार परित्याग कर दिया है।

कोई पन्द्रह सहस्र अस्वस्थ, आहत और क्लान्त सिपाहियोंसे अस्पताल परिपूर्ण हो गये। फिर; ऐसी विपद्सम्मुखीनता तथा शत्रुकी तलवारों तथा गोलियोंसे नेपोलियनकी सैन्यमें भयंकर संहार उपस्थित हुआ। यद्यपि नेपोलियनको फ्रान्ससे कभी-कभी नई सैन्यका साहाय्य प्राप्त हुआ था; तथापि उनका लाभ उनकी क्षतिके समान था। उनके पास उस समय केवल तीस सहस्र सिपाही थे। उन्हींके साहाय्यसे उन्हें अपने जीते सुविस्तृत देशको स्वाधिकारभुक्त रखना था, उत्थित होनेके लिये सतत प्रस्तुत अभिजातवर्गीय दलका दमन करना था और उनके कुचलनेके लिये अष्ट्रिया द्वारा प्रस्तुत की जानेवाली भीषण वाहिनीके सम्मुखीन होना था। दक्षिणीय इटलीसे लौटनेके उपरान्त ही उन्हें माण्टुआके उस घेरेसे अपनी दृष्टि हटाना पड़ी, जिस घेरेको वह यथासाध्य बलपूर्वक आगे बढ़ा रहे थे। उन्हें इस घेरेकी ओरसे अपनी दृष्टि हटा उत्तरमें

उठते हुए एक भीषण क्षण मैंचपर स्थापित करना पड़ो। कोई साठ सहस्र अष्ट्रियन योद्धाओंकी एक सैन्य सुप्रसिद्ध सेनापति वर्मसरके अधीन उत्तरीय आल्पसके पार्व्वत्य सुदृढ़ स्थानोंमें अपनी शक्ति सञ्चित कर रही थी। वह सैन्य पर्वतसे उतर टाइरोलके गिरिसंकटसे समतल भूमिमें प्रकट हो प्रचण्ड वायुवेगसे फ्रान्सीसी फौजोंपर चढ़ आया चाहती थी।

माण्टुआसे कोई तीस कोस दक्षिण गारडा झीलके उत्तरीय छोरपर टाइरल-गिरिमालाकी गोदमें प्राचीरवेष्टित ट्रेण्ट नगर अवस्थित है। इसी नगरमें अष्ट्रियन सेनापति वर्मसरने साठ सहस्र सिपाहियोंकी सैन्य एकत्र की थी। इस सैन्यके पास प्रचुरपरिमित युद्धोपकरण था। वर्मसर इस सैन्यको ले माण्टुआ पहुँचा चाहते थे और वहाँ माण्टुआ दुर्गमें बैठे बीस सहस्र अष्ट्रियनको अपने साथ ले अपने उस असमसाहसिक शत्रुको कुचल डालनेपर उद्यत थे। इसतरह नेपोलियनकी समाप्ति सुनिश्चित समझी जाती थी। नेपोलियनकी यह दुरवस्था देख इटलीके प्रजातन्त्री अतीव व्याकुल हुए। उन सबने कहा,—"नेपोलियन अपने बीस सहस्र सिपाहियोंसे अष्ट्रियनके अस्सी सहस्र रणपटु सिपाहियोंका सम्मिलित आक्रमणवेग कैसे सँभाल सकते हैं?" इटलीका अभिजातवर्गीय दल अतीव आनन्दित हुआ। नेपोलियनकी सैन्यकी थोडी भी पराजय देखते ही उसपर पश्चाद्भागसे टूट पड़नेकी वह तय्यारियाँ करने लगा। रोम, वेनिस, नेपिल्स इत्यादि बगावतके लिये उभरने और चुपके-चुपके अष्ट्रियनकी साहाय्य करने लगे। पोपने खुलकर अपनी प्रतिज्ञाकी आस्था नष्ट कर दी और युद्ध-निवृत्तिके नियमोंके अनुसार और कार्य्य करना अस्वीकार किया। उन्होंने अपने कारडिनल मैटेईको शत्रुके साथ प्रसङ्गोत्थापन करनेके लिये भेजा। नेपोलियनने पोपके इस कार्य्यको सुसंलग्नतापूर्वक 'दैववाणी'के नामसे निर्देश किया। फिर भी; इस विश्वासघातके आकस्मिक प्रकाशने उन नवयुवक विजयीके

मनमें अपनी शोचनीय अवस्थाका सुगभीर प्रभाव उत्पन्न किया।

माण्टुआ तथा ट्रेण्टके बीच पर्वतोंके अन्दर गारडा नाम्नी सुन्दर झील अवस्थान करती है। स्फटिकवत् सुनिर्म्मल तथा प्रायः अतल-तल यह जल-राशि कोई पन्द्रह कोस लम्बी और दोसे छः कोस चौड़ी है। इस झीलके छोरसे कोई साढ़े सात कोस उत्तर ट्रेण्टमें वर्मसर थे और इसी झीलके छोरसे कोई साढ़े सात कोस दक्षिण माण्टुआमें नेपोलियन थे। अष्ट्रियन सेनापति वर्मसर कोई अस्सी वर्षके वृद्ध थे। वह जैसे वीर; वैसे ही उदार योद्धा भी थे। उन्होंने अपने सुदृढ़ दल-बादलको देख प्रसन्नतापूर्वक हाथ मलते हुए कहा था,—"अब हम इस लौंडेको शीघ्र ही वश कर सकेंगे।" फिर भी, उन्हें इस बातका भय था, कि नेपोलियन अपने विपक्षके इतने अधिक योद्धाओंसे युद्ध करना असम्भव समझ एकाएक भाग कहीं निकल न जायें। इस बातको रोकनेके लिये उन्होंने ट्रेण्टको अपनी सैन्यको बीस-बीस हजारके तीन भागोंमें विभक्त किया। इनमें सेनापति क्वासडेनोविचके अधीनस्थ एक भागसे कहा गया, कि वह इस झीलके पश्चिमीय किनारेसे उत्तर मिलनकी ओर फ्रान्सीसी सैन्यको भागनेकी राह रोक दे। बीस सहस्र सिपाहियोंके दूसरे भागको सेनापति वर्मसरने अपने साथ लिया। इसे लेकर इस झीलके पूर्वीय किनारेसे अग्रसर हो माण्टुआका उद्धार करनेके लिये आगे बढ़े। सेनापति मेलास इस सैन्यका तीसरा भाग ले एडिज उप-त्यकासे नीचे उतरे। यह उपत्यका इस झीलकी तटकी समानान्तर रेखामें अवस्थान करती थी। इस उपत्यका तथा इस झीलके बीच एक पर्वतमाला थी। यह पर्वतमाला अधिक नहीं, कोई एक कोस चौड़ी थी। इसतरह जुदा होनेवाली यह फौजें एक दिनसे कुछ अधिक समयतक कूच करनेपर परस्पर मिल जा सकती थीं। अपने शत्रुके पूर्वानुमान किये हुए पलायनका पथ रोकनेको व्यवस्थाकर

अष्ट्रियन फौजें फ्रान्सीसी फौजोंपर टूट अनिवार्य्य आक्रमण कर सकती थीं।

नेपोलियनके निद्राविहीन चैतन्य तथा तीक्ष्ण दृष्टिने एक क्षणमें अपने सम्मुख उपस्थित होनेवाले सुअवसरको देख लिया। २१ वीं जुलाईकी सन्ध्याको अपने गुप्तचरों द्वारा उन्हें शत्रुकी इस गति-विधिका समाचार पहले-पहल प्राप्त हुआ। उन्होंने उसी समय युद्धकी कल्पना प्रस्तुत की और एक घण्टेमें उनकी सारी छावनीमें हलचल दिखाई दी। उन्होंने आज्ञा दी, कि इसी समय माण्टुआका घेरा परित्याग किया जाये और उनकी सारी सैन्य कूचके विन्याससे अपनेको सज्जित करे। इसमें सन्देह नहीं, कि यह एक बहुत बड़ा उत्सर्ग था। गत दो माससे वह अतीव उत्साहपूर्वक माण्टुआके घेरेका कार्य्य सम्पन्न कर रहे थे। घोर श्रम तथा अतिव्ययसे वहाँ उन्होंने दुर्ग तोड़नेवाली अत्युत्कृष्ट बड़ी-बड़ी तोपों और प्रचुर-परिमित युद्धोपकरण-भाण्डारका संग्रह किया था। माण्टुआ नगर आत्मसमर्पण किया ही चाहता था। इस स्थानका घेरा भङ्ग कर देनेसे इतने समयका सारा कार्य्य मिट्टीमें मिल जानेको था। ऐसा होते ही नगरमें एकबार फिर खाद्यादिका संग्रह हो जानेको था और इस नगरका घेरा फिर आरम्भ करनेपर घेरेके सम्पूर्ण दुःसाध्य कठिन कार्य्य नये रूपसे करनेकी आवश्यकता थी। नेपोलियनने जिस त्वरासे यह उत्सर्ग करना स्थिर किया और जिस असङ्कुचित निर्म्म-मतासे इस फैसलेके अनुसार कार्य्य किया गया ; उससे असाधारण बनावटकी बुद्धिके अनुरागविशिष्ट कार्य्यका परिचय प्राप्त हुआ।

उस समय सूर्य्यदेव अस्त हो चुके थे। निरानन्दपूर्ण रजनी उस विक्षुब्ध छावनीका आच्छादन कर रही थी। किन्तु उस छावनीका एक भी मनुष्य विश्राम कर न रहा था। नैश अन्धकारके आवरणमें प्रत्येक योद्धा सावधान था। काष्ठनिर्म्मित मञ्च तथा तोपोंके चर्ख छावनीके अग्नि-कुण्डमें झोंके जा रहे थे। असंख्य मन

बारूद झीलके जलमें फेंकी जा रही थी। तोपोंमें मेखें ठोंक दी गई थीं और ठोस तथा फटनेवाले गोले मोर्चोंमें गाड़ दिये गये थे। अर्द्धनिशासे पहले समूची सैन्य गतिशील दिखाई दी। यह सैन्य गारडा झीलके पश्चिमीय तटकी ओर शीघ्रतापूर्वक बढ़ी। यह चाहती थी, कि यह अपनी विपद्को स्वप्नमें भी न समझनेवाली क्वासडानोविचकी सैन्यपर हिम-गिरिकी तरह जा टूटे। जब प्रातःकालके सूर्य माण्टुआकी जलीय भूमिपर उदित हुए; तब युद्धार्थ प्रस्तुत उस सम्पूर्ण सैन्यका लोप दिखाई दिया, जिसका युद्धोचित विन्यास कल सन्ध्याको अस्त होते हुए सूर्यकी रश्मियोंमें चमकता दिखाई देता था। अन्नाभावसे अधमरे और आत्मसमर्पणके लिये प्रस्तुत अवरुद्ध मनुष्योंने माण्टुआ नगरके उच्च स्थानोंसे जब इस नगरकी चारों ओरकी शान्ति, उच्छेद और त्यागके दृश्य देखे; तब उन्हें अपनी दृष्टिपर भ्रम होता रहा।

उधर दिन दश बजे क्वासडोनोविच अपनी सैन्यके साथ शान्तिपूर्वक अपना पथ अतिक्रम कर रहे थे। उन्होंने स्वप्नमें भी किसी शत्रुके पन्द्रह कोसके भीतर होनेकी कल्पना की न थी। ऐसे समय एकाएक समूची फ्रान्सीसी सैन्य प्रचण्ड तूफानकी तरह उनको आश्चर्यचकितकर उनपर आ टूटी। इसमें सन्देह नहीं, कि यदि अष्ट्रियन अपनी जगह ठहरे रहते, तो वह निश्चय ही नष्ट कर दिये जाते। किन्तु अल्पकालकी अतीव रक्तपूर्ण लड़ाईके उपरान्त ही उनमें प्रबल विशृङ्खला उत्पन्न हुई और वह युद्धस्थल परित्यागपूर्वक भागे। बहुसंख्यक अष्ट्रियन मारे गये और बहुतेरे फ्रान्सीसियोंके हाथ कैद हुए। पराजित अष्ट्रियन जिस टाइरोलसे चले थे, उसी टाइरोलकी ओरके उसके दुर्गम्य स्थानोंका आश्रय ग्रहण करनेके लिये लौटे। नेपोलियन भागते हुए शत्रुका पीछा करनेमें एक क्षणका भी समय नष्ट किया न चाहते थे। इस झीलके पूर्वीय तटसे आगे बढ़ते हुए अष्ट्रियन सैन्यके अवशेष दोनों भागोंने झीलके जलपरसे आते हुए अविराम मेघगर्ज्जन-

जैसा तोपोंका सुगभीर गर्ज्जन सुना, किन्तु वह अपने साथियोंको किसी प्रकारका भी साहाय्य पहुँचानेमें सम्पूर्ण असमर्थ थे। सच तो यह है, कि वह यह भी स्थिर कर न सके, कि जिस शत्रुसे क्वास-डोनोविच युद्ध कर रहे थे, वह शत्रु आ कहाँसे पहुँचा। वह सब इस बातकी कल्पना कर न सकते थे, कि नेपोलियन मारेङ्गोका अपना बहुमूल्य कार्य्य तथा पुञ्जीकृत भाण्डार परित्याग कर देंगे। फिर भी; चालीस सहस्र सिपाहियों द्वारा संगठित अष्ट्रियन सैन्यके यह दोनो भाग इस झीलके छोरपर परस्पर मिल जानेके लिये यथा-सम्भव शीघ्र गतिसे आगे बढ़े। उधर नेपोलियन भी अपनी चली राहसे वापस लौटे और उन्होंने अपनी सैन्यको प्रायः दौड़कर चलने कहा। उनकी सैन्यका उद्धार उसकी द्रुत गति हीपर निर्भर करता था। वह चाहते थे, कि शत्रु-सैन्यके उन दोनो भागोंके उस पर्वत-श्रेणीके छोरपर परस्पर मिल जानेसे पहले उसके एक भागपर आक्रमण किया जाये। उन्होंने शीघ्रतापूर्व्वक कुछ ज़ोरसे अपने सिपाहियोंसे कहा, —"वीरगण! इस समय विजय तुम्हारे पैरोंपर निर्भर करती है। भय न करना। तीन दिनमें अष्ट्रियन सैन्य नष्ट कर दी जायेगी। तुम केवल मुझपर विश्वास करो। यह बात तुम्हें अच्छी तरहसे विदित है, कि मुझे अपनी बातके अनुसार कार्य्य करनेका अभ्यास है या नहीं।"

क्षुधा, निद्रा और क्लान्तिकी कोई परवा न कर माल-असबाब तथा रसदके भारसे सम्पूर्ण मुक्त उस त्वराके साथ, जिसे अष्ट्रियनने अलौकिक त्वरा बोध किया, वह सारे तीसरे पहर और इसके उपरान्तकी सारी रात अपनी श्रान्त-क्लान्त और रक्त-सिक्त सैन्यके साथ मारा-मार आगे बढ़ते गये। अर्द्धनिशाके समय उन्होंने अपने सिपाहियोंको भूमिपर लेट एक घण्टा विश्राम करनेका सुअवसर दिया; किन्तु स्वयं एक क्षणके भी विश्रामकी आसक्ति प्रकट न की।

३ री अगस्तके तड़के मजरदम जिन मैलासको अबसे कुछ घण्टे

पहले उस झीलके उसपार पर्वतोंके बीच नेपोलियनके तोपखानोंका होता हुआ गर्ज्जन सुनाई दिया था, उन मेलासको समूची फ्रान्सीसी सैन्यकी सघन पंक्तियोंका सदर्प अपनी ओर अग्रसर होना देख बड़ा ही आश्चर्य्य हुआ। वर्मसरकी अधीनस्थ सैन्यके पाँच सहस्र सिपाही उनकी सैन्यमें आ मिले थे; फलत: वह पचीस सहस्र ताजादम सिपाही ले युद्ध-विन्यासकर युद्धके लिये प्रस्तुत हुए। वर्मसर स्वयं केवल कुछ घण्टेकी राहकी दूरीपर थे। वह अपने अवशेष पन्द्रह सहस्र सिपाही ले साध्यानुसार त्वरापूर्वक मेलासके साहाय्यके लिये चले आ रहे थे। नेपोलियनके शत्रु इसतरह जो चालीस सहस्र सिपाही संग्रहकर लाये थे; उनसे लड़नेके लिये नेपोलियनके पास केवल बाईस हजार योद्धा थे। यद्यपि उस समय उनके सिपाही अबसे पहले होनेवाले अपने भीम परिश्रमसे क्लान्त हो चुके थे, तथापि उनके विश्रामार्थ उन्हें एक क्षणका भी अवकाश दिया जा न सकता था।

लोनैटो स्थानकी यह घटना है। कुछ ज्वलन्त शब्दोंमें उन्होंने अपने सिपाहियोंसे उनकी विपद्, उनके असाधारण यत्नकी आवश्यकता और उनकी विजयमें अपना सम्पूर्ण विश्वास व्यक्त किया। अब उनके सिपाही अपने उन नवयुवक विजेताको अजेय समझने लगे थे और वह उन्हें जहाँ ले जाते थे, वह सब उनके पीछे वहीं जाते थे। उन्मत्तजैसे उत्साहके साथ फ्रान्सीसी सिपाही अपने शत्रुपर झपटे। अष्ट्रियनका मान उभारा गया था और वह भी अतीव प्रचण्डतापूर्वक युद्धमें प्रवृत्त हुए। बहुत समयतक बड़ा ही रक्तपूर्ण युद्ध हुआ। नेपोलियन ऐसे शान्त तथा अविचलित थे; मानो वह युद्धमें नहीं; शस्त्रके खेलमें सम्मिलित हों। वह अतीव शान्तभावसे खड़े-खड़े इस युद्धकी लहरोंका आगे बढ़ना तथा पीछे हटना देख रहे थे। उनकी तीक्ष्ण दृष्टिने उसी समय शत्रुके एक निर्बल तथा उन्मुक्त स्थानका लक्ष्य किया। इसके उपरान्त ही अष्ट्रियन पददलित किये गये और अतीव विशृङ्खलापूर्वक मैदानोंमें भागे। उनके मृत साथियोंकी

लाशोंसे युद्धस्थल परिपूर्ण हुआ। उनके पाँच हजार साथी तथा बीस तोपें विजयी फ्रान्सीसियोंके हाथ लगीं। जूनट रिसालेकी एक रेजिमेण्ट ले मैदानमें भागते हुए शत्रुओंके बीच घुस गये। इसके फलसे सहस्र-सहस्र अभागे अष्ट्रियन तलवारके घाट उतारे और घोड़ोंकी टापोंतले कुचले गये।

टाइरोल पर्वतमालाके पीछे सूर्य्यके अस्त होनेतक युद्ध चलता रहा और इसके उपरान्त दूसरी अन्धकारमयी तथा निराशापूर्ण रजनी उपस्थित हुई। वाहन तथा मरते हुए योद्धाओंके आर्त्तनाद और व्यथासे छटपटाते विकृताङ्ग तथा कटे-छटे घोड़ोंकी भीषण चीत्कारध्वनिने नैश वायुको चारो ओर कोसोंतक परिपूर्ण कर दिया था। फ्रान्सीसी सिपाही सम्पूर्ण क्लान्त हो गये थे। वह सब विकृताङ्ग योद्धाओंके पार्श्वमें उस रक्ताक्त रणभूमिपर लेट गये। इसतरह विजयी फ्रान्सीसी शत्रुकी रक्तपूर्ण लाशोंके साथ लेट गभीर निद्राके वशीभूत हो भीषण हत्याकाण्ड भूल गये। किन्तु नेपोलियनने शयन न किया। वह जान जानते थे, कि दूसरे दिनका प्रातःकाल प्रकट होनेसे पहले अपेक्षाकृत अधिक भीषण और एक शत्रु-दल उनके सम्मुखीन होनेको था और आजकी विजय कलकी भीषण पराजयमें परिणत हो सकती थी। शत्रुकी पराजित सैन्य उनकी रक्षाके लिये अग्रसर होती हुई वर्मसरकी सैन्यका साहाय्य पानेके लिये पीछे वापस हट रही थी। नेपोलियन सारी रात घोड़ेकी पीठपर बैठ एक फौजी चौकीसे दूसरी फौजी चौकीका चक्कर लगाते फिरे। वह जानते थे, कि कलके सूर्योदयके साथ-साथ दूसरा प्रचण्ड युद्ध आरम्भ होनेको है। वह रातभर इस भावी युद्धका आयोजन करते फिरे।

लोनेटोसे दो या ढाई कोस दूर केष्टिग्लियोन नामक प्राचीरवेष्टित एक क्षुद्र नगर अवस्थित है। इसी नगरमें वर्मसरसे मिलानकी लौटती हुई सैन्यकी भेंट हुई। वर्मसरने इस सैन्यको फेञ्चोंका युद्ध करनेके लिये फिरसे श्रेणीबद्ध किया। इसतरह तीस सहस्र

अष्ट्रियन योद्धाओंकी सैन्य अपने साथ ले वह अपने आक्रान्त शत्रुके आगमनकी प्रतीक्षामें अवस्थान करने लगे। इधर सूर्य्योदयसे बहुत पहले फ्रान्सीसी सैन्यमें एकबार फिर गति-विधि प्रकट हुई। नेपोलियन अपने घोड़ेको अतीव त्वरापूर्वक दौड़ाते हुए अपनी सैन्यको गति-विधिशील करनेके लिये प्रत्येक ओर जाते थे। विपद् अतीव प्रत्यक्ष थी; इसलिये वह अपनी अतीव प्रयोजनीय आज्ञाके अनुसार कार्य्य करानेका भार किसीको सौंप निश्चिन्त हो न सकते थे। इस दौड़-धूपमें अतीव क्लान्त हो पाँच घोड़े उनकी जाँघोंके नीचे मर-मार गिर गये। नेपोलियन प्रत्येक स्थानमें उपस्थित रहते थे; प्रत्येक वस्तु देखते थे, प्रत्येक बातमें परामर्श देते थे और प्रत्येक चीजमें जीवनी शक्तिका सञ्चार करते थे। समूची फ्रान्सीसी सैन्यमें उनके नवयुवक नेताकी दुर्द्दम्य शक्ति और अनुरागातिशय्य उत्पन्न हो गया था। इससे पहले, कि सूर्य्यदेव उदित हो मानवीय पापके उपस्थित होनेवाले भीषण दृश्यको देखें, प्रत्यूषके धुंदले तथा कुहरेके घना-न्धकारमें उभयपक्षकी फौजें परस्पर सम्मुखीन हुईं।

इतिहासमें कास्टिग्लिओन-युद्धके नामसे प्रसिद्ध एक रक्तपूर्ण तथा फैसलेके संघर्षमें अष्ट्रियनपर अन्तिम चोट पड़ी। वह सब भीषण हत्याकाण्डपूर्वक पराजित किये गये। दिनभर अष्ट्रियन सिपाही सरपट भागते गये, फ्रान्सीसी निर्म्मम हत्यायें करते हुए उनका पीछा करते गये। यह कार्य्य तबतक होता रहा, जबतक नैश अन्धकारने फ्रान्सीसियोंकी आँखोंसे हांपते-काँपते और रक्त बहाते भगेड़ुओंको छिपा न दिया। अभी एक सप्ताह भी बीता न था; जब साठ सहस्र याद्धाओंकी यह बलदर्पित सैन्य भावी विजयकी प्रत्याशासे आनन्द अनुभव करती चमकीले झण्डों तथा विजयगानके साथ ट्रेण्ट नगरकी प्राचीर परित्यागपूर्वक युद्धस्थलकी ओर अग्रसर हुई थी। छः दिनमें इस सैन्यके चालीस सहस्र सिपाही मरने, आहत होने या कैदी बननेसे नष्ट हुए। इस सैन्यके नष्ट होनेवाले सिपाहियों-

की संख्या नेपोलियनके अधीनस्थ समूची सैन्यकी संख्याकी अपेक्षा दश हजार अधिक थी। अष्ट्रियनकी इस विशाल सैन्यके केवल बीस हजार छिन्न, छिन्न और रण-जीर्ण भगोड़े भागनेमें समर्थ हुए थे।

आत्मग्लानि तथा विषादकी पराकाष्ठा प्रकट करती हुई पराजित अष्ट्रियन सैन्य अपनी सत्वर तथा सम्पूर्ण पराजयका समाचार वहनपूर्वक ट्रेण्ट वापस लौटी। इधर इस युद्धमें नेपोलियनकी सैन्यके सात सहस्र योद्धा काम आ गये। इन आश्चर्यप्रद विजय-समूहका श्रेय सर्वतोभावसे नेपोलियनकी बुद्धिसे आरोपित किया गया। इससे पहले इतिहासने ऐसी विजयसमष्टि लिपिबद्ध की न थी। विजयी सिपाहियोंने इन विजयसमूहको,—"छः दिनका युद्ध" के नामसे निर्देश किया। उनके मनमें उनके उन प्रधान सेनापतिके प्रति उत्पन्न होनेवाली भक्तिकी सीमा न रही। लोदीके पुलका भीषण पथ अतिक्रम करनेपर जिन रणदर्शी योद्धाओंने नेपोलियनको 'कारपोरल' उपाधिसे विभूषित किया था; उन योद्धाओंने नेपोलियनको इस समरमें चिरस्मरणीय विजय प्राप्त करनेके पुरस्कारस्वरूप 'सरजण्ट' पदपर उन्नत किया।

वर्मसरके ट्रेण्टसे उतरनेपर रोम, वेनिस और नेपिलसकी जिन अभिजाततन्त्री सरकारोंने विश्वासघातकतापूर्वक अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग की थी और नेपोलियनको नष्ट समझ उनका विरुद्धाचरण किया था; वह सरकारें अब अतीव भीषण प्रतिशोधका पूर्व्वानुमानकर अतीव त्रासाहत हुईं। किन्तु उन विजयीने उनके प्रति अतीव सदय व्यवहार किया। उनको केवल इतनी सूचना दी, कि तुम्हारे व्यवहारसे मैं सम्पूर्ण अवगत हूँ और अबसे मैं तुम्हारा निरीक्षण करता रहूँगा। फिर भी; मिथ्याप्रतिज्ञा करनेवाले पोपके दूत कारडिनल मेटेईको उन्होंने अपनी सैन्यके सदर स्थानमें बुलाया। यह कारडिनल जानते थे, कि अपराध घटानेके सम्बन्धमें एक शब्द भी उच्चारित किया जा न सकता था, इसलिये उन्होंने आत्मरक्षा-

का यत्न न किया। पदमर्य्यादामें उच्च तथा वयसमें पूज्य यह वयो-वृद्ध पुरुष उस नवयुवक विजयीके सम्मुख एक बालककी विनयसे अवनत हुए और बोले,—"पेक्केवा! पेक्केवी!" यानी,—"मैंने अप-राध किया है! मैंने अपराध किया है!" इस प्रत्यक्ष अनुतापने नेपोलियनको विरक्त कर दिया। उन्होंने हास्य और घृणापूर्ण भावसे इन्हें एक मठमें बैठ तीन मासतक उपवास तथा प्रार्थना कर-नेके प्रायश्चित्तके दण्डसे दण्डित किया।

इन हलचलके दिनों लोम्बार्डीके अधिवासी अपनी प्रतिज्ञानुसार फ्रान्सीसियोंके शुभचिन्तक रहे। इसपर उनके नाम एक सुन्दर तथा उच्चभावपूर्ण पत्र लिख नेपोलियनने कहा,—"जब फ्रान्सीसी सैन्य पीछे हट रही थी और अष्ट्रियाके दलभुक्त लोगोंने स्वतन्त्रताके पक्षको पद-दलित समझ लिया था; तब फ्रान्सीसी सैन्यके पीछे हटनेको मात्र सैनिक गति न जानकर भी आपलोगोंने अपने स्वाधीनताके प्रेम तथा फ्रान्सीसियोंके प्रतिके अपने अनुरागको अविराम भावसे स्थिर रखा था। अपने इस कार्य्य द्वारा आपलोग फ्रान्सीसी जातिका आदर संग्रह करनेके उपयुक्त हुए हैं। आपलोगोंके देशके अधि-वासी दिन-दिन स्वाधीनताके योग्य होते जाते हैं और वह शीघ्र ही ऐश्वर्य्यपूर्वक जगत्के रङ्गमञ्चपर प्रकट होंगे।"

अविराम युद्धके दिनोंकी इस हलचलके दृश्योंके बीच जब शत्रु-सैन्यके छिन्न-भिन्न टुकड़े उद्विग्नतापूर्वक प्रत्येक ओर भटक और अपना पीछा करनेवालोंकी भीषण शक्तिसे बचनेका यत्न कर रहे थे; तब नेपोलियन कैद होनेसे दैवात् बाल-बाल बच गये। उस अव-सरपर वह अपने उसी प्रमाणनिरपेक्ष नैपुण्य तथा निष्पत्तिकी त्वरा-से बचे, जिसने उनका साथ कभी छोड़ा न था। शत्रुका पीछा करनेका कार्य्यकरणका उपाय करते हुए, वह अपने दल-बल तथा रक्षक सवारोंके साथ अपना घोड़ा उड़ाते एक क्षुद्र ग्राममें पहुँचे। दूसरी ओर चार सहस्र अष्ट्रियन सिपाहियोंका एक दल अपनी प्रधान

नेपोलियनका नैपुण्य ।
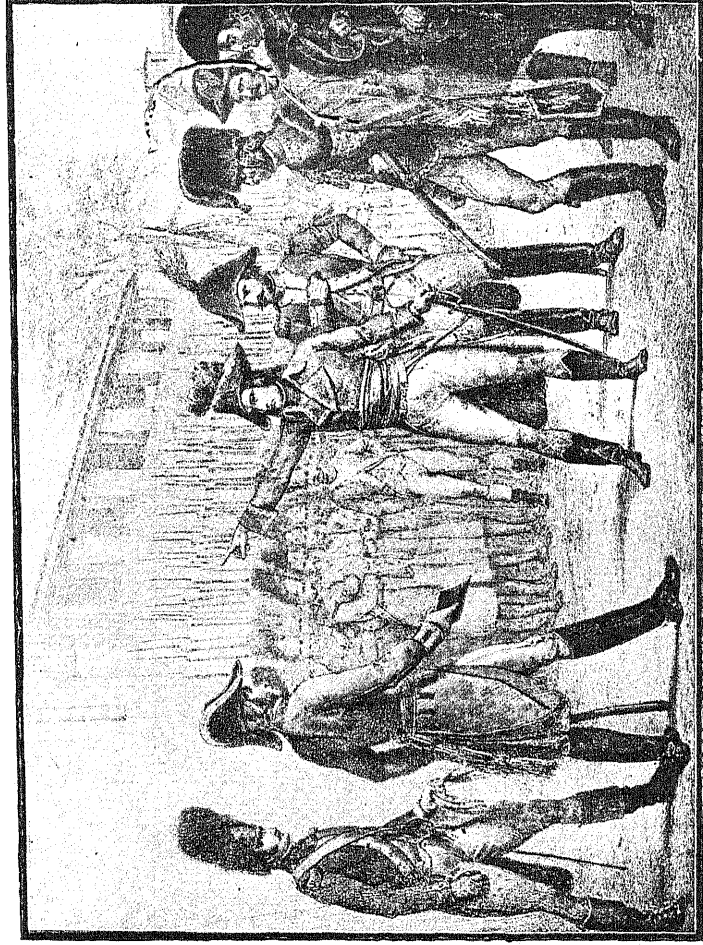
"वह सब यदि पाँच मिनटके अन्दर हथियार रख न देंगे, तो जानसे मारे जायँगे।"

[पृष्ठ २१२

सैन्यसे जुदा हो सारी रात पहाड़ोंमें भटकता रहा। इसके उपरान्त यह दल एकाएक और अचिंत्यभावसे नेपोलियनके साथी इन कोई एक सहस्र सिपाहियोंके सम्मुख पहुँच गया। अष्ट्रियनने फ्रान्सीसियोंके पास एक अफसर श्वेत झण्डेके साथ तुरन्त ही भेजा और उन्हें हथियार रख देनेकी आज्ञा दी। नेपोलियनने अपनी विचित्र अचला बुद्धिके प्रसादसे अपने बहुसंख्यक पार्श्ववरोंको तुरन्त घोड़ोंपर सवार होनेकी आज्ञा दी। इसके उपरान्त उन्होंने अपनी रक्षक सैन्यके योद्धाओंको अपनी चारो ओर एकत्रकर श्वेत झण्डा लानेवाले उस अष्ट्रियन दूतको अपने सम्मुख उपस्थित करनेकी आज्ञा दी। यथानियम यह दूत जिस समय नेपोलियनके सम्मुख पहुँचाया गया; उस समय उसकी आँखोंमें पट्टी बँधी थी। जिस समय उसकी आँखोंकी पट्टी हटा दी गई; उस समय उसे यह देख बड़ा ही आश्चर्य्य हुआ, कि वह अपने सम्पूर्ण शानदार दल-बलसे परिवेष्टित फ्रान्सीसी सैन्यके सर्वप्रधान सेनापतिके सम्मुख खड़ा था।

नेपोलियनने क्रोधका स्वर बना पूछा,—"इस अपमानका क्या अभिप्राय है? अपनी सैन्यके बीच अवस्थित फ्रान्सीसी प्रधान सेनापतिके आत्मसमर्पणका प्रस्ताव ला तुम गुस्ताखी करने आये हो? जिन लोगोंने तुम्हें मेरे पास भेजा है, उनसे वापस जाकर कहो, कि वह सब यदि पाँच मिनटके अन्दर अपने हथियार रख न देंगे, तो जानसे मारे जायेंगे।" उस घबराये हुए अफसरने रुक-रुककर क्षमाप्रार्थना की। इसपर नेपोलियनने कठोरतापूर्वक उत्तर दिया,—"जाओ! यदि तुमलोग स्वेच्छानुसार अभी आत्मसमर्पण न करोगे, तो तुम लोगोंने हमारा जैसा अपमान किया है, उसके बदले मैं तुम्हारे प्रत्येक मनुष्यको गोली मरवा दूँगा।" आत्मनिर्भरताके इस भावसे प्रतारित हो विपदसे खिन्न और हतोत्साह अष्ट्रियनने अपने हथियार रख दिये। उन्हें शीघ्र ही यह जान बड़ी आत्मग्लानि हुई, कि उन्होंने अपनेसे एक चौथाई शत्रु-सैन्यके हाथ आत्मसमर्पण किया और जिन

फ्रान्सीसी विजेताकी चोटोंके कारण उनके साम्राज्यका सिंहासनतक डग-डग हिल रहा था, उस विजेताके कैद करनेका सुअवसर उन्होंने अपने हाथोंसे निकल जाने दिया।

इसी युद्धके समय एक रात नेपोलियन वेश बदल सन्तरियोंको देख-भालकर यह निश्चय करनेके लिये निकले, कि फ्रान्सीसी सैन्यका प्रत्येक सन्तरी अपनी उपस्थित विलक्षण विपद्में उपयुक्त रूपसे सतर्क है या नहीं। उस समय एक सन्तरी दो राहोंकी सन्धिमें खड़ा किया गया था। उससे कह दिया गया था, कि वह किसीको भी उन दोनोंमें एक भी राहसे आने-जाने न दे। जब नेपोलियन उस सन्तरीके सम्मुख पहुँचे, तब वह उन्हें पहचान न सका। उसने उनकी ओर अपनी सङ्गीन सीधी की और उन्हें वापस लौटनेके लिये कहा। नेपोलियनने कहा,—"मैं एक बड़ा अफसर हूँ, गश्त लगा यह देखनेके लिये निकला हूँ, कि सब तरहकी खैरियत है या नहीं।" प्रत्युत्तरमें उस सिपाहीने कहा,—"मुझे तुम्हारी परवा नहीं। मुझे आज्ञा मिली है, कि मैं किसीको भी इन राहोंसे जाने न दूँ। तुम यदि स्वयं छोटे कारपोरेल होगे, तो भी इन राहोंसे जाने न पाओगे।" इसका फल यह हुआ, कि नेपोलियन पीछे लौटनेपर बाध्य हुए। दूसरे दिन उन्होंने उस सिपाहीके चरित्रके सम्बन्धमें जाँच की। जब उन्हें उसके सच्चरित्र होनेका समाचार मिला, तब उन्होंने उसे अपने सम्मुख बुलाया और उसकी विश्वस्तताकी प्रशंसाकर उसे सिपाहीके पदसे अफसरके पदपर उन्नत किया।

नेपोलियन अपनी विजयिनी सैन्यके साथ फिर माण्टुआ वापस लौटे। उनकी अनुपस्थितिमें उन अवरुद्ध सिपाहियोंने इस दुर्गकी दीवारोंके बाहर निकल घेरेके समस्त कार्य्य नष्ट कर दिये थे। वह सब नेपोलियनकी घेरेकी एकसौ चालीस बड़ी-बड़ी तोपें माण्टुआ नगरमें खींच ले गये थे। सिवा इसके उन सबने प्रचुरपरिमित रसद, साठ सहस्रसे अधिक गोले तथा फटनेवाले गोले और बन्दूक

सहस्र सहायक सिपाही प्राप्त किये थे। उस समय नेपोलियनके पास घेरेका उपयुक्त सामान न था। फिर भी; अष्ट्रिया नेपोलियनपर आक्रमण करनेके लिये कोई और भीषण सैन्य संग्रह कर सकता था और उस सैन्यके सम्मुखीन होनेके लिये नेपोलियनको माण्टुआका घेरा फिर भङ्ग करना पड़ सकता था। इसलिये इस बार नेपोलियनने माण्टुआको केवल वेष्टन द्वारा अवरुद्ध किया। उस समयके भीषण युद्धसे निवृत्त होनेपर उभयपक्षकी फौजोंने तीन सप्ताहतक विश्राम-सुख उपभोग किया। अष्ट्रिया-सरकारने अदम्य दृढ़तापूर्वक उस समय भी फ्रान्सीसियोंसे सन्धि करना अस्वीकार किया। प्रकृतपक्षमें अष्ट्रियाने अपनी पताकापर मानो यह अङ्कित कर दिया था,—"फ्रान्सीसी प्रजातन्त्रका ध्वंस साधित किया जायेगा।" उस समय नेपोलियन अष्ट्रियाकी दो अतीव भीषण फौजोंके टुकड़े-टुकड़े कर चुके थे। यह दोनों फौजें नेपोलियनकी अपनी सैन्यकी अपेक्षा तिगुनी अधिक बलसम्पन्न थीं।

प्रजातन्त्रके कुचलनेके लिये समग्र अष्ट्रिया-साम्राज्यका उत्साह और दम्भ एक तृतीय विशाल सैन्यका सङ्गठन करनेके लिये जाग उठा। तीन सप्ताहके अवसरमें ट्रेण्ट स्थानमें अष्ट्रिया-सेनापति वर्मसरके अधीन पचपन सहस्र योद्धा एकत्र हुए। बीस सहस्र सिपाही माण्टुआमें आबद्ध थे; इसतरह वर्मसरके अधीन सब मिलाकर पचहत्तर हज़ार योद्धा हो गये। नेपोलियनको केवल उतने ही सहायक सिपाही मिले,जितने सिपाहियोंसे उनकी सैन्यका क्षतिपूरण हुआ। उस समय उनकी सैन्यमें एकबार फिर केवल तीस सहस्र सिपाही हो गये। यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि उनकी इस सैन्यकी अपेक्षा उनकी सैन्यको छेदनेवाली शत्रु-सैन्यकी संख्या द्विगुणसे भी अधिक थी।

सितम्बर मासके आरम्भमें अष्ट्रियन सैन्य एकबार फिर गतिशील हुई। वह टाइरोल पर्व्वतमालासे उतर माण्टुआका उद्धार करनेके

लिये अग्रसर हुई। ट्रेण्टसे कोई पाँच कोस दक्षिण रोवेरेडो एक अतीव सुदृढ़ स्थान है। इस स्थानमें पचीस सहस्र सिपाहियोंको अधिनायकतामें सेनापति डेविडोविचको सेनापति वर्मसरने छोड़ा। उद्देश्य यह था, कि फ्रान्सीसी फौजें टाइरोलमें बलपूर्व्वक प्रवेश करने न पायें। इसके उपरान्त वर्मसर तीस सहस्र सिपाहियोंको साथ ले ब्रेण्टा उपत्यकाके सङ्कीर्ण गिरिसङ्कटसे चल उस अवरुद्ध दुर्गका उद्धार करनेके लिये इस उपत्यकाके समीप उतर आये। उधर बीस सहस्र सिपाही माण्टुआमें थे। स्थिर हुआ, कि यह सब वर्मसरके अधीनस्थ तीस सहस्र सिपाहियोंके साथ कार्य्य करें। इसतरह लड़नेवाले सिपाहियोंकी संख्या पचास सहस्र हो जाये और वह सब नेपोलियनकी सैन्यपर आगे और पीछे दोनो ओरसे आक्रमण करें।

अष्ट्रियन फौजोंके इस पुनर्विभागको नेपोलियनने सजीव सन्तोषपूर्व्वक देखा। उन्होंने चुपकेसे अपने समस्त अवलम्बन संग्रह किये और उस दण्डाज्ञाप्राप्त अष्ट्रियन सैन्यके विभागपर घातक रूपसे टूट पड़नेपर प्रस्तुत हुए, जिसे वर्मसर अपने पीछे छोड़ आये थे। जैसे ही सदलबल वर्मसर ब्रेण्टाकी उपत्यकासे होते हुए रोवेरेडोसे कोई तीस कोस दूर बेस्सानो पहुँचे; वैसे ही समूची फ्रान्सीसी सैन्य गतिशील हुई। नेपोलियन अपने जिस आखेटपर छलांग भरनेको थे; वर्मसर उस आखेटको अब किसी तरहका भी साहाय्य पहुँचा न सकते थे। नेपोलियनकी सैन्य एडिज उपत्यकाके सम अन्तरालसे दौड़ती हुई आगे चली। भोजन या विश्राम करनेके लिये भी उसने एक क्षणका समय न पाया। ४ थी सितम्बरको तड़के गजरदम जैसे ही पूर्व गगनमें प्रातःकालका प्रथम धुँदलका प्रकट हुआ, वैसे ही नेपोलियन अपने आश्चर्य-चकित शत्रुपर तूफानकी तरह टूट पड़े।

यह युद्ध छोटा, रक्तपूर्ण और फैसलेका हुआ। अष्ट्रियन भीषण

संहारपूर्वक नाश किये गये। जिस समय भय-विह्वल अष्ट्रियन भेड-बकरियोंकी तरह छत्रभङ्ग हो भागने लगी ; उस समय फ्रान्सीसी रिसालेके टुकड़े अपनी खून टपकती तलवारें लिये उनमें घुस उनका संहार करने लगे। इसके फलसे कोसोंकी भूमि कटे हुए सिपाहियोंकी लाशोंसे ढंक गई। सात सहस्र कैदियों तथा बीस तोपोंने विजयीको विजयकी शोभा बढ़ाई। इस अभागी सैन्यका पराजित अवशेष दूराति दूर वापस भाग पर्व्वतोंके सङ्कीर्ण स्थानोंमें जा समाया। ऐसा ही यह रोवेरेडोका युद्ध था। नेपोलियन सदा अपनी इस विजयको अपनी अतीव उज्ज्वल विजयोंमें अन्यतम विजय समझते थे। दूसरे दिन प्रात:-काल नेपोलियनने विजयपूर्व्वक ट्रेण्ट नगरमें प्रवेश किया। उन्होंने तुरन्त ही टाइरोलके अधिवासियोंके नाम अपनी शानदार घोषणा निकाल उन्हें इस बातका विश्वास दिलाते हुए कहा, कि हम विजयके लिये नहीं, हम शान्तिके लिये ही युद्ध करते हैं और हम टाइरोलके अधिवासियोंके शत्रु नहीं। उन्होंने इस घोषणामें यह भी कहा, कि अङ्गरेजोंके धन तथा साहाय्यसे उभर अष्ट्रिया-सम्राट् फ्रान्सीसी प्रजातन्त्रके विरुद्ध पश्चात्तापशून्य युद्ध चला रहे हैं और यदि टाइरोलके अधिवासी फ्रान्सीसियोंके विरुद्ध शस्त्र धारण न करेंगे, तो उनके शरीर, सम्पत्ति और राजनीतिक स्वत्वोंकी रक्षा की जायेगी। उन्होंने प्रयोजनानुसार देशके भीतरके शासनकार्य्यकी व्यवस्था करनेके लिये टाइरोलके अधिवासियोंको बुलाया और उनके अपने आईनके तत्त्वावधानका भार उन्हींके हाथ अर्पित किया।

इस युद्धके बाद ही रात बीतनेसे पहले नेपोलियन एकबार फिर सज-धजकर अपनी सैन्य के शीर्षस्थानमें जा जमे और समूची फ्रान्सीसी सैन्य तितर-बित्तर हो आगे बढ़ते हुए वर्मसरपर टूट पड़नेके लिये ब्रेण्टा गिरिसङ्कटसे उतरती हुई नीचेकी ओर झपटी। अष्ट्रियन सेनापति वर्मसरके पास तीस हज़ार सिपाही थे।

नेपोलियन अपने साथ केवल तीस हजार सिपाही ले जा सकते थे। फिर भी, वह यह चाहते थे, कि उन्हें इसके बदलेकी सुविधा शत्रुपर एकाएक टूट पड़नेका लाभ प्राप्त हो ।

नेपोलियनकी सैन्यने तीस कोसकी यात्रा जैसी त्वरासे सम्पन्न की, वैसी त्वरासे उससे पहले और किसी सैन्यने यात्रा करनेका यत्न किया न था। ६ ठीं सितम्बरकी सन्ध्याको वर्मसर यह सुन भय-विह्वल हुए, कि डेविडोविचकी सैन्य नष्ट कर दी गई। दूसरे दिन दिन निकलनेसे पहले वह अपने पश्चाद्भागमें नेपोलियनकी तोपोंका घननाद सुन जागे। इस विचित्र तथा अश्रुतपूर्व्व युद्ध-विद्यासे घबराये हुए उन वृद्ध तथा वीर सेनापतिने यथासम्भवशीघ्र अपनी सैन्यको ले बसानो स्थानमें एकत्र किया। नेपोलियनने उन्हें युद्धके लिये प्रस्तुत होनेका केवल कुछ चणका समय दिया। अब उभयपचकी सैन्यको यह जान पड़ने लगा था, कि नेपोलियन अजेय थे। वारंवारकी विजयसे फ्रान्सीसियोंके हौसले बढ़े हुए थे। उधर अपरिवर्त्तित निर्विघ्न पराजयने अष्ट्रियनके दिल छोटे कर दिये थे। बेसानोका युद्ध और कुछ नहीं,—रोवेरडोके युद्धके रक्तपूर्ण दृश्यका पुनःप्रवर्त्तन था। भीषण हत्याकाण्ड चल रहा था, ऐसे समय सूर्य्यदेव अस्ताचलगामी हुए और अन्धकारकी नकाबने उस भीषण दृश्यको मानवीय दृष्टिसे छिपा दिया। घोड़े तथा मनुष्य, कुचले तथा मरते हुए मनुष्य, आहत तथा मृत योद्धा निर्व्विशेष भावसे मिल एक दूसरेपर गिर ढेर बने हुए थे। आहतोंका आर्त्तनाद नैश वायुका साहाय्य पा दीर्घ शब्दयुक्त हो रहा था,—दूर—अतिदूर—पीछा करनेवालों तथा भागनेवालोंकी तोपोंके गभीर शब्द पर्व्वतमालाओंमें प्रतिध्वनित हो रहे थे। मनुष्यत्वके स्वत्वोंकी ओर ध्यान देनेका समय न था। मृत मनुष्य बिना गाड़े छोड़ दिये गये थे और मुमुर्ष तथा मृत योद्धाओंको एक भी प्याला जल देनेके लिये सैन्य-पंक्तिसे एक भी सिपाही निकाला जा न सका था। उद्धार नहीं,—ध्वंस ही उपस्थित समयका कार्य्य था।

कुछ ही दिन पहले वर्मसर पचपन सहस्र योद्धाओंको जिस बलदर्पित सैन्यके साथ ट्रेण्टसे चले थे; उस सैन्यके केवल सोलह सहस्र बचे हुए सिपाही ले आत्मरक्षा करनेके लिये माण्टुआ दुर्गमें जा घुसे। नेपोलियनने भीषण उत्साहके साथ लौटते हुए वर्मसरका पीछा किया। वह प्रत्येक उच्च स्थानमें तोपें लगा वर्मसरकी लौटती हुई सैन्यके बीच गोले उतारते थे। जब वर्मसर माण्टुआ पहुंचे, तब इस दुर्गके सिपाही उनके साहाय्यके लिये निकले। वह सब वर्मसरके सिपाहियोंके साथ मिल नेपोलियनपर टूट पड़े। सेण्ट जार्जमें यह युद्ध हुआ और यह युद्ध जैसा प्रचण्ड; वैसा ही खूनी भी हुआ। प्रत्येक स्थानमें अष्ट्रियन पराजित किये और उस किलेकी दीवारोंके भीतर मार भगाये गये। नेपोलियनने एकबार फिर माण्टुआका अवरोध आरम्भ किया। वर्मसर अपनी सैन्यके रक्ताक्तकलेवर टुकड़ोंके साथ इस किलेमें सम्पूर्णरूपसे घिर गये। इसतरह यह 'दश दिनका युद्ध' समाप्त हुआ। इस थोड़ेसे समयमें नेपोलियनने अपनी सैन्यकी अपेक्षा द्विगुण शत्रुकी तृतीय सैन्यका संहार किया। उन्होंने अपने शत्रुओंसे मैदान साफ़ कर दिया। एक भी मनुष्य उनका बाधक बननेके लिये उनके सामने न रहा। इन विचित्र विजयोंने सारे यूरोपको आश्चर्यकी उत्तेजनासे उत्तेजित कर दिया। इससे पहले युद्धके आधुनिक या प्राचीन इतिहासमें ऐसी विजयोंका विवरण लिपिबद्ध किया न गया था।

जिस समय फ्रान्सीसी फौज रोवेरडोसे त्वरापूर्व्वक लौटनेमें प्रवृत्त थी; उस समय एक असन्तुष्ट फ्रान्सीसी सिपाहीने अपनी सैन्य-पंक्तिसे निकल अपने फटे हुए वस्त्र दिखा नेपोलियनसे कहा,—"हम सिपाही इतनी बड़ी-बड़ी विजय पाकर भी चीथड़े लटकाये हुए हैं।" नेपोलियनको इस बातकी चिन्ता रहती थी, कि उनके सिपाहियोंमें असन्तोष फैलने न पाये। इसीलिये उन्होंने उस सिपा-

हीकी बात सुन अपने चिरभ्यस्त विचित्र कौशलानुसार उस सिपाही-को सदय दृष्टिसे देख कहा,—"किन्तु मेरे वीर मित्र! तुम एक बात भूलते हो। यदि तुम नया कोट पहन लोगे, तो तुम्हारा सम्मानसूचक क्षत-चिह्न लोगोंको दिखाई न देगा।" यह समयो-चित प्रशंसा सुन सम्पूर्ण सैन्य-पंक्तिने प्रशंसापूर्ण ध्वनि की। इस घटनाका समाचार विद्युद्वेगसे समूची फ्रान्सीसी सैन्यमें फैल गया और इसके फलसे इस सैन्यका प्रत्येक सिपाही नेपोलियनके प्रति और अधिक प्रेम करने लगा।

बेस्सेनोके युद्धकी पूर्व्वरात्रिको आगे बढ़नेकी उत्कण्ठासे नेपोलि-यन अपनी प्रधान सैन्यसे बहुत आगे बढ़ गये थे। उन्होंने सारे दिन भोजन न किया था और कई रात सोये न थे। उनके साथके एक दरिद्र सिपाहीके झोलेमें रोटीका एक छिलका था। उसे उसने दो भागोंमें विभक्त किया और उनमें एक भाग अपने क्लान्त तथा अनाहारसे मृतप्राय सेनापतिको प्रदान किया। इस परिमित आहारके उपरान्त फ्रान्सीसी सैन्यके वह प्रधान सेनापति अपना लबादा ओढ़ उसी सिपाहीकी बगलमें भूमिपर अरक्षित रूपसे पड़ एक घण्टे तक सोये। इस घटनाके कोई दश वर्ष बाद जब नेपोलियन फ्रान्स-सम्राट् हो बेलजियममें विजयसूचक दौरा करते हुए एक सैन्यका निरीक्षण कर रहे थे, तब उस सैन्यकी पंक्तिसे उसी सिपाहीने निकल उनसे कहा,—"शहंशाह! बेस्सेनोके युद्धकी पूर्व्वरात्रिको जब आप क्षुधित थे; तब मैंने अपनी रोटीके छिल-केका एक भाग आपको दिया था। अब मैं आपसे अपने वृद्ध तथा दरिद्र पिताकी रोटीकी भिक्षा माँगता हूँ।" नेपोलियनने उसी समय उस वृद्धके लिये पेनशनकी व्यवस्था की और उस सिपाहीको लेफटिनेण्टी देनेका वादा किया।

बेस्सानोके युद्धके उपरान्त पीछा करनेकी उग्रतासे मथित हो अपने घोड़ेको बड़ी ही फुरतीसे उड़ा अपने कुछ साथियोंके साथ

नेपोलियन अपनी प्रधान सैन्यसे बहुत आगे एक क्षुद्र ग्राममें पहुँचे। ऐसे समय वर्मसर अष्ट्रियन योद्धाओंको एक सुदृढ़ सैन्य ले मैदानमें निकल आये। उन्हें एक कृषक स्त्रीसे सूचना मिली, कि अभी-अभी नेपोलियन उसकी झोंपडीके द्वारके आगेसे होकर गये हैं। यह सुन वर्मसरके आनन्दकी सीमा न रही। वह समझे, कि नेपोलियन यदि पकड़ लिये गये, तो उनकी सारी क्षतिका प्रतिफल उन्हें मिल जायेगा। इस लाभकी आशासे नेपोलियनके पकड़नेके लिये उन्होंने अपने सवारोंके दस्ते चारो ओर दौड़ाये। उन्हें नेपोलियनके पकडे जानेका इतना विश्वास हो गया था, कि उन्होंने उन दस्तोंको नेपोलियनको जोवितावस्थामें पकड लानेका आदेश दिया था। किन्तु नेपोलियनके घोड़ेकी द्रुतगतिने नेपोलियनको शत्रुके हाथ पड़ने न दिया।

इस भीषण युद्धके समय जब सैन्यको श्रम करनेके लिये प्रत्येक सम्भव उत्साहकी आवश्यकता थी; तब नेपोलियन साधारण सिपाहीकी तरह उन समस्त स्थानोंमें जा खड़े होते थे, जिन स्थानोंमें विपद्‌की सम्भावना सर्वापेक्षा अधिक होती थी। एक स्थलमें एक अग्रगामी सिपाहीने अपने उन प्रधान सेनापतिको अतीव विपद्‌में देख एकाएक कर्त्तृत्वसूचक भावसे उनसे कहा,—"हट जाओ,—यहाँसे।" यह सुन नेपोलियनने उस सिपाहीपर अपनी तीक्ष्ण दृष्टि निक्षेप की। इसपर उस योद्धाने अपनी सुदृढ भुजासे नेपोलियनको एक किनारेकर कहा,—"यदि तुम मारे गये, तो इस सङ्कटसे हमारा उद्धार कौन करेगा?" यह कह उस वीरने अपनी देह नेपोलियनके सम्मुख कर दी। नेपोलियन उस सिपाहीके मोतियोंमें तुलने योग्य इस गुणको समझ गये और उसके इस कार्य्यके लिये उसे उन्होंने कोई कठोर बात न कही। इस युद्धके उपरान्त उन्होंने उस अग्रगामी सिपाहीको अपने सम्मुख उपस्थित होनेकी आज्ञा दी। उसको अपने सामने पा उन्होंने दयापूर्व्वक

अपना हाथ उसके कन्धेपर रख कहा,—"मित्रवर! तुम्हारी सदाशयपूर्ण निर्भीकताकी मैं प्रतिष्ठा करता हूँ। इसी घण्टे तुम्हारे कन्धेका सिपाहीका फीता अफसरोंके झब्बेसे बदल जायेगा।" वह सिपाही उसी समय अफसरके पदपर उन्नत किया गया।

फ्रान्सीसी सैन्यके सभी अफसर अपने उन नवयुवक सेनापतिकी धीशक्ति तथा औदार्य्य देख उनके वशवर्त्ती हो गये थे। वह उनका महत् प्राधान्य समझ गये थे और जब उनके पास जाते, तब भक्ति और अदबसे जाते थे। किन्तु साधारण सिपाही उन्हें अपने पिताकी तरह प्यार करते और बच्चोंजैसी हृद्यतासे स्वाधीनतापूर्व्वक उनके पास जाते थे। एकबार इन भीषण लड़ाइयोंमें एक लड़ाई चल रही थी। देरतक यह समझमें न आया था, कि विजय किस पक्षकी होगी। ऐसे समय नेपोलियनकी अन्वेषणकारिणी दृष्टिको शत्रुकी गतिकी एक भूल दिखाई दी। इसे देख वह उसी समय इस भूलका लाभ उठानेपर उद्यत हुए; ऐसे समय युद्धके धुएं तथा धूलिसे अटा एक साधारण सिपाही अपनी सैन्य-पंक्तिसे उछल नेपोलियनके सम्मुख पहुँचा और उनसे उसने कहा,—"सेनापति! उस स्थानमें एक रिसाला भेज दो; बातकी बातमें शत्रु पराजित होगा।" प्रत्युत्तरमें नेपोलियनने कहा,—"शरीर! तूने मेरे मनका रहस्य कैसे जान लिया?" कुछ ही क्षणके उपरान्त फ्रान्सीसी रिसालेके प्रचण्ड आक्रमणोंके कारण अष्ट्रियन भय-विह्वल हो भागने लगे। जैसे ही यह युद्ध समाप्त हुआ; वैसे ही नेपोलियनने, ऐसी सैनिक बुद्धि दिखानेवाले उस सिपाहीको अपने पास बुलाया। वह न मिला; उसकी लाश युद्धस्थलमें पड़ी मिली। एक गोली उसके माथेमें घुस गई थी। वह यदि जीवित रहता, तो नेपोलियनके उस उज्ज्वल छायापथका एक नक्षत्र बनता, जिससे नेपोलियनका राजसिंहासन अलङ्कृत रहता था।

वेस्मेनोके युद्धके बादकी रात्रिको निर्मेघ गगनमें उज्ज्वल चन्द्र उदित हुए। उनकी उज्ज्वल रश्मियोंमें वह खूनी युद्धस्थल चमक उठा। विजयके उपरान्त कदाचित् ही अपनी आत्माका उल्लास तो उल्लास ;—हर्ष भी प्रकट न करनेवाले नेपोलियन अपने नियमानुसार मरते हुए तथा मृत योद्धाओंसे परिपूर्ण उस युद्धके मैदानमें अपने घोड़ेपर सवार हो इधर-उधर घूमते रहे। उस समय वह निस्तब्ध तथा चिन्तित थे, दुःखद विचारोंमें डूबे जान पड़ते थे।

अर्द्धनिशा उपस्थित हुई। युद्धका नाद और हलचल मिट चुकी थी; तारोंसे प्रकाशित शान्तिमय रजनीकी गभीर निस्तब्धता केवल आहत तथा मरते हुए योद्धाओंकी हाय-हायसे भङ्ग हो जाती थी। ऐसे समय एक कुत्ता अपने मृत स्वामीके लबादेके नीचेसे उछल नेपोलियनके पास आया। जान पड़ता था, कि उन्मत्तकी तरह वह उनके साहाय्यकी प्रार्थना करता था। इसके उपरान्त वह दौड़कर उस विकृताङ्ग लाशके समीप गया और उसका मुँह तथा हाथ चाट चाटकर अतीव करुणोत्पादक स्वर करने लगा। नेपोलियन यह हृदयवेधी दृश्य देख अतीव विचलित हुए। इस दृश्यपर विचार करनेके लिये उन्होंने आप ही आप अपना घोड़ा रोक दिया। कई वर्ष बाद इस दृश्यका वर्णन करते हुए उन्होंने कहा था,— "नहीं जानता कैसे, किसी भी युद्धस्थलके किसी दृश्यने मेरे मनपर इस दृश्यजैसा प्रभाव उत्पन्न न किया। उस समय मैंने विचार किया, कि उस मनुष्यके साथियोंमें उसके बहुतेरे मित्र होंगे, किन्तु उस समय वह सभी द्वारा परित्यक्त हो एकमात्र अपने विश्वस्त कुत्तेके साथ वहाँ पड़ा था। मनुष्य भी क्या ही विचित्र जीव है! उसके मनोभाव कैसे रहस्यपूर्ण होते है! मैंने बिना किसी मनोवेगके लड़ाइयोंकी आज्ञायें दी हैं, जिनके फलसे बड़ी-बड़ी सैन्यके भाग्योंके फैसले हुए हैं। मैंने अश्रुरहित लोचनसे अपनी उन आज्ञाओंको कार्य्यमें परिणत होते देखा है, जिनके फलसे मेरे देशके सहस्र-सहस्र

अधिवासी मारे गये हैं। फिर भी; उस स्थलमें उस कुत्तेके दु:खपूर्ण आर्त्तनादसे मेरी सहानुभूति जिस अतीव गभीरता तथा अनिवार्य्य रूपसे विचलित हुई थी, उस रूपसे और कभी विचलित हुई न थी। इससें सन्देह नहीं, कि उस क्षण याचक शत्रु मुझसे जिस बातकी याचना करता, उसको मै किसी तरह भी अस्वीकार कर न सकता।"

अष्ट्रिया अब भी अवनत न हुआ। एकबार फिर अष्ट्रिया-सरकारने प्रजातन्त्री फ्रान्ससे सन्धि करना अस्वीकार किया। इसमें सन्देह नहीं, कि यह सरकार अपनी यह संलग्नशीलता यदि किसी अच्छे कार्य्यमें दिखाती, तो उसकी यह संलग्नशीलता प्रशंसाके योग्य समझी जाती। अष्ट्रिया-साम्राज्यकी शक्तियाँ चौथी विशाल सैन्य सङ्गठित करनेके लिये एकबार फिर जगाई गईं। इङ्ग-लेण्ड इस युद्धकी आत्मा था। जहाँ-जहाँ उसकी सैन्य या जङ्गी जहाज पहुँच सकते थे, वहाँ-वहाँ वह फ्रान्सका विरोध करता था। उसने अष्ट्रियन सैन्यको अपने सुदृढ़ सहयोग और सुवर्णसे अष्ट्रियाकी मन्त्रिसभाके मनमें अपना उत्साह भर दिया। इङ्गलेण्डके साधारण लोग अपने प्रजातन्त्री मनोभावों तथा फ्रान्सके प्राचीन राज-तन्त्र-शासनके प्रति सम्पूर्ण घृणा रखनेके कारण सन्धिके लिये कोलाहल कर रहे थे। किन्तु इङ्गलेण्डका राजवंश और साधार-णत: अभिजातवर्गीय मनुष्य उस जातिसे किसी प्रकारका भी अनुकूल सद्भाव स्थापित करनेके सम्पूर्ण अनिच्छुक थे, जो जाति राजतन्त्री शासन अस्वीकार करनेके अपराधकी अपराधिनी हो चुकी थी।

उस समय अष्ट्रिया-सरकारका समस्त अवलम्ब एक नई सैन्य सङ्गठित और उसे सुसज्जित करनेमें लगाया गया। वर्मसरकी सैन्यका ध्वंसावशेष, राइनकी सैन्यके टुकड़े और टाइरोलके निर्भीक कृषकोंकी नई भरतीको ले एक मासके भीतर कोई एक लाख मनु-ष्योंकी एक नई सैन्य प्रस्तुत की गई। इस सैन्यके लिये रङ्गरूट भरती

किये जाते। किन्तु इससे इटालियन अभिजातवर्गीय दल जाकर वह प्रचण्ड रूप धारण करता, जिससे नेपोलियनकी स्थिति और भी शोचनीय हो जाती।

ऐसे परस्परविरोधी प्रभावोंका शासन करनेके लिये राजनीतिक रूपसे चूड़ान्त प्रतिभा और उच्चश्रेणीके नैतिक साहसकी आवश्य-कता थी। किन्तु नेपोलियनका महत्त्व युद्धक्षेत्रकी भी अपेक्षा मन्त्र-णा-सभामें अधिक उज्ज्वलतासे चमका करता था। उन्होंने जिस पक्षका अनुसरण किया था, उस पक्षने उन्हें इटालियनमें अतीव प्रसिद्ध कर दिया था। वह सब उन्हें अपना देशवासी समझते थे। वह सब उनकी सुख्यातिका गौरव किया करते थे। वह सब समझते थे, कि हमारे देशसे नेपोलियन उन अभिमानी अष्ट्रियनको निकाल रहे थे, जिनसे हम घृणा करते हैं। नेपोलियन अत्याचारियोंके शत्रु; साधारण लोगोंके मित्र थे। इटालियनकी अपनी भाषा नेपोलियनकी मातृभाषा थी। नेपोलियन इटालियनके हाव-भाव तथा आचार-विचारसे अवगत थे और इटालियन साहित्य तथा शिल्पका नेपो-लियन द्वारा अतीव आदर होते देख इटालियन अपनी प्रशंसा होती समझते थे।

नेपोलियनने इन्हीं तूफानी दृश्योंके बीच अङ्गरेजोंके साम्राज्यसे अपनी मातृभूमि कोर्सिका द्वीप निकाल लेनेके लिये एक सज्जित सैन्य भी प्रेरित की। सर वाल्टर स्काटने इस उद्दिष्ट विषयका वर्णन करते हुए, कि नेपोलियनने अपने जन्मस्थान उस गुमनाम द्वीपके प्रति कभी विशेष अनुराग प्रकट नहीं किया,बड़ी ही सुन्दरतासे कहा है,—"नेपोलियन उस नवयुवक सिंहके समान थे, जो पशुओंके दलके बिखेरने और शिकारियोंके नष्ट करनेमें प्रवृत्त हो अपनी उस जङ्गली गुफाका बहुत थोड़ा ध्यान करता है, जिससें पहले-पहल उसकी आँखें खुलतीं और वह दिनका प्रकाश देखता है।"

किन्तु सेण्ट हेलेनामें नेपोलियनने इस विषयकी जो बातें कही

अपमानित हो चुकता है ; तब वह अपनी प्रसिद्धि या अपने देश-की प्रतिष्ठाकी परवा किया नहीं करता। कोई युद्ध समाप्त होनेपर मैं अपनी सैन्यके अफसरों तथा सिपाहियोंको अपने सम्मुख एकत्र किया करता और उनसे पूछा करता था, कि किसने अपनेको शूरवीर प्रमाणित किया है। उनमें जो लिख-पढ़ सकते थे, वह ऊँचा पद प्राप्त करते थे। जो लिख-पढ न सकते थे, उनको मैं पाँच घण्टे रोज लिखने-पढ़नेकी आज्ञा देता था। जब वह उपयुक्त विद्याप्राप्त कर लेते थे, तब उन्हें मैं ऊँचा पद प्रदान करता था। इसतरह मैंने पद और कौड़ोंको हटा उनकी जगह सम्मान तथा ईर्ष्याकी प्रतिष्ठा की थी।"

उन्होंने परमाके डिउक तथा टस्कनीके डिउकको अपने सख्य-बन्धनसे बाँधा। उन्होंने लोम्बार्डीके अधिवासियोंको यह आशा दे उल्लसित किया, कि जैसे ही मैं अपने उपस्थित सङ्कटसे छुटकारा पाऊँगा ; वैसे ही तुम्हारी स्वाधीनता-वृद्धिके सम्बन्धमें कोई न कोई उपाय करूँगा। इसतरह उन्होंने एक पुराने राजनीति-विद्या-विशारदके कौशलसे अपनी चारो ओरकी सरकारोंको अपनी मैत्री-सूत्रमें बाँध लिया और फ्रान्सकी प्रतिनिधि-सभाकी त्रुटियोंका परि-शोधन करनेके लिये राजनीतिक समस्त अवलम्बोंसे अपनेको लाभा-न्वित किया। इससे पहले कोई भी मनुष्य ऐसी स्थितिमें प्रतिष्ठित किया न गया था, जिसमें इससे अधिक कौशलकी सहायताकी आव-श्यकता होती। इटलीके समस्त राज्योंके प्रजातन्त्री दल नेपोलियनको साहाय्य देनेका शोर कर रहे थे। विप्लवी झगड़ा उड़ानेके लिये वह सब नेपोलियनकी आज्ञाकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उस समय नेपो-लियनने यदि थोड़ा भी बढ़ावा दे दिया होता, तो इटलीका समस्त प्रायद्वीप अभ्यन्तरीण विवादके प्लावनकी विभीषिकामें पड़ डूब जाता और इससे पहले जो भयङ्कर दृश्य पेरिसमें उपस्थित हो चुके थे ; वही भयङ्कर दृश्य इटलीके प्रत्येक नगरमें एकबार फिर उपस्थित

हुए हैं, उनके लिये कोई आशा नहीं। ऐसे अविराम परिवर्त्तन और ऐसी कौनयल शत्रुके बीच उनकी मृत्यु अनिवार्य है। कदाचित् इतिहासप्रसिद्ध वीर अगेरिड और अति साहसी मेसेनाका समय उपस्थित हुआ चाहता है। इस विचारने मुझे सावधान बना दिया है। मैं मृत्युके सम्मुखीन होनेका साहस इसलिये नहीं करता हूँ, कि इसके फलसे उन लोगोंका ध्वंस सुनिश्चित है; जो अबतक मेरी भावनाके विषय थे। इस सैन्यने अपना कर्त्तव्य पालन किया है। मैं अपना कर्त्तव्य पालन करता हूँ। मेरी विवेकबुद्धि शान्त है, किन्तु मेरी आत्मा टुकड़े टुकड़े हो गई है। फ्रान्सके समर-सचिवने अपने खरीतोंमें जिस साहाय्यके भेजनेकी सूचना दी है; मैंने उसका चौथाई भी साहाय्य नहीं पाया है। मेरा स्वास्थ्य इतना बिगड़ गया है, कि मैं कठिनतासे अपने घोड़ेपर बैठा रह सकता हूँ। अब शत्रु हमारी परिमित सैन्य-पंक्तियोंको गिन सकता है। मेरे पास और कुछ नहीं;—एक मात्र साहस है; किन्तु वह अकेला उस पदके लिये उपयुक्त नहीं, जिस पदपर मैं प्रतिष्ठित हूँ। सहायक सैन्य न आई, तो इटली हाथसे निकल जायेगा।"

किन्तु नेपोलियनने अपने अधीनस्थ सिपाहियोंको दूसरे ही ढङ्गसे सम्बोधित किया। अपनी चिन्ता छिपा उन्होंने अपनी बातोंसे उनका साहस उभारते हुए कहा,—"हमें अब एक यत्न और करना है, इसके उपरान्त इटली हमारे हाथ आ जायगा। इसमें सन्देह नहीं, कि हमारी अपेक्षा शत्रुकी संख्या अधिक है, किन्तु उसकी सैन्यके आधे सिपाही रङ्गरूट हैं, जो फ्रान्सके रणदर्शी योद्धाओंके सम्मुख ठहर नहीं सकते। अलविञ्जीके पराजित होते ही मारटुआका पतन अवश्य होगा, इसके उपरान्त हमारे श्रमकी समाप्ति होगी। मारटुआके पतनसे केवल इटली हीका पतन न होगा, साथ-साथ सबसे सन्धि हो जायेगी।"

जिन तीन सप्ताहमें अष्ट्रियन अपनी सैन्यके लिये रङ्गरूट भरती कर रहे थे और फ्रान्सीसी सिपाही मान्टुआ दुर्गकी चारो ओर विश्राम करते थे : उस तीन सप्ताहमें नेपोलियनने इटलीकी-अपनी स्थिति सुदृढ़ और अपना विरोध करनेवाले राज्योंके निरस्त्र करनेमें अतीव भीमश्रम प्रकाशित किया। उस समय उन्होंने अपने सेनापतित्वके श्रमकी अपेक्षा राजनीतिज्ञता और राजनीतिकुशलतामें और भी कठोर श्रम किया था। उन दिनों उनके आहार तथा विश्रामका कोई समय न था; वह दिन-रात अविराम रूपसे अपने कार्य्यमें प्रवृत्त रहते थे। वह प्रचण्ड वेगसे स्थान-स्थानका परिभ्रमण किया करते थे, इसके फलसे घोड़ेपर घोड़े उनकी जाँघोंके नीचे अतिरिक्त श्रमसे क्लिन्न हो मर-मरकर गिरा करते थे। उन्होंने फ्रान्सकी प्रतिनिधि-सभाके नाम रोम, नेपल्स, वेनिस, जिनोआ आदि राज्योंकी सन्धिके सम्बन्धमें असंख्य पत्र लिखाये। वह छिछले विचारोंको धारण करनेवाली फ्रान्सकी प्रतिनिधि-सभासे घृणा करते थे, वह जानते थे, कि यह सभा यदि अधिक बुद्धिमत्ता प्रकट न करेगी, तो फ्रान्सीसी प्रजातन्त्र नष्ट हो जायेगा। उन्होंने कहा था,—"जबतक तुम्हारा इटलीका सेनापति प्रभावका केन्द्र न होगा; तबतक सब बातें बिगड़ती ही रहेंगी। मुझपर उच्चाकांक्षी होनेका दोषारोपण सहज है, किन्तु मुझमें सम्मानकी श्रद्धा नहीं, उससे मैं परितृप्त हो चुका हूँ और चिन्तासे क्लिन्न रहता हूँ। नेपल्ससे सन्धि अनिवार्य्य है। वेनिस और जिनोआके साथ आपलोगोंको सद्भाव स्थापित करना ही होगा। रोममें असीम प्रभाव है। आपलोगोंने रोमसे सम्बन्ध भङ्गकर सुकार्य्य नहीं किया है। हमें राजों तथा साधारण लोगों दोनो दलों से इटलीकी फ्रान्सीसी सैन्यके लिये मित्रोंका संग्रह करना आवश्यक है। इटलीके प्रधान सेनापति हीको सन्धि-सम्बन्धीय विचार और सैनिक गति-विधिका उद्गम-स्थान होना चाहिये।" इसमें सन्देह नहीं, कि सत्ताईस वर्षके एक नवयुवक मनुष्यका यह अतीव साह-

सम्पूर्ण अनुमान था; किन्तु नेपोलियन अपनी शक्तिका मर्म्म समझते थे। उन्होंने अब मोडेनाकी डची तथा पोप-राज्य बोलोगना तथा फेरोराके अधिवासियोंकी आग्रहपूर्ण प्रार्थनाओंपर कर्णपात किया। डिउक आफ मोडेना तथा पोप दोनो ही नेपोलियनसे विश्वासघात कर चुके थे; इसके फलसे नेपोलियनने इन राज्योंको युक्तकर इन्हें संयुक्त तथा स्वाधीन प्रजातन्त्रके रूपमें संगठित कर दिया। इस नई सरकारके अधीनस्थ सारा देश पो नदीके दक्षिण किनारे अवस्थान करता था, इसलिये नेपोलियनने इस नये प्रजातन्त्रको सिस्पेडिन प्रजातन्त्र या 'पोके इस पारका प्रजातन्त्र' के नामसे अभिहित किया। इस प्रजातन्त्रमें कोई पन्द्रह लाख मनुष्योंका निवास था और यह सब पृथ्वीकी एक अतीव समृद्ध, उर्वर और सुन्दर भूमिमें सघन रूपसे एकत्र हो बसते थे।

इस तरह स्वाधीन सरकार प्राप्तकर इस प्रजातन्त्रके अधिवासियोंके उल्लास और उत्साहकी सीमा न रही। इस प्रजातन्त्रमें नेपोलियन जहाँ-जहाँ जाते थे, वहाँ-वहाँ उनका साधारण लोग प्रेमके प्रत्येक निदर्शनसे परिपूर्ण स्वागत करते थे। उन्होंने मोडेना स्थानमें एक प्रतिनिधि-सभा प्रतिष्ठित की, जिसमें देशके वकीलों, जमीन्दारों और व्यवसायियोंको सम्मिलित किया। इस सभापर अपने देशकी शासन-प्रणाली प्रस्तुत करनेका भार अर्पित किया गया। इस सभाके सभी मनुष्योंने नेपोलियनके परामर्शका आश्रय ग्रहण किया; इसपर नेपोलियनने अपनी अतीव साङ्ग बुद्धिमत्तासे उनके विचारोंको पथ दिखाया। फ्रान्समें जिस अराजकताने जकोबियोंका शासन कलङ्कित किया था; नेपोलियनके मनकी उस अराजकताकी ओरकी घृणा और उनके हृदयकी आईनकी प्रतिष्ठा इस अवसरपर बहुत ही स्पष्टतासे प्रकट हुई।

उन्होंने इस सभामें वक्तृता दे कहा था,—"सावधान! यह बात भूल न जाना, कि आईन-कानून तबतक वैध बलहीनता मात्र हैं;

जबतक उनके स्थिर रखनेके लिये आवश्यक शक्तिकी व्यवस्था की नहीं जाती। आपलोग अपने सैनिक संगठनकी ओर भी ध्यान दें। आप लोगोंके पास ऐसे साधन हैं, जिनके द्वारा आप इस संगठनको प्रतिष्ठित भित्तिपर स्थापित कर सकते हैं। ऐसा करनेसे आपलोग फ्रान्सके अधिवासियोंकी अपेक्षा अधिक सौभाग्यशाली कहलायेंगे; कारण, आपलोग विप्लवकी अग्नि-परीक्षामें बिना प्रवेश किये ही स्वाधीनता प्राप्त कर लेंगे।"

इटालियन पुरुषत्वविहीन लोग थे और वह सब युद्धमें फ्रान्सीसियों तथा अष्ट्रियनोंसे प्रतियोगिता कर न सकते थे। फिर भी, यह नया प्रजातन्त्र अपने उन नवयुवक प्रतिष्ठाताके प्रति अपना अनुराग तथा भक्ति दृढ़तापूर्वक दिखानेके लिये प्रस्तुत था। एक दिन अष्ट्रियन सैन्यका एक दल मान्टुआ दुर्गसे बाहर निकल आया। इसपर इस नये प्रजातन्त्रके वीरोंने तुरन्त ही हथियार उठाये, उस दलको कैद किया और उसे विजयोल्लासपूर्वक नेपोलियनके सम्मुख लाये। जब अष्ट्रियनने नेपोलियनको इटालियनकी सैन्य बनानेका यत्न करते देखा; तब उन सबने उनके इस विचारकी हँसी की और कहा, कि हमलोगोंका ऐसा यत्न व्यर्थ हो चुका है और किसी इटालियनको अच्छा सिपाही बनाना असम्भव है।

नेपोलियनने कहा था,—"यह जानकर भी मैंने कई सहस्र इटालियनको सैन्यमें भरती किया। यह सब फ्रान्सीसियोंजैसा वीरत्व प्रकाशित करते हुए ही लड़े। इन सबने मेरी विपदमें भी मेरा साथ न छोड़ा। इसका कारण क्या था? मैंने सैन्यसे बेत लगनेका दण्ड उठा दिया था। कोड़ोंकी जगह मैंने प्रतिष्ठा-वृद्धिकी उत्तेजना उपस्थित की थी। जो बात मनुष्यका अपमान करती है, वह कभी उपयोगी हो नहीं सकती। जो मनुष्य अपने साथियोंके सम्मुख कोड़ोंसे पीटा जाता है, उस मनुष्यमें कौनसा सम्मान रह जानेकी सम्भावना की जा सकती है? जब कोई सिपाही कोड़ोंसे पिट